CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

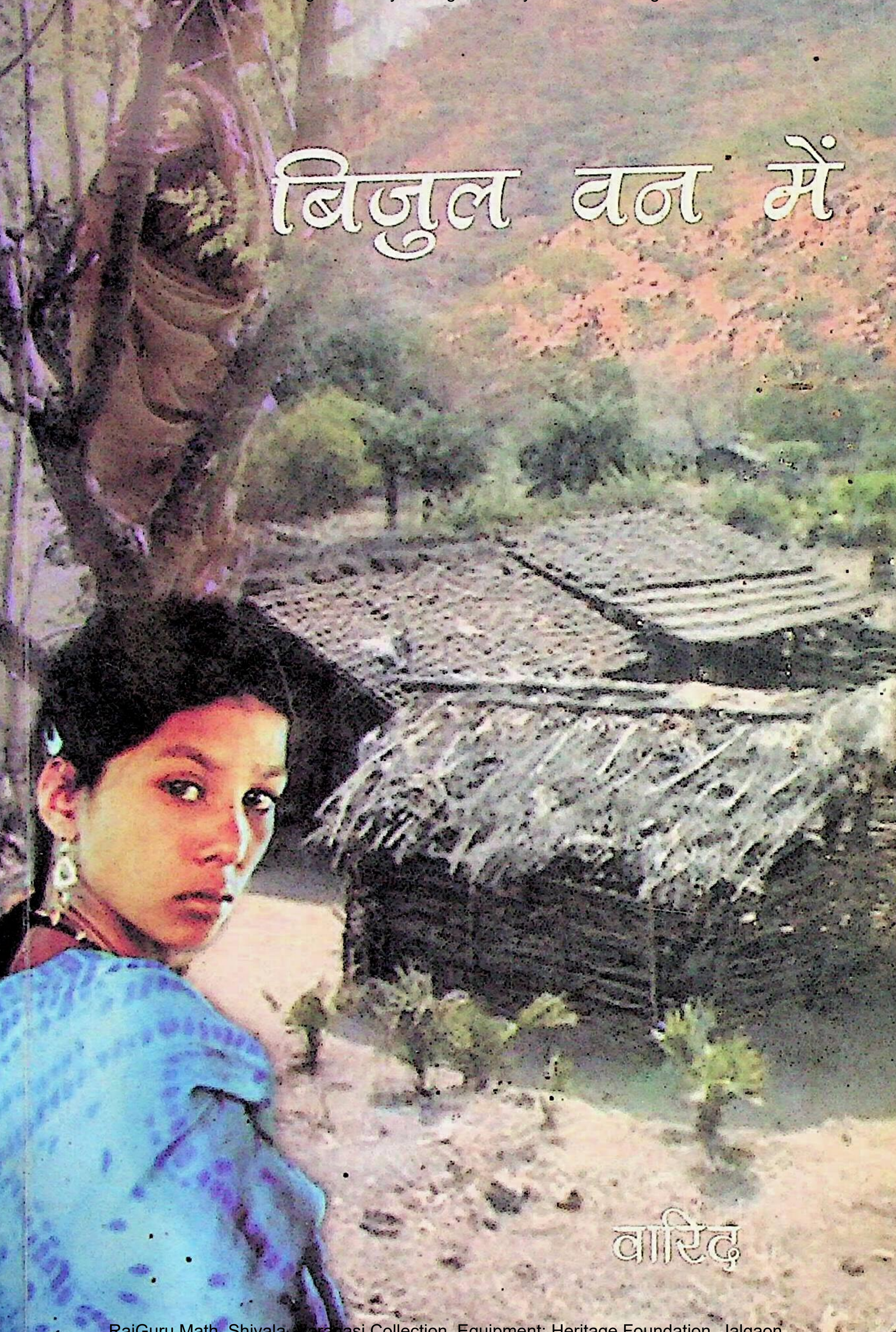

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बिजुल वन में

अधिवक्ता श्री दिनेश सिंह
अध्यक्ष हिन्दू जागरण मंच को
सादर -

नागेन्द्र वारियं
दिनांक २६.७-२०१६

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बिजुल वन में

‘वारिद’

PILGRIMS

पिल्ग्रिम्स पब्लिशिंग

वाराणसी ◆ दिल्ली

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बिजुल वन में

'वारिद'

प्रकाशक

पिल्ग्रिम्स पब्लिशिंग

बी.27/98, ए-8, दुर्गाकुण्ड, वाराणसी-221010

टेलीफोन - (91-542) 2314060

e- mail-pilgrims@satyam.net.in

website-www.pilgrimsbooks.com

प्रथम संस्करण - 2011 ई०

© सन् 2011, नागेन्द्र नारायणदेव सिंह 'वारिद'

आवरण - तनुप्रिया

लेआउट - सुरेश जायसवाल

ISBN : 978-81-7769-956-2

इस पुस्तक का पुनर्प्रकाशन, किसी भी प्रकार का आंशिक या पूर्ण प्रकाशन, इलेक्ट्रॉनिक प्रयोग, छायाचित्र का उपयोग आदि, विशेषज्ञ की समीक्षा के अलावा, प्रकाशक की अनुमति के बिना कानून का उल्लंघन है।

मुद्रक - पिल्ग्रिम प्रेस प्रा. लि., लालपुर, वाराणसी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

समर्पित

"कुकृत्य कर्मियों से जूझते मानव को।"

'वारिद'

"यदि पिछली सभ्यतायें सामाजिक विषमता और आध्यात्मिक समानता के अनमेल के बोझ से टूटीं, तो आधुनिक सभ्यता सामाजिक एकता और आध्यात्मिक विषमता के अनमेल के बोझ से टूट रही है।"

(डॉ० राम मनोहर लोहिया)
इतिहास चक्र

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जो कहना है

यह उपन्यास सन् १९८१ में ही अधिकांश लिखा जा चुका था। राबर्ट्सगंज के साहित्यिक मित्रों ने इसकी सराहना भी की थी। राबर्ट्सगंज से प्रकाशित होने वाले "लाइट आफ मिर्जापुर" साप्ताहिक में इसके कुछ अंश सन् १९८२ में छपे भी। इसे पूरा कर ही रहा था कि अकस्मात् मेरे जीवन में एक ऐसी घटना घटी कि मुझे संसार के सारे सम्बन्ध झूठे लगने लगे, सारे कार्य निरर्थक लगने लगे। लेखन के प्रति मन में उदासी और सम्बन्धों के प्रति शंका की मनःस्थिति में वाराणसी के अस्सी पर कुछ शान्ति मिली। समय बीत रहा था कि एक दिन कवि डा० 'सरोज' ने बताया कि आदिवासियों पर राबर्ट्सगंज के किसी साहित्यकार का उपन्यास छप रहा है। यह सुनते ही मुझे अपने इस उपन्यास की याद आई और मैंने उनसे इस पर चर्चा की। उन्होंने इसे देखने की इच्छा ज़ाहिर की। मैंने दिखाने का वादा किया और भूल गया। पुनः याद दिलाने पर पाण्डुलिपि उन्हें दी। उन्हें उपन्यास पसन्द आया और उन्होंने इसे छपवाने का आग्रह किया। इस तरह इस उपन्यास का श्रष्टा भले ही मैं होऊँ पर द्रष्टा तो डा० 'सरोज' ही हैं।

इस उपन्यास के लेखन में सहयोगी रहे अपने शरीर के अंगों को धन्यवाद देना क्या उचित रहेगा? इसी तरह से मेरे जीवन से जुड़े श्री अवध नारायण सिंह (राय साहब) एडवोकेट, राबर्ट्सगंज एवं 'लाइट आफ मिर्जापुर' साप्ताहिक के प्रकाशक एवं सम्पादक श्री हंस नाथ पाण्डे 'हंस' भी हैं। समय के प्रभाव से जैसे हाथ पांव शिथिल पड़ जाते हैं– उनमें पहले-सी त्वरिता नहीं रह जाती फिर भी चेतना के स्तर पर वह वही होते हैं, जो पहले थे, इसी प्रकार का मेरा इन लोगों से सम्बन्ध है। श्री अवध नारायण सिंह (राय साहब) एडवोकेट, राबर्ट्सगंज की वैचारिक विलक्षणता का इसमें प्रभाव है, तो श्री हंस नाथ पाण्डे 'हंस' स्वयं सम्पादक जी के नाम से इस उपन्यास के आंशिक पात्र हैं।

मैं अपने चचेरे छोटे भाई श्री जे. एन. पी. सिंह (अवकाशप्राप्त सहायक महाप्रबन्धक, दूरसंचार) को कैसे धन्यवाद दूँ? जिन्होंने इस उपन्यास की पाण्डुलिपि को स्वयं अपने कम्प्यूटर पर टाइप करते हुए सुधारात्मक दृष्टिकोण रखा और इसे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सहेज कर अपने पास रखे रहे। अपने छोटे भाई को धन्यवाद देना क्या ठीक रहेगा? या कि धन्यवाद दूँ उस अवसर को जब सरकारी नौकरी करते हुए भी फक्कड़ जीवन जीने की आदत ने राबर्ट्सगंज में मार्क्सवादी लेनिनवादी विचारधारा से जुड़े श्री गोरख प्रसाद मिश्र एवं उनके साथियों से मेरा परिचय करा दिया? उनके साथ मिर्जापुर दक्षिणांचल के जंगल-पहाड़ियों में घूमता जब रेणसागर के विस्थापितों से मिला, उनकी बीती व्यथा को सुना और हाल ही में विस्थापित हो रहे अनपरा के गाँव में पहुँचा तब शाम हो रही थी। गाँव के दो-चार घरों में ही कुछ लोग रह रहे थे, शेष लोग गाँव, घर, छोड़कर जा चुके थे। उस शाम के झुटपुटे में झायं-झायं करते गाँव के एक घर के सामने नीम के पेड़ के नीचे हम लोग पहुँचे तभी एक १५-१६ साल की लड़की कच्चे घर से निकली और नीम के पेड़ के नीचे पहुँची। उसकी चाल शिकारी कुत्तों द्वारा झिझोड़ कर घायल कर दिये उस पशु की तरह थी जो यह सोचकर जंगल में घिसटता चला जा रहा हो कि 'इस विकट मार्ग पर चलना है तो चला जाय'। उसके चेहरे को देखने से ऐसा लग रहा था जैसे वह किसी अनजानी जगह पर खो कर घबरा गई हो। मैंने उसे आवाज दी। उसने हम लोगों की तरफ यंत्रवत चेहरा घुमा दिया और इस भाव से देखा जैसे कह रही हो कि 'कहिये अब क्या कहना है'? 'गाँव के सब लोग चले गये?' मेरे मुँह से अकस्मात् निकला। 'हाँ' उसने संक्षिप्त उत्तर दिया। 'तुम लोग क्यों नहीं गये?' मेरे इस प्रश्न से लड़की रुआंसी हो गई और कहा–'बाबूजी, जेके-जेके रिस्तेदारी या परिचितन के इहाँ ठिकाना अउर मुवावजा मिल गयल ऊ लोग चल गइलेन। अबही हम लोगन के न ठेकाना मिलल न मुवावजा।'

'तुम्हें अपने गाँव वालों की याद आती है?' मेरे इस प्रश्न के उत्तर में उसने एक दीर्घ निश्वास छोड़ा और कहा, "अब ओ जीवन से कहां भेंट होई? अब ऊ लोग कहा मिलिहैं? अबहीं तऽ गाँव वाले छुटलेन, अब हमार इ नीबी क पेड़, डीह बाबा कऽ धाम, चउरा माई क चउतरा, बारी-बगइचा सब छूट जाई। ऊहो लोग रोअत गइलेन हमहूँ सभे रोअत जाब...।" कहती आँचल से आँख पोंछती घर के अन्दर चली गई। इस घटना ने मेरे संपूर्ण अस्तित्व को झकझोर दिया। मेरा हृदय हाय-हाय करने लगा और इस उपन्यास का बीजारोपण हो गया। मैं सोचने लगा कि क्या इन्हें विस्थापित करने वालों ने जैसा मैं सोच रहा हूँ वैसा ही सोचा होगा?

किसान अपनी धरती को कितना प्यार करता है? इसका आप मिर्जापुर के दक्षिणांचल में बसे उन आदिवासियों के गांवों को देख कर अंदाज लगा सकते हैं जो बंजर पथरीली भूमि से पुश्त-दर-पुश्त भूखे पेट रहकर जूझते चले आ रहे हैं लेकिन अपनी दरिद्रता से घबराकर जमीन छोड़ नहीं रहे हैं। भूमि उनके लिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

व्यापार की नहीं आस्था की चीज है। विकास के नाम पर जब ऐसे लोगों से उनकी उपजाऊ धरती छुड़ाई गई होगी तो उन्हें कितना कष्ट हुआ होगा? ऐसे विस्थापितों के दर्द को कहने की प्रेरणा एवं भ्रष्ट व्यवस्था को बेनकाब करने की सदिच्छा ही मूल रूप से इस उपन्यास की कथावस्तु है।

उपन्यास में हुई हत्या से कुछ अहिंसक विदक सकते हैं किन्तु उन्हें यह सोचना होगा कि समाज का ऐसा प्राणी जो शेष समाज के लिए खतरा बन चुका है और जिसके सुधरने की कोई आशा नहीं है उसे समाप्त कर देना कोई हिंसा नहीं है। विश्व इतिहास के अप्रतिम अहिंसक नेता महात्मा गांधी ने भी अक्टूबर सन् १९४७ में काश्मीर पर पाकिस्तानी आक्रमण के समय कहा था 'मैं तमाम संग्रामों का विरोधी हूँ, किन्तु अगर पाकिस्तान से न्याय मिलने का कोई रास्ता नहीं है तो भारतीय संघ को उसके खिलाफ युद्ध करना चाहिए। कोई भी युद्ध नहीं चाहता, यह विनाश का रास्ता है, किन्तु कभी किसी को अन्याय के सामने झुकने की सलाह नहीं दी जा सकती।' (हिन्द स्वराज)

एक बार गान्धी जी ने अपने साथी निर्मल कुमार बोस से कहा था–"मुझे लगता है, मैंने और मेरे साथ के और लोगों ने अहिंसा का जो पाठ पढ़ाया है वह प्रमाणित नहीं है बल्कि निष्क्रिय प्रतिरोध की एक कमजोर प्रतिलिपि है।" इसका मतलब स्पष्ट है कि अन्यायियों का दमन आवश्यक है। अहिंसा से हो तो उत्तम अन्यथा हिंसा त्याज्य नहीं है। मेरी इस धारणा के संमर्थन में शताधिक धर्मकथाएं पंक्तिबद्ध खड़ी हैं। किन्तु कौन प्राणी समाज के लिए खतरा बन चुका है? इसका निर्णय धर्म-ठग या भीड़तंत्र नहीं कर सकता। क्योंकि हम जानते हैं कि ऐसे ही लोगों ने ईसा और सुकरात को जीने नहीं दिया, मंसूर को शूली पर चढ़ाया तथा गैलीलियो को सत्य कहने पर माफी माँगने पर मजबूर किया।

उपन्यास में आये विभिन्न स्थानों के नाम अधिकतर सत्य हैं किन्तु पात्र और उनके नाम काल्पनिक हैं। स्थानों के सही नाम देने का मेरा उद्देश्य मात्र यह है कि इस क्षेत्र से अपरिचित पाठक इनके माध्यम से इस क्षेत्र की भगौलिक और ऐतिहासिक स्थिति से कुछ अवगत हो जांय। जहाँ तक घटनाओं का सम्बन्ध है, इसे आप पढ़कर ही समझ जाएंगे कि मैंने नित्य प्रति घटती एवं घट चुकी सत्य घटनाओं को मात्र एक सूत्र में पिरोने का कार्य किया है। इस पिरोने की प्रक्रिया में काल्पनिक घटनाओं का भी सृजन हुआ है। काल्पनिक घटनाओं का सृजन किसी वैचारिक ढांचे के नियन्त्रण में करने का मेरा कोई आग्रह नहीं है क्योंकि किसी एक विचारधारा से नियन्त्रित बुद्धि ही कट्टरवाद की जननी है। यदि रचनाकार स्वयं को किसी विचार अथवा शैली का पोषक मान लेता है तो उसके

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पूर्वपोषित विचार उसकी अन्त:अभिव्यक्ति पर अंकुश लगाते चलते हैं जिससे रचनाकार उपन्यास में घटित हर घटना को अपने विचारों के अनुरूप विश्लेषित करने का प्रयास करता है। ऐसी स्थिति में ऐसा लगता है जैसे रचनाकार बिक्री के लिए किसी खास कम्पनी का उत्पाद तैयार कर रहा है।

इस उपन्यास में एक ओर मेहनतकश असंगठित, दरिद्र किसान और मजदूर हैं तो दूसरी ओर सम्पन्नता-शक्ति और कानूनी हथियार से लैस, संगठित सरकारी गैर-सरकारी तबका, उनके भाग्य की निर्णायक भूमिका में है जो भावनात्मक रूप से उन गरीबों से एकदम नहीं जुड़ा है, सिर्फ जुड़ने का नाटक करके उन्हें ठग रहा है। यहाँ तक कि धार्मिक मठ का महंत भी इस ठगहारी में शामिल हो जाता है। यदि इस ठगतंत्र में थोड़ी-सी भी आध्यात्मिकता होती तो नैतिकता अवश्य होती और यदि नैतिकता होती तो दृश्य दूसरा होता। क्योंकि आध्यात्मिक चेतना के केन्द्र में जीव सर्वश्रेष्ठ है। "सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया।" के लिए ही आध्यात्मिक मनुष्य परमशक्ति से जुड़ना चाहता है। उसकी दृष्टि में सभी वही हैं जो वह स्वयं है।

उपन्यास में अध्यात्म शब्द भी सम्पूर्ण रूप से सत्य पर आधारित कबीर तथा डा० लोहिया का अध्यात्म है। यह न तो कोई धर्म है न ही किसी धर्म के विरुद्ध है। हाँ पाखंड के विरुद्ध अवश्य है। विश्व का दुर्भाग्य है कि अध्यात्म अपने चर्मोत्कर्ष काल में भी अपनी आध्यात्मिक समानता को समाज में व्यावहारिक रूप में स्थापित नहीं कर पाया जिससे समाज में विकट विषमता बनी रही। आज सम्पूर्ण वैश्विक समाज में रहन-सहन और क्रिया-कलापों में एक समानता आ रही है। सामाजिक विषमता का अन्त हो रहा है। निश्चित ही इसका कारण आधुनिक विज्ञान से प्राप्त आर्थिक उन्नति है। कभी समाज ज्ञानप्रधान था, आज अर्थप्रधान हो चुका है। रथयुग से राकेटयुग में पहुंचे विश्व-समाज में सामाजिक समानता तो आ रही है किन्तु आर्थिक विषमता और धर्म-ठगों द्वारा धार्मिक असहिष्णुता को बढ़ाया जा रहा है। अगर इसका संतुलन नहीं किया गया तो कालान्तर में सम्पन्न तबकों एवं धर्मठगों का एक वर्ग बन जाएगा और यही वर्ग जाति का रूप धारण करके अध्यात्म के अभाव में शेष लोगों का शोषण करेगा। आप सिने कलाकारों को देखिए, उनकी आर्थिक सम्पन्नता और कर्म की समानता ने सारे जाति और धर्म के बन्धनों को तोड़ दिया है। अब वह एक अलग वर्ग बन गया है। शायद हमारा प्राचीन यक्ष वर्ग ऐसा ही रहा होगा।

विश्व के नेता वर्ग, जो बहुत तेजी से आर्थिक रूप से सम्पन्न हो रहा है और अर्थप्रधान वर्ग से सर्वदा जुड़ा है, का भी जाति और धर्म-बन्धन कब का टूट गया

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

होता किन्तु जाति और धर्म के आधार पर राजनीति करने की उसकी विवशता ने ऐसा नहीं होने दिया है। ये लोग अपनी सुरक्षा के लिए प्रशासनिकों को भी सम्पन्न होने का अवसर प्रदान कर अपने साथ मिलाये रखना चाहते हैं। उद्योगपति वर्ग तो अपने स्थान पर अडिग खड़ा ही है। यही वर्ग, समाज में सम्भव आर्थिक समानता लाने में बाधक है। इस आर्थिक होड़ में पड़कर हर सक्षम आदमी, हर सक्षम राष्ट्र अर्थ के लिए अनर्थ करने में नहीं चूक रहा है। इसमें आम आदमी कहाँ है? आम आदमी इन वर्गों का भोज्य पदार्थ बन गया है।

अर्थातुर व्यक्ति या राष्ट्र किसी के नहीं हो सकते। आज अर्थप्रधान विश्व का सामाजिक ढाँचा अर्थ की आँच से एकदम लाल हो गया है। यदि इसे आध्यात्मिक शीतलता नहीं दी गई तो अपने ताप के अन्तिम बिन्दु पर पहुँच कर यह अपने ही ताप से पिघल कर नष्ट हो जायेगा। इसलिए अध्यात्म के श्रेष्ठतम ज्ञान को विश्व-समाज में इस तरह उतारना होगा कि लोग धार्मिक बनें, धर्मभिरु या धर्मठग न बनें। यह तभी सम्भव होगा जब विश्व स्तर पर धर्मान्तरण नहीं स्वभावान्तरण की बात होगी। व्यक्ति को संस्कारगत प्राप्त जो भी धर्म-पद्धति विरासत में मिली है, उसी को लिए दिये वह अध्यात्म सिन्धु में कूद जाए। उसके सारे संस्कार, सारी पद्धतियां गल जाएंगी। तब वह ललकार कर कहेगा—"ऐ विश्व के अमृतपुत्रो, सुनो... साम्राज्यवादी सोच के धर्मठगों से बचो। इन लोगों ने धर्म को विकृत कर दिया है। हम तुम सभी अमृतपुत्र हैं। अपने को जानो, यही धर्म है। जीव मात्र के प्रति करुणा ही धर्म है और यह करुणा जिस पद्धति से मनुष्य के हृदय में उत्पन्न हो उस पद्धति की क्रिया ही धार्मिक कृत्य है। यदि ऐसा हो गया तो आर्थिक ताप और धार्मिक उन्माद सबका शमन हो जायेगा। अन्यथा कैंसर के रूप में जो परमाणु शस्त्र हर राष्ट्रों में उमड़ रहे हैं, वे एक दिन फूटेंगे। तब सारी सृष्टि गल जायेगी...।"

विश्व के बेहूदे नेतृत्व का अन्त हो, तर्क की कसौटी पर खरे न उतरने वाले धर्म वाक्यों का अन्त हो और अपने लाभ के लिए जो इसे बचाए रखना चाहते हैं उनका भी अन्त हो, चाहे जैसे। इसी कामना के साथ आपके हाथों में यह उपन्यास प्रस्तुत है।

'वारिद'
ग्राम बढ़ैनी कलां
पो० बभनीयाँव
जनपद-वाराणसी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१. भलुआ

घने जंगलों के मध्य बलखाती बहती पहाड़ी नदी सुखनइया चैत-वैशाख में पतली, छरहरी, सुकुमार, किशोरी-सी लजाती सिमटती चलती है, वही सावन-भादों में मदमस्त हस्तिनी की भांति आसपास खड़े पर्वतों से अपनी पीठ रगड़ने लगती है। इस नदी तक एक पतला जंगली मार्ग चरवाहों की गायों, जंगली जानवरों के आने-जाने से बन गया है, जिसे स्थानीय भाषा में गयडहरी कहते हैं, जो श्वेत सर्प-सा बलखाता घने जंगल से आया है। जंगलों में पहले हिंसक जानवर भी पाये जाते थे किन्तु अब सूअर, सांभर और हिरन ही अधिक पाये जाते हैं। चारों तरफ पहाड़ों से घिरा यह जंगल ऐसा लगता है जैसे किसी बड़े कटोरे में वृक्षों को सजाकर रख दिया गया है। सुखनइया नदी पहाड़ों के पास से इस जंगली भूभाग से होती आगे निकल गयी है। बिजुल नदी भी रेंण में ही आकर मिलती है। नदी और जंगल के मध्य कुछ खाली ऊंची-नीची भूमि है, उसी भूमि पर पन्द्रह बीस घरों की एक बस्ती है जिसके कुछ घर बहुत ऊंचे पर हैं तो कुछ घर नीचे। शायद इस बस्ती के बसने से पहले यहां भालू बहुतायत में पाये जाते थे, इसीलिए इस गांव का नाम भलुआ पड़ा होगा। जैसे साधारण लोगों का इतिहास होते हुए भी कोई इतिहास नहीं होता वैसे इस जंगली गांव का कोई इतिहास नहीं है। धांगर, पनिका, गोंड, खरवार, चमार-बहुल इस गांव में एक घर ब्राह्मण का भी है। सारे आधुनिक हलचलों से दूर, आधुनिक सभ्यता से अछूते उस भलुआ गांव में सोता पड़ चुका था। कभी-कभी कुत्ते रिरियाती आवाज में भौंक उठते थे। रामधनक धांगर को नीद नहीं आ रही थी। वह अकाल की काली छाया को स्पष्ट देख रहा था। किसी प्रकार झिलगही चारपाई पर करवट बदलते-बदलते एक झपकी आयी तो आधी रात के करीब नींद उचट गयी। उसने उठकर जस्ते के लोटे से पानी पिया, खैनी की तलब मालूम हुई, अपने अंगोछे के खूंट को टटोला, वह खाली था, फिर खैनी की डिबिया हिलाई वह भी ख़ाली थी। तभी उसे दूर खैनी ठोंकने की आवाज सुनाई दी। वह अकनने लगा। वह जान गया कि भोला पंडित खैनी ठोंक रहे हैं। रामधनक भोला पंडित की ओर लाठी टेकता चल पड़ा। पंडित जी ने रात के अंधकार में उसे दूर से ही पहचान लिया और कहा "दाहिनी ओर से आना, सामने खूंटा गड़ा है।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"पालागी पंडीजी, नींद नहीं आ रही थी, खैनी ठोंकने की आवाज सुनकर सोचा कि आप जाग रहे हैं, चलूँ आप ही के पास कुछ देर बैठूँ।" रामधनक जमीन पर बैठते हुए बोला।

"बगल में मचिया है उस पर बैठो, जमीन पर काहे बैठ रहे हो, कीरा बिच्छी काट ले तो..."

"कुछ काट भी तो नहीं रहा है पंडीजी, काट लेता तो छुट्टी मिलती", कहता रामधनक वहीं जमीन पर उकड़ूँ-मुकड़ूँ बैठ गया। "बिना भगवान के मर्जी के कुछ नहीं होता, रघुपत जइसन जब करे तब-तब तइसन होय", कहते हुए पंडितजी ने सुर्ती रामधनक की ओर बढ़ाई। रामधनक ने सुर्ती लेकर होंठ के नीचे दबायी और लम्बी साँस खींचकर बोला, "ठीक कहते हैं पंडीजी "रामैकऽ मरजी है कि इतना बड़ा सूखा पड़ा है।"

"अरेऽऽ इसे सूखा कहते हो? बज्जर पड़ा है बज्जर...अउर लोग पाप करैं, धरम-करम तो रह नहीं गया, सूखा नहीं पड़ेगा तो क्या पड़ेगा? दूसरे की बात जाने दो, हमको तो तुम जानते ही हो कि बिना सूर्जनरायन को जल दिये पानी नहीं पीता, दूसरों के हाथ का बनाया हुआ चाहे पकवान हो, खाता नहीं। जब मेरा ही लड़का बंसिया धरम-करम छोड़ दिया तभी मैं जान गया कि घोर कलजुग आ गया।"

"क्या हो गया पंडीजी, बंसी भैया तो बहुत अच्छे हैं। गरीबों पर दया बूझते हैं, बढ़ियां पिपरी में कमाते हैं, रमायन गाते हैं...।

"अरे रामधनक! यही तो दुःख है कि इतना अच्छा रामायन पढ़ने वाला, सभी दोहा-चौपाई का माने जानने वाला होटल में खाता है। छूआ-छूत नहीं मानता। कहता है 'राम ने सबरी के जूठे बइर खाये थे।' मैंने कहा "जाओ तुम भी डोमों-चमारों का जूठा खाओ, लेकिन जब तक मैं जिन्दा हूँ, मेरे घर में यह सब नहीं चलेगा। बस तभी से आता है और मुझसे मिलकर चला जाता है। इस बार तो अपनी मेहरारू को भी ले गया। अब तुम्हीं सोचो, इतनी बड़ी खेती-बारी को हम बुढ़वा-बुढ़िया और ये लड़कियाँ सम्भालेंगी?"

खेती-बारी का नाम सुनते ही रामधनक के मन में एक हूक-सी उठी। उसने लम्बी साँस खींचकर कहा, "खेती-बारी में का रखा है कक्का, दो जून खाने को भी नहीं अँटता। बाढ़, सूखा, पत्थर, जब देखिए कुछ न कुछ लगा ही रहता है। अच्छा है बंसी भैया नौकरी कर लिए हैं, कम से कम दो जून खाने का तो ठेकान है।"

मैं कहा कह रहा हूं कि नौकरी खराब है, लेकिन बाप-दादों की निशानी धरम-करम, अपनी जन्मभूमि तो नहीं भूलना चाहिए। हम लोगों के बाप-दादे इसी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जमीन पर अपने घर में जिए-मरे, शेर-भालू से लड़े लेकिन छोड़ा तो नहीं न अपनी जमीन, न अपना धरम।''

''जनम भूमि तो नहीं छूटेगी। चिरई केतनौ उड़ै अकास, दाना है धरती के पास। केतनौ नौकरी कर ले चाहे बयपार, उसको लौट के तो अपनी जनम-भूमि पर ही आना है। हम भी सोचते हैं कि छोड़ कर चलें कहीं लेकिन बड़ी मोह लगती है। चार छ: बिगहा जमीन छोड़कर आदमी कहाँ जाय? उसमें पैदा हो चाहे न हो, है तो अपनी चीज, बाप दादे की निसानी। आज भगवान कुपित हैं नहीं पैदा हो रहा है, कल खुस होंगे कोदो, साँवा मक्का होगा फिर मचान बाँध के तीर-धनुष लेकर, खेतों की रखवाली करेंगे। गरम-गरम भुट्टा खायेंगे।''

''जिन्दा रहेंगे तब खायेंगे न, हम तो देख रहे हैं कि पूरा गाँव भूख से मर जायेगा। थोड़ी बहुत जो आषाढ़ी हो गयी है वह कितने दिन चलेगी? अब जो कातिक की बुआई होगी वह तो पाँच महीने बाद चइत में न होगी। तब तक आदमी क्या खायेगा?''

''हम तो सोच रहे हैं पंडीजी कि यही कातिक की बोआई थोड़ी बहुत वेंगा माँग जाँच कर कर लूँ फिर बुधनी मगरुआ को डाला, ओबरा या पिपरी भेज दूँ। चार पइसा कमायेंगे तो दिन खिसक जायेगा, फिर चइत में लवनी हुई कि सब दरिद्दर दूर।''

''कौन ठीक कि चइती हँसुआ के धार उतरेगी। पर साल की तरह पत्थर पड़ गया हो तो बस...।''

''जब भगवानै मारने पर उतारू हो जायेंगे तो आदमी कितना बचेगा। दो साल से तो यही हो रहा है। लेकिन कौन जाने किरपानिधान सुन लें।''

''तुम्हारे पास खाने-पीने के लिये है न?'' भोला पंडित ने वार्ता का रुख मोड़ा।

''हाँ है, इसी कातिक अगहन भर के लिये, नून पानी खाकर किसी प्रकार चल जायेगा। बिया-बैसार कम पड़ेगा, माँग जाँच लूँगा।''

''फन्नू का क्या हाल है?''

''जब हमारा यह हाल है तो इसी से समझ लीजिए, उस बेचारे की तो अउर हालत खराब है। क्रेसर पर चोट लग जाने से एक हाथ कट गया। उसी साल उसकी घरवाली मर गयी। एक लड़की परबतिया है, वह एक हाथ से कुछ छोटा मोटा काम गाँव घर में करके जी-खा रहा था, तो अब गाँव घर में सूखा से कोई काम नहीं है। बेचारा दिन काट रहा है। ऊपर से परबतिया की शादी भी नहीं कर पाया। घर में जवान बिटिया नाक के पिरकी जैसी दुखाती है।''

जवान लड़की की बात सुनकर पंडित जी को अपनी दोनों बेटियाँ समरत्थी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खींचकर कहा, "ठीक कहते हो रामधनक, दो जून पेट भर पाना भारी पड़ गया है तो शादी बियाह कहाँ से हो? हमारी तो दो लड़कियाँ हैं, भगवान अगर ठीक-ठाक रखे होते तो कोई परेशानी नहीं थी। इतनी लम्बी जजमानी है, किस चीज की कमी थी? लेकिन जब जजमान ही मर रहे हैं तो दक्षिणा कहाँ से देंगे? न खेती-बारी में दम न जजमानी में।"

"बंशी भैया तो पांच सौ रुपया महीना कमा रहे हैं। वह कुछ देते नहीं क्या?"

"क्या देंगे? अपने बाल-बच्चों में खुद परेशान रहते हैं। अभी तक तो घर से गल्ला-पताई ले जाते थे, खुशादे कट जाती थी, चार पैसा देते भी थे। अब तो किसी तरह काम चला रहे हैं।"

"अरे कक्का, पांच सौ रुपया बहुत होता है। कितना खायेंगे, फिर सुनता हूँ साहब के चपरासी हैं, ऊपरी आमदनी भी हो जाती होगी?"

"हाँ, हो तो जाती है लेकिन साहब में तो कुछ मुरौबत है? सहबाइन ऐसी है कि अपने यहाँ हर शाम बुलवाकर साग, सब्जी, तेल, पाउडर का आडर देती है। बंशी को ऊपरी आमदनी का पैसा बस देखने भर कों है। कभी कभार थोड़ा बहुत बच जाता है तो उससे क्या होता है? चाहे छोटे घर की हो चाहे बड़े घर की, औरतें एक ही तरह की होती हैं। उनको अपने भले से मतलब।"

"बंशी भैया साहब से क्यों नहीं कह देते?"

"तुम भी रामधनक पागलों-सी बातें करते हो, क्या साहब नहीं जानते होंगे?"

"अरे नहीं कक्का, कुछ भी हो साहब को मालूम होगा तो वह गरीबी बूझेंगे।"

"एक बार बंशी ने दबी जबान से साहब से कहा था। साहब ने उससे भी दबी जबान से अपनी मेम साहब से कहा, तो मेम साहब ने उन्हें ऐसा डाँटा कि बेचारे सिटपिटा गये। बंशी दूसरे कमरे में खड़ा सब सुन रहा था। उसी दिन से बंशी चुप हो गया" भोला पंडित ने बताया।

"नऽ कक्का, सहबाइन ने इतने बड़े साहब को डाँट दिया। सुनता हूँ बहुत बड़े इन्जीयर हैं। सड़क-पुल बनवाते हैं।"

"हाँ बंशी कह रहा था कि अनपरा तक साहब सड़क बनवाने जा रहे हैं। हमारे गाँव से ही सड़क जायेगी, कोई बहुत बड़ा कारखाना बनेगा।"

"तब तो कक्का हम लोगों के दिन फिर जायेंगे। पहले सड़क पर काम करेंगे, कारखाना बनेगा तो उसमें ईंट गारा करेंगे। भगवान जियन उपाय कर रहे हैं।"

"ईंट गारा तक काहे रुक गये। आगे कारखाने में भी मजदूर काम करेंगे उसमें काम नहीं करोगे क्या?" कहते हुए भोला पंडित ने उत्साह में डिबिया से खैनी निकाल का मलना शुरू कर दिया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"हम बूढ़े लोग क्या काम करेंगे? कहीं चौकीदारी सौकीदारी मिल जायेगी तो बुढ़ौती कट जायेगी और काम तो बंशी भैया, मगरुआ जैसे जवान करेंगे।"

"चलो हम लोग न सही बाल बच्चे तो सुखी रहेंगे। दिन भर कारखाने में काम सुबह शाम गांव की खेती बारी देखेंगे। स्कूल खुलेगा बाल-बच्चे पढ़ेंगे। तुम्हारे मगरुआ से हमारे बंशी की खूब पटती भी है। वह अपने साहब से कह कर तुरन्त नौकरी भी दिलवा देगा" कहते हुए पंडित जी खैनी को अंगूठे से खूब तेजी से मलने लगे जैसे अपने उत्साह की पीठ सहला रहे हों।

कार्तिक की रात आधी से अधिक जा चुकी थी। अब दोनों बूढ़ों को कुछ कुछ सिहरावन लगने लगा था। सुखद भविष्य की कल्पना में दोनों डूबने-उतराने लगै। अब तो नींद आने से रही। रामधनक ने पास ही में कुछ खरपतवार बटोर कर छोटा सा अलाव जला दिया। भोला पंडित भी कउड़ा के पास चारपाई से उतर कर मचिया पर बैठ गये। सुर्ती रामधनक की ओर बढ़ाते हुए बोले "लेकिन यह काम तो अभी दो साल में लगेगा।"

"तब तक राम भरोसे कट जायेगी, मजूरी धतूरी करके। पहले वाला जमाना रह नहीं गया कि सौ दो सौ मूड़ गाय रखते थे। सारा जंगल अपना था, चराते थे, बाजार में भी दूध बेच लेते थे। बैलों की लेहड़ी पर खोवा, घी, महुआ, आँवला, हर्रें, बहेरा, चिरौंजी लादकर अहरौरा तक ले जाते थे। बड़ा मजा था कक्का, अब वह जमाना नहीं आयेगा। अब तो जंगल सरकार का हो गया। जानवर जाते हैं तो धर-पकड़ होती है। दो गट्ठर जलावन काट लें तो जेहल, पता नहीं यह कैसा सुराज आया।" कहता रामधनक उदास हो गया।

"तीन महीना पनुआ पातर, तीन महीना आम, तीन महीना कोसली फोरा आगे के सिरि राम–ऐसे ही जिनगी कट जायेगी। कलजुग का पहरा है। देखो का होता है।"

"हाँ कक्का, आधी से ज्यादा कट गई अब बकिये कितनी है? नदी किनारे के पेड़ हैं अब गिरे कि तब। अब जिसका चूयेगा वह छायेगा। हम लोग अपने पहराभर जाग चुके", कहते हुए रामधनक ने जुमहाई ली।

"हाँ हो बिताने वाले किरपा निधान हैं। छोटई का भी तो बीत ही न रहा है। हम लोगों के पास तो जमीन जट्ठा है, जमीन नहीं है तो एक दो जाँगर ठठाने वाले हैं। उनके पास क्या है? थोड़ी-सी जमीन, आठ बच्चे, अकेले कमाने वाले हैं...भोला महराज ने अपने छोटे भाई के लिए कहा।

"नहीं कक्का, वह सबसे मजे में हैं। जब से दुकान खोल लिया है, भगवान उसी में उन्हें परापत दे रहे हैं।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोला पंडित को अपने छोटे भाई की तारीफ अच्छी नहीं लगी लेकिन प्रत्यक्ष में बहुत गम्भीर होकर बोले "हाँ परापत तों दे रहे हैं, पहले से कुछ मजे में हैं लेकिन बाभन होकर गांजा पीते हैं, यही ठीक नहीं है। चाहे वह हमसे अलग हो गये हैं फिर भी लोग यही कहते हैं कि भोला महराज का भाई गांजा पीता है। बड़ी बदनामी है।"

"गांजा से क्या होता है? गांजा तो भगवान शंकर की बूटी है।"

"हाँ-हाँ, तुम क्यों नहीं कहोगे? तुम भी तो उन्हीं के यहां जाकर दम मार लेते हो।"

"सबेरे-सबेरे दम मार लेने से दिन भर का घाम अखरता नहीं है, काम भी खूब होता है। इसलिए एक दो दम मार लेता हूँ। अब करना क्या है? खटना खाना ही तो है? न मरना है न मोटाना है।"

इस प्रकार दोनों बात करने में तल्लीन थे कि बगल से "होइहैं सोई जो राम रचि राखा, को करि तरक बढ़ावहिं साखा" चौपाई की मधुर ध्वनि आई। रामधनक हड़बड़ा कर, "अरेऽऽ कक्का, भिनसहरा हो गया, छोटई कक्का जाग गये" कहता हुआ उठ खड़ा हुआ।

"हाँ जाओ तुम्हारा भी समय हो गया, अब गांजा वांजा चढ़ेगा।" कहते हुए भोला पंडित हँसे।

"निपट-उपट कर, मुँह हाथ धोकर तब न वहाँ जायेंगे, चार दोहा रमायन सुनेंगे, कुछ पुन्न मिलेगा।"

"हाँ चलो, हम भी जरा बैलों को देख लें" कहकर भोला पंडित जानवरों की ओर चले, रामधनक जल्दी-जल्दी फारिग होकर छोटई की दुकान पर पहुंचा।

छोटई एक ढेबरी जलाकर रामायण पढ़ रहे थे। उनके पास चार पाँच लोग बड़ी श्रद्धा से बैठे रामायण सुन रहे थे। रामधनक ने पहुंचते ही पालागी किया। छोटई ने हाथ के इशारे से उसे बैठने को कहा और रामायण पढ़ते रहे। वह बीच-बीच में रामायण की चौपाइयों का अर्थ भी बताते चलते थे। अर्थ बताते हुए उन्होंने अपनी जेब में हाथ डाला तो रामधनक की बाँछें खिल गईं। छोटई ने चुटकी से पकड़ कर जेब से गांजा निकाला और सर नीचे किये रामायण पढ़ते-पढ़ते अपना हाथ रामधनक की ओर बढ़ाया। रामधनक ने दाहिने हाथ की ठेगुनी को बाँयें हाथ की हथेली पर रख कर बड़ी श्रद्धा से गांजा ले लिया। कल्लू खरवार गांजे की आग के लिए लुत्ती सुलगाने लगा। आँख ही आँख के इशारे में कोई गांजा मलने के लिए पानी लाने लगा, कोई गांजे की चिलम ढूँढ़ने लगा, जैसे रामायण के महाप्रसाद की तैयारी हो रही हो। सबका ध्यान चिलम पर अधिक, रामायण पर कम हो गया। लेकिन सभी प्रत्यक्ष में रामायण पर ध्यान लगाये रहे ताकि छोटई

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

महाराज बिगड़ न जायँ। अब छोटई ने "पूजिय विप्र सकल गुण हीना, शुद्र न पूजिय वेद प्रवीना।" का अंर्थ बताना शुरू किया "गोसाईं जी ने साफ-साफ लिख दिया कि बाभन में कोई गुण न हो तब भी उसकी पूजा होनी चाहिए। जानते हो क्यों? अरे भाई, बाभन भूदेव हैं, इस धरती के देवता हैं, अब उनकी पूजा नहीं होगी तो लोग कैसे सुखी रहेंगे? जब धरती के देवता पूजा नहीं पायेंगे तो धरती पर दूध, दही की नदियां कैसे बहेंगी? पहले जमाने में पूजा होती थी, तब नदियां बहती थीं। अब पूजा नहीं हो रही है इसीलिए न सूखा पड़ रहा है।" रामधनक के साथ सभी ने हां में हां मिलाया।

छोटई ने अपना प्रवचन आगे बढ़ाया "अरे भाई भूदेव की पूजा नहीं करनी है तो मत करो, लेकिन शुद्रों की पूजा तो एकदम मत करो, चाहे केतनो गुनी हों। लेकिन घोर कलयुग आ गया है। अब तो लोग ओहदा की पूजा करने लगे हैं। क्या हम कोई झूठ कह रहे हैं? परतोख ले लो, हमारे यहां के चौकी के दरोगा कौन जात का है? शुद्र है न। लेकिन वह जब आता है पूरा गाँव उसकी पूजा करने दौड़ पड़ता है। हमारे भोला भैया तो सूर्य नरायण को जिस लोटे से जल देते हैं उसी लोटे से उसको भी पानी पिलाते हैं। बाह रे कलयुग!" कहकर छोटई हँसे।

छोटई महाराज से शूद्रों की बुराई सुनकर रामधनक को अच्छा नहीं लगा फिर भी उसने हाथ में आये गांजे को देखकर उनकी हां में हां मिलाया। शूद्र दरोगा का रोब वर्णन सुनकर वह मन ही मन गदगद हो गया। प्रत्यक्ष में बिना किसी प्रतिक्रिया के रामधनक ने चिलम तैयार करके छोटई महाराज की ओर बढ़ाया। छोटई ने कल्लू को इशारा किया कि चिलम उसे दे ताकि अलख जगा दें। कल्लू यह जानता था कि अलख जगाने को उसी को मिलेगा क्योंकि उसके इतना अलख कोई नहीं जगा सकता।

रामधनक ने कल्लू को चिलम दिया। कल्लू ने चिलम को बिधिवत जमीन पर स्थापित किया और तेज आवाज में अलख जगाई, "अलख खोल पलक, देख दुनियां की झलक। शम्भू? तान धरम कऽ तम्बू। एक-एक तम्बू में रहें नौ-नौ लाख शम्भू। चल अगाड़ी, पछाड़ी, जे धरम की राह बिगाड़ी। रगड़ दे उसी को जो न माने किसी की। भोला भेजा चानी सोना कऽ गोला, खाये के नऽ पीये के बस देखे बदे होला। औढर दानी दिहै, भुखले के अन्न, पियसले के पानी, अन्हरे के डगर देखाये महारानी। दूधनाथ गंगधारी, शिखर पर बैठ के खबर लो हमारी। बम अगड़धत्ता फूंक दे शहर जरै कलकत्ता। जे न पिया गाँजा की कली, उस मरद से औरत भली। पियेस न गांजा खेलेस न जुआ, अइसन पूत जनमतै मूआ। बम, बम, बम, कमायेगी दुनियां, फूंकेंगे हम, गांजा नहीं, दुःख भन्जन हैं, आँखों का जोत कलेजे का मन्जन है।" अलख, कहकर कल्लू ने चिलम उठाकर माथे लगाया और छोटई की ओर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बढ़ा दिया। छोटई महाराज ने चिलम लेकर माथे से लगाया और एक लम्बा कश लिया, चिलम लप से जल उठी, ढेर सारा धुंआँ खींचकर छोटई ने कुम्भक सांध लिया। सांस नहीं रुक सकी तो नाक के दोनों छिद्रों से धुएं को धीरे-धीरे छोड़ना शुरू किया। गांजे की चिलम एक हाथ से दूसरे हाथ बारी-बारी से तब तक आती जाती रही जब तक चिलम से धुआँ निकलना बन्द नहीं हो गया।

छोटई महाराज ने पुनः एक चिलम गांजा निकाल कर रामधनक को दिया और पोथी बन्द करके छुटपुट प्रवचन करने लगे "हम तो कहते हैं कि कलयुग सम नहि आन युग" जो गोसांई जी ने लिखा, वह सही लिखा है। और युगों में यम, संयम और तपस्या की जरूरत है इस युग में तो कुछ नहीं, चाहे जो खाओ, पियो, बस राम का नाम लेते रहो, सभी पाप कट जायेगा। गोसाईं जी ऐसे-वैसे नहीं थे, साफ लिख दिया "जासु नाम सुमिरत एक बारा, उतरै नर-भव सिन्धु अपारा।" एक बार नाम सुमिर लो बस तरन हो गया। यहाँ तो हम लोग भिनसारे से राम नाम करते हैं। एक हमारे भोला भैया हैं, सुबह उठे कि बस किसका पायें, किसका लूटें। एक लोटा पानी दे देते हैं, सोचते हैं, सब क्षमा हो जायेगा। अगर उन्हें मालूम हो जाये कि पानी देने में पाँच पैसा खर्चा होगा तो वह भी नहीं देंगे। अरे भगवान मन पहचानते हैं मन, उनके सामने धन दौलत कुछ नहीं है। जितना हम गांजा जला देते हैं, उतना कोई करे तो मालूम हो। एक लोटा पानी देकर हम छुट्टी नहीं पाते। अब तो चमारो पानी देने लगे, क्या वे भी सरग जायेंगे?"

"क्यों नहीं जायेंगे, पंडितजी?"

सर झुकाकर गांजा मल रहे रामधनक के कान में आवाज पहुंची। उसने चौंककर सिर उठा कर देखा और पूछा, "क्या मगरू! क्या चाहिए?"

"कुछ नहीं बप्पा, नीमक लेने आया था।"

"तब नीमक ले के जा, यहां दुकान है कि सस्तारथ करने आया है?"

तब तक छोटई महाराज ने अपना हाथ उठाकर रामधनक को बर्जते हुए कहा, "नहीं नहीं रहने दो" तुम्हारा लड़का है, अभी बेचारा क्या जाने वेद पुरान की बातें। हाँ मगरू! तुमने पूछा, क्यों नहीं जायेंगे। तो सुन लो" इसलिए कि शुद्रों को सेवा करना लिखा है, पूजा करना नहीं।"

"रैदास भगत कैसे स्वर्ग चले गये?" मगरू ने पूछा।

अब छोटई महराज सम्भल कर अपने बोरे के आसन पर बैठ गये, कुछ खांसकर कड़ी आवाज में बोले, "चार दिन क्रेसर पर झउआ ढो दिया, बंशिया से चार अक्षर खंइचाना सीख लिया, बड़का ज्ञानी बनने लगे। वेद पुरान देखो तब मालूम हो कि रैदास भगत पूर्व जन्म में बाभन थे। उन्होंने अपना कन्धा चीर कर जनेऊ दिखाया था। उस रैदास का जोड़ दोगे? अगर जोड़ देना हो तो अपना कन्धा चीर कर दिखाओ जनेऊ, मैं मान जाऊँगा।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"और सभी बाभन तो कन्धा चीरकर नहीं दिखाते कि वे पूर्व जनम में भी बाभन थे।" मगरू भी तर्क करने के लिए उद्यत दिखाई पड़ने लगा।

"वह क्यों दिखाने जायें? वह तो बाभन हई हैं।" छोटई महाराज ने हाथ नचाकर कहा।

"कौन जाने पूर्व जनम में चमार रहे हों, सबका कन्धा चीर कर देखा जाये यदि जनेऊ का पुराना निशान न मिले तो उन्हें पुराना चमार कहा जाय।"

छोटई एक दम से बिगड़ गये "देखो हमारे मुँह मत लगो, हमसे नेतागिरी नहीं लगेगी, जो सामान लेना हो लो, नहीं जाओ चाहे चुप चाप बैठना हो बैठो।" हम जानते हैं कितना ज्ञान है। तुम्हारा बाप इतना बूढ़ा हो गया, यहां रोज आता है कुछ नहीं बोलता, तुम ज्ञानी हो गये।

अब रामधनक ने सोचा कि बात बिगड़ जायेगी। इसलिए उसने जोर से मगरुआ को डांटा। उसी के साथ सभी चिलमबाज एक स्वर में उसे डांटने लगे। सोलह-सत्रह साल का मगरू सिटपिटा कर चुप हो गया। वैसे रामधनक को बड़ा अच्छा लगा, किन्तु उसने छोटई के रुख को देखकर डांटा–"चुप रहा कर, जो सामान लेना हो ले लो।" कहकर उसने अनुनय के स्वर में कहा–"कक्का, लड़का है बुरा मत मानियेगा।"

"नहीं-नहीं बुरा क्यों मानूँगा? 'बालक बर्रे एक समाना।' फिर जिसका मन भगवान में लग जाता है, वह तो 'सियाराम मय सब जग जानी', सबको अपने राम की तरह देखता है। भला वह अपने राम से बुरा मानेगा?" कहते हुए छोटई ने उठकर दुकान से मगरू को नमक दे दिया।

मगरू को लगा कि अवश्य उससे कहीं गलती हो गई है। उसे पुराना चमार नहीं कहना चाहिए था। मन ही मन पछताता वह अपने घर की ओर लौट पड़ा। वह सोचने लगा, बंशी भैया भी तो बाभन हैं। वही तो यह सब हमसे कहते हैं। उन्हीं की कही हुई बात को मैंने कह दिया। ठीक है, अब बात को बिना पूरी तरह समझे नहीं कहा करूंगा। कल ही तो डाला क्रेशर पर काम करने चलना है। पहले बंशी भैया से मिलकर तब क्रेशर पर जाऊंगा। सोचता-सोचता वह अपने द्वार पर पहुंच गया। उसकी बहन बुधनी दरवाजे पर खड़ी उसका इंतजार कर रही थी। उसने मगरू को देखते ही पूछा–"बड़ी देर कर दी, कहां रह गये थे"?

"कहीं नहीं रे, वहीं छोटई दद्दा हैं न रमायन पढ़-पढ़ कर शुद्रों को गाली दे रहे थे, उन्हीं से कुछ बाता कहनी हो गई।"

"भैया तुम उधर बाता-कहनी कर रहे थे, इधर साग चुरकर बिना नीमक के पड़ा है, बप्पा आयेंगे तो बिगड़ेंगे।"

"बप्पा तो वहीं गांजा का दम मार रहे थे" मगरू ने कहा।

"अच्छा बप्पा तुमको बिगड़े नहीं?" बुधनी ने पूछा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"बिगड़े थे तभी तो भागा-भागा आ रहा हूँ। चल कल क्रेशर पर चलना है, बप्पा ने कहा है।"

दोनों की बात चल ही रही थी कि रामधनक फन्नू के साथ लाठी टेकता आ गया। उसने ऊपरी मन से मगरू को फिर फटकारा और कहा कि "तुम दोनों सुबह क्रेशर पर जाकर काम करो। चार पैसा मिलेगा तभी बिया-बिजौनी खरीदा जायेगा और पेट भी चलेगा। लेकिन वहां पर जाकर बड़ों के मुँह मत लगना।"

मगरू चुपचाप सुनता रहा लेकिन उसके मन में एक फांस कसकती रही कि आखिर शूद्र क्यों नहीं स्वर्ग जायेंगे? उसका गिरा मुँह देखकर फन्नू ने कहा– "देखो बचवा, तोरे बप्पा ठीक कह रहे हैं। हम लोगों को बड़े लोगों से झगड़ा नहीं करना चाहिए।"

"हम झगड़ा कहाँ कर रहे थे कक्का? वह तो छोटई दद्दा कह रहे थे कि...।"

"अरे हाँ-हाँ, मैंने सुना है–ठीक ही तो कह रहे थे, हम लोगों का धरम बस मेहनत मजूरी करना है। अगर यह न होता तो काहे भगवान यह जात में जनम देते।" फन्नू ने एक हाथ से अपने कटे हाथ को सहलाते हुए कहा।

"बंशी भैया तो बताते हैं कि इधर के राजा हमीं लोग थे। जब हम लोग राजा रहे होंगे तब तो हमारी जात को सब लोग अच्छा कहते रहे होंगे।"

"तबै न, भगवान ने सब राज छीन लिया। कुकुरे के आँती में घी नाही न पचा।"

"ऊ तो सब ही का राज चला गया। अब तो कोई राजा नाहीं है" मगरू ने तर्क दिया।

"अच्छा चुप रह"–रामधनक ने जोर से डाँटा। मगरू सिटपिटा कर चुप हो गया।

"परबतिया के लिए लड़का देख आये?" रामधनक ने वार्ता का दौर मोड़ने के लिए फन्नू से पूछा।

"कहाँ भैया, अभी कहाँ, चार पइसा हाथ में आ जाय तब घर से निकलूं।"

"अरे कहीं अहटियाया है कि नहीं?"

"अहटियाया है भइया, चिरूई में लउधर का एक लड़का है।"

"तब काहे देरी कर रहे हो?, जा के 'घरबरी' कर आओ।"

"हाँ भैया, सोच रहा हूँ–लेकिन जवन हालत हम लोगन का है, उहै हालत चिरूइयौ में तो है।"

"हाँ ठीक कहते हो भैया, बहुत बड़ा सूखा परा है। हमको भी तो बुधनी के लिए दुआह लड़के की जरूरत है।" कहकर रामधनक ने लम्बी सांस खींची।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"हाँ भैया, भगवान की मरजी, नाही तो बुधनी का दुलहा तो बड़ा अच्छा था–भगवान उठा लिये। इस बात से रामधनक का गला भर आया। उसने खँखारते हुए कहा–"हाँ, माई-बाप तो अपने बेटवा-बिटिया के सुख बदे सब करते हैं, लेकिन किसी के किसमत तो नहीं न बन जायेंगे।"

"का हुआ था?" फन्नू ने पूछा।

"हैजा हो गया था, दर-दवाई हुई, लेकिन बचा नहीं। बुधनी के किसमत में नहीं था, नंहीं तो जब बुधनी पाँच साल की थी तभी उसकी शादी करके मैंने सोचा था कि अब खाली हो गये" रामधनक ने उसांस लेकर कहा।

"अरे जब रामजी खाली करेंगे तब न आदमी खाली होगा। अब तो बुधनी १४ साल की हो गयी। इतना बड़ा लड़का हमलोगों की बिरादरी में कहाँ मिलेगा?"

"सोच रहा हूं पटना सिल्थम के मैकू से शादी कर दूँ। दो बच्चे हैं, मेहरारू पर साल मरी है। फिर वह हमारे पुराने रिश्तेदार हैं, रिश्तेदारी भी नयी हो जायेगी।"

"हाँ भैया, हैं तो अच्छे आदमी, फिर वह गांव भी अच्छा है। आस-पास बड़े आदमियों का गांव है, हरवाही-चरवाही की कमी नहीं है।"

"हरवाही-चरवाही तो हइये है– वहां दो-तीन ठीकेदार हैं, हमेशा कुछ न कुछ काम-धाम करवाते रहते हैं। कुछ नहीं तो किरेशरे का काम लग जाता है।"

"हाँ भैया, किरेशरे की तो बात ठीक है, लेकिन किरेशर वाले जल्दी मजूरी नहीं देते।"

"ई तो सब जगह का काम है। चाहे किरेशर वाले हों, चाहे ठीकेदार, आखिर आदमी कहाँ जाये? अब कल ही तो मगरूआ, बुधनी किरेशर पर जा रहे हैं।"

"कल जा रहे हैं? परबतिया को भी लेते जाते, अस्सी-भस्सी फेंकेगी। कुछ तो मिल जायेगा। अभी सात साल की है, कुछ कम काम करेगी, लेकिन कुछ तो मिलेगा।"

"अभी उन दोनों को जाने दो। हम बाद में जायेंगे तो अपने साथ लेते जायेंगे। लड़के हैं पता नहीं कैसी पड़े कैसी न पड़े।"

रामधनक के उत्तर को सुनकर फन्नू कुछ उदास हो गया, लेकिन अपनी उदासी को छिपाकर बोला–"ठीक है भैया, जब जाने लगना तब लेते जाना।" दोनों में वार्तालाप पता नहीं कब तक चलता रहता, लेकिन उसी बीच में बुधनी ने पुकारा–"बप्पा हो।"

"का है रे"–कहकर रामधनक ने अपने घर की ओर देखा।

"आओ खा लो।"

"अच्छा...अच्छा..." कहता हुआ रामधनक लाठी टेकता उठ खड़ा हुआ। फन्नू भी उठकर अपने घर की ओर चला गया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

२. पिपरी

सरकारी उपनिवेश पिपरी की समुद्र की लहरों की भांति ऊंची-नीची चौड़ी सड़कों के किनारे सरकारी अधिकारियों के ऊपर-नीचे बने बंगलों के मध्य अधिशासी अभियन्ता आर० के० सहगल का खूबसूरत बंगला शाम के सात बजते ही बिजली के झालरों के जल जाने से जगमगा उठा। झालर के स्थिर बल्ब कुछ इस क्रम से जल बुझ-रहे थे कि लग रहा था, प्रकाश की एक रेखा बंगले के इस छोर से उस छोर तक लगातार दौड़ रही है, जैसे सरकारी विकास के आंकड़े स्थिर रहते हुए भी आगे दौड़ने का भ्रम पैदा करते हैं।

यह सजावट बीएससी० में तीन वर्षों से अनुत्तीर्ण हो रहे सहगल साहब के पुत्र अंजनी सहगल की वर्षगांठ पर की गई थी। सहगल साहब बंगले की सुन्दर सजावट और सारी व्यवस्था से पूर्ण सन्तुष्ट दिखाई पड़ रहे थे, यद्यपि उन्हें यह ज्ञात था कि किन अदृश्य हाथों ने इतनी अच्छी व्यवस्था की है। वे मन ही मन अपनी पत्नी की बुद्धिमत्ता पर मुस्कराये जिसने ठेकेदारों, इन्जीनियरों तथा जे० ई० लोगों को सुन्दर ढंग से इस्तेमाल कर लिया था।

पार्टी में पिपरी के सभी विशिष्ट जन आमंत्रित थे। बाहर से आये अतिथि बरामदे में बैठे गप मार रहे थे या बाहर-भीतर घूम कर व्यवस्था देखने का स्वांग कर रहे थे। बंशी एक वफादार सिपाही की तरह हर मोर्चे पर जूझ रहा था। कभी बंगले की लान में लगे शामियाने की बेतरतीब हो गई कुर्सियों को क्रम देता, कभी गंदे हो गये टेबुल क्लाथ को बदलने के लिए झपटता कि कोई कहता "अरे पान सिगरेट दौड़कर भीतर से लाओ, देखो भोजन करके लोग जा रहे हैं" तो वह बिना यह देखे कि कौन आदेश दे रहा है, तुरन्त कहता "अच्छा साहब" और पान-सिगरेट की तश्तरी लाने दौड़ पड़ता, किन्तु जब देखता कि कोई पान-सिगरेट दे रहा है तो पुनः दौड़कर टेबुल क्लाथ बदलने लगता।

बंशी यह अच्छी प्रकार से जानता था कि शामियाना में खाने वाले या तो सात्विक लोग हैं या साहब के दूसरे नम्बर के जानपहचानी। अव्वल नम्बर वाले तो बाद में भीतर वाले हाल में गोल तकिया के सहारे बैठकर प्याले खनकायेंगे, बोतल पर बोतल पियेंगे-खायेंगे, कोई गाना गायेगा, कोई उल्टी करेगा-'बाउउ-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बाउउउ।' बंशी का मन उस उल्टी की दुर्गन्ध की कल्पना से घिन्ना उठा क्योंकि उसी को उल्टी से गन्दे हो गये बिस्तरे को बाहर करना होगा। ऐसे अवसरों पर बंशी ही विश्वस्त माना जाता है। वैसे तो पच्चीसों चपरासी आज जुटे हैं लेकिन सहगल साहब बंशी को छोड़कर और किसी को भी वहाँ पसन्द नहीं करेंगे। कुछ देर बाद महिलायें भी शामिल होंगी, बत्ती बुझेगी, चालू हो जायेगी ब्लू फिल्म। ब्लू फिंल्म खतम होगी, बत्ती जलेगी, गिरते पड़ते लोग उठेंगे।

नशे के झोंक में कौन किसकी बीवी के कंधे पर हाथ धर देगा कोई ठीक नहीं। अगर किसी ने एतराज किया तो कहेंगे "सारी...थोड़ी –आज" और लड़खड़ा कर फिर सम्भलते हुए अपनी बीवी को निगाहों से तलाशने की कोशिश करते अपनी कार तक जायेंगे। ड्राइवर बढ़कर सम्भालेगा और उन्हें कार का फाटक खोलकर भीतर घुसेड़ेगा। भीतर बीवी बैठी मुस्कराती मिलेगी, फिर पोउओं हर्र-हर्र–करता चला जायेगा। जो नहीं जा पायेंगे वहीं फर्श पर ढहे रहेंगे। अक्सर ढह जाने वालों में बड़े-बड़े ठीकेदार होते हैं। साहब तो ऐसे बुत्त होते हैं कि बंगले की सारी जिम्मेदारी बंशी की ही होती है। ऐसे अवसर पर बंशी को तलवार की धार पर चलना होता है। जरा-सी चूक हो गई तो पता नहीं इस भीड़ में कौन चोर है कौन चाईं, खिसका दे कोई सामान तो बस। इसलिए बंशी काफी चौकसी बरत रहा था।

बंगले के लान का शामियाना अभी भी आमन्त्रित जनों से भरा हुआ था। लोग आते-जाते, खाते जाते थे। यह ताँता शाम सात बजे से लगा था। एक-एक बार में डेढ़ सौ आदमियों की पांत बैठती उठती। माइक पर कोई मादक धुन बज रही थी, ओबरा थाने के हरबंश यादव सादी वर्दी में बड़ी तत्परता से सबके नाश्ते का इन्तजाम देख रहे थे। कभी पानी वालों को ललकारते "इधर देना पानी भाई इधर", कभी पूड़ी वालों को ललकारते। उनके बगल में पिपरी थाने के दरोगा एस. एस. राय तथा अनपरा चौकी के के. डी. राम अपनी पूरी वर्दी में, दौड़-धूप करने वालों को ध्यान से देखते हुए खड़े थे। वे दोनों विशेषकर महिलाओं की सुरक्षा के लिए उन्हीं को देख रहे थे। दरोगा के. डी. राम ने राय दरोगा के कान में एक खूब सूरत महिला की ओर देखकर कहा "वही न जो गुलाबी साड़ी पहने है।"

"हां, वही।"

"वह तो अतिबल सिंह ठेकेदार की पत्नी है।"

"ठेकेदार अतिबल सिंह की पत्नी?"

"क्यों तुम्हें आश्चर्य क्यों हो रहा है?"

"अभी-अभी वह इन्जीनियर खन्ना से उधर जाकर पता नहीं क्या बात करके बड़े जोरों से हँसी थी। खन्ना भी खूब हँस रहा था फिर इतनी जवान उस बूढ़े की पत्नी?"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"अरे भाई ठेकेदार की पत्नी है, किसी ठेके की बात होगी।" राय दरोगा ने एक आँख मारकर कहा। फिर दोनों ठठाकर हँस पड़े। यादव दरोगा ने एक नयी खोज जोड़ी कि यह अतिबल सिंह की असली पत्नी नहीं है।

"अरे छोड़ो यार, इससे हम लोगों से क्या मतलब? बड़े आदमी हैं, मिनिस्टर के आदमी हैं और अपने काम के आदमी हैं, मैं तो बस इतना जानता हूँ", राय दरोगा ने भोजन कर रहे आमंत्रित मेहमानों पर अपनी निगाह जमाते हुए कहा। उनकी नजर सहगल साहब पर पड़ी जो लखनउवा पाजामा-कुर्ता पहने आने वाले अतिथियों का हँस-हँस कर स्वागत कर रहे थे। तीनों उन्हीं की ओर चल पड़े कि सहगल साहब मुड़कर बंगले के बरामदे में चले गये और बंशी को इशारे से अपने पास बुलाकर कहा "जरा अंजनी का पता लगाओ, वह कहां रह गया? दस बज गये अब तक उसे आ जाना चाहिए था।"

"अच्छा सरकार" कहकर जैसे ही बंशी मुड़ा कि अंजनी मोटर सायकिल को बेतहाशा भगाता हुआ बंगले के फाटक पर आ गया। उसके घबराये हुए चेहरे को देखकर सहगल ने घबरा कर पूछा—'क्या बात है बेटे। इतना घबराये हुए क्यों हो?"

"एक्सीडेन्ट हो गया", अंजनी ने हकलाते कहा।

"किसका एक्सीडेन्ट?"

"मोटरसायकिल का।"

"अरे साफ-साफ बताओ। तुम्हें कहीं चोट तो नहीं लगी? बार-बार मना करता हूँ कि इतनी तेज मोटर सायकिल मत चलाया करो", सहगल साहब इतनी बात एक ही सांस में कह ले गये। बाप-बेटे की मिली-जुली आवाज सुनकर तीनों दरोगा, डॉ. एम. रमन, ठेकेदार अतिबल तथा कुछ अन्य विभागीय अधिकारी जुट गये। डॉ. रमन ने तुरन्त अंजनी का सर से पांव तक मुआइना किया और कहा "कोई खतरे की बात नहीं है, पांव में खरोंच है। एक ए. टी. एस. अभी लगाये देता हूं" कहते हुए अपने साथ आये कम्पाउन्डर से ए. टी. एस. मंगवा कर अंजनी को लगा दिया। एक पर्ची पर पच्चीसों दवाएं लिखकर उसके खाने की विधि समझाने लगे।

दरोगा राय अपने अवसर की ताक में ऐंठते रहे। वह सोच रहे थे कि यह खूसट जल्दी चुप होता तो हम भी कुछ एहसान लेते लेकिन डाक्टर की हिदायतें हनुमान की पूंछ की तरह बढ़ती ही जा रही थीं। दरोगा राय से नहीं रहा गया तो उन्होंने डाक्टर के बात के बीच में ही बोलना शुरू कर दिया—"यह तो बताओ, कहाँ एक्सीडेन्ट हुआ? किससे हुआ? कैसे हुआ?"

"बैठ जाओ बैठ जाओ, नर्वस मत होओ, हम हैं न" कहकर रमन ने अंजनी के सर पर प्यार से हाथ फेरा। यह खूसट हाथ नहीं लगाने देगा दरोगा राय

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ने मन ही मन डाक्टर को एक मोटी गाली दी। तब तक बंशी दौड़कर एक आराम कुर्सी भीतर से ले आया। अंजनी उस पर बैठ गया।

"हां, अब बताओ, कहां, कैसे, किससे एक्सीडेन्ट हुआ?" राय ने अपने प्रश्न को एकदम छोटा कर दिया।

"हां-हां बेटा, अब बताओ। लेकिन जरा अपने चोट लगे पांव को सीधा कर लो और हां जिस बांह में इन्जेक्शन लगा है, बंशी! जरा गरम पानी लाओ, अभी सिकाई कर दूं।" डॉ. रमन ने बंशी को हिदायत दी।

तब तक अंजनी की मम्मी को पता चल गया। वह बेतहाशा–"हाय मेरे अंजनी को क्या हो गया" कहती भागती हुई आई। उनके पीछे-पीछे उनकी महिला मण्डली भी भागती हुई आकर अंजनी के इर्द-गिर्द खड़ी हो गई। इस धकापेल में दरोगा साहब अंजनी से काफी पीछे हो गये। "साले का हाथ-पांव टूट गया होता, –छिनार कहीं की" दरोगा ने अंजनी की मम्मी को मन ही मन गाली दी। पूरे आयोजन में एक हड़कम्प-सा मच गया। सहगल साहब ने "अरे भाई कुछ नहीं हुआ, आप लोग चलिए खाना खाइये" कहते हुए किसी प्रकार समझा बुझा कर सबको यथावत किया। अंजनी की मम्मी लगातार अंजनी का सर सहलाये जा रही थी। उधर दरोगा साहब गुल्ली-डन्डा के उस खिलाड़ी बच्चे की तरह अपने पदाने के दांव का इन्तजार कर रहे थे, जो शारीरिक रूप में कमजोर हो और दान भी पा गया हो किन्तु खिलाड़ियों की आपाधापी में मौका न मिल रहा हो।

किसी प्रकार अंजनी की मम्मी आश्वस्त हुई कि उनके अंजनी को कुछ नहीं हुआ है। मिसेस अतिबल ने आँख मूँद कर कहा–"थैंक्यू गाड", सोलह-सत्रह वर्ष की मिस रोजी ने नारा लगाया–"मेरा अंजनी जिन्दाबाद!" फिर वह "हैप्पी बर्थ डे टू यू" गाने लगी।

हंगामा थमा तो दरोगा ने फिर अपना प्रश्न दुहरा दिया। अंजनी आराम कुर्सी पर आगे को झुक कर बैठ गया और बड़ी अदा से बोला–"ओ इस चौराहे से पीछे वाला चौराहा है न अंकल, वहां पर एक देहाती लड़का एक लड़की के साथ सर पर गठरी रखे एकदम से सड़क पार करने लगा। मैं जल्दी-जल्दी भागा आ रहा था कि कहीं पापा बिगड़ें न। आप तो जानते ही हैं, हमारे पापा हमको बंगले से बाहर नहीं जाने देना चाहते।"

सहगल साहब मुस्कराये और बोले "वाह बेटा, जितनी छूट तुझे देता हूं उतनी छूट हमारे पापा ने हमें नहीं दी थी।"

"अरे हम लोगों का जमाना कुछ और था, उसकी बात मत करिये–"हां बेटे, आगे क्या हुआ?" दरोगा राय ने वार्ताक्रम को जोड़ते हुए कहा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"हुआ क्या? उसी लड़के से टकरा गया। लड़की हाय तोबा मचाने लगी देहातियों की भीड़ मारो मारो कहके दौड़ी, लेकिन मैं निकल आया।"

"शब्बाश बेटे! बहादुर लड़के हो। अच्छा किया नहीं तो जानते हो हिन्दुस्तानियों की एक अजीब मेन्टेलिटी हो चली है कि हर सुविधा-सम्पन्न से असुविधाभोगी चिढ़ता है। उसे बेइज्जत करना चाहता है, ये देहाती बड़े बद्तमीज होते हैं। जरूरत पर खीसें निपोरेंगे। इनकी दवा तो बस यही दरोगाजी जानते हैं।

"अरे साहब, आप भी क्या बात करते हैं! जहां दो हंटर लगाया, सब देहातीपन भूल ज़ाता है।" राय दरोगा ने अकड़ते हुए कहा।

"अब ये थाने पर रिपोर्ट लिखाने जायेंगे", सहगल साहब ने चिन्ता व्यक्त की।

"थाने पर क्या जायेंगे? हाँ कोई नेता-सेता मिल गया होगा तो लिवा ले जा सकता है", दरोगा राय ने अपनी राय जाहिर की।

"नेताओं की कमी है? आलू की तरह हर जगह मिलेंगे। कुछ सड़ते हुए कुछ बिकते हुए। न चाहते हुए भी आदमी लाचारी में आलू और नेता का इस्तेमाल कर ही रहा है", यादव दरोगा ने कहा।

"क्या जमाना आ गया! तीन-तीन पैसे के आदमी, पहन लिया खद्दर, इन्कलाब जिन्दाबाद बोलने लगा। हमारा वश चले तो गोली से उड़वा दें। जब देखो तब हड़ताल, तालाबंदी। राष्ट्र के उत्पादन का जितना बड़ा नुकसान ये नेता करवाते हैं उतना कोई नहीं।" सहगल साहब ने तमतमाये स्वर में कहा।

"सरकार को चाहिए कि हड़ताल और तालाबंदी पर तो एक दम से रोक लगा दे।" अब अतिबल सिंह ठेकेदार ने वार्ता में हिस्सेदारी की।

"आज नहीं तो कल यह तो होना ही है। हमारे आप के कहने से कुछ नहीं होगा, समय सब करवा देगा" दरोगा डी. राम ने अपना मौन भंग किया।

"कब होगा? जब देश रसातल को चला जायेगा? देख लीजिएगा अगर ऐसे ही इन लोगों का मन बढ़ता गया तो ये बड़े-बड़े प्लान पूरे नहीं होंगे। आज सरकारी मजदूर हड़ताल कर रहे हैं, कल स्वतंत्र मजदूर भी संगठित हो जायेंगे। फिर तो बड़े प्रोजेक्टों का निर्माण रुक जायेगा। देश की कितनी बड़ी आर्थिक हानि होगी? यू कान्ट इमेजिन।" कहते हुए सहगल साहब पास पड़ी कुर्सी पर बैठ गये। उनके साथ ही तीनों दरोगा, डॉ. रमन तथा ठेकेदार अतिबल सिंह भी पास की कुर्सी पर बैठ गये। एकाएक सहगल साहब को कुछ याद आ गया। उन्होंने बंशी को बुलाकर कहा "बी. यम. बाबू को बुलाओ तो।"

बंशी बी. यम. बाबू को बुला लाया। बी. यम. बाबू ने पहुंचते ही खबर दी कि "साहब मैं आप ही के पास आ रहा था। वो सब थाने पहुंच गये हैं।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"कौन सब?" सहगल साहब ने पूछा।

"वही लड़का जो मोटर सायकिल की चपेट में आ गया था। उसके साथ चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी संघ के अध्यक्ष चौबे जी भी हैं।"

"क्या चौबे? वह तो बड़ा हरामी है" अतिबल सिंह ने कहा।

"बंशी जरा फोन इधर लाना" राय दरोगा ने गुस्से में फनफना कर कहा– "देखता हूं।"

बंशी फोन ले आया दरोगा ने थाने पर हिदायत दी कि रिपोर्ट न लिखी जाय। अगर लिखी भी जाय तो कच्ची। कहकर उन्होंने फोन रख दिया।

"अनपरा प्रोजेक्ट तक जाने वाली सड़क का नक्शा लाना, यहीं है न?" सहगल साहब ने अपने बाबू को आदेश दिया।

"जी सर, अभी लाया" कहकर बाबू नक्शा ले आया। ठीकेदार साहब फैलाये जा रहे नक्शे पर सबसे पहले झुके, उनके साथ ही तीनों दरोगा भी झुके। सहगल साहब ने बताना शुरू किया। "देखिए यहां से यह सड़क चलेगी। पिपरी से भुन्नौली, बनरहवा, भलुआ होते हुए अनपरा तक जायेगी। यह सड़क इस विशाल जलाशय के किनारे-किनारे चलेगी, करोड़ों का काम है। अब आप सोचिए अगर इसी प्रकार छोटी-छोटी बात पर मजदूर संगठित होने लगेंगे तो कैसे ये गांव उजाड़े जायेंगे? फिर निर्माण कार्य में एक दो मजदूर मरते ही हैं, किसी को पैसा नहीं मिला, किसी लड़की के साथ बलात्कार हुआ, जब इतनी बड़ी भीड़ एक जगह पर जुटती है तो कुछ न कुछ तो होगा ही। अब इन्हीं छोटी-छोटी बातों पर हड़ताल होगी तो कैसे काम चलेगा?"

"कुछ नहीं साहब, सरकारी काम तो होकर रहेगा। इसका टेण्डर कब तक निकलेगा?" ठेकेदार अतिबल सिंह अपने काम पर आये।

"जल्दी ही होने वाला है, बस बजट आ जाये।"

"कुछ काम हमें भी दीजिएगा साहब" दरोगा राय ने कहा।

"तुम क्या करोगे काम लेकर?"

"अपने लड़के को इस लाइन पर निकालना चाहता हूँ। आप तो जानते ही हैं कि अब नौकरी सौकरी मिल नहीं रही है। फिर मिल भी जाय तो उसमें रखा ही क्या है? आप की दस्तूरी बदस्तूर रहेगी" कहकर राय दरोगा ठठाकर हँसे, उन्हीं के साथ सहगल एवं अन्य लोग भी हँसे।

"हां साहब, हम लोगों को कुछ काम दीजिए। आप के रहते अगर नहीं मिला तो कभी नहीं मिलेगा" यादव दरोगा ने वरजस्ता जोड़ा।

"अरे भाई पहले बजट तो आने दो। इन मंत्रियों से तो और भी देश का विनाश हो रहा है। बीस परसेन्ट उन्हीं को चाहिए। वैसे देखा जाय तो हमारा मंत्री

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बड़ा ईमानदार है। अपने कमीशन से मतलब रखता है। यह नहीं कि कमीशन भी लिया तंग भी किया।'' सहगल साहब ने मंत्री जी की तारीफ की।

''आज के जमाने में कौन नहीं कमा रहा है साहब? वैसे आदमी बहुत अच्छे हैं जैसे बड़े घर के हैं वैसे बड़ापन भी है और सभी की तरह लूट-खसोट नहीं करते। अगर खुद कमाते हैं तो कमवाते भी हैं। उन्हें तो मैं घर से जानता हूं। जब वह पुलिस मंत्री थे मेरा एक बहुत बड़ा काम किया था'' दरोगा डी. राम ने कहा। डॉ. रमन को इस वार्ता में कोई रुचि नहीं थी। उन्होंने उकता कर अपनी घड़ी देखी, रात्रि के पौने बारह हो चले थे। लान की भीड़ समाप्त हो गई थी। बंगले के भीतर से महिलाओं की हँसी की आवाज आ रही थी। उन्होंने कहा– ''हो गया है वक्त कोई काम चले। मेरे हमनशीं चलो अब जाम ढले।''

''वाह-वाह क्या बात कही। भाई मानना पड़ेगा डॉ. साहब को, समय की बात किस अदा के साथ कही है। बंशी देखो सब तैयार है न?'' सहगल साहब ने बंशी को इशारा किया। बंशी ने हां कहा और पूरी मंडली उठकर भीतर हाल में चली गई। कितनी ही देर तक जाम पर जाम चलते रहे। सभी बहकी-बहकी बातें कर रहे थे कि बंशी ने दरोगा राय से कहा–''साहब आप का फोन आया है।''

''कहां से आया साला? किसने बता दिया कि मैं यहां हूँ? भगा दो कह दो मैं यहां नहीं हूं।'' दरोगा राय नशे की पूरी रवानी में थे।

''थाने से छोटे दरोगा का है।''

''जरा यादव, तुम देखो तो क्या है? तुम भी तो पुराने हो, थाने से... थाने से आया है?'' बड़ी देर तक वे बड़बड़ाते रहे। यादव जी को अभी थोड़ी कम चढ़ी थी। उन्होंने फोन उठाकर कहा ''हल्लो...।''

उधर से आवाज आयी–''यस सर मैं देवी प्रसाद बोल रहा हूं। यहां पर तो पूरा बवाल हो जायेगा। चौबे जी अंजनी के नाम बाई नेम रिपोर्ट लिखाना चाहते हैं।''

''अरे लिख लो–लिख लो बाद में फाड़ देना।''

''नहीं साहब वे पक्की रिपोर्ट लिखवाकर उसकी नकल चाहते हैं।''

''ऐं–अरे भाई, मैं तुम्हारे साहब को फोन दे रहा हूं, उन्हीं से समझ लो।''

''अच्छा साहब? आप हैं, मैं घबराहट में पहचान ही नहीं पाया–नमस्कार।''

''नमस्कार, अब मैं तुम्हारे साहब को फोन दे रहा हूं।'' कहकर यादव जी ने राय साहब की ओर फोन का चोंगा बढ़ाया। राय साहब ने फोन के चोंगे को मुँह से लगाया और कहा–''क्या कहा? पक्की नकल? अरे उसके हाथ पांव को पक्का कर दो मैं सब देख लूंगा। साले तीन कौड़ी के–दिमाग खराब हो गया है।'' कहते हुए उन्होंने फोन के चोंगे को वहीं जमीन पर रख दिया। बंशी ने उसे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उठाकर पुनः यथास्थान रख दिया। अब सभी अपनी पूरी रवानी में आ चुके थे। सहगल साहब ने लड़खड़ा कर उठते हुए कहा "बंशी!"। बंशी ने बढ़कर उन्हें सम्भाला। सभी लड़खड़ाते हुए उठे और जिस कमरे में ब्लू फिल्म चलने वाली थी उधर चल पड़े। बंशी ने सबको ले जाकर कुर्सियों पर बिठा दिया। महिलाएं वहां पर पहले से ही बैठी हुईं थीं। मिसेस सहगल ने और मिसेस सिंह ने बढ़कर अपने-अपने पति देवताओं को सहारा देकर अपनी बगल में बिठाया। तीनों दरोगा भी स्थान देखकर बैठ गये। हाल की बत्ती गुल हो गई और रतिक्रिया के नंगे चित्र आने लगे। बंशी एक कोने में कुछ देर तक खड़ा होकर देखता रहा फिर वह बाहर लान में आ गया कि देखें और सब सामान सुरक्षित है या नहीं। तभी चौकीदार ने आकर बताया कि "बंशी भैया–एक लड़की तुम्हें पूछ रही है। उसे मैंने फाटक पर ही रोक दिया है। बहुत रो रही है। बता रही है कि वह तुम्हारे गांव की है।"

"कौन है?" कहता हुआ बंशी फाटक की ओर झपटते हुए पहुंचा तो देखा कि एक आदमी के साथ बुधनी खड़ी रो रही है। उसकी धोती और हाथ खून से लथपथ है। बंशी को देखते ही वह पुक्का फाड़कर रोने लगी।

"क्या हुआ? क्या हुआ?" कहता हुआ बंशी उसके पास पहुंचा तो साथ के आये आदमी ने उसको पालागी कहा। उसने निगाह उठाकर उसकी ओर देखा तो उसे पहचान गया। उसने पूछा "क्यों रमजान, क्या बात है?"

"कुछ नहीं भैया, मैं साहब के बंगले से आ रहा था। चौबे जी ने मुझे रोककर बताया कि चलो थाने रिपोर्ट लिखानी है। वहां पर गया तो दरोगा ने उन्हें मारपीट कर आर्म्स एक्ट में बन्द कर दिया। जिस लड़के को चोट लगी है उसने तुम्हें बताया, बस मैं सीधा इस लड़की के साथ तुम्हारे पास चला आया।"

अब बंशी के सामने अंजनी की बातें, दरोगा का फोन सब स्पष्ट हो गया। उसने बुधनी को दिलासा दिया, वह हपस-हपस कर रोये जा रही थी।

"भैया जल्दी चलो नहीं तो पुलिस वाले मगरू भैया को भी मारेंगे" कहकर बुधनी बिलबिला कर रोने लगी।

"बस-बस मैं चल रहा हूं, मगरू को कैसे मारेंगे?" कहते हुए बंशी बंगले के भीतर झपटता हुआ पहुंचा तो देखा फिल्म समाप्त हो चुकी है। वासना की उत्तेजना से तमतमाये चेहरे बाहर निकल रहे हैं। उसने निगाह दौड़ाकर दरोगा राय को ढूंढ़ा, जो मिसेज सहगल को लगातार घूरे जा रहे थे। मिसेज सहगल रह-रह कर अपने पति को कंछी निगाहों से देखती जो सोफे पर बेहोश पड़े थे। ठीकेदार अतिबल सिंह हाथ पांव फैलाकर लम्बे हो चुके थे। उनकी पत्नी यादव दरोगा का मुआइना कर रही थी। डॉ. रमन का कहीं पता नहीं चल रहा था। हाल में अति मद्धिम प्रकाश था। बंशी ने दरवाजे पर खड़े होकर पैर बढ़ाकर एक कुर्सी में ठोकर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मारी। कुर्सी भड़भड़ा कर उलट गई। अतिबल एवं सहगल साहब को छोड़कर और सभी चौंक पड़े। दरोगा राय का हिप्नोटिज्म टूटा। उन्होंने पूछा–"कौन है?"

"हम हैं हुजूर बंशी।"

"अच्छा तुम हो? क्या काम है?"

"कुछ नहीं सरकार, मेम साहब को दूध पिलाना था वही चला आया।"

"जाओ आज वह दूध नहीं पियेंगी।" दरोगा राय ने आदेशात्मक स्वर में कहा।

"क्यों नहीं पीयूंगी? कहती हुई मिसेज सहगल उठकर अपने बेड रूम की ओर चल पड़ीं। दरोगा राय भी उद्यत हुए कि मिसेज सहगल ने दबी जबान से किन्तु कठोर स्वर में डांटा–"दिमाग तो ठीक है?"

दरोगा राय ठिठक कर बंशी की ओर देखने लगे। उन्हें यह लगा कि मेम साहब का इशारा शायद बंशी की उपस्थिति की ओर है। उन्होंने बंशी को आंख के इशारे से अपने पास बुलाकर एक ५०/- का नोट उसकी हथेली पर धरा और कहा–"जाओ...।"

बंशी ने नोट हाथ में लेते हुए कहा "हुजूर हमारा ए-एक काम कर दें।"

"क्या काम है? जल्दी बोलो।"

"अंजनी साहब ने जिस लड़के का एक्सीडेन्ट किया है, वह हमारे गांव का है। छोटे दरोगा साहब उसे मारना-पीटना चाहते हैं और चौबे ऽऽऽ...।"

"अरे यह लो लिख देता हूं, सब काम हो जायेगा" कहकर एक कागज के टुकड़े पर दरोगा ने कुछ लिख कर दिया और आगे बढ़ गया। बंशी चौबे जी के विषय में भी कुछ कहना चाह रहा था परन्तु उसे कहने का मौका ही नहीं मिला। जो कुछ मिल गया था उसे ही लेकर बंशी दौड़ा-दौड़ा फाटक पर आया, देखा बुधनी अभी भी सिसक रही है। वह उसे लेकर थाने पर पहुंचा। थाने के बाहर पचासों आदमी खड़े थे। थाने के फाटक पर सशस्त्र पुलिस तैनात थी। बुधनी के साथ जैसे ही बंशी भीड़ में पहुंचा, बुधनी के हाथ और धोती में लगे तमाम खून को देखकर भीड़ उत्तेजित होकर नारे लगाने लगी। बंशी ने सारे मामले को बड़े धैर्यपूर्वक समझा और एक ऊंची जगह पर खड़ा होकर बोलने लगा "भाइयों आप लोग शान्त रहें। मैं दरोगा जी से मिलने जा रहा हूं। हमारे आपके अध्यक्ष चौबे जी थाने में बन्द हैं, हो सकता है कोई रास्ता निकल आये। इस प्रकार नारे लगाने से मामला बिगड़ भी सकता है।"

भीड़ शान्त हो गई। बंशी ऊंचे स्थान से उतर कर थाने के फाटक की ओर बढ़ा। थाने के फाटक पर खड़ी पुलिस ने उसे रोका तो उसने राय दरोगा का पत्र दिखा दिया। तब पुलिस वालों ने उसे अन्दर जाने दिया। अन्दर जाकर उसने देखा कि मगरू खून से लथपथ थाने के बरामदे में पड़ा कराह रहा है। थाने का मुंशी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अपनी टेबुल पर बैठा कुछ लिख रहा है। वह मुंशी के पास पहुंचा और सलाम करके उसने दरोगा की चिट्ठी उसे दे दी। मुंशी ने पत्र को पढ़ा और कहा "बैठो।"

बंशी वहीं पास के स्टूल पर बैठ गया और डरते-डरते पूछा "चौबे जी कहां है?"

"हवालात में हैं और कहां रहेंगे? कट्टा लेकर थाने में रिपोर्ट लिखाने आये थे। थाना है कि कोई मजाक" कहकर मुंशी ने बंशी को घूरकर देखा। आगे और कुछ पूछने की बंशी की हिम्मत छूट गई। उसने थाने में बहस करना व्यर्थ समझा। वह सीधे दरोगा से मिलना चाहता था। मुंशी सिर झुकाकर फिर कुछ लिखने में तल्लीन हो गया। बहुत देर तक वह लिखता-पढ़ता रहा। बंशी की अकुलाहट बढ़ने लगी। हवालात से कराहने की आवाज सुनकर बंशी ने अन्दाजा लगा लिया कि यह चौबे जी ही होंगे। वह बार-बार "दरोगा जी को जल्दी बुला दीजिए" कहने को सोचता पर उसका साहस जवाब दे जाता। बड़ी देर के बाद मुंशी ने फाइल पर से अपना सर उठाया, एक बीड़ी सुलगाई और थाने के चौकीदार को बुलाकर राय दरोगा वाला पत्र देकर उसे कहा "छोटे साहब को दे आओ।" चौकीदार के जाने के आधे घण्टे बाद छोटे दरोगा जी आये। बंशी ने खड़े होकर उन्हें सलाम किया।

"तुम्हीं यह पत्र लेकर आये हो?" छोटे दरोगा ने बंशी की आंख में आंख डालकर ऐसे पूछा जैसे उसने बहुत बड़ी गलती की हो।

"जी सरकार" बंशी ने डरते हुए कहा।

"ठीक है मगरू को ले जाओ। रिपोर्ट लिखी जा चुकी है।"

"और सरकार चौबे जी?" बंशी ने सहमते हुए कहा।

"कौन चौबे जी? तुम चौबे के लिए आये हो कि मगरू के लिए?"

"दोनों के लिए आए हैं सरकार।"

"मगरू को ले जाकर दवा कराना हो कराओ। हम चौबे की दवा कर रहे हैं।

"आखिर उनकी गलती क्या है हुजूर?"

"गलती पूछते हो?...थाने में आकर हमसे अकड़ने लगा। मैंने कहा बाहर जाओ तो लगा गांधी बाबा बनने। यहीं पर धरना देकर बैठ गया। मैंने सोचा दो थप्पड़ मार दूँ, चला जाएगा। एक थप्पड़ मारा तो हमसे उलझ गया। हमारी वर्दी फाड़ दी...साऽला। मुंशी जी जरा हवालात तो खुलवाओ और हमारा बेंत दो, देखूँ साला हमारा क्या कर लेता है। बहुत होगा ट्रांसफर हो जायेगा।" कहता हुआ दरोगा हाथ में बेंत लेकर हवालात की ओर चल पड़ा। थोड़ी ही देर में हवालात से चीखें उमड़ने लगीं। प्रशासन के लिए अंग्रेजों द्वारा बनाए गए जो कानून उसके

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कर्मचारियों के हृदय में रोब का भाव पैदा करते थे, वही कानून आज भी हैं जिसके कारण परतन्त्रता काल में जो पुलिस गान्धी बनना जुर्म समझती थी वही पुलिस आज भी गान्धी बनना जुर्म समझती है।

बंशी किंकर्तव्य विमूढ़-सा कभी बरामदे में खून से सने बेहोश मगरू को देखता, कभी हवालात से आती चीखों को सुनता खड़ा रहा। तभी थाने के किसी सिपाही ने आकर कहा–"अरे यहां खड़े मुँह क्या ताक रहे हो? पहले मगरू को अस्पताल ले जाकर उसकी जान बचाओ। चौबे के चक्कर में मत फँसो। वह तो छूटने से रहे। जिसको बचा सकते हो उसे बचाओ।"

बंशी ने मारे दहशत के यह भी नहीं देखा कि किस सिपाही ने यह बात कही है। उसने दौड़कर बेहोश मगरू को अपनी पीठ पर लादा और चौबे की चीख को सुनता हुआ थाने के बाहर आ गया। थाने के बाहर भीड़ अभी भी जमी हुई थी। बंशी की पीठ पर लदे बेहोश मगरू को खून से सना देखकर बुधनी बिलबिलाकर रो पड़ी। उसका रोना था कि भीड़ फिर उत्तेजित होकर नारे लगाने लगी। बंशी ने भीड़ और नारे पर ध्यान नहीं दिया। वह मगरू को पीठ पर लादे सीधा अस्पताल की ओर बढ़ा। बंशी जल्दी से जल्दी मगरू को अस्पताल में भर्ती कर कुछ आगे करने की सोच रहा था। कुछ लोग बंशी के पीछे-पीछे मगरू को सहारा देते चल पड़े। बुधनी रोती-चिल्लाती उन लोगों के पीछे दौड़ने लगी।

जब लोग अस्पताल पहुंचे तो सुबह हो चली थी। बंशी ने ड्यूटी पर तैनात डाक्टर से बात करके मगरू का प्राथमिक इलाज करवाया। बुधनी को आवश्यक हिदायतें दीं तथा अपने जान पहचान के रमजान चपरासी को वहीं पर देखभाल करने के लिए कहकर वहां से सरपट थाने की ओर भागा।

☐

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

३. बंगले की रात

रात दरोगा से पत्र लेकर जैसे ही बंशी थाने की ओर चला, दरोगा लड़खड़ाता हुआ मिसेज सहगल के शयन कक्ष की ओर चल पड़ा। उसने दूर से मिसेज सहगल को जिस कमरे में घुसते देखा था, उसके द्वार पर जाकर आहट लेने लगा। भीतर से कूलर चलने और खर्राटे की आवाजें आ रहीं थीं। उसने द्वार के पल्ले पर हल्के हाथों का दबाव डाला, दरवाजा भीतर से बन्द था। वह बेचैन होकर इधर-उधर देखने लगा। वह समझ नहीं पा रहा था कि मिसेज सहगल इतनी जल्दी कैसे खर्राटे लेने लगीं। दरोगा ने अपने नशीले मस्तिष्क पर जोर डालकर यह निर्णय लेने का प्रयास किया कि वह सही स्थान पर है या गलत। काफी सोचने के बाद उसे आभास हुआ कि वह गलत स्थान पर आ गया है। फिर भी उसका मन शंकालु बना रहा। इसलिए उसने कमरे के अन्दर झांकने का प्रयास किया। कमरे के इधर-उधर टहल कर उसने देखा कि सारी खिड़कियाँ और दरवाजे बन्द हैं। तभी उसकी निगाह खिड़की के शीशे पर पड़ी जिस पर से एक छोटे दायरे का पेन्ट उखड़ गया था। उसने उसी पर अपनी आंखें चिपका कर भीतर की ओर झांका। भीतर अंजनी और मिस रोजी एक दूसरे से लिपटे सोये थे। वह काफी समय तक उन्हें देखता रहा। तभी बंगले का चौकीदार उधर से घूमता हुआ निकला और उसने एक आदमी को खिड़की से चिपका हुआ पाया। पहले तो वह डरा कि बड़े लोगों की बात है, पता नहीं क्या माजरा हो। तत्क्षण ही उसने कुछ सोचा और लाठी फटकारता, "कौन है? कौन है?" कहता दरोगा की ओर लपका। दरोगा ने जल्दी से खिड़की से अपना सर हटाकर कहा–"मैं हूँ, दरोगा पिपरी।" उनके उत्तर को सुनकर चौकीदार एक बार सहमा किन्तु अपने मालिक को अपनी चौकस चौकीदारी का प्रमाण देने के लिए न सुनने का बहाना कर जोर-जोर से "खबरदार भागना मत–नहीं तो हाथ-पाँव तोड़ दूंगा" कहता लाठी ताने दरोगा की ओर लपका। दरोगा डर गया कि कहीं सचमुच यह लाठी चला ही न दे, इसलिए उसने जोर से डांटकर कहा "मैं हूं राय दरोगा।"

"अरे हजूर आप?" कहकर चौकीदार लाठी नीचे कर रुक गया। दरोगा राय ने मन ही मन उसे तथा मिसेज सहगल को एक मोटी गाली दी और अपनी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इस नासमझी पर पछताने लगा। इतना शोरगूल सुनकर बंगले में जाग हो गई। बाहर से आये सभी चपरासी जो इधर-उधर सो रहे थे, अपनी मुस्तैदी का परिचय देने के लिए अपने-अपने स्थान से "पहुंचे...पहुंचे, जाने मत देना...मारो साले को" ललकारते हुए उसी ओर दौड़ पड़े। थोड़ी ही देर में अंजनी के कमरे के सामने एक छोटी सी भीड़ इकट्ठी हो गई। मिसेज सहगल आंख मलती हुई अपने बरामदे में आकर खड़ी हो गईं। उन्होंने राय दरोगा को देखते ही सारा माजरा समझ लिया। मिस रोजी अंजनी के बगल वाले कमरे से नाइटी पहने हड़बड़ाई हुई निकल आई। घटना को अपने से दूर जानकर लम्बी सांस खींच कर बोली "ओह गाड-बहुत अच्छा ड्रीम देख रही थी, आन्टी सब खराब हो गया" कहती वह मिसेज सहगल के बगल में जाकर खड़ी हो गई फिर कुछ रुक कर बोली "क्यों आन्टी, कुछ पता चला कौन था?"

रोजी के प्रश्न को सुनकर चौकीदार पूरी बात बताने के लिए आगे बढ़ा। दरोगा ने सोचा कि अगर यह मूर्ख बता देगा कि मैं अंजनी के कमरे में झांक रहा था तो बड़ी भद्द होगी। यह सोचकर पहले तो वह घबराया फिर स्वयं को संयत कर चौकीदार के बोलने से पहले ही बोला–"मिसेज आपका चौकीदार बहुत फिट है। मैं दरोगा आदमी, मैंने सोचा–देखूँ सभी मस्ती में सो तो नहीं रहे हैं? यह देखने के लिए राउण्ड पर निकला तो आपका चौकीदार एकदम बाज की तरह झपटता आ गया। वह तो कहिए मैंने तुरन्त अपना नाम बता दिया नहीं तो इसकी लाठी तो चल ही चुकी थी। वाह-बहुत अच्छा चौकीदार है, इसे तो इनाम देना चाहिए" कहकर दरोगा ने अपनी जेब से पांच रुपए निकाल कर चौकीदार की ओर बढ़ाया। चौकीदार ने हिचकते हुए नोट की ओर देखा तो मिसेज सहगल ने बढ़ावा दिया–"ले लो, ले लो बहुत अच्छा काम किया है तुमने" और मुस्कराईं।

"हाँ-हाँ लो अभी मेम साहब भी तुम्हें इनाम देंगी"–दरोगा ने कुछ झेंपते हुए कहा।

"अरे वह तो मेरे घर का है, उसे तो इनाम मिलेगा ही। इन्हीं लोगों के सहारे तो लुच्चों, लफंगों के बीच हम लोग सुरक्षित हैं" मिसेज सहगल ने दरोगा राय की आँख में सीधे ताकते हुए कहा।

दरोगा राय तिलमिला कर रह गया। लेकिन पांच रुपए की नोट को वह चौकीदार की ओर बढ़ाए रहा। चौकीदार ने रुपया ले लिया। उसका रुपया पाना था कि सभी चपरासी अपनी-अपनी डींग हांकने लगे। एक ने कहा–"मैंने पहली ही आवाज में ललकारा था।"

दूसरे ने कहा–"अरे भाई मुझसे तो बड़ी गलती हो गई, मैंने तो-मारो साले को कह दिया।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"इससे क्या हुआ? कोई तुमने जानबूझकर हुजूर को गाली दी?" तीसरे ने समझाया।

बड़ी देर तक गपड़-चोंथ होती रही। पांच रुपया इनाम पा कर चौकीदार मन ही मन काफी अकड़ गया। अब उसे बताने की क्या जरूरत थी कि साहब अंजनी साहब के कमरे में झांक रहे थे।

सारे घटनाक्रम को सुनकर मिस रोजी ने अपने विषय में पूर्ण आश्वस्त हो कर अदा के साथ एक अंगड़ाई ली और घड़ी को देखकर कहा–"ओ माई गाड! चार पैंतीस हो गए, अब तैयार होना चाहिए" कहती वह अपने कमरे की ओर बढ़ी फिर रुक कर मिसेज सहगल की ओर मुखातिब होकर बोली–"आँटी, अंजनी को जगा दीजिए, उसे भी लखनऊ जाना है। वह नहीं तैयार होगा क्या?"

रोजी की इस बात को सुनकर दरोगा का जी जल गया। उसके मन में आया कि अभी कह दूँ कि–"साथ सोई थी, जगा क्यों नहीं लेती?" लेकिन वह अपनी सफाई दूसरे ढंग से पेश कर चुका था, इसलिए मौन रहा।

"तुम्हारे बगल वाले कमरे में ही तो सोया है, जगा लो और हाँ सुनो जा रहीं हूं मुझे डिस्टर्ब मत करना। अटैची में पैसा रखा है, उससे कह देना ले लेगा। खूब मन लगा कर पढ़ना, छुट्टी में चली आया करो, तुम्हारा ही घर है।"

"आन्टी, आप बहुत अच्छी हैं" कहकर मिस रोजी मिसेज सहगल से दुलरा कर लिपट गई। मिसेज सहगल ने उसके मस्तक को चूमकर प्यार किया और कहा–"इस बार अपनी मम्मी को भी लिवा लाना।"

मिस रोजी ने मिसेज सहगल को बाई-बाई कहा और अंजनी के कमरे की ओर बढ़कर उसका दरवाजा खटखटाने लगी। अंजनी ने थोड़ी ही देर में दरवाजा खोलकर पूछा "कौन है?"

"मैं हूँ रोजी, घोड़ा बेचकर सोते हो। इधर चोर घुस आया था। सभी लोग जाग गए तुम्हारी नींद ही नहीं खुली।"

"आँय चोर?"

"हाँ हाँ चोर। राय अंकल हैं न उन्हीं को चौकीदार ने चोर समझ लिया।" कहती रोजी खिलखिलाती हुई अन्दर घुस गई फिर धीरे से बोली "अरे यार मैं तो डर गई थी। मैंने सोचा कहीं हम लोगों को तो किसी ने नहीं देख लिया।"

"तुम्हें तो ऐसे ही डर लगा रहता है" कहता अंजनी फिर पलंग पर पसर गया।

"अरे उठोगे भी कि पड़े ही रहोगे। लखनऊ नहीं चलना है? देखो अब मैं एक मिनट भी नहीं रुकूंगी।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"तुम तो एकदम से परेशान कर देती हो, लो उठ गया।" कहता अंजनी उठकर खड़ा हो गया और बाथरूम की ओर चला गया।

दरोगा और मिसेज सहगल को छोड़कर अन्य सभी लोग वहां से चले गए। दरोगा ने रोजी को मन ही मन गाली दी–"साली बहुत चालू है" और झेंप भरी निगाहों से मिसेज सहगल की ओर देखा। मिसेज सहगल से मुस्करा कर कहा– "इन रीयल सेन्स यू आर दरोगा।"

"मतलब?" दरोगा ने झेंपते हुए पूछा।

"यही कि आप यहाँ भी अपनी गश्त नहीं भूल सके।"

"भूलता कैसे? आप का बंगला है कि कोई मजाक है।"

"हाँ, बंगला भी मजाक नहीं है और उसमें रहने वाले भी मजाक नहीं हैं" मिसेज सहगल के मन में कड़ुआहट उमड़ आई थी लेकिन तत्काल अपने को संयत करके फिर कहा–"चलो अच्छा हुआ, रात भर सुरक्षा बनी रही। अंजनी को लखनऊ जाना था वह भी समय से तैयार हो जायेगा। दूर का सफर है।"

"इसमें रहने वाले भी मजाक नहीं हैं" वाक्य ने दरोगा के मन पर पूरी चोट की। अपमान से वह तिलमिला उठा। उसे लगा जैसे डॉ. रमन के सामने वह बौना हो गया है। उसने मन ही मन सोचा, बंगले में रहने वाले मजाक तो नहीं हैं लेकिन माँ डाक्टर के साथ और बेटा ईसाइन के सांथ सोते हैं। उससे रहा नहीं गया तो उसने प्रगट में कहा–"आप का अंजनी तो रात भर सफर करता रहा है।"

दरोगा की इस बात को सुनकर मिसेज सहगल बात को बिना समझे दरोगा को टालने के लिए ठठाकर हँस पड़ी और "अच्छा चलिए सुबह हो गई जरा अंजनी से मिलकर उसे बिदा कर दूँ, तब·आराम करूँगी" कहते हुए वह भी अंजनी के कमरे में चली गई।

दरोगा शर्माया, खिजलाया लान की ओर आ गया। उसने मन ही मन "साली जग रही थी, तभी तो डॉ. रमन पहले ही हाल से गायब हो गया था" कहा और अपनी घड़ी देखी। सुबह के छः बज रहे थे। अब उसका मन यहां से एकदम उचाट हो गया। वह जल्दी से जल्दी अपने थाने पर पहुंच जाना चाहता था ताकि वह अपने को फिर से बादशाह महसूस कर सके। वह जानता था कि सहगल साहब आठ बजे से पहले नहीं उठेंगे। उसके दोनों दरोगा मित्र निश्चिन्तता की नींद ले रहे होंगे। डा. रमन का पता पाना मुश्किल है। अतिबल साला तो अभी पहली करवट बदले होगा। उसकी बीबी इसी बंगले के किसी कमरे से उसके पास पहुंचेगी और उसे जगा कर उसके पीने का रोना रोएगी। साली नाटक करेगी– सोचता-सोचता वह अपनी मोटरसायकिल की ओर बढ़ा। तभी थाने का एक सिपाही बौखलाया हुआ उसे आता दिखाई पड़ा। दरोगा खड़ा होकर उसका

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इन्तजार करने लगा। सिपाही ने दूर से ही दरोगा को देख लिया। उसने सीधे आकर दरोगा को सलाम ठोंका और "साहब जल्दी चलिए, बड़ा गड़बड़ हो गया।" एक ही सांस मे कह ले गया।

"क्या गड़बड़ हो गया?" दरोगा ने हड़बड़ा कर पूछा।

"भीड़ ने थाने का घेराव कर लिया है।"

"क्यों किस बात पर?"

"छोटे साहब ने चौबे जी को दफा २५ में बन्द कर दिया उसी बात पर कर्मचारियों ने थाना घेर लिया है।"

अब राय दरोगा को रात की सारी घटनाएं याद आने लगीं। उसने पूछा– "चौबे को अधिक तो नहीं मारा-पीटा है?"

"अब चल के साहब आप ही देख लें, मैं क्या कहूँ। मैंने तो मगरुआ को बंशी.की पीठ पर लदवा कर थाने से बाहर कर दिया, नहीं तो उसी वक्त आफत हो जाती। कहकर उसने रात की सारी घटना बता दी।

"चलो तुमने होशियारी की, नहीं तो और आफत हो जाती। यह छोटा दरोगा शराब पीए था क्या? जो कुछ समझा बूझा नहीं।" कुछ रुक कर वह फिर बोला–"चौबे अभी हवालात ही में है?"

"जी सरकार।"

"ऐसा करो, अभी तुम जाओ और छोटे दरोगा से कहो, चालान बना कर चौबे को तुरन्त मीरजापुर रवाना कर दें, मैं अभी आ रहा हूँ।

"थाने पर बड़ी भीड़ है। रह रहकर सब ईंट-पत्थर चला रहे हैं। किधर से निकलेंगे? खन्ना साहब की जीप भी फूँक दी गई।"

"ऐं...क्या? ईंट-पत्थर, आखिर इतनी भीड़ सुबह-सुबह कहाँ से आ गई? चौबे तो कोई खास आदमी भी नहीं है। कह दो छोटे दरोगा साले से निपटे, चले हैं दरोगाई करने।"

"सहगल साहब के चपरासी बंशी ने सब किया है हुजूर। उसने अपने यूनियन वालों को खबर कर दी। यूनियन वालों ने यह प्रचार किया है कि आपने और छोटे दरोगा ने एक बनवासी जवान के साथ चौबे का इनकाउन्टर करके लाश थाने में रखी है। इसलिए यूनियन वालों के साथ जनता भी आ गई है।"

अब राय दरोगा के चेहरे पर परेशानियों के लक्षण स्पष्ट उभड़ आये। उसने बेचैनी से अपना सर सहलाया। उसे सहगल पर गुस्सा, साथ ही साथ अपने पर भी खीज आने लगी। "नाहक में इन सालों के चक्कर में पड़कर यह बवाल मोल लिया। उसके ऊपर से रात में बेइज्जत भी हुआ। अब क्या किया जाय?" वह सोचने लगा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"भीड़ में तमाशबीन अधिक हैं सरकार, बदमाश तो बस दो ही चार हैं।" सिपाही ने दरोगा जी को परेशान देखकर दिलासा दिलाया।

दरोगा ने सिपाही की बात पर ध्यान न देते हुए कहा "अच्छा एक काम करो, सबसे पहले थाने के पीछे से चौबे को वहां से हटाओ, सीधे मीरजापुर भेजो तब तक मैं आ रहा हूँ। जल्दी जाओ, और हाँ मगरुआ की रिपोर्ट लिखी जा चुकी होगी तो ठीक नहीं तो मूर्खाधिराज दरोगा से कहो कि वह तुरन्त रिपोर्ट दर्ज कर ले।"

"वे लोग अंजनी के नाम दर्ज कराना...।" सिपाही पूरी बात कह भी नहीं पाया था कि दरोगा ने डाँटकर कहा–"अरे छोड़ो अंजनी-मंजनी को जैसा वे लोग चाहते थे वैसी ही रिपोर्ट लिख दें। फंसने दो सालों को, सब साले मतलबी हैं। एक काम और करो, बंशी से कहना कि 'सहगल साहब ने तुम्हें बुलाया है।"

"वह कहाँ मिलेगा सरकार। वह तो माइक लेकर बाजार बन्द करवा रहा है।" सिपाही ने सुनी हुई बात बताई।

"अच्छा? बाजार बन्द करवा रहा है? बाजार वाले बन्द कर रहे हैं क्या?"

"सुन तो रहा हूँ। क्या जमाना आ गया सरकार! आपकी ईमानदारी और कड़ाई से नम्बर दो का धन्धा नहीं चल पा रहा है। इसलिए दो नम्बरिए तो एकदम से चिढ़े हैं। उन्हें मौका मिलना चाहिए। अब मौका मिल गया है।"

"अच्छा...अच्छा कोई बात नहीं, एक-एक साले से निपटा जाएगा। पहले तुम बंशी से बाजार में ही खोज कर मिलो और पुलिस के मुखबिरों को इकट्ठा कर लो, उन्हें उसी भीड़ में भेज दो। वे सब यही प्रचार करें कि दोनों लाशें अस्पताल के चीर घर में हैं। जब भीड़ अस्पताल पर पहुंचे तो नारा लगवा दो–"हमें लाशें दिखाई जायें।" लाश अस्पताल वाले दिखा नहीं पाएंगे, उसी समय ईंट-पत्थर चलवा दो। जाओ दौड़कर जाओ, खूब होशियारी से, सजा अस्पताल वाले भी भोगें। यह सब बात दरोगा को भी समझा देना। उससे कह देना कि इसमें जरा भी गलती करेगा तो नप जाएगा।"

"अच्छा सरकार" कहकर जैसे ही सिपाही जाने लगा कि दरोगा ने हाथ के इशारे से उसे फिर रोका और "वे तीन-तीन पैसे के नेता साले जो आकर थाने पर ड्यूटी देते थे, भीड़ में नहीं दिखाई पड़ रहे हैं क्या?" पूछा।

"दिखाई पड़े हैं सरकार, तिवारी, गुप्ता, ठाकुर साहब। लेकिन वही सबसे अधिक चिल्ला रहे हैं।"

"अरे उन सालों को थाने में बुलाकर चाय-वाय पिलाओ। उन सभी की औकात ही कितनी है। जरा नेता जी, नेता जी कर देना बस भौंकना बन्द कर देंगे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इन खउरहों को तो मैं खूब जानता हूँ। कह देना छोटे दरोगा से, घबरावें नहीं। जैसे जो कहा है, वैसे ही करें।''

अब राय दरोगा की बातों से आत्मविश्वास झलकने लगा था। सिपाही जल्दी से मुड़कर थाने की ओर चल पड़ा और दरोगा सहगल के बंगले की ओर मुड़ा। उसने देखा कि अंजनी और रोजी कन्धों से एअर बैग लटकाए बंगले के बरामदे में आकर खड़े हो रहे हैं। रोजी हिप्पी कट पैन्ट शर्ट पहने काफी लम्बी लग रही थी। अंजनी भी उसी पोशाक में था। अपने स्थान से ही उन दोनों ने दरोगा को 'गुड-मॉर्निंग अंकल' कहा। दरोगा का जी जल उठा, फिर भी मन को मारकर उसने कहा ''गुड-मार्निंग, तुम्हारे पापा जगे?''

''पता नहीं, उधर ड्राइवर तो नहीं है? कहां चला गया–दिखाई नहीं पड़ रहा है'' अंजनी ने कहा।

''क्यों ड्राइवर क्या करोगे? ड्राइविंग करते-करते थक गए क्या?'' दरोगा ने रोजी और उसके सम्बन्धों को लेकर यह बात कही थी। लेकिन अंजनी ने सोचा कि मोटर सायकिल एक्सीडेन्ट पर यह बात कही जा रही है। इसलिए उसने हँसकर ''वाह अंकल छोटे-मोटे एक्सीडेन्ट से मैं डरूँगा?'' कहता हुआ वह रोजी के साथ ड्राइवर को ढूढ़ने उसके क्वार्टर की ओर चला गया।

अब राय दरोगा को अपना असली उद्देश्य याद आया। वह जल्दी जल्दी हाल में पहुंचा तो देखा सहगल साहब, अतिबल सिंह तथा दोनों दरोगा बैठे बेड टी ले रहे हैं। उसके पहुंचते ही सभी ने 'आइए-आइए', कहकर स्वागत किया।

डॉ. रमन ने कुटिलता से मुस्करा कर पूछा–''कहाँ चले गए थे?'' दरोगा ने डॉ. रमन की बात पर ध्यान न देकर–'हम तो आप की सहायता करने में मुसीबत में फंस गए' सहगल साहब से मुखाबित होकर कहा।

''क्यों? क्यों? क्या हुआ?'' सहगल साहब ने दरोगा के उतरे चेहरे को देखकर, जो कई कारणों से उतरा हुआ था, पूछा।

दरोगा ने तफसील से रात की घटना और थाने की घटनाओं को बताया और–'उसी में परेशान हूं' आगे जोड़ दिया। डॉ. रमन ने अपना सर इस अदा से हिलाया जैसे बंगले की सही घटना वह बखूबी जानते हों लेकिन किसी का ध्यान उनकी तरफ नहीं था।

सहगल साहब ने परेशान होकर पूछा, ''अब क्या किया जाय? आप बताइए। आपने मेरे लिए किया है तो मैं भी आप के लिए पीछे नहीं रहूंगा।''

''मेरा तो दिमाग ही काम नहीं कर रहा है। मैं तो डर रहा हूं कि कहीं छोटे दरोगा ने घबरा कर अंजनी के नाम रिपोर्ट दर्ज न कर ली हो।''

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"अरे दर्ज कर लिया होगा तो कौन सी बड़ी बात हो जाएगी? मुकदमा चलेगा लड़ लिया जाएगा, उसकी बात छोड़िए" सहगल साहब ने कहा।

वह तो ठीक है, लड़ लिया जाएगा। लेकिन मेरी पोजीशन आपके सामने खराब होगी सो अलग और यह झंझट जो उठ खड़ा हुआ सो अलग।

"सहगल साहब के यहाँ जो पोजीशन आपकी बनी है वह अब कभी खराब नहीं होगी।" डॉ. रमन ने अव्यक्त कटाक्ष से कहा।

दरोगा जी का जी तो जल ही रहा था फिर बार-बार का डॉ. रमन का कटाक्ष उसे असह्य हो रहा था, फिर भी वह उसकी बातों को अनसुनी कर गया। लेकिन सहगल साहब ने डॉ. रमन की बातों को दरोगा की हमदर्दी में समझ कर कहा "डॉ. साहब ठीक कह रहे हैं। हमारे यहाँ आपकी पोजीशन क्यों खराब होगी? हर आदमी समय के मुताबिक ही तो काम करता है। अगर छोटे दरोगा ने रिपोर्ट लिख ही ली होगी तो यह तो उसकी समझदारी ही मैं कहूँगा।"

"जिला कांग्रेस पार्टी के अध्यक्ष पाण्डे जी से बात करिए, वह स्थिति सम्भाल देंगे।" अतिबल सिंह ने सुझाव दिया।

"हाँ-हाँ ठीक है, पाण्डे जी वही न जिनको हाल ही में पैंतालिस लाख का मैंने ठीका दिया था?" सहगल साहब ने स्पष्ट कर लेना चाहा।

"हाँ-हाँ वही, बहुत पहुंचे हुए आदमी हैं। डी. एम. के खास आदमी हैं, फिर मुख्यमंत्री से तो उनकी दाँत काटी रोटी है।" कहते हुए ठेकेदार अतिबल सिंह फोन घसीट लाया। तुरन्त फोन मिलाया गया, मालूम हुआ वह लखनऊ गए हैं। लोगों को बड़ी हताशा हुई।

"पाण्डे जी को छोड़िए, पहले अपने बंशी को तो ठीक करिए। वही यह सब कर रहा है।" दरोगा ने गुस्से में कहा।

"क्या...ऽऽ! बंशी कर रहा है? उससे क्या मतलब?"

"अभी मैंने आपसे पूरी बात बताई थी, शायद आपने ध्यान से नहीं सुना।"

"यही न कि मगरुआ उसके गांव का है। यही न बताया आपने?" सहगल साहब ने दरोगा पर प्रश्नवाचक दृष्टि डाली।

"यह भी बताया था कि मगरुआ के साथ उसकी बहन भी है।"

"बहन से क्या फर्क पड़ता है? मैं समझा नहीं।"

"जब आप उसकी बहन को देखेंगे तब सब समझ में आ जायेगा।"

"नहीं...नहीं, बंशी ऐसा नहीं है। उसे मैं खूब जानता हूँ, थोड़ा जिद्दी है लेकिन करेक्टर के मामले में...।"

"अरे छोड़िए...लोग अपने बच्चों के करेक्टर के विषय में तो जानते नहीं जिसे पैदा किया।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"राय साहब, अपने करेक्टर के विषय में भी तो लोग नहीं समझ पाते।" डा. रमन ने फिर एक वार किया।

"कुछ भी हो बंशी को मैं जानता हूँ। उसके विषय में इतना तो मैं कही सकता हूँ कि वह ऐसा नहीं है।"

"इसी भ्रम में तो दुनिया के अपराध पल रहे हैं। नहीं तो अपराधी कितने दिन पलते।" दरोगा ने डाक्टर की ओर देखकर कहा।

डा. रमन ने मुस्करा कर सर हिलाया। डा. का मुस्करा देना ही दरोगा के लिए ढेर सारे उत्तर थे। उसने अपने को एक बार फिर परास्त महसूस किया।

"चलिए ठीक है, मैं इसके बाबत बंशी से पूछूंगा। सहगल साहब ने दरोगा को आश्वासन दिया।

"आप पूछेंगे और वह बता देगा, वाह रे साहब" दरोगा राय ने कहा।

"देखिए राय साहब, इतना तो मैं जानता हूं कि जो आदमी ईमानदार होता है। यह नहीं होता कि कोई आदमी पैसों के लिए ईमानदार हो तो सम्बन्धों में न हो और सम्बन्धों में ईमानदार हो तो ड्यूटी में नहीं। ईमानदारी एक दिमागी बनावट है, एक इमोशन है, क्रोध, प्यार आदि की भांति ईमानदार दिमागी बनावट वाला ईमानदारी करने को लाचार है।

"यह तो आपका अपना विचार है, इस बाबत मैं बहस नहीं करना चाहता, लेकिन बंशी मिलेगा कहाँ?"

"दस बजे वह दफ्तर जरूर जाएगा। कुछ नहीं तो छुट्टी ही लेने के लिए। अभी मैं ड्राइवर को ऑफिस भेजता हूँ।" कहकर सहगल साहब ड्राइवर को पुकारने के लिए उठने लगे कि ठेकेदार अतिबल सिंह–"आप बैठिए मैं अभी बुला देता हूँ" कहते हुए कमरे के बाहर निकल गए।

थोड़ी ही देर में ड्राइवर आ गया। उसके साथ रोजी और अंजनी भी आ गए। दोनों को देखकर सहगल साहब ने मुस्करा कर पूछा–"तुम दोनों जा रहे हो क्या?"

"हाँ पापा, एकदम तैयार था। वह तो अतिबल सिंह ने लाल झंडी दिखा दी नहीं तो अब तक चला गया होता।"

"मुझसे बिना मिले ही?" सहगल साहब ने पूछा।

"जब मैं मम्मी से मिल लेता हूं तो मुझको लगता है कि मैं पापा से भी मिल चुका, सच्ची पापा" इतने भोलेपन से अंजनी ने इस बात को कहा कि सहगल साहब एकदम से हँस पड़े। साथ में अन्य लोग भी, दरोगा को छोड़कर हँसने लगे।

दरोगा को इन सबका हँसना एकदम नहीं सुहा रहा था। उसने बुरा-सा मुँह बना कर कहा–"अच्छा किया जो नहीं गए। ईश्वर ने तुम दोनों की रक्षा की,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जानते हो? बाहर जनता बौखलाई है। अभी-अभी खन्ना साहब की जीप फूँक दी गई। तुम लोगों को जाते देखकर अगर किसी बदमाश ने, इतना भर कहा होता कि देखो–'अंजनी ऐक्सीडेन्ट करके भाग रहा है–तो बौखलाई जनता जीप फूँक देती या तुम लोगों को मार ड़ालती, जाने क्या होता? थाने पर एक रिपोर्ट और...।"

"ओ माई गॉड-" रोजी सिहर उठी, "जरा-सा एक्सीडेन्ट के लिए इतनी बात बढ़ गई?" उसने कहा।

"और क्या–तुम लोगों को क्या पता? अभी तो तुम लोग दूसरी दुनियाँ में हो।"

"नहीं राय अंकल, मैं क्या जानती थी? मेरे लखनऊ में तो रोज एक्सीडेन्ट होते रहते हैं। अगर यहाँ की तरह होने लगे तो एक कदम चलना दूभर हो जाय।"

"यह लखनऊ नहीं है, पिपरी है पिपरी। एकदम बर्रे की छत्ते की तरह। जरा सी चूकी कि गई काम से।" राय ने अपनी बात को और प्रभावशाली बनाया।

"आज कोई नहीं जाएगा, अंजनी! जाओ कपड़े उतार कर इजी हो जाओ। आज कोई बंगले के बाहर नहीं जाएगा" सहगल साहब ने कहा।

"अरे तुम्हारे लिए भी कहा जा रहा है, तुम भी अंजनी के साथ जाओ। कपड़े उतार कर आराम करो।" दरोगा ने रोजी की ओर देख कर दो-अर्थी बात कही।

"बलजीत! तुम आफिस चले जाओ, वहाँ से बंशी को बुला लाओ" सहगल साहब ने ड्राइवर को आदेश दिया।

"अच्छा साहब" कहकर ड्राइवर जाने लगा तो राय दरोगा ने कहा "थाने का भी पता लगाते आना।"

ड्राइवर हामी भरता चला गया, तभी डाक्टर रमन ने कुर्सी से उठते हुए कहा–"अच्छा अब मैं भी हास्पिटल चल रहा हूँ, नौ-चालिस हो गया। हमारे लायक कोई सेवा हो तो सूचित करिएगा।"

"अवश्य-अवश्य, आप ही की तो अब जरूरत पड़ेगी। मगरू की मेडिकल रिपोर्ट जरा देखिएगा" सहगल साहब ने उठकर हाथ मिलाते हुए कहा।

"उसके लिए आप चिन्ता न करें" कहता डाक्टर सबसे हाथ मिलाकर अपनी फिएट से हास्पिटल चला गया।

दरोगा राय ने मन ही मन कहा–"चलो बेटा, पहुंचो तो हास्पिटल, किसे किसकी आवश्यकता पड़ेगी मालूम ही हो जाएगा, बहुत व्यंग बोल रहे थे।" प्रत्यक्ष में वह यादव और डी. राम दरोगा की ओर मुखातिब होकर बोला–"आप

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लोग अभी यहीं हैं, देख रहे हैं कितना बवाल बढ़ रहा है? हो सकता है एस. पी. साहब आ जायें।''

एस.पी. का नाम सुनते ही दोनों दरोगा बौखला कर उठ खड़े हुए। दरोगा डी. राम ने कहा–''हाँ-हाँ ठीक कह रहे हैं। कल की मैंने भलुआ में रवानगी दिखाई है। चलें आमद दिखा दें।''

''कहाँऽ? भलुआ? अरे यार यह मगरुआ भलुआ का ही तो है। शायद इसके बाप का नाम रामधनक है, धांगर है।'' राय दरोगा ने चहक कर कहा।

''कौन रामधनक धांगर?'' दरोगा डी. राम ने अपनी स्मृति पर जोर डाला। ''अच्छा-अच्छा समझ गया–भोला पंडित के सामने वाला घर। सहगल साहब अब मैं समझ गया। राय साहब ठीक कह रहे थे।''

''क्या ठीक कह रहे थे? मैंने समझा नहीं।'' सहगल साहब सचमुच बात की तह तक नहीं पहुंच सके थे।

''अरे यही कि आप का चपरासी बंशी मगरुआ के लिए नहीं, उसी लड़की के लिए सब कर रहा है। सचमुच कृष्ण के कालेपन के सौन्दर्य की कल्पना उसे देखकर साकार हो जाती है। अरे तुम लोग क्या सुन रहे हो?'' डी. राम ने पास में बैठे रोजी और अंजनी को प्यार से डाँटा।

''हाँ-हाँ जाओ पढ़ो या आराम करो'' सहगल साहब ने उन दोनों की ओर देखते हुए कहा। दोनों उठकर वहाँ से चले गए तब सहगल साहब ने बात आगे बढ़ाई–''हाँ क्या कह रहे थे आप?''

''मेरे कहने पर मत जाइए, चलकर देख लीजिए। मैंने तो उसे करमा गाते देखा तो देखता ही रह गया। तमाम लड़कियाँ उसके साथ करमा गा रही थीं लेकिन उसका स्वर सभी के स्वरों को भेदता एकदम ऊपर लहरा रहा था। उतनी बड़ी-बड़ी आँखें तो मैंने अपने जीवन में पहली बार देखी थीं। सहमे मृगशावक सी आँखें।

''वाह डी. राम जी, कहीं आप कवि तो नहीं हैं?'' दरोगा यादव ने चुटकी ली।

''अरेऽ साहब, पहले जवानी में कुछ जरूर लिखता था लेकिन पुलिस की नौकरी में आकर सब छूट छाट गया। सच कहूँ उस दिन तो मुझे ऐसा लगा कि मैं फिर से कविता लिख सकता हूँ। जिस समय यही मगरुआ भानर पर थाप देकर करमा कढ़ाता तो लगता वह करमा का शरीर तैयार कर रहा है और जैसे ही बुधनी अपने कंठ से उसे छूती, लगता जैसे करमा जीवंत होकर नाच उठा।''

''रियली? वेरी ग्रैन्ड सीन-एक दिन हमें भी दिखाओ। कब दिखा रहे हो?'' सहगल साहब ने एकदम उतावली प्रदर्शित की।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"जब कहिए साहब–आने दीजिए भादों की शुक्ल पक्ष एकादशी की चांदनी रात। सभी महुआ का उतारा हुआ दारू पीकर जिस समय भानर बजाकर थिरकते हैं, तबियत मस्त हो जाती है। मस्ती तो जंगलों में ही है।"

"तुम तो भाग्यशाली हो। यहाँ तो ऑफिस में बस उन्हीं काँइयां लोगों से मिलना, शहर की बिजली, बत्ती, पावडर पुते चेहरे, सब कुछ बनावटी।" सहगल साहब ने लम्बी साँस खींचकर कहा।

"होते हैं बड़े गरीब, साग-पात, मक्का, साँवाँ यही इनका असली भोजन है। लेकिन ईमानदार गजब के होते हैं। दरोगा यादव ने अपनी जानकारी दी।

"क्यों इनके पास खेत नहीं हैं क्या?"

"हैं क्यों नहीं, थोड़ा बहुत है। अच्छे खेत तो बड़े लोगों के पास हैं। इनके पास तो बस वही पथरीले प्लाट हैं, उसमें क्या होगा? फिर भी ये मस्त रहते हैं।" दरोगा डी. राम ने वार्ता की बागडोर फिर अपने हाथ में पकड़ ली।

"गरीबी है तो करेप्सन भी खूब होगी।" सहगल साहब का अभिजात्य संस्कार बोल उठा।

"एकदम नहीं। हाँ वे गांव जो शहर के संपर्क में हैं या हमारे आपके रहन-सहन को देख रहे हैं, वहीं थोड़ा-बहुत बढ़ रहा है।"

"हमारे आपके रहन-सहन को देखकर वे क्यों करेप्ट हो रहे हैं? क्या हम करेप्ट हैं?"

"इसलिए कि वे लोग हाथ के श्रमिक हैं, मेहनतकश हैं या छोटे-मोटे खेतिहर हैं। श्रम और खेती के पैदावार का मूल्य हमारे यहाँ इतना कम है कि उससे दोनों समय ठीक से पेट नहीं भर सकता, फिर वे अपने रहन-सहन का स्तर कैसे सुधार सकते हैं? ऐसी बेबसी में वे हमारे आपके रहन-सहन को देखते हैं। अनपाए चीज के लिए आदमी की ललक स्वाभाविक है। हमारा आपका रहन-सहन उनके लिए अनपाया है। उसके लिए वे ललचाते हैं और लालच आदमी से बुरे से बुरा काम करा सकती है। फिर भी उनकी मान्यताओं और परम्पराओं ने उनकी लालच पर काफी अंकुश लगा रखा है।"

"ठीक कह रहे हैं" सहगल साहब ने सर हिलाते हुए कहा–"जो स्थिति उनकी हमारे सामने है ठीक वही स्थिति हमारी विदेशियों के सामने हैं, विदेशियों के रहन-सहन को देखकर हम भी तो ललचाते हैं।"

यह वार्ता चल ही रही थी कि ड्राइवर बलजीत सिंह जीप लेकर आ गया। उसने आते ही यह खबर दी कि बंशी ने आज का आकस्मिक अवकाश ले लिया है। जब मैं पहुँचा तो वह बड़े बाबू को अपना प्रार्थना-पत्र देकर जा चुका था।

"थाने की ओर गए थे?" दरोगा राय ने पूछा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"हाँ, वहाँ पर कोई भीड़ नहीं थी। भीड़ नारे लगाती अस्पताल की ओर जा रही थी।"

"क्यों, अस्पताल क्यों जा रही थी? तुमने पता नहीं लगाया?" दरोगा राय ने कुटिलता से पूछा।

"अरे साहब कौन जाए पता लगाने। विद्युत विभाग के खन्ना साहब की जीप जा रही थी उसे भीड़ ने फूँक दिया। मैं तो पीछे से होकर आ रहा हूँ।"

"क्या? खन्ना साहब की जीप फूँक दिया? और कोई घटना?" दरोगा राय अपनी सफलता के आँकड़े लगाने लगा। अब यह थाने की घटना न होकर दंगा बन जाएगा, सोचकर वह मन ही मन मुस्कराया।

"अरे हमें कुछ पता नहीं साहब। हाँ, बनवासी संघ के अध्यक्ष चौथी राम, साहब से मिलने आ रहे हैं।"

"किससे? हमसे?" सहगल साहब ने पूछा।

"जी साहब, मुझे रास्ते में ही मिले थे। मैंने उनसे कहा–आइए जीप पर चले चलिए–तो "हमारे साथ सैकड़ों आदमी हैं" कहकर वे पैदल ही आ रहे हैं।

"सैकड़ों आदमी हैं?" सहगल साहब घबराए।

"आने दीजिए चौथी ही है न? मैं उसे खूब जानता हूँ, ठीक आदमी है, गड़बड़ नहीं है।" दरोगा राय ने इत्मीनान से कहा।

"बात ठीक या गड़बड़ की नहीं है। मै सोच रहा हूँ कि मैं भी अपने आदमियों को बुलवा लूँ। आप तो जानते ही हैं सभी को कि वे कैसे हैं।"

"अरे नहीं साहब ऐसी गलती मत करिए। अगर आप के आदमी आ गए तो अभी यहां पर चार छः मर जाएंगे, हमारे जी की आफत हो जाएगी।" दरोगा राय ने कहा। क्योंकि वह जानता था कि विभिन्न प्रांतों से आकर यहाँ पर ठेके में जमे हुए लोग अपने-अपने प्रान्तों के कुख्यात डकैत, खूनी आदि हैं। वही सहगल साहब के कृपापात्र हैं। अब वे सहगल साहब की कृपा से इतने अधिक धनवान हो चुके हैं कि न्यायपालिका भी उनका कुछ बिगाड़ नहीं सकती। उनमें से कुछ तो अच्छे-अच्छे नेताओं के चहेते भी हैं, उन्हें दस पांच की जान मारते देर नहीं लगेगी। दरोगा राय जानता था कि अगर ऐसा हो गया तो उन सबका तो कुछ नहीं होगा पर मेरी लुटिया तो डूब ही जाएगी।

दरोगा राय यह सोच ही रहा था कि फाटक पर "नहीं चलेगी, नहीं चलेगी–तानाशाही नहीं चलेगी" का नारा सुनाई पड़ा।

"अब क्या किया जाय?" सहगल साहब ने दरोगा राय की ओर देखते हुए मुस्करा कर पूछा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"कुछ नहीं, बैठे रहिए, थोड़ी देर नारा लगा लेने दीजिए। अभी-अभी फाटक पर पहुँचे हैं, पूरे जोश में हैं, जरा ठंडा पड़ने दीजिए।"

नारों की आवाज सुनकर मिसेज सहगल, अंजनी और रोजी भी भागकर उसी कमरे में आ गए। मिसेज सहगल ने घबराई आवाज में कहा–"प्लीज राय साहब, देखिए ये देहाती कोई गड़बड़ न करें।"

"आप घबराएं नहीं, हम तीन दरोगा यहां पर तीन सौ देहातियों के लिए काफी हैं। यह कोई मेरी रात वाली गश्त नहीं है कि चपरासी से डर जाऊँगा।"

फाटक पर नारे गूंज रहे थे। चौथी राम आवेश में और तेज नारे बुलवाने में व्यस्त था। आस-पास से आकर स्थानीय जनता भी उस भीड़ में दर्शक की हैसियत से शामिल हो गई थी, जिससे जुलूस का आकार काफी बड़ा दिखाई पड़ने लगा था। चौथी राम इतनी बड़ी भीड़ का स्वयं को अकेला नेता पाकर गर्व से फूल पिचक रहा था।

कुछ समय तक नारों की आवाज अपनी बुलंदी पर रुकी रही फिर क्रमिक रूप से उसकी अधोगति होने लगी। सहगल साहब अपने स्थान से उठे और "मैं ड्राइंग रूम में चल रहा हूँ, वहीं पर चौथी राम को लिवा लाओ।" उन्होंने अपने ड्राइवर को आदेश दिया और ड्राइंग रूम में चले गये।

चौथी राम से बात करने के लिए बलजीत सिंह जैसे ही फाटक की ओर चला उसे दूर से ही आता देखकर चौथी और तेज नारे लगवाने लगा। ड्राइवर ने नजदीक पहुंच कर चौथी राम से कहा "साहब ने पूछा है कि आप क्या चाहते हैं।"

उन दोनों को बात करते देखकर भीड़,–"क्या वार्ता हो रही है?" जानने के लिए शान्त हो गई।

"मैं तुम्हारे साहब से मिलना चाहता हूँ। इतना बड़ा अन्याय? हमारे एक बनवासी को मोटर-सायकिल से मार डाला और उसे देखने तक नहीं गए। लोग अब वह जमाना भूल जायँ जब बनवासियों की जबान नहीं होती थी। अब बनवासी जाग चुका है। जो बनवासियों पर हाथ उठाएगा उसके हाथ कलम हो जाएंगे, जो आँख उठाएगा उसके आँख की रोशनी छीन ली जाएगी। बनवासी पंचायत चुप नहीं रह सकती...चौथी राम चुप नहीं रह सकता। चाहे उसे जेल जाना पड़े चाहे गोलियां खानी पड़ें।"

इस लम्बे-चौड़े भाषण को देने के बाद चौथी राम ने हाथ उठाकर नारा दिया–"जो हमसे टकराएगा।" भीड़ ने जवाबी नारा दिया–"चूर-चूर हो जाएगा।"

इस प्रकार तीन चार नारे लगवाने के बाद चौथी राम ने हाथ उठा कर भीड़ को शान्त किया और कहा–"भाईयों! अभी आप लोग देख रहे हैं कि यह सहगल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

साहब का आदमी आया है। सहगल साहब हमसे मिलना चाहते हैं अपने बंगले के अंदर। यह आप लोगों की एकता का फल है कि आपके नेता से वार्ता के लिए यह लोग मिलना चाहते हैं। नहीं तो पहले का जमाना होता तो यही लोग फाटक से दुत्कार कर भगा देते। आज समय ने पल्टा खाया है कि लोग बाहर आकर मिलने की हिम्मत नहीं रखते, अपने घर के अन्दर मिलना चाहते हैं, हो सकता है कि वह यह सोच रहे हों कि मैं भीतर जाने में डरूंगा। लेकिन आप जानते हैं कि हम उन पुरखों की सन्तान हैं जो बंगले में कौन कहे शेर की मांदों में घुसकर शेर पकड़ लाते थे। चौथी राम भी उन्हीं बनवासियों का लड़का है। आप लोग यहीं पर शान्त बैठे रहें। मैं भीतर वार्ता के लिए जा रहा हूँ। आप लोग मेरी चिन्ता नहीं करें। अगर बंगले के भीतर मेरा कुछ भी हो गया तो मुझे सन्तोष होगा कि मैंने अपने एक भाई के लिए जान गंवाई।''

भीड़ ने ''चौथी भाई जिन्दाबाद'' का नारा लगाया। नारे कुछ देर तक लगते रहे और चौथी ड्राइवर के साथ सहगल साहब के ड्राईंग रूम की ओर चल पड़ा।

ड्राइंग रूम का पर्दा हटाकर जैसे ही चौथी राम भीतर घुसा, सामने सहगल साहब को बैठा पाया। उसने मुस्करा कर सहगल साहब को नमस्कार किया। सहगल साहब ने सर हिलाकर उसका अभिवादन स्वीकार किया और अपनी बगल वाली कुर्सी पर उसे बैठने का इशारा किया।

कुर्सी पर चौथी राम के बैठते ही उन्होंने ड्राइवर से कहा ''देखो नेता जी आए हैं, कुछ नाश्ता-वास्ता लाओ।''

''अरे नहीं-नहीं, इसकी क्या जरूरत है साहब?'' चौथी ने खिसिआई आवाज में कहा। लेकिन ड्राइवर नाश्ता लाने के लिए चला गया।

अब सहगल साहब ने चौथी राम की ओर मुड़कर पूछा–''क्या हाल-चाल है?''

''सब आपकी कृपा है।''

''लेबर सप्लाई का ठेका कर रहे हो न।''

''जी साहब कर तो रहा हूँ लेकिन अब पहले जैसा लाभ नहीं है।''

''क्यों लाभ क्यों नहीं है?''

''पहले मैं अकेला ही सप्लायर था अब तमाम हो गए हैं, वे सभी खुद बहुत कम कमीशन लेकर लेबरों को अधिक मजदूरी देते हैं। अब मजदूर जिधर अधिक पैसा पाएगा उधर ही जाएगा न। इसलिए हमारे पास लेबर भी बहुत कम हो गए हैं।''

''कितने होंगे?''

''यही पाँच सौ के आसपास।''

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"जल्द ही मैं तुम्हें अनपरा प्रोजेक्ट में अच्छे कमीशन पर लेबर सप्लाई का ठेका दूँगा। तुम्हारा सारा घाटा पूरा हो जाएगा।"

"अरे साहब सब आपकी कृपा है" चौथी ने गदगद कंठ से कहा।

"मेरी तो कृपा है लेकिन तुम यह कौन-सी कृपा कर रहे हो?"

हें, हें, हें...साहब आप तो जानते ही हैं कि मैं आपका आदमी हूँ लेकिन अपनी पंचायत के लिए कुछ न कुछ तो करना ही पड़ता है। आप तो जानते ही हैं कि इन्हीं लोगों में से लेबर भी लेना पड़ता है। यह सब न करूँ तो कौन पूछे?"

"क्या करना चाहते हो?"

"बस जिससे आए हुए लोग खुश हो जायँ। उन लोगों को यह मालूम हो जाय कि चौथी राम में दम है। मुझे अपने लिए कुछ नहीं चाहिए। इन लोगों में अगर हमारी साख जमी रहेगी तो सरकार को भी लाभ होगा। आपके बनने वाले प्रोजेक्ट के लिए सस्ते मजदूर दे सकूंगा।"

"इन लोगों में, मैं क्या कर दूं कि, तुम्हारी साख जमे? बस यही बताओ।"

"अब साहब आप अपने आदमी हैं, इसलिए साफ-साफ बता दूँ। जो फाटक पर आप डेढ़ सौ आदमी देख रहे हैं वे सभी दस रुपए के मजदूर हैं। इन सभी को मैं यही कहकर लाया हूँ कि चलो आज दिन भर की मजदूरी तुम्हें मिलेगी।"

सहगल साहब चौथी की भूमिका को समझ रहे थे। उन्होंने समझा था कि नए प्रोजेक्ट में अच्छे कमीशन का लालच देकर वह उससे पिंड छुड़ा लेंगे। लेकिन चौथी कोई अनाड़ी नहीं था। वह इस प्रकार के कितने ही झांसों में पड़ चुका था। इसलिए डेढ़ सौ आदमियों का दस रुपए के हिसाब से डेढ़ हजार तुरन्त बना लेना चाहता था।

"तुम इन सभी को लाए क्यों? क्या जरूरत थी? खुद मिल लेते।" सहगल साहब ने पूछा।

"साहब, बात यह हो गई कि बंशी ने मेरे यहां एक अर्जी दिलवा दी। अब उस अर्जी पर भीड़-भाड़ न करता तो लोग यही प्रचार करते कि बनवासी पंचायत कुछ नहीं है। आप तो जानते ही हैं कि हम लोगों को ऊपरी दिखावे के लिए कुछ भींड़-भाड़ करना ही पड़ता है, इसीलिए...।"

"अच्छा ठीक है" कहकर सहगल साहब उठे और थोड़ी देर में लौटकर उन्होंने चौथी को डेढ़ हजार रुपए की गड्डी दे दी।

चौथी राम ने रुपयों की गड्डी अपनी जेब में रखी और कहा–"एक काम और साहब।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"क्या?"

"आप अपनी गाड़ी से अस्पताल चलिए और मगरुआ को दवा के लिए सौ पचास रुपया अपने हाथ से दे दीजिए। आपका बड़ा नाम होगा, मैं भी साथ चलूंगा।"

"ठीक है यह भी हो जाएगा, और कुछ?"

"और कुछ नहीं–फिर देखा जाएगा। जैसी परिस्थिति आएगी वैसा ही न करना होगा! वैसे साहब अंजनी बाबू के जन्म दिन की बात मुझे नहीं मालूम हुई नहीं तो मैं भी आता।"

"अरे भाई वह तो वैसे ही एकाएक एक छोटी-मोटी पार्टी हो गई।" सहगल साहब ने लापरवाही से कहा।

उसी समय मिसेज सहगल, अंजनी और रोजी ने ड्राइंग रूम में प्रवेश किया। चौथी राम ने उठकर सबका स्वागत किया। मिसेज सहगल ने घबराई आवाज में कहा–"अस्पताल पर दंगा हो गया।"

"क्या? अस्पताल पर दंगा? तुम्हें कैसे मालूम?" सहगल साहब ने आराम से सोफे पर उठंगते हुए पूछा।

"जी अभी थाने से फोन आया था।"

"दरोगा राय गया?"

"हाँ तीनों दरोगा गए" मिसेज सहगल ने संक्षिप्त-सा उत्तर दिया।

"तीनों दरोगा कौन?" चौथी राम ने पूछा।

"अभी नाश्ता नहीं आया क्या?" कहकर सहगल साहब ने चौथी की बात टाल दी और कहा–"अब तो अस्पताल चलना ठीक नहीं है।"

"अब साहब इस वक्त क्या चला जाएगा? शाम को जब दंगा शान्त हो जाएगा तब चला जाएगा।" चौथी राम ने सम्मति दी।

तब तक नाश्ता आ गया। सभी ने नाश्ता किया। नाश्ते के बाद चौथी राम उन लोगों से विदा लेकर बड़े तमतमाए चेहरे से बंगले के बाहर निकला। भीड़ ने उसे आता देखकर फिर नारे लगाना शुरू कर दिया,–"चौथी भाई जिन्दाबाद, नहीं चलेगी, तानाशाही नहीं चलेगी।"

चौथी राम ने एक ऊँचे स्थान पर खड़े होकर हाथ उठाकर सबको शान्त होने का इशारा किया। भीड़ शान्त हो गई। उसने कहना शुरू किया–"सहगल साहब ने हमारी बातें मान ली हैं। वे मगरू को दवा के लिए पैसा देंगे, साथ ही साथ जब तक वह काम करने लायक नहीं हो जाता तब तक प्रतिदिन १० रुपए के हिसाब से उसे मजदूरी भी देंगे। इस प्रकार यदि वह एक महीने में ठीक नहीं

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हुआ तो तीन सौ और अगर साल भर में नहीं ठीक हुआ तो छत्तीस सौ रुपया उन्हें देना पड़ेगा। लेकिन भाइयों, हम केवल इस दिलासे से मानने वाले नहीं हैं। पैसा तो उन्हें देना ही है, लेकिन इस एक्सीडेंट की जाँच भी होगी। दोषी आदमी को बिना दण्ड दिलाए हम नहीं मानेंगे। हम पैसे के लिए बिके नहीं हैं।''

भीड़ ने जोर से तालियाँ बजाईं। चौथी राम ने फिर कहना शुरू किया–''हम लोगों के संगठन के कारण ही सभी लोग हमारी बात सुन रहे हैं। किसी में हिम्मत नहीं है जो हमारी बात न सुने। अभी-अभी हमें पता लगा है कि हमारे कुछ साथी अस्पताल पर पहुंच गए हैं। आप लोग भी नारे लगाते हुए अस्पताल की ओर चलें।'' भीड़ चौथी राम की अगुवाई में नारे लगाती अस्पताल की ओर चल पड़ी। जैसे ही चौथी राम फाटक से आगे बढ़ा कि सत्ता पक्ष के पिपरी के अध्यक्ष पाण्डे जी की कार ने बंगले में प्रवेश किया।

❐

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

४. थाना

सहगल साहब के बंगले से निकल कर राय दरोगा सीधे अपने थाने पर आया। वहां पर सभी मुस्तैद दिखाई पड़े। आते ही उसने सन्तरी से छोटे दरोगा को बुलवाया। छोटे दरोगा ने पहुँचते ही एक लम्बी सलामी दागी। राय दरोगा उसको लेकर थाने के पीछे वाले मैदान में आ गया। वहाँ पहुँच कर उसने पूछा–"चौबे को अधिक मार दिया है?"

"नहीं साहब, अधिक तो नहीं, हाँ कुछ मामूली चोटें आ गईं होंगी।"

"तुम्हें कुछ समझ-बूझ कर काम करना चाहिए। अच्छा छोड़ो, जो होगा देखा जाएगा। उसे मीरजापुर भेज दिया?"

"हाँ, उसे तो जैसे ही सिपाही ने कहा मैंने तुरन्त भेज दिया।"

जाने दो साले को जेल जायेगा। आज तो जमानत होने से रही। साथ में कोई जमानतदार तो नहीं गया?

"नहीं साहब, बंशी गया है।"

"यह तो भूत की तरह हर जगह पहुँच रहा है। उसे कैसे मालूम हुआ कि चौबे मीरजापुर भेजा जा रहा है?"

"उसके अपने सोर्स होंगे, उसी से पता लगा होगा।"

"सोर्स नहीं खाक होंगे, थाने का ही कोई आदमी इधर-उधर कर रहा है। जरा पता तो लगाइए कौन है?"

"वैसे साहब, बंशिया को दो पुलिस के दलालों से पिटवा दें क्या?" छोटे दरोगा ने पूछा।

"इसमें पूछने की कौन सी बात है? हम लोगों की नौकरी पर आएगी तो यह सब तो करना ही पड़ेगा। वैसे ठीक है, देखा जाएगा, हाँ अस्पताल पर क्या हो रहा है?"

"दस सिपाहियों को भेज दिया है। डॉ. रमन ने बहुत घबरा कर फोन किया था।"

"करने दो साले को, बड़ा होशियार बनता है। अपने को बहुत बड़ा अधिकारी समझता है। अब समझ में आएगा कि कौन अधिकारी है। अभी क्या, अभी तो और बवाल बढ़वाना है।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दोनों बात कर ही रहे थे कि संतरी ने आकर खबर दी कि गुप्ता जी और पांडे जी आए हैं।

"कौन गुप्ता, पांड़े?" दरोगा राय ने पूछा।

"वही नेता लोग हैं सरकार।"

"उन्हें थाने में बैठाओ, कह दो आ रहे हैं।" राय दरोगा ने कहकर संतरी को वापस भेज दिया और छोटे दरोगा से पूछा–"यह सब क्यों आए हैं?"

"अरे साहब इन दोनों ने हमें यहां पर बहुत परेशान किया था। जब भीड़ नारे लगा रही थी तो ये दोनों भीड़ को उकसा रहे थे। तब मैंने उन दोनों को थाने में बुला कर चाय पिलवाई और उनसे कहा कि–चौबे और मंगरू अस्पताल में हैं, तुम लोग जुलूस लेकर जाओ, वहीं देख लो। अगर न मिलें तो आकर हमसे पूछना।"

"ठीक किया, उस वक्त मैं भी होता तो यही करता। आप चलिए मैं अभी आ रहा हूँ। आप अभी नए हैं, इन लोगों को ठीक से नहीं जानते होंगे" कहकर दरोगा राय अपने क्वार्टर पर चला गया और छोटे दरोगा थाने पर आया।

थाने के बरामदे में पांडे और गुप्ता कुर्सी डाले बैठे मुंशी से उखड़ी-उखड़ी बातें कर रहे थे। वे दोनों बड़े तैश में थे लेकिन खुर्राट मुंशी उन्हें तुर्की-बतुर्की जवाब दे रहा था–"मैं क्या जानूं चौबे जी अस्पताल पर क्यों नहीं मिले। दरोगा जी आवें तो उन्हीं से पूछिए", मुंशी ने अपनी फाइल में आँख गड़ाए हुए कहा।

"वह तो हम लोग दरोगा जी से पूछेंगे ही, लेकिन मैं आप से पूछ रहा हूँ कि उनका मीरजापुर के लिए कोई परवाना तो नहीं कटा है? उसे देखकर बताइए।" पांडे ने कहा।

"आप हमारे अफसर हैं जो मैं आप का हुक्म मानूं?"

"हम जनसेवक हैं, हमें हक है कि हम इस तरह के केसों को देखें। आप जनता के नौकर हैं, जनता आपकी नौकर नहीं है।"

"हम जनता के नौकर हैं लेकिन आपके नौकर नहीं हैं। आप जाइए हमारी शिकायत एस. पी. साहब से करिए। मैं आप को कुछ नहीं बताता।"

"वह तो शिकायत करूंगा ही। जब शिकायत करूंगा तब पता चलेगा। आपने ऐरा गैरा नत्थू खैरा समझ लिया है क्या?" पांडे जी आपे से बाहर होकर बोले। उसी समय छोटे दरोगा ने बरामदे में प्रवेश किया।

"देखिए साहब आप अपने मुंशी को समझा दीजिए, वह ठीक से बात किया करे" कहते हुए पांडे जी तथा गुप्ता ने उठकर दरोगा को सलाम किया।

"बैठिए बैठिए, क्या बात है? आप अस्पताल गए थे?" पांडे की बात पर ध्यान न देते हुए छोटा दरोगा पास पड़ी कुर्सी पर बैठ गया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"गया तो था, वहां पर चौबे नहीं हैं, बेकार में बवाल हो गया।"

"क्यों क्या हुआ?"

"अरे साहब पूछिए मत, जिसे देखिए रोब में ही रहता है। मैंने डाक्टर रमन से पूछा कि–चौबे कहां है? उन्हें सीधा जवाब देना चाहिए तो कह रहे हैं कि–'जाकर वार्ड में पता लगाओ, मैं आपरेशन करने जा रहा हूँ।'–उनके इस व्यवहार से मुझे तो नहीं, गुप्ता जी को बहुत बुरा लगा।

"हाँ हाँ क्यों न बुरा लगता? हम कोई रोगी वाले हैं? बोलने का एक तरीका होता है।" गुप्ता जी ने आवेश में कहा।

"फिर क्या हुआ?" छोटे दरोगा ने उत्सुकता जाहिर की।

"फिर होना क्या था? चार गाली दिया गया, वह ठंढे हो गए। हम लोगों के सामने अफसरी नहीं चलेगी। मैं तो हाथ लगा देता, लेकिन भीड़ इतनी उत्तेजित थी कि अगर मैं हाथ लगाता तो सब उनकी बोटी-बोटी नोच लेते। दरोगा जी हम लोग कोई बेसलेस नेता नहीं हैं, हमारे पीछे हजार पांच सौ आदमी हैं।" इस बात को पांडे जी ने इतनी जोर से कहा ताकि मुंशी भी सुन ले।

"नहीं भाई अस्पताल से तो हमारे यहां आप दोनों के खिलाफ, सरकारी कामकाज में बाधा पहुँचाने तथा अधिकारी को मारने की रिपोर्ट लिखाई गई है।" छोटे दरोगा ने अवसर पर तीर मारा।

उसी समय दरोगा राय भी आ गए। उसे देख कर तीनों उठ खड़े हुए। गुप्ता पाण्डे ने नमस्कार किया। दरोगा राय ने कुर्सी पर बैठते हुए पूछा–"क्यों नेता जी क्या हाल चाल है?"

उन दोनों के उत्तर देने के पहले ही छोटे दरोगा ने कहा–"हाल चाल यही है कि इन लोगों ने डाक्टर रमन को मारा है, सरकारी काम काज में बाधा पहुँचाई है तथा अस्पताल पर ईंट पत्थर चलवाया है।"

"क्यों भाई अब इसी तरह की नेतागिरी हो रही है?" दरोगा राय ने आँखें तरेर कर कहा।

"अरे नहीं साहब एकदम झूठ है, हम लोगों ने कोई मारपीट नहीं की है।" गुप्ता ने कहा।

"मैं सही-झूठ नहीं जानता। मेरे यहां जो रिपोर्ट है उसे जानता हूँ। इस रिपोर्ट के हिसाब से आप लोगों को गिरफ्तार होना चाहिए। आप लोगों के लिए पुलिस भेज ही रहा था कि आप लोग आ गए। अब कचहरी में जाकर अपनी सफाई दीजिएगा" कहता हुआ छोटा दरोगा उठने लगा। "अरे बैठो भाई, कहां जा रहे हो? अभी रिपोर्ट दबाए रहो, कम से कम अपने आदमियों का तो ख्याल रखा करो।" दरोगा राय ने छोटे दरोगा को बैठाते हुए कहा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पाण्डे जी को लगा कि बड़े दरोगा हम लोगों के महत्व को समझते हुए हमारी तरफदारी कर रहे हैं। इसलिए वह उत्साह में बोले–"नहीं साहब इन्हें गिरफ्तार करने दें, हम तैयार हैं।" गुप्ता ने भी उनकी हां में हां मिलाई।

"अगर आप तैयार हैं तो हमें भी कोई एतराज नहीं है। मुंशी जी..." छोटे दरोगा ने पुकारा।

"जी सरकार" मुंशी आकर खड़ा हो गया। वह भीतर बैठा सारी बातें सुन रहा था, इसलिए उसने पाण्डे और गुप्ता की ओर इस निगाह से देखा जैसे कह रहा हो कि–"देख ली अपनी औकात?"

पाण्डे और गुप्ता यह देख कर हक्के-बक्के हो गए कि जो दरोगा भीड़ के घेराव में इतना नम्र था, वही इस समय अपना तेवर बदल कर ऐसा हो गया है जैसे पहचानता ही न हो।

"अरे छोड़ो, यह सब क्या कर रहे हो? मुंशी जी जाइए अपना काम कीजिए" दरोगा राय ने कठोर आवाज में आदेश दिया। मुंशी अपनी टेबुल पर वापस चला गया।

"लेकिन साहब डॉ. रमन ने एस.पी. और डी.एम. को भी ट्रंक कर दिया। इन लोगों के चक्कर में हम लोग अपनी नौकरी तो देंगे नहीं।" छोटा दरोगा अब भी अपनी बात पर अड़ा रहा।

"क्या? एस.पी., डी.एम. के यहां ट्रंक कर दिया? डाक्टर साहब को ऐसा नहीं करना चाहिए था।" दरोगा राय ने हैरानी प्रगट करते हुए कहा।

"ठीक है साहब, करने दीजिए एस.पी. डी.एम. को ट्रंक। रहेंगे तो इसी अस्पताल में। देखें कैसे दवा की चोरी करते हैं और पोस्टमार्टम में नाजायज पैसा लेते हैं। बहुत होगा पकड़ा जाऊँगा मोकदमा चलेगा, छूटूंगा जरूर। कोई फाँसी तो हो नहीं जाएगी।" गुप्ता ने अस्पताल की दिशा में हाथ नचाते हुए कहा।

"दवा की चोरी और पोस्टमार्टम की बात छोड़ो अभी उस पुराने केस को उभाड़ दिया जाएगा जिसमें, इन्हीं सहगल साहब से पचास हजार रुपया लेकर एक जे.ई की हत्या को डाक्टर ने पोस्टमार्टम में आत्महत्या दिखाया था।" पाण्डे ने गुप्ता की ओर देखते हुए कहा।

"कौन-सी हत्या?" दरोगा राय की उत्सुकता जगी।

"उस समय आप नहीं थे। आप होते तो मजा आ गया होता। एक नौजवान जे.ई. बेचारा यहां के स्टोर का चार्ज लेने आया तो उसने देखा कि चार्ज लिस्ट के हिसाब से साढ़े बासठ लाख रुपए का सामान स्टोर में नहीं है। उसने चार्ज लेने से इन्कार कर दिया। पुराने जे.ई., सहगल साहब और अतिबल सिंह की इस लूट में पहले से साठ-गाँठ थी। इसलिए इसी अतिबल ने पिस्तौल की नोंक पर उससे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चार्ज लिस्ट पर हस्ताक्षर करवा लिया। नए जे.ई. बेचारे ने सोचा कि यह बदमाशी स्थानान्तरित जे.ई. और अतिबल सिंह की है सो वह सहगल साहब के पास गया, पूरी बात बताई। सहगल साहब ने उसे दिलासा दिया और कहा कि तुम एक प्रार्थना पत्र यह दो कि चार्ज लेने के बाद मुझे यह पता लगा कि स्टोर में फलाँ फलाँ सामान नहीं है।'' जब उसने सही सही बात लिखने के लिए पूछा तो उसे समझा दिया कि–''तुम्हारी पहली पोस्टिंग है, जानते नहीं ये सब बहुत बड़े गुण्डे हैं। अगर सही बात लिखोगे तो हो सकता है तुम्हें जान से मार दें। इसलिए जैसा मैं कहता हूँ वैसा ही लिखो, मैं हूँ न।'' बेचारा सहगल के झाँसे में आ गया। उसने लिख दिया। उसके पन्द्रहवें दिन अपने कमरे में फाँसी पर लटका पाया गया।''

''उसको इस घटना से शॉक लगा होगा, हो सकता है आत्महत्या कर लिया हो'' राय ने कुरेदा।

''अरे नहीं साहब, गला दबा कर हत्या कर दी गई और उसके प्रार्थना पत्र तथा स्टोर के आधार पर यह रिपोर्ट लगा दिया कि शॉक से उसने आत्महत्या कर लिया। डाक्टर रमन ने अपने पोस्टमार्टम से उसे और पुष्ट कर दिया। इतने पापी हैं ये सहगल साहब और रमन'' कहते-कहते पाण्डे का चेहरा तमतमा आया।

''ओफ्फोह, देखने में तो बड़ा सीधा लगता है, मैं नहीं जानता था कि इस तरह का आदमी है'' दरोगा राय ने हैरानी प्रगट की।

''इन सभों के फेर में पड़िएगा नहीं, ये सब पूरे फ्रॉड हैं। सहगल की पत्नी जितनी खूबसूरत है उतनी ही जहरीली है, डाक्टर रमन पर जान छिड़कती है।

दरोगा राय को पाण्डे की बातों पर विश्वास न करने का कोई औचित्य नहीं दिखाई पड़ रहा था। क्योंकि मिसेज सहगल और डाक्टर रमन के सम्बन्धों को वह भी रात की घटना में समझ चुका था। जो आदमी किसी के अन्तरंग सम्बन्धों की जानकारी रख सकता है वह इतनी बड़ी घटना की सही जानकारी भी रख सकता है। उसे साढ़े बासठ लाख रुपए के केस के समय स्वयं के न रहने का दुःख हुआ। ''काश! उस समय वह रहा होता?'' वह मन ही मन सोचता रहा। ''हम लोग जीवन भर कमाएं तब भी इतना रुपया नहीं कमा सकते।'' राय दरोगा ने छोटे दरोगा की ओर मुखातिब होकर कहा।

अब माहौल काफी सौहार्दपूर्ण हो चुका था। एक आदमी की साढ़े बासठ लाख रुपए की कमाई के समाचार ने दोनों दरोगाओं को काफी उदास कर दिया था। उदासी छाँट कर फिर से वार्ता चलाने के लिए दरोगा ने चाय मंगाई। सभी चाय पीने लगे तो राय दरोगा ने धीमी आवाज में कहा–''पाण्डेजी, मुझे मालूम नहीं था कि ये सब ऐसे हैं। अनजाने में मेरी हमदर्दी इन सभों के साथ हो गई थी लेकिन अब मैं समझ गया।''

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"आप तो समझ गए, लेकिन छोटे साहब समझें तब तो? यह तो डाक्टर रमन की रिपोर्ट पर हम लोगों को बन्द कर रहे हैं।" पाण्डे ने हँसते हुए कहा।

"अरे नहीं अब क्या बन्द करना है, अब तो मैं भी समझ गया। लेकिन डांक्टर की बदमाशी देखिए, फट से बाई नेम रिपोर्ट कर दिया।"

"अरे साहब आप लोग साथ दें तो बहुत रिपोर्ट मैंने देखा है। अभी चुटकी बजाते रास्ते पर ला दूँ। क्यों गुप्ताजी?"

"हाँ-हाँ, कहाँ टिकेंगे? अभी देखिए अब तक तो नहीं मारा था लेकिन अब चल कर मारूँगा, दरोगाजी आप मेरा साथ दीजिए।" गुप्ता ने दरोगा से कहा।

"देखो भाई यहां के लोगों में दम नहीं है, कहते बहुत हैं करते कुछ नहीं।" छोटे दरोगा ने आग में घी डाला।

"ठीक है अगर मैं कर दूँ तो?" कहकर गुप्ता ने प्रश्नवाचक दृष्टि दरोगा राय पर डाली।

"वैसे दरोगाजी ठीक ही कह रहे हैं। अब आज की ही बात लो, चौथी सौ दो सौ आदमियों को लेकर बड़े तैश में नारे लगाता सहगल के बंगले पर पहुँचा। मैंने सोचा कुछ झन्झट खड़ा करेगा, मगर बंगले में आकर बातचीत करके लौट गया, जैसे कुछ हुआ ही न हो।" राय साहब ने कहा।

"चौथी...? चौथी पहुँच गया। ससुरा बड़ा काइयाँ है, सूंघता रहता है, हजार दो हजार बनाकर गया होगा!" पाण्डे ने उत्सुकता जाहिर की।

"अरे नहीं जी, हजार दो हजार की बात करते हो। हमें तो आशा है दस-पाँच हजार लेकर गया होगा।" दरोगा राय ने झूले पर पेंग दी।

"नहीं साहब, सहगल साहब को मैं खूब जानता हूँ। वह अपनी औकात के मुताबिक नहीं, लेने वाले की औकात के मुताबिक देता है, वह चौथी की औकात खूब समझता है। मामूली काइयाँ नहीं है।"

"भाई मैंने गिनकर तो देखा नहीं, पाँच मोटी-मोटी नोट की गड्डियाँ देखीं, रकम चाहे जितनी रही हो।" राय ने झूठ से अपनी बात को पुष्ट किया।

इन लोगों में बातें हो रही थीं कि स्थानीय समाचार पत्र 'सत्य' के प्रकाशक, मालिक, सम्पादक, वितरक गोया सब कुछ श्री रामचन्द्र खादी का कुर्ता-पायजामा पहने, कन्धे से गान्धी छाप झोला लटकाए थाने के गेट में घुसते दिखाई पड़े। उन्हें देखते ही–"आज्ञा हो तो अब हम लोग चलें", कहकर पाण्डेजी उठ खड़े हुए।

"कहाँ, इतनी जल्दी क्या है?" दरोगा राय ने प्रश्न किया।

"पार्टी मीटिंग है, उसी में जाना है। क्यों गुप्ताजी आप नहीं चलेंगे क्या?"

"हम तो चल ही रहे हैं", कहकर गुप्ताजी भी उठ खड़े हुए। तब तक सम्पादक जी थाने के बरामदे में पहुँच चुके थे। उन्होंने हँस कर कहा–"अहाऽ क्या

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सौभाग्य है, पहुंचते ही चतुरानन के दर्शन हुए। वाह साहब, आप ही दोनों को ढूँढ़ता मैं आ रहा हूँ और आप लोग जा रहे हैं। बैठिए दो मिनट, मैं भी चल रहा हूँ।''

''हम लोगों को जल्दी है, कोई सेवा हो तो बताइए। वैसे आपने चतुरानन क्यों कहा, मैं समझा नहीं'' गुप्ता ने पूछा।

''वाह रे गुप्ताजी, जहाँ चार मुँह हों वे मिलकर चतुरानन हो जाते हैं, बड़ी सीधी सी बात है, इसमें समझना क्या है? दरोगाजी नमस्कार'' कहकर सम्पादक जी दरोगा की ओर मुखातिब हो गए।

''नमस्कार, नमस्कार बैठिए'', दरोगा राय ने अपने पास पड़ी कुर्सी की ओर इशारा किया।

''कोई नया समाचार हो तो बताइए'', कहते हुए सम्पादकजी पास पड़ी कुर्सी पर बैठ गए।

''कौन-सा नया समाचार है, जो है वह सब तो आप जान ही रहे हैं।''

''और भाभी-बच्चे सब ठीक ठाक हैं न! अरे वाह यह देखिए! थाने के कैम्पस में तो वृक्षारोपण करवा दिया, क्या बात है! बुरा न मानिएगा, जब से आप आए हैं, इस थाने की किस्मत जग गई है। अब तो यह लगता ही नहीं कि हम थाने में आए हैं, लगता है जैसे बगीचे में आ गए हैं। देखिएगा, गुलाब की झाड़ियाँ जो आपने लगवा रखी हैं उनमें फूल भी बहुत बड़े-बड़े आएंगे।''

''सहगल साहब के बंगले से इसे मंगवाया है, जितने बड़े फूल उनके यहां आते हैं उतने बड़े ही तो आएंगे।'' दरोगा राय ने कहा।

''अरे नहीं साहब, उतने ही बड़े क्यों आएंगे? ये फूल भी जगह पहचानते हैं। बड़े लोगों के यहां बड़े और छोटों के यहां छोटे हो जाते हैं, फिर थाने में हिम्मत है कि छोटे हो जाँए, बुरा न मानिएगा।''

''सम्पादकजी जिस काम के लिए आपने हम लोगों को रोका वह तो बताइए, हम लोगों को जाना है'' गुप्ता ने सम्पादकजी को याद दिलाया।

''अरे हाँ, वह काम जिसके लिए मैंने आप लोगों को रोका कोई खास काम नहीं है। अच्छा दरोगाजी यह मगरुआ कहाँ का रहने वाला है?''

''भलुआ का'', दरोगा राय ने संक्षिप्त उत्तर दिया।

''अच्छा...अच्छाऽऽ'' कहते हुए सम्पादकजी ने अपने झोले में से टटोल कर डायरी निकाली और उस पर लिखने लगे।

गुप्ता और पाण्डे इन सम्पादकजी की आदतों से परिचित थे। वह यह जानते थे कि जो भी सम्पादकजी से मिल जाता है, उससे उनका कुछ न कुछ काम रहता है और वे सुबह से ढूँढ़ते रहते हैं। अपनी वार्ता-शैली के वे अकेले जानकार हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जिस भी बात को वह शुरू करते हैं, कोई आवश्यक नहीं है कि वह सिलसिलेवार चलती रहे। यह बात दूसरी है कि कई खण्डों में, विभिन्न अन्तरालों के बाद वह अपनी बातों का निष्कर्ष निकाल लें और वार्ताकार को कुछ पता भी न चले कि कब उसने कौन-सी बात सम्पादकजी से बताई। हो सकता है कि वह ट्रेन एक्सीडेन्ट के किसी बीभत्स घटना का ब्योरा ले रहे हों और उसी समय कोई लड़की उनके सामने से गुजरे, जिसे वह जानते हों तो वार्ता का क्रम कुछ इस प्रकार हो जाता है–"हाँ तो आपने बताया कि खून से सभी लाशें पड़ी थी, कितने ही लोगों की आँते फटकर बाहर आ गईं थी, वह जो सड़क पर लड़की जा रही है बड़ी चालू है, वैसे बड़ी सुन्दर है। इस तरह की कितनी सुन्दर लड़कियाँ भी उस एक्सिडेन्ट में मर गईं होंगी। आपने और क्या देखा? बुरा न मानिएगा, लूट खसोट भी हुई होगी" आदि-आदि। उनकी इस प्रकार की वार्ता में वे दोनों कई बार फँस चुके थे। इसलिए सम्पादकजी जैसे ही सर नीचा कर के लिखने लगे, दोनों चुपचाप थाने के बाहर आ गए। डायरी पर लिख रहे सम्पादकजी ने जब सर उठाकर देखा तो गुप्ता और पाण्डे गायब हो चुके थे।

"वे दोनों चले गए क्या?" कहते हुए उन्होंने अपना सर घुमाकर इधर-उधर देखा तो उनकी निगाह छोटे दरोगा पर पड़ी–"आप कब से इस थाने पर हैं?"

"एक माह से" छोटे दरोगा ने इत्मीनान से कहा।

"अच्छाऽऽ...अच्छाऽऽ। यह भलुआ कहाँ पड़ता है?"

"अनपरा गाँव के पास है।"

"बुरा न मानिएगा, आप अच्छे दरोगा लगते हैं, एक माह के अन्दर आसपास की खबर रखने लगे हैं। राय साहब की बात छोड़िए, किसी दूसरे दरोगा से पूछा जाय तो वह अपने थाने के गाँवों को नहीं जानता। अभी ये पाण्डे और गुप्ता जो गए हैं, हैं तो अच्छे आदमी लेकिन...नेता हैं। अब तो आप समझी गए होंगे। अभी आप नए हैं, राय साहब खूब जानते हैं। क्यों साहब?"

"हाँ-हाँ क्यों नहीं, मैं तो जानता ही हूँ।"

"हाँ आप तो जानते ही हैं, वैसे छोटे साहब भी बहुत तेज लगते हैं। बुरा न मानिएगा, राय साहब, यह चौबे वाला मामला क्या है?"

"कुछ नहीं, आप तो जानते ही हैं कि चौबे फोर्थ क्लास इम्प्लाइज एसोसिएसन का अध्यक्ष है। कम पढ़ा-लिखा आदमी जब कोई पद पा जाता है तो बहुत अकड़ जाता है।"

"राय साहब, आप ठीक कह रहे हैं, देखते नहीं अंगूठा टेक मन्त्रियों को? कितना अँकड़ते हैं? बुरा न मानिएगा, पढ़ा-लिखा मनई उतना नहीं अँकड़ता,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

फिर आप लोगों की तो नौकरी ही रोब-दाब की है। आप अँकड़ से न रहें तो चोर-डाकू जीना दूभर कर दें। बुरा न मानिएगा, पद के अँकड़ और कद के अँकड़ में यही तो अंतर है। बरसात में तो ढ़ीली चारपाई भी अँकड़ती है। वैसे ही इन मंत्रियों की अँकड़ है।''

''बस-बस, वही मौसमी अकड़ की बात है। उस दिन मैं थाने पर था नहीं, छोटे दरोगा अपनी गश्त से लौट कर जैसे ही थाने के अन्दर आने लगे तो कुछ आदमियों को लेकर नारे लगवाते चौबे ने दरोगा को गेट पर ही रोकना चाहा।''

''अब बताइए, एक तो नारे लगवा रहा था, दूसरे रोकने भी लगा, दोहरी गलती! हद हो गई! पता नहीं क्यों लोग हमसे झूठ बोल रहे हैं कि छोटे साहब ने चौबे को बेगुनाह मारपीट कर, बन्द कर दिया। चौबे को यह समझना चाहिए कि अब गांधी बाबा जिन्दा नहीं हैं, उनके पुराने हथियार को क्यों चलाता है? बुरा न मानिएगा, इसीलिए मुझे लोगों की बात पर विश्वास नहीं हुआ। जहाँ आप हैं वहाँ इस तरह की बात कैसे हो सकती है? मुझे विश्वास होता तो...।'' कहकर उन्होंने अपने झोले से अपना अखबार निकाला ''यह देखिए, मैंने अपने अखबार में दानपुर के दरोगा की खुलकर खिलाफत की है। देखिए मोटे हेडिंग में लिखा हैं 'हरिजन लड़की के साथ बलात्कार' इसकी कटिंग डी. एस. पी., मुख्यमंत्री, प्रधानमंत्री को भी भेज चुका हूँ।'' कहते हुए उन्होंने अखबार को राय साहब के सामने फैला दिया। राय साहब ने झुककर समाचार को आद्योपांत पढ़ा। उनके मन में एक हल्की-सी दहशत समा गई। राय साहब अखबार पढ़ते रहे और सम्पादक जी कहते जा रहे थे–समाचार को पूरी जाँच करके तब निकाला है। इसमें एक रत्ती भी झूठ नहीं है। बुरा न मानिएगा, लोग कहते हैं,–''आप अपने थाने पिपरी की शिकायत नहीं निकालते।'' आखिर आप ही बताइए जब कोई गड़बड़ नहीं है तो कैसे निकालूं? फिर डायन भी तो पड़ोस का एक घर छोड़कर खाती है।'' कहकर सम्पादक जी जोर से हँसे।

''नहीं साहब, एकदम निकालिए। अगर कोई गड़बड़ी हो तो पहले मुझको बताइए। वैसे इतना बड़ा स्टाफ है, छोटी-मोटी गड़बड़ियां तो हो ही सकती हैं।''

''क्यों नहीं, क्यों नहीं, गड़बड़ी कहाँ नहीं है? अब परसाल के कवि सम्मेलन की बात ही ले लीजिए। लोग कहते हैं कि मैंने आठ दस हजार रुपया बचा लिया। बाहरी कवियों का पम्पलेट में नाम छपवा कर पैसा वसूला लेकिन उन्हें बुलाया नहीं। आज कल के कवि भी इतने हरामी हो गए हैं कि हाँ करके खर्चा अग्रिम मंगवा लेंगे और ठीक समय पर तार दे देंगे–'आ नहीं पाऊँगा।' अब बताइए, इसमें संयोजक का क्या दोष है? कवि जी तो अग्रिम पैसा लेकर, उसी तारीख में कहीं और अधिक पैसा लेकर सिधार गए, मरे संयोजक।'' कहते हुए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सम्पादकजी ने अपने झोले से कुछ रसीदें निकालीं "लेकिन इस बार ऐसी गलती नहीं करूंगा कबियों से व्यक्तिगत सम्पर्क करूँगा, बुरा न मानिएगा।" उन्होंने रसीदें दरोगा जी के सामने रख दीं।

दरोगा ने रसीद उठाकर देखा, लिखा था–"अखिल भारतीय कवि सम्मेलन, पिपरी।"

"कब है?" दरोगा ने पूछा।

"बस पैसे इकट्ठे हो जायें, उसके बाद तिथि निश्चित कर लिया जाएगा। आप तो जानते ही हैं कि आप ही लोगों की ताकत पर चन्दा चुटकी माँगकर अखबार निकालता हूँ। इस कवि सम्मेलन में भी इधर-उधर से हजार दो हजार अपने पास ही से लगाना पड़ता है। बुरा न मानिएगा, बहुत बुरा शौक है, लेकिन आप ही लोगों के सहयोग के कारण हिम्मत बाँधे रहता हूँ।"

"आपने और किसको-किसको रसीद दिया है?" पूछते हुए दरोगा राय महसूस कर रहे थे कि वह सम्पादक की गिरफ्त में फँस रहे हैं।

गोली मारिए साहब, और किसको रसीद दूँगा? बुरा न मानिएगा, आप अकेले एक कवि सम्मेलन हैं। आप चाह लें तो ऐसे दो कवि सम्मेलन हो सकते हैं। फिर जो साहित्य समझते हैं उनसे साहित्य की बात की जाएगी कि उनसे जो 'गोरिया तोरे गाल पर माशा' सुनना चाहते हैं।"

"नहीं नहीं, मेरा मतलब था कि रसीद अतिबल सिंह को, कुछ डाक्टर रमन के स्टाफ को, कुछ जे. ई. इन्जीनियर, इन लोगों को दे देंगे तो अच्छा ही न रहेगा?"

"मारिए, वे सब लीचड़ हैं, वैसे आप कह रहे हैं तो बड़े भाई की आज्ञा तो माननी ही पड़ेगी" सम्पादक जी ने एक ही सांस में ये सब बातें कह डालीं। जब कि सत्य यह था कि, दरोगा साहब के सुझाव के पहले ही, जिस भाषा में दरोगा से बात कर रहे थे, उसी भाषा का प्रयोग करके अपनी रसीदें सब को दे चुके थे।

"बुरा न मानिएगा, कब तक कलेक्शन की आशा रखूँ?"

"हो जाएगा, महीना-पंद्रह दिन में।"

"बस-बस, तब तो ठीक है। बुरा न मानिएगा, आपके द्वारा आठ हजार मिल जाए, बस गाड़ी पास। वैसे चौबे वाला मामला तूल पकड़ेगा", सम्पादक जी ने दरोगा के अनमने पन को देख कर कहा।

"अब जो होगा देखा जाएगा। जरा किसी सिपाही को भेजकर चाय, पान मंगवा लो।" दरोगा राय ने छोटे दरोगा से कहा।

छोटे दरोगा ने सिपाही भेजकर चाय-पान मंगवा लिया। सभी बैठकर चाय पीने लगे। सम्पादक जी ने चाय की पहली चुस्की ली–"वाह क्या चाय है! पता

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नहीं कौन-सी पत्ती गलाता है। बड़ी सोंधी-सोंधी महक आ रही है। बुरा न मानिएगा, ऐसी चाय पूरे पिपरी में नहीं मिलेगी।''

"अच्छी चाय बनाता है'' दरोगा राय ने शालीनता से कहा।

"अरे साहब वह क्या अच्छी चाय बनाएगा? सब आपकी कृपा है। बुरा न मानिएगा, जिसको आपका आशीर्वाद मिल जाय गोबर से गुड़ हो जाय। इसी फाटक वाले की चाय है न? फाटक पर ही चौबे जी की कहा सुनी हुई थी न?''

"हाँ-हाँ वहीं, कहा सुनी ही नहीं हमारे एक सिपाही पर कट्टा भी तान दिया था। वह तो कहिए छोटे दरोगा ने पकड़ लिया, नहीं तो चला भी देता।''

"हाँ-हाँ, लीजिए अब इस पर आदमी नहीं पकड़ा जाएगा तो क्या माला फेरने में गिरफ्तार होगा? बुरा न मानिएगा, उसका कट्टा तो मालखाने में जमा कर ही लिया होगा। जमानत भी यहाँ से नहीं हुई होगी?''

"मीरजापुर के लिए भेज दिया है। थाने के लिए अनबेलेबुल था'' कहकर राय दरोगा ने चाय की चुस्की ली।

अब सम्पादक जी एक हाथ से जल्दी-जल्दी चाय सुड़कते, दूसरे हाथ से अपना झोला अपने कन्धे पर यथास्थान रखते हुए, चाय को खत्म कर प्याले को टेबुल पर रखकर, एक पान उठा कर मुँह में रखते हुए–"अच्छा साहब आज्ञा दीजिए, नमस्कार'' कहते हुए थाने के बाहर तेज गति से लपके, फिर लौट पड़े।

"अरे साहब एक बात कहना तो भूल ही गया, मैं इसी माह में पिपरी विशेषांक निकालने जा रहा हूँ। उसमें आप अपनी एक फोटो दे दीजिए। उसको छाप कर उसी के नीचे, आप के द्वारा पिपरी थाने पर किए गए सभी सुधारों का विस्तार से वर्णन लिखूंगा। अभी परसाल आपने जिस डाकू को पकड़ा था, उसका पूरा ब्योरा बता दीजिएगा। बुरा न मानिएगा, अब आप जैसे अधिकारी की तारीफ नहीं लिखूंगा तो क्या टिकिया चोर डाक्टर रमन की छापूंगा?''

"अरे छाप दीजिए उनको भी छाप दीजिए।'' दरोगा ने हँसकर कहा।

"वह हमको लाख रुपया दें तब भी नहीं छापूंगा, बुरा न मानिएगा, आप कहें तो भंगी की तारीफ छाप दूँ, आपकी बात टाल नहीं सकता।''

"ठीक है, जब जरूरत हो आकर फोटो ले जाइएगा।''

"आप न मिलेंगे तो भाभी जी से फोटो मांग लूँगा। अच्छा नमस्कार, जरा जल्दी में हूँ'' कहते हुए सम्पादक जी बाहर निकल गए।

दरोगा राय ने इत्मीनान की साँस ली और बोले "क्या समझे सम्पादक जी को, बड़ा खतरनाक है। पेट में घुसकर बात ले लेता है। अच्छा छोड़ो, खैरहिया गए थे?''

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"जी तफ्तीस कर लिया" छोटे दरोगा ने कहा।

"कुछ पता लगा कहाँ के डाकू थे?"

"वही अरविन्द का गोल है।"

"कौन बिहार वाला अरविन्द?"

हाँ, वही। एक आदमी की हत्या हो गई है, लाश पोस्टमार्टम के लिए भिजवा दिया है।"

"अरविन्द नहीं मिला? कितने की लूट हुई होगी?"

"अपना आदमी भेजा था। उसका आदमी तो बता रहा था कि–तीस चालीस हजार, मगर अन्दाजा है कि अस्सी-नब्बे हजार से कम की लूट नहीं है।"

"उसके आदमी से कुछ बात हुई?"

"अभी तो लूट ही को बहुत कम बता रहा है, बातचीत कैसे होगी?"

"तब तफ्तीस में क्या दिखा रहे हो?"

"कुछ तय हो जाय तब न इसकी बात आए? जैसे पैसा देगा वैसी तफ्तीस होगी" कहकर छोटा दरोगा हँसा।

"असल में तुम खानदानी दरोगा हो। इसीलिए नए होते भी सभी हथकन्डे जानते हो।"

"जी हाँ हमारे पिता जी बड़े दबंग दरोगाओं में थे। डिप्टी एस. पी. होकर रिटायर हुए थे।"

"हाँ भाई, इस विभाग के जो हथकन्डे जानता है वही सफल होता है। अच्छा तो उससे मैं न भी रहूँ तो बात कर लेना। पैसा दे, तो जिसके यहां डाका पड़ा है, उसकी पट्टीदारों से रंजिश दिखाकर, रात के समय आपसी मारपीट दिखा देना।" दरोगा राय ने समझाया।

"मैंने भी यही सोचा है। वैसे नेता जी का वरदहस्त भी अरविन्द के ऊपर है।"

"हाँ भाई, राजनीति में चुनाव के लिए ये सब जरूरी तत्व हैं। नेताजी वरदहस्त नहीं रखेंगे तो राजनीति क्या करेंगे?"

दोनों बात कर ही रहे थे कि अस्पताल की ड्यूटी पर लगे सिपाही लौटे। उन्हीं के साथ एक पुलिस का मुखबिर भी थाने में आया। उसने राय दरोगा से फुसफुसा कर कुछ कहा। राय दरोगा चौंक कर बोले–"आंय क्या कहा? बुधनी के साथ?"

"जी सरकार, ऐसी खबर मुझे मिली है" मुखबिर ने कहा।

"कहाँ अस्पताल में ही?"

"अब सरकार में ही?"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"अच्छा ठीक है, जाओ। आज मैं खुद अस्पताल पर रहूँगा। दरोगा जी, आज आप थाने पर रहेंगे, मेरी रवानगी अस्पताल पर लिख दें" राय दरोगा ने चलते हुए छोटे दरोगा से कहा।

शाम का अंधेरा घिर चला था। पिपरी की काली चौड़ी सड़कें, ट्यूब लाइट के प्रकाश में चमक रहीं थी। बनवासी के भाग्य और पिपरी की काली सड़कें दोनों प्रकाश से तो चमकते हैं लेकिन रौंदे ही जाते हैं। बल्कि रौंदने वाले को प्रकाश से और सहूलियत ही मिलती है।

□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

५. अस्पताल

शाम आठ का समय था। ओबरा का अस्पताल बिजली के प्रकाश में जगमगा रहा था। नर्सें अपनी वर्दी में मुस्तैद अपने-अपने वार्डों में ड्यूटी पर लगीं थीं। वार्ड नं. ३ में मगरू एक बेड पर पड़ा था। उसके सर पर पट्टी बंधी थी, टूटे हाथ को अभी केवल खपच्ची बांध कर सीधा कर दिया गया था। टूटे हाथ में दर्द होने के कारण मगरू रह-रह कर कराह रहा था। बुधनी उसके बेड के पास बैठी कभी उसके पाँव को सहलाती कभी उसके बदन को। गुजरे हुए हादसे से वह एकदम बदहवास-सी हो गई थी। उसने पहली बार इस प्रकार के हादसे और इस प्रकार के अस्पताल को देखा था। हर तरफ पक्के, फर्श, सफेद बिस्तरे, छत से लटकते बिजली के पंखे, ट्यूब लाइट की दूधिया रोशनी, उसे दहशती आनन्द दे रहे थे।

इस बार की बाजार से उसके बप्पा ने, जो गाँव में सबसे अच्छी साड़ी उसे दी थी, जिसे पहन कर वह गर्व से फूली नहीं समाती थी वही धोती इस माहौल में सबसे फूहड़ हो गई थी। उसने अभी तक यह सोचा ही नहीं था कि वस्त्र भी हीन भावना पैदा करते हैं।

बड़े घर की महिलाएं, जिनके वस्त्र बहुत ही सुन्दर थे, जब उसकी बगल से निकलतीं तो उसकी नाक में झक् से सेन्ट की ढेर सारी सुगंध भर जाती। वह आन्तरिक तृप्ति तक उस सुगंध को सूंघना चाहती किन्तु भय से उसका सांस बन्द होने लगती, जब वह देखती कि महिला के साथ आने वाला पुरुष उसे अजीब निगाहों से देख रहा है। ऐसे समय में वह आँख नीची करके मगरू के हाथ-पाँव सहलाने लगती। जब से मगरू को चोट लगी थी तब से उसके मुँह में एक अन्न का दाना भी नहीं गया था। सुबह रमजान ने उसे एक पुरवा चाय दी थी। उसने उसे पीने के लिए जैसे ही मुँह लगाया कि उसके होंठ जल उठे थे। सबकी नजर बचा कर उसने चाय खिड़की के बाहर फेंक दी थी। रमजान उसके बप्पा को बुलाने भलुआ गया था। उसके बप्पा अभी तक्र आए नहीं थे। उसे आशा थी कि उसके बप्पा सूरज डूबते आ जाएंगे। बप्पा अभी तक क्यों नहीं आए? वह मगरू का पाँव सहलाते हुए सोच रही थी कि मगरुआ ने कराहते हुए कहा "बंशी कक्का नहीं हैं?"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"नहीं भैया, अभी तक नहीं आए।"

"नौकरी की बात है, आते होंगे" कहकर मगरू ने दिलासा दिया।

"बप्पा नहीं आए, पता नहीं रमजान कक्का कहाँ रह गए?"

"आते होंगे, दिन भर का रास्ता है, भलुआ यहां है? तुमने कुछ खाया पीया कि नहीं?" मगरू ने पूछा।

"हाँ, खाया है, घर से सावाँ का चाउर लाई थी वही चबाया है। अब बप्पा आएंगे तब बनाऊँगी।"

"धत्त! पगली बप्पा नहीं आएंगे तो नहीं बनाएगी? भूखों मरोगी क्या?"

"भूखे काहे मरूंगी? चाउर नहीं चबा रही हूँ?"

"मुझे क्या खिलाएगी? मुझसे तो चाउर नहीं चाबाया जाएगा। देख सिर में चोट है न?" कहते हुए मगरू ने बुधनी की हथेली को पकड़ कर अपने सिर की चोट पर रखा।

"तुम्हारे लिए तो बंशी कक्का के यहां से दाल-भात आया है, काकी ने भेजा है। वही खा लेना।"

"तूँ भी उसी में से थोड़ा सा खा ले।"

"नहीं भैया, हमको बघारी दाल अच्छी नहीं लगती। काकी ने खूब जीरा से बघार दिया है।"

"बुधनी की इस बात को सुनकर मगरू को हँसी आ गई। लेकिन सिर की पीड़ा के कारण वह खुल कर हँस नहीं सका, बस एक दो बार खीं, खीं कर के चुप हो गया। बुधनी ने लजा कर अपना मुँह छुपा लिया। लेटे ही लेटे मगरू ने अपने साबुत हाथ को उसके सिर पर रख दिया और उसके सिर को सहलाते हुए बोला–"वाह रे हमार बहिनियाँ, तुझे तो बड़े घर का खाना मिले तो तूँ मर ही जाएगी।"

"हाँ भैया दाल में बघारा जीरा नान्ह-नान्ह किरौना जइसन, हमें घिन लगता है।"

"अच्छा दाल न खा, रोटी खा ले, हमसे रोटी नहीं कुचाएगी।

"रोटी कौन है, हम लोगों जैसी थोड़े है। कागद जइसन रोटी है, दाल में डाल दूँगी बस गल जाएगी, खा लेना, कूँचना कहाँ है?"

"अच्छा हमको तूँ बहुत मत समझा, सीधे से दाल भात हमें दे दे और रोटी तूँ खा ले" मगरू ने बनावटी गुस्से से कहा।

"नहीं भैया, हमसे नहीं खाया जाएगा। यहाँ पर जाने काहे गन्हाता है, उससे हमारा कपार पिरा रहा है। अब करेसर पर जाऊंगी तो खाऊंगी।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"धत् पगली, यह दवा का गंध है, सभी अस्पताल ऐसे ही गंधाते हैं। क्या तूँ हमें छोड़कर करेसर पर जाएगी?"

"अभी कहाँ जा रही हूँ। जब बप्पा आ जाएं, उनको तुम्हारे पास छोड़कर करेसर पर चली जाऊँगी। चार पैसा कमाऊँगी तो तुम्हें दूध पीने के लिए हो जाएगा, बाप रे बहुत ढेर खून निकला हैं।"

दूध के लिए पैसा कमाने की बात सुनकर मगरू को अपनी बहन पर इतना प्यार आया कि वह रो पड़ा। संकट में पड़ा आदमी अपने सहारे के प्रति बड़ा ही भावुक हो जाता है। इसलिए मगरू की आँखों से आँसू झरने लगे। बुधनी ने सोचा कि दर्द हो रहा है, इसलिए मगरू रो रहा है। उसने तुरन्त अस्पताल की दी हुई दर्द की टिकिया जल्दी-जल्दी अपने आँचल से खोलकर मगरू की ओर बढ़ाया। मगरू ने इन्कार में अपना सर हिलाया तो बुधनी किसी बूढ़ी माँ की तरह समझाने लगी–"ई टिकिया बहुत अच्छा है। डागडर ने कहा है कि इसको खाते दरद खतम हो जाएगा। लो, खालो बहुत छोट टिकिया है।" कहते हुए उसने बगल में रखे लोटे के पानी को भी उसकी ओर बढ़ाया।

"नहीं हमको दरद नहीं है" मगरू ने आँसू पोंछते हुए कहा।

"तब काहे रो रहे थे?" कहते हुए बुधनी ने अपने आँचल से उसके आँसू पोंछ दिए।

"तू अकेली करेसर पर जा कर रहेगी? तुझे डर नहीं लगेगा?"

"वहाँ पर डर काहे, फन्नू कक्का हैं, परबतिया है, सब घरे गिराँव के तो हैं। हमें तो यहीं पर डर लगता है।"

"यहाँ पर डर काहे लगता है? कोई जंगल है कि सेर, भालू हैं?"

"भैया, थाने के मनई तो सेरो भालू से खराब हैं। पता नहीं काहे हमै तो इहाँ के सब मनइन से डर लगता है।"

"धत् पगली, असल में तूँ पहली बार पिपरी आई है, इसीलिए डर लग रहा है। मैं भी जब बंशी भैया के साथ पहली बार आया था, तो बड़ा डर लगता था।

"ऐ चुप रहो, क्या बड़बड़ लगाए हो? इसे जंगल समझ रखा है क्या? जंगली कहीं केऽऽऽऽ" ड्यूटी पर तैनात नर्स ने डाँटा।

असल में नर्स कहीं बाहर से लौट कर सीधे ड्यूटी पर आई थी। उसे दिन में हुए अस्पताल की घटना का ज्ञान नहीं था। कुछ उड़ती पड़ती खबरें उसने सुनीं जरूर लेकिन उसे यह पता नहीं था कि जिसके लिए इतना कांड हुआ वह यही मगरुआ है। अगर उसे पता होता तो शायद इस प्रकार डाँटने की उसकी हिम्मत न पड़ती।

उसकी डाँट को सुनकर दोनों सहम कर चुप हो गए। नर्स अपने एक ब्वाय फ्रेन्ड के साथ बात कर रही थी। उसकी बात में इन लोगों की वार्ता खलल पैदा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कर रही थी। इसीलिए उसने मगरू के बेड के नीचे झाँक कर कहा–"यह क्या गठरी मोठरी रख छोड़ी है? अस्पताल है कि कोई कबाड़खाना है? ऐ लड़की, उठा अपनी गठरी-मोठरी, चल अस्पताल के बाहर।"

"यह हमारी बहन है सरकार, अकेली बाहर कैसे रहेगी?" मगरू ने सहमते हुए कहा।

"तुम्हारी बहन हो चाहे कोई हो, वार्ड में केवल मरीज रहते हैं, घर है कि पूरा परिवार रहे?"

"नहीं सरकार, अब हम लोग नहीं बोलेंगे" मगरू ने रिरियाती आवाज में कहा।

"बोले चाहे चिल्लाए, बाहरी आदमियों को वार्ड में रहने का नियम नहीं है। ऐ लड़की, उठा अपना उब्बक, तुब्बक। उठाती क्यों नहीं?"

बुधनी ने सहमते हुए अपनी गठरी के बिखरे सामानों को सहेजना शुरू किया, उसी समय बंशी वार्ड में आया। बंशी चौबे की ज़मानत के लिए अपनी पत्नी का गहना लेकर मीरजापुर गया था। किन्तु चौबे के मीरजापुर पहुँचते-पहुँचते शाम हो गई थी। इसलिए वह वहीं से सीधा पसीने से लतपथ, जल्दी-जल्दी मगरू के बेड के पास पहुँचा था। मगरू बंशी को देखते ही प्रसन्न हो गया, बुधनी भी गठरी समेटना भूलकर बंशी की ओर मुखातिब हो गई।

"अभी रामधनक भैया नहीं आए क्या?" बंशी ने पूछा।

"अभी तो नहीं आए, रमजान कक्का सबेरे ही गए, पता नहीं कहाँ रह गए?" मगरू ने कहा।

"आवत होंगे, साइकिल पर तो ऊ बइठ नाहीं सकते, डरते हैं" कहकर बुधनी अपने पिता के भोलेपन पर हँसी, क्योंकि वह एक-दो बार मगरू के साथ साइकिल पर बैठ चुकी थी।

"ऐ लड़की, फिर चबड़-चबड़ करने लगी। अपनी गठरी उठाया नहीं?" नर्स ने कहा।

"बंशी ने मुड़कर नर्स की ओर देखा और पूछा–"क्या बात है मेम साहब?"

"बात क्या है, वार्ड में केवल मरीज रह सकते हैं, इससे मैं कभी से कह रही हूँ कि अपनी गन्दी गठरी लेकर बाहर जाओ, तो सुन ही नहीं रही है।"

बंशी इस नर्स को पहचानता था, क्योंकि अपने सम्बन्धों की बहुलता के लिए यह नर्स पिपरी में बदनाम थी, उसकी बात को सुनकर परेशान बंशी एकदम से जल उठा, लेकिन अपने को संयत रखते हुए उसने कहा–"जी आप ठीक कह रही हैं कि नियम नहीं है, लेकिन यह बेचारी अकेली जाएगी कहाँ?"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"अब तुम आ गए हो, अपने पास ले जाओ" नर्स ने चपलता से आँख मार कर कहा।

नर्स की बात से बंशी भीतर ही भीतर जल भुन गया, लेकिन फिर कोई बवाल न हो इसलिए उसने कहा–"आप ठीक कह रही हैं, मेरी बेटी है, मैं तो उसे लिवा ही जाऊँगा, लेकिन मरीज की देख-भाल कौन करेगा?"

"वाह वाह, यह तुम्हारी बेटी है? क्यों झूठ बोल रहे हो?"

"लगता है, आप शहर की हैं, देहात की नहीं। शहरों में तो सगे-सम्बन्धों में भी लोग शंका करते हैं, गांव के सम्बन्धों में विश्वास होता है। हम अभी उन्हीं विश्वासों में जी रहे हैं।"

"ठीक है, तुम उसी विश्वास में जियो, लेकिन मैं नियम के खिलाफ वार्ड में किसी को नहीं रहने दूँगी। रात के नौ बजे रहे हैं, अब आप लोग बाहर जाइए" कहकर नर्स ने बाहर जाने के लिए हाथ से बेरुखी से इशारा किया।

नर्स के इस व्यवहार से बंशी ने मगरू और बुधनी के सामने अपने को बहुत ही अपमानित महसूस किया। एक तो वह परेशान था, दूसरे इस प्रकार के व्यवहार की उसे एकदम आशा नहीं थी, इसलिए उसे क्रोध आ गया। उसने तेज आवाज में कहा–"नियम की बात करती हैं? क्या यही नियम है कि मरीज सुबह से पड़ा रहे और कोई उसे देखने न आए? उसको प्लास्टर न लगे, गरीब असहाय मरीज को भोजन न दिया जाय, यही नियम है?"

"इस नेतागिरी से प्लास्टर लग जाएगा क्या? तुम्हारे जैसे बीस नेता यहाँ आते रहते हैं। जाओ अपना काम करो, यहाँ नेतागिरी नहीं चलेगा। प्लास्टर लगवाना हो तो पचास रुपए लाओ, लग जाएगा। जहाँ तक डाइट की बात है, यहाँ भिखमंगों के लिए लंगर नहीं खुला है कि जो आवे उसे भोजन दिया जाय। फिर मैं यह सब कुछ नहीं जानती, पहले आप लोग बाहर जाइए" नर्स ने दरवाजे की ओर झटके से हाथ का इशारा करते हुए कहा।

बंशी प्रतिउत्तर में कुछ कहना ही चाह रहा था कि नर्स से बात कर रहे युवक ने आगे बढ़कर बीच-बचाव करते हुए कहा–"अरे भाई साहब सुनिए, सही बात यह है कि अभी डाक्टर साहब राउन्ड पर आएंगे तो किसी बाहरी आदमी को वार्ड में देखकर इन्हीं को बिगड़ेंगे, इसीलिए इन्होंने आप लोगों को बाहर जाने को कहा है। इसमें बुरा मानने की कोई बात नहीं है।"

"नहीं भाई साहब, मैं बुरा नहीं मान रहा हूँ। आप तो इनकी बातें शुरू से सुन रहे हैं। आप ही बताइए कैसी-कैसी बातें यह कह रही हैं? क्या बात करने का यही तरीका है?"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"अरे छोड़िए, जाने दीजिए" नौजवान ने कहा। उसी समय डाक्टर रमन, सहगल साहब, अतिबल सिंह तथा चौथी राम ने वार्ड में प्रवेश किया। बातचीत में मशगूल रहने के कारण बंशी उन लोगों को देख नहीं पाया। सहगल साहब ने पीछे से बंशी के कंधे पर हाथ धर कर पूछा–"क्या हाल चाल है?"

बंशी चौंककर पीछे मुड़ा तो देखा कि सहगल साहब मुस्कराते हुए खड़े हैं। उसने उन्हें तथा साथ के अन्य लोगो को नमस्कार किया और बगल हट कर खड़ा हो गया। नर्स सिटपिटा कर चुप हो गई और नौजवान धीरे से खिसक गया।

"मुझे पता चला कि तुम छुट्टी लेकर चौबे जी की जमानत कराने गए थे, जमानत हुई?" सहगल साहब ने बंशी से पूछा।

"नहीं साहब, आज नहीं हो पाई, कल हो जाएगी" बंशी ने सर झुकाए हुए कहा।

"ठीक है, जमानत करा लो और इस झगड़े को खतम कराओ, कोई फायदा नहीं है।"

"अब चौबे जी छूट कर आएं, वह जैसा समझें...।"

"जैसा समझें नहीं, पुलिस से लड़ाई लेना किसी के हक में अच्छा नहीं होता है। जहाँ तक दवा-दारू की बात है, तुम्हारा पेशेन्ट यही है न?" कहते हुए सहगल साहब मगरू की बेड की ओर बढ़े। उनके साथ सभी लोग मगरू के बेड को अगल-बगल से घेर कर खड़े हो गए। बुधनी अपनी जगह से कुछ दूर हट कर दीवाल के सहारे खड़ी हो गई। मगरू अपने बेड पर उठकर बैठने लगा तो डाक्टर रमन ने उसके कन्धे पर हाथ धर कर "अरे नहीं, नहीं सोए रहो" कहकर उसे फिर सुला दिया और झुक कर उसके सर, हाथ, पाँव की चोटों को देखने लगे। काफी समय तक देखने के बाद उन्होंने पूछा–"कहीं और तो चोट नहीं है?"

"है सरकार, पीठ में छिछोर गया है" मगरू ने कहा।

"खोलो देखें" कहकर डाक्टर रमन मगरू की बेड से एकदम सट कर खड़े हो गए। मगरू ने बैठकर एक हाथ से अपनी कमीज पीठ से हटानी चाही पर वह ठीक से हटा नहीं पाया तो डाक्टर रमन ने बुधनी की ओर मुड़कर देखा और कहा–"तुम इसकी बहन हो?"

बुधनी ने हामी में सिर हिलाया।

"तब वहाँ खड़ी क्या कर रही हो? इधर आओ, इसकी कमीज हटाओ" बुधनी मगरू की कमीज हटाने के लिए आगे बढ़ी, लेकिन बेड के आस-पास पुरुषों की भीड़ देखकर सहम गई। डाक्टर रमन ने अपनी बगल में खड़े अतिबल सिंह को अपने हाथ से थोड़ा बगल खिसका दिया और कहा–"आओ चली आओ।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बुधनी सहमती हुई रमन और अतिबल सिंह के बीच के रिक्त स्थान में जाकर सहमी हिरन के बच्चे सी खड़ी हो गई। डाक्टर रमन और अतिबल सिंह के बीच का फासला कम होने लगा। बुधनी ने अपने अगल-बगल दबाव महसूस किया। उसने जल्दी से अपना हाथ बढ़ा कर मगरू की पीठ से कमीज को ऊपर उठा दिया। इस प्रक्रिया में उसके पुष्ट उरोज और अधिक उभड़ गए। सहगल ने कहा "ठीक है" और बुधनी को लगा कि किसी अज्ञात हाथ ने उसकी रान को सहलाया है।

डाक्टर रमन बुधनी से सटते हुए मगरू की पीठ को देखने के लिए झुके और बोले–"हाँ एकदम ठीक है, कोई खतरा नहीं, थोड़ी दवा खरोच पर लगा देना" बुधनी से कहने के बहाने उन्होंने अपना चेहरा एकदम से कमीज उलटने के लिए झुकी बुधनी के चेहरे की ओर ऐसा मोड़ा कि उनके होठ हल्के से बुधनी के होठ को स्पर्श कर गए। उसी समय उसके स्तन पर किन्ही हाथों का दबाव पड़ा। वह बिदक कर सीधी खड़ी हो गई तो उसने महसूस किया कि जिस फासले में वह खड़ी थी, वह फासला समाप्त हो चुकी है। वह घबरा कर, बेड से दूर फिर अपने स्थान पर जाकर खड़ी हो गई। उसके मन-मस्तिष्क पर आसपास खड़े सभ्य लोगों के कपड़ों से आती सुगन्ध आतंक की तरह छा गई। बंशी यह सब देख समझ रहा था किन्तु ऐसे अवसर पर कुछ भी बोल पाने में लाचार था।

"और कोई परेशानी?" डाक्टर ने मगरू से पूछा।

"कुछ नहीं सरकार, बस जल्दी से ठीक कर दीजिए, हम घर चले जायँ।"

"क्यों घर क्यों जाओगे? यहां अच्छा नहीं लगता क्या?" कहते हुए डाक्टर ने कनखियों से बुधनी की ओर देखा।

"अपना घर, घर है सरकार। चाहे जैसे उठें, बैठें। यहां परे परे मन नहीं लगता।"

"इसे भी अपना घर समझो, नहीं तो चलो तुम्हें प्राइवेट वार्ड में भर्ती कर दें, चाहे जैसे उठो बैठो" डाक्टर ने प्रस्ताव रखा।

बंशी ने इस प्रस्ताव में छिपी कुत्सित भावना को तुरन्त समझ लिया, इसलिए मगरू के बोलने के पहले ही बोला–"अरे नहीं साहब, क्या जरूरत है? यह सब यहीं रह लेंगे। जरा मेम साहब से कह दें कि वह इस लड़की को वार्ड में ही रहने दिया करें।"

"मेम साहब मना कर रहीं थीं क्या?" कहकर डाक्टर रमन ने नर्स की ओर देखा और फिर बोले–"हाँ ठीक ही तो मना कर रही थी। मरीज के अलावा किसी दूसरे का वार्ड में रहना नियम विरुद्ध है। इसीलिए तो कह रहा हूँ कि प्राइवेट वार्ड में चलो, अब इससे अधिक तुम लोगों को और क्या सुविधा दे सकता हूँ?"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बंशी निरुत्तर होकर इस समस्या का समाधान सोच ही रहा था कि रमजान के पीछे-पीछे रामधनक लाठी टेकता वार्ड में घुसा। रमजान ने दीवाल से सटी बुधनी को दूर से ही देख लिया था, वह रामधनक के साथ उसी ओर बढ़ा। बुधनी ने अपने बप्पा को देखा तो जोर-जोर से रोने लगी। उसके रोने की आवाज सुनकर सभी चौंक कर उसकी ओर देखने लगे। अतिबल सिंह–"अरे क्या हुआ, अरे क्या हुआ?" कहते हुए बुधनी की ओर लपके। बंशी आगे बढ़कर बुधनी और अतिबल सिंह के बीच खड़ा हो गया और बोला–"उसके बप्पा आए हैं न, उन्हें देखकर रो रही है।"

रामधनक बुधनी के इस अप्रत्याशित रुदन को सुनकर घबरा गया। उसने सोचा कि मगरू को कुछ हो गया, इसीलिए बुधनी रो रही है और इतनी भीड़ जुटी है। वह अरे हमार बचवा को क्या हुआ?" कहता हुआ मगरू के बेड की ओर लपका। मगरू ने जब अपने पिता की आवाज सुनी तो उठकर अपने बेड पर बैठ गया। रामधनक ने जब अपने बेटे को सकुशल देखा तो उसे बुधनी पर बड़ा क्रोध आया। "इ ससुरी ऐसे ही रोती है, चमाइन कहीं की" कहकर उसने बुधनी को डाँटा। बुधनी हपस, हपस कर रोती रही।

मगरू को देखकर रामधनक आश्वस्त हुआ तो उसने अगल-बगल की भीड़ पर ध्यान दिया। डाक्टर रमन के क्रिया-कलापों से वह समझ गया कि वह डांगडर साहब हैं। उसने बैठकर डाक्टर के पाँवों को पकड़ लिया और कहा– "सरकार, आप हमारे माईबाप हैं, हमरे मगरुआ का हाथ ऐसा बना दीजिए कि वह फरसा झउआ कर सके, नहीं तो हम मर जाएंगे सरकार। आप भगवान हैं।"

डाक्टर रमन ने "अरे, अरे यह क्या कर रहे हो? सब ठीक कर देंगे, घबराओ नहीं" कहते हुए अपना पाँव उससे छुड़ा लिया।

"पैसा हमरे पास नहीं है सरकार, खाने को मोहताज हैं। पता लगा लीजिए माई-बाप, बहुत बड़ा सूखा परा है। जो कहेंगे मेहनत मजूरी कर देंगे।"

"पैसे की कोई बात नहीं है, तुमसे पैसा कौन मांग रहा है?"

"नहीं जी, पैसे की जरूरत होगी तो पैसा भी मिल जाएगा, यह लो" कहते हुए सहगल साहब ने एक सौ का नोट रामधनक की ओर बढ़ाया। रामधनक ने सौ का नोट देखा तो एकदम से सहम कर पीछे हट गया–"अरे नहीं सरकार, इतना पैसा लेकर हम क्या करेंगे? मेहनत-मजूरी का भरोसा, कैसे भरेंगे?" कहते हुएं उसने बंशी की ओर देखा। बंशी इन लोगों की हमदर्दी के पीछे छिपी घृणित भावनाओं को समझ रहा था, इसलिए उसने कहा–"हमारे साहब है, पैसे की जरूरत होगी तो कहना। हम साहब से जाकर मांग लाएंगे।" सहगल साहब को बंशी का इस प्रकार से बीच में टांग अड़ाना अच्छा नहीं लगा। उन्हें लगा कि बंशी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उनकी वास्तविकता को समझ रहा है। इसलिए बंशी की ओर ताकते हुए कुछ कड़ी आवाज में कहा–"हमारे बच्चे से एक्सीडेन्ट हुआ है, इसलिए मानवता के कारण पैसे दे रहा हूँ, फिर चौथी राम ने भी रिक्वेस्ट किया था, नहीं तो किसी के पास फालतू पैसा नहीं है!" कहते हुए उन्होंने पैसा जेब में रख लिया।

"हाँ और क्या, साहब ठीक कह रहे हैं। मैंने खुद साहब से कहा था कि मगरू बहुत गरीब है, कुछ पैसा दे दीजिए। वही पैसा देने के लिए आए हैं, नहीं तो साहब को कहाँ फुर्सत है कि ऐसी-वैसी जगह पर जायँ" कहकर चौथी राम ने सहगल साहब का साथ दिया।

"नहीं साहब, पैसा नहीं चाहिए, बस दवा करवा दीजिए।" मगरू ने सहगल की डाँट से सिटपिटाए बंशी की ओर देखकर कहा।

"तुम धांगर हो न, मैं भी धांगर हूँ। मैं तुम लोगों का नेता हूँ। चेहरे से मुझे नहीं पहचानते होगे लेकिन नाम सुना होगा। चौथी राम सुना है?" चौथी राम ने रामधनक से पूछा।

"नहीं भैया, भगवान झूठ न बोलाए, कभी नहीं सुना। नेता-वेता तो शहर बाजार की चीज हैं, हम जंगली देहाती कहाँ सुनेंगे?" रामधनक ने बड़े भोलेपन से कहा।

चौथी राम का चेहरा फक् से उड़ गया लेकिन तुरन्त ही उसने अपने चेहरे के भाव को छिपा लिया। उसे बंशी पर बड़ा क्रोध आया इसलिए उसने अपनी बातचीत का पैंतरा तुरन्त बदल दिया और बोला–"अच्छा नहीं सुना तो ठीक है, लेकिन यह बंशी महाराज बाभन हैं और मैं तुम्हारी बिरादरी का हूँ। ये लोग ऐसे ही हम लोगों की जड़ खोदते आए हैं। यहाँ पर चार पैसा मिल रहा है तो लेने नहीं दे रहे हैं, जब घर जाएंगे तो हम लोगों से हल जोतवाएंगे, समझेऽऽ? इन लोगों की चाल में आओगे तो भूखों मरोगे। पुश्त दर पुश्त से इन्हीं लोगों की बात में फँस कर हमारे-तुम्हारे बाप दादे भूखों मरते रहे हैं। अभी तक तुम लोगों की आँख नहीं खुली? आखिर मैं पूछता हूँ कि सहगल साहब इतने बड़े साहब होकर जब हमारे कहने पर रुपया देने आए हैं, तो क्या कर्ज दे रहे हैं? उसको लेने में क्यों डर रहे हो?" कहते हुए चौथी राम ने सहगल साहब से कहा–"सौ रुपया और दे दीजिए साहब।"

सहगल साहब ने बड़े बे-मन से सौ के दो नोट रामधनक की ओर बढ़ाया रामधनक को बिरादरी की बात समझ में आ गई। उसने रुपया लेने के लिए हाथ बढ़ाया ही था कि दीवाल से सटकर रोती बुधनी ने "बप्पा रूपिया मत लो, नहीं चाहिए रूपिया।" कहती हुई झपट कर रामधनक के रुपए के लिए बढ़े हाथ को थामकर पीछे कर दिया। बुधनी के इस अप्रत्याशित झपाटे से बूढ़ा रामधनक लड़खड़ा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गया। सभी लोग अवाक् होकर बुधनी का मुँह देखने लगे। किसी की समझ में नहीं आ रहा था कि हिरन के बच्चे सी डरी, सहमी बुधनी एकाएक खूंखार कैसे हो गई?

मगरू अपनी बहन की इस अन्तर्मुखी प्रवृत्ति को जानता था, क्योंकि इसी प्रकार झउआ उठाते बुधनी ने क्रेशर मालिक के ऊपर अपना झउआ पटक दिया था और रोती हुई अपने डेरे पर चली गई थी। मगरू ने उससे उसके रोने का कारण बहुत पूछा किन्तु उसने बताया नहीं, यद्यपि मगरू को बाद में सब मालूम हो गया था। उसके दूसरे दिन दोनों दूसरे क्रेशर पर चले गए थे। इसलिए मगरू समझ गया कि बुधनी के साथ कुछ अप्रिय हरकतें हो गई हैं। इतना समझते ही मगरू उठकर अपने बेड पर बैठ गया और–"नहीं बप्पा पैसा मत लीजिए" कहता हुआ अपने बेड से उतर कर खड़ा हो गया। अपने सिर पर लगी पट्टी को एक हाथ से नोंचकर फेंक दिया और "बुधनी इधर आ" कहकर बुधनी को अपने पास बुलाया। उसके पास आ जाने पर उसने अपना टूटा हुआ हाथ बुधनी की ओर बढ़ाकर कहा "इस पर की खपच्चियां छोड़कर यहीं फेंक दे। चल गाँव चलें, वहीं पर छोटई दद्दा से हाथ बइठवा कँर तीसी का तेल लगाएंगे, हाथ ठीक हो जाएगा।"

बुधनी चपचाप रोती हुई मगरू के हाथ की खपच्चियां छोड़ने लगी। मगरू की आंखें गुस्से से लाल थीं। अब रामधनक को अपनी बेटी के गुस्से पर शंका हुई क्योंकि वह भी बुधनी को जानता था। उसकी बूढ़ी जंगली नसों में रक्त का संचार बढ़ गया। वह अपनी लम्बी लाठी के सिरे को पकड़ कर सीधा तन कर खड़ा हो गया। झुका हुआ साढ़े पाँच फुट का शरीर, सीधे खड़े छः फुटे काले रीछ जैसा दिखाई देने लगा। उसने घूर कर वहां पर खड़े सभी लोगों को बारी-बारी से देखा। उसकी आंखें रक्त से उबल रहीं थीं, चेहरा विद्रूप होकर खूंखार लग रहा था। एकाएक उसने धोती-कुर्त्ता पहने अतिबल सिंह पर लाठी चला दी। बगल में खड़े बंशी ने लपक कर उसकी लाठी पकड़ ली, अतिबल सिंह साफ बच गए। लेकिन संतुलन बिगड़ जाने के कारण रामधनक भहरा कर वहीं गिर पड़ा। बुधनी अपने बप्पा के गुस्से को जानती थी इसलिए उसने दौड़कर अपने बप्पा को पीछें से पकड़ कर अपनी बाँहों में भर लिया।

"हट ससुरी, छोड़ दे, धरम नहीं बचेगा तो जी के क्या करेंगे?" कहता हुआ रामधनक उठने के लिए छटपटाया किन्तु बुधनी की मजबूत पकड़ से छूट नहीं पाया।

"अरे नहीं बप्पा, गोड़ धरती हूँ बप्पा, मार मत करो बप्पा" बुधनी कहती जाती और रोती जाती थी। रामधनक ने बैठे ही बैठे गुस्से में बुधनी को ही दो चार थप्पड़ मारा। बंशी ने आगे बढ़कर रामधनक के हाथों को पकड़ कर "पागल हो गए हो क्या" कहकर झकझोर दिया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रामधनक ने एक बार बंशी की ओर देखा और शान्त हो गया फिर भी उसकी सांस जोर-जोर से चलती रही। उसने "अच्छा अब छोड़ दे कुछ नहीं करूंगा" बुधनी से कहा। बुधनी ने उसकी कमर छोड़ दी। रामधनक जमीन पर हाथ टेक कर उठा और झुककर अपनी लाठी ढूँढ़ने लगा। इस शोर-शराबे से वार्ड में एक दहशत सी छा गई। चौथी राम, सहगल और अतिबल सिंह काफी दूर हटकर खड़े हो गये। डाक्टर रमन तेजी से भाग कर वार्ड के दरवाजे पर पहुंच गए। नर्स जो बहुत बढ़-चढ़ कर बातें कर रही थी, डर के मारे थरथर-थरथर काँपती खड़ी रही। उसने अपने सीने पर क्रॉस बनाकर प्रभु यीशु को धन्यवाद दिया कि भला वह इन लोगों से अधिक नहीं उलझी। बंशी झुककर फर्श पर कुछ ढूँढ़ने लगा।

"का खोज रहे हैं कक्का? कुछ गिर गया क्या?" मगरू ने पूछा। बंशी का चेहरा एकदम उतर गया था। वह मगरू के प्रश्न का बिना कोई जवाब दिए फर्श पर अपनी निगाहें दौड़ाता रहा। चारो तरफ से निराश होकर उसने अपने कपड़े के झोले में हाथ डाल कर टटोलना शुरू किया तब रामधनक ने पूछा–"का ढूंढ़ रहे हो भैया का गिर गया?"

"सोने का कनफूल था वही कहीं गिर गया।"

"अरे, सोने का कनफूल? वह काहे लाए थे?" रामधनक ने पूछा।

इस अवसर पर बंशी ने रामधनक को सारी बात बता देना ही उचित समझा। "आज चौबे की जमानत कराने गया था। उसी के लिए घर से गहना ले गया था कि उसे बेचकर काज करूंगा, लेकिन जमानत नहीं हो पाई, यहां आया तो यहीं पर फँस गया। वही एक कान का तुम्हारे हड़बड़ में कहीं छटक गया" बंशी ने कहा।

रमजान ने रामधनक से भलुआ में ही सारी बातें बता दी थीं। इसलिए रामधनक सुने घटनाक्रम में चौबे जी से परचित हो चुका था। "ऊ जेहल में हैं?" रामधनक ने भर्राए स्वर में पूछा।

"हाँ" कहकर बंशी फिर फर्श पर, मगरू के बेड पर आसपास अपनी नजर दौड़ाने लगा। चौथी तथा सहगल साहब दरवाजे से लौट आए। डॉ. रमन भी अपने स्थान पर खड़े-खड़े आस-पास अपनी निगाहें दौड़ाने लगे। अतिबल सिंह आकस्मिक घटना से हतप्रभ अपने स्थान पर गुस्से में खड़े रहे। घटना कुछ इस प्रकार से आकस्मिक मोड़ ले चुकी थी कि वे तथा अन्य लोग लाठी चलने वाली घटना पर क्या प्रतिक्रिया की जाय, सोच नहीं पा रहे थे।

बुधनी ने सिर झुका कर जैसे ही मगरू के बेड के नीचे झाँका कि उसके सिर से खन्न से कर्णफूल फर्श पर गिर पड़ा। उसने लपक कर उसे उठा लिया और "यह देखो बंशी कक्का, हमारे कपार पर से सोना झर रहा है" कहकर बड़ी जोर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

से खिलखिला कर हँस पड़ी। उसके मुक्त हास्य से सारा कक्ष भर उठा, जैसे सितार के सारे तार एक साथ बज उठे हों।

डॉ. रमन ने एक लम्बी आह भरी और मन ही मन कहा–"तेरे सिर से सोना और हँसी से शराब झरती है।"

मगरू, बंशी और रामधनक भी हँसने लगे–"अच्छा बहुत खी-खी मत कर, दे दे बंशी भैया को। रख लें, भला मिल गया नहीं तो बड़ा अपजस आता" रामधनक ने कहा।

"नहीं, ऐसे नहीं दूँगी, पहले कक्का मिठाई खिलाएं" बुधनी ने छोटे बच्चे की तरह मचलते हुए कहा।

"चल हट, बड़ी आई मिठाई खाने वाली। पहले अपना चिरई के खोता जैसा बार धोकर तेल लगा" कहते हुए रामधनक ने उसके बाल को टटोलकर कहा–"अरे बाप रे बाप, इतना लटियाया है कि झउआ ढोने के लिए पगड़ी की भी जरूरत नहीं है।"

"तभी तो कनफूल इसके सर पर टंगा रहा और इसे पता नहीं चला" मगरू ने हँसते हुए कहा।

"अच्छा, अच्छा रहने दो, कल बप्पा के साथ नदी पर जाकर मट्टी से अपना बाल धो लूँगी, लेकिन आज बंशी कक्का से मिठाई जरूर खाऊंगी।"

"हाँ भाई हाँ, तुझे मिठाई खिला दूँगा, बस? ला कनफूल इधर ला" कहते हुए बंशी ने अपनी हथेली बुधनी के आगे पसार दी।

बुधनी ने कर्णफूल को अपनी चुटकी में पकड़े हुए बंशी की हथेली पर धरा और पूछा "खिलाओगे न?"

"हाँ भाई कह तो दिया।"

"नहीं तीन बाचा बोलो, हाँ, हाँ, हाँ, तब मैं कनफूल छोड़ूंगी।"

बंशी ने तीन बार हाँ कही तो बुधनी ने कनफूल छोड़ दिया।

"ई ससुरी जनम से शैतान है" रामधनक ने हँसते हुए कहा।

घटनाएं एक के बाद एक इतनी जल्दी-जल्दी घट गईं कि गुस्से में भरे अतिबल सिंह को अपना क्रोध प्रदर्शित करने का अवसर ही नहीं मिल पाया। अपने ऊपर चली लाठी के कारण, अतिबल सिंह अपने को बहुत ही अपमानित महसूस कर रहे थे। सहगल साहब का धन संस्कारित मन अपने पैसे के अपमान से बहुत घायल हो गया था। अपने चपरासी बंशी के सामने ही अपने को अपमानित समझ कर वे मन ही मन बंशी पर ताव-पेंच खा रहे थे। डॉ. रमन जो कि अब तक अस्पताल तथा अस्पताल के रोगियों का अपने को बादशाह समझते थे, अपने ही स्टाफ के सामने भीगी बिल्ली बन जाने के कारण मन ही मन पछता

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रहे थे, कि क्यों नहीं उन्होंने उसी समय इस देहाती को खूब कसकर डाँटा। अगर डाँट दिया होता तो वह जरूर डरकर गिड़गिड़ाने लगता। उन सबों को हँसते देखकर उन्हें लगा कि मैं व्यर्थ ही बहुत अधिक डर गया था। जब रामधनक ने लाठी चलाई तो वह डरंकर किस प्रकार भागे, उसे याद कर वह मन ही मन शर्मिंदा हो रहे थे।

अक्सर पढ़े-लिखे, प्रदत्त शक्ति के अहं का मुखौटा ओढ़े लोग, जो संकट उनकी प्रदत्त शक्ति को नकार कर आता है, उससे पहले तो भयभीत होकर भागते हैं और उस समय उनका अहं भी मर जाता है किन्तु जैसे ही संकट टलता है उनका अहं फिर जाग जाता है। ऐसे अवसर पर वे अपने झूठे अहं की पोल खुल जांने का बदला लेना चाहते हैं। इसलिए सब बदले के लिए बेचैन थे। चौथी राम अधिकारियों के सामने, अपनी नेतागिरी का सिक्का न जमा पाने के कारण दुःखी था, लेकिन अपनी धांगर बिरादरी के शौर्य-प्रदर्शन पर प्रसन्न भी था। वह उस अवसर की ताक में था कि नेतागिरी की खोई प्रतिष्ठा को किसी प्रकार से जमाया जाय।

बुधनी ने बंशी से मिठाई के लिए तीन बाचा बंधवा कर फिर से अपनी गठरी समेटनी शुरू कर दी। रामधनक लाठी टेकता बुधनी के पास जाकर उसकी गठरी बंधवाने में सहयोग करने लगा और मगरू एक हाथ से अपने टूटे हाथ को थाम कर वार्ड के बाहर जाने लगा। चौथी राम ने अपनी खोई प्रतिष्ठा को जमाने का अच्छा अवसर देखा। वह धीरे-धीरे चलकर बंशी के पास गया–''इन लोगों को रोको नहीं तो हाथो खराब हो जाएगा'' कहते हुए उसने मगरू के हाथ की ओर इशारा किया।

''रापटगंज अस्पताल पर प्लास्टर करवा देंगे''–बंशी ने संक्षिप्त-सा उत्तर दिया।

''क्यों, रापटगंज क्यों ले जाओगे? बेकार आने-जाने का खर्चा ही बढ़ेगा।''

''कल हमको मिर्जापुर जाना है, रास्ते में पड़ता है, वहीं रामधनक भैया और मगरू को छोड़ते जाएंगे।''

चौथी और बंशी की बातें सुनने के लिए, रामधनक, मगरू और बुधनी अपने सर पर गठरी लिए सिमट आए। डॉ. रमन भी उन दोनों की बातें सुन रहे थे। उन्होंने सोचा कि अगर ये सब रुकने का फैसला कर लेंगे तो मैं इन्हें यहां रुकने नहीं दूँगा। साफ कह दूँगा कि मेरे यहाँ जगह नहीं है। उनका घायल मन बदला लेने का कार्यक्रम बनाने लगा। सहगल साहब सोच रहे थे कि अभी बातचीत समाप्त करके जैसे ही बंशी बाहर चलेगा, उसे बुलाकर साफ कह दूंगा कि कल से तुम्हें ड्यूटी करनी है, छुट्टी नहीं मिलेगी। अगर नहीं मानेगा तो सस्पेंड

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कर दूँगा, देखें कैसे प्लास्टर लगवाता है, कैसे चौबे की जमानत को जाता है। अतिबल सिंह फिर से झगड़ा करने को कसमसा रहे थे।

"हाँ कक्का रापटगंज चलो, सुनती हूँ बहुत बढ़िया शहर है," बुधनी ने कहा।

"धत् पगली! तुझे शहर की पड़ी है, इतना किराया भाड़ा कहाँ से आएगा?" चौथी ने अपनत्व जताते हुए कहा।

"किराया भाड़ा का होगा? दस कोस भुंइ है, रेंग कर पहुंच जाएंगे," बुधनी उत्साहित होकर बोली।

"तूँ तो रेंग कर पहुँच जाएगी, लेकिन मगरू कैसे रेंगेगा? उसका घाव पिराएगा नहीं? देख तूँ चुपचाप बंशी भैया के घर रह। यहाँ बड़े आदमियों की तरह सैल करने नहीं आई है।" रामधनक ने डांटा। रामधनक की डांट से बुधनी का चेहरा गिर गया। उसके गिरे चेहरे को देखकर मगरू को दया आ गई। उसने कहा–"रहने दो बप्पा चलने दो, हम भी धीरे-धीरे रेंग लेंगे।"

"तुमने तो उसे और कपार चढ़ा रखा है, रहने दो नहीं जाएगी, चमाइन कहीं की!" रामधनक को गुस्सा आ गया।

बुधनी चुपचाप सिर नीचे किए खड़ी रही। चौथी राम किसी भी प्रकार से इन लोगों की हमदर्दी पाना चाह रहा था, इसलिए उसने बड़े ही प्यारे लहजे में कहा–"रामधनक कक्का एक बात कहूँ, मानोगे?"

"काहे नहीं मानूंगा भैया?"

"बुधनी को बंशी के यहां भेज दो, तुम यहीं रहो, सुबह मैं प्लास्टर करवा दूँगा।"

"नहीं भैया, जहां धरम-करम नहीं है, वहां नहीं रहना चाहिए।"

"अरे नाहीं भैया, अइसन बात मत कहो। धरती से जिस दिन धरम-करम लोप हो जाएगा, उस दिन धरती पताल में धंस जाएगी।"

"हाँ ई बात तो है, लेकिन धरम-करम अब बहुत कम लोग मान रहे हैं" चौथी राम ने कहा।

"कलयुग का पहरा है, कम लोग तो मनबै करेंगे, लेकिन धरती टिकी है तो धरमै करम पर।"

चौथी और रामधनक बात कर रहे थे। उन लोगों की वार्ता में बंशी बेमन से हाँ, हूँ मिलाता सोच रहा था कि चौथी के प्रस्ताव को मान लेना अच्छा होगा, नहीं तो रापटगंज अस्पताल भी कोई दूध का धोया तो है नहीं। वहाँ भी इसी प्रकार के डाक्टर होंगे, नर्स होंगी, क्योंकि एक विषय की एक ही प्रकार से शिक्षा पाने वालों का चरित्र भी एक ही प्रकार का होना स्वाभाविक है। फिर आने-जाने की

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

परेशानी और पैसे की दिक्कत भी होगी। यह सब सोच कर उसने कहा–"न हो, भैया यहीं पर प्लास्टर करवा लिया जाय, चौथी भाई ठीक ही कह रहे हैं।"

रामधनक को जब से यह पता लग गया था कि बंशी अपनी मेहरारू का गहना बेच कर चौबे जी को छुड़ाने जा रहा है, तभी से बंशी पर उसकी श्रद्धा बहुत अधिक बढ़ गई थी। इसलिए उसने बिना किसी तर्क के बंशी की बात मान ली और कहा–"भैया आपकी बात है, नहीं तो मेरा मन नहीं था।"

"नहीं नहीं, मन की बात नहीं है, बंशी महराज ठीक कह रहे हैं" चौथी राम ने कहा।

"हाँ भैया मनै की बात है। बंशी भैया धरती पर देवता हैं, कौन आदमी अपनी मेहरारू का गहना बेच कर दूसरे के झगड़े में लगाएगा। गरीबों पर दया बूझने वाला अब कौन है? अब उनकी बात नहीं मानेंगे तो किसकी बात मानेंगे?"

सहगल साहब के सामने बंशी अपनी प्रशंसा सुन कर घबरा रहा था, और बंशी की प्रशंसा से सहगल साहब का जी जल रहा था। उन्हें लगा कि बंशी ने चपरासी होते हुए भी अपने सामने मुझे बौना बना दिया। डॉ. रमन को रामधनक के रुकने के निर्णय से प्रसन्ता हुई कि अब मैं इन सबको अपमानित कर सकूँगा। इसलिए जैसे ही चौथी राम ने पीछे घूमकर डॉ. रमन से कहा–"डाक्टर साहब, ये सब बहुत गरीब आदमी हैं, एक्सरे करवा कर प्लास्टर करवा दीजिए।"

"हमारे यहाँ इन लोगों का कुछ नहीं होगा।" उन्होंने छूटते ही कहा।

चौथीराम को लगा कि कुछ ही घण्टे पहले, इन अधिकारियों के सामने उसकी नेतागिरी की साख गिरी थी कि उसकी बिरादरी तक उसे नहीं जानती और इस बार उसकी बिरादरी के सामने यह साख गिर रही थी कि अधिकारी भी उसे कुछ नहीं समझते, इसलिए वह तिलमिला उठा। डॉ. रमन के इस अप्रत्याशित उत्तर से वह भौंचक हो गया, फिर सम्हल कर तेज आवाज में बोला "क्यों नहीं होगा? क्या ये देश के नागरिक नहीं हैं?"

"मैं कहाँ कहता हूँ कि देश के नागरिक नहीं है, देश के नागरिक हैं तो देश भर में कहीं जाकर दवा करा लें।"

"क्या यह अस्पताल देश के बाहर है या आप देश के बाहर हैं?"

"हम इसी देश के हैं तो क्या मैंने मार-पीट करने के लिए डाक्टरी पढ़ी है?"

"नहीं नहीं, आपने तो घूस लेने के लिए..." चौथी राम पूरी बात कह भी नहीं पाया था कि झगड़े के अवसर की तलाश करते अतिबल सिंह ने उसे डाँटकर कहा–"खबरदार जो घूस की बात की, अपनी औकात समझ कर बात करो।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"बाबू साहब औकात की बात जाने दीजिए। चार पैसा कमा लेने से औकात नहीं बढ़ जाती, औकात बढ़ती है ईमानदारी से।"

"हाँ-हाँ, तुम तो बहुत बड़े ईमानदार हो...।"

"ईमानदार नहीं तो क्या बेइमान हूँ? कोई साला कह दे कि चौथी ने अपने लिए किसी से चार पैसा लिया।" कह कर चौथी ने सहगल साहब की ओर देखा।

सहगल साहब को चौथी की इस बात से बड़ा आश्चर्य हुआ कि अभी इसने मुझसे डेढ़ हजार रुपए लिये और सीधा गाली देकर ललकार रहा है। उनका मन हुआ कि अभी रुपए वाली बात कह दूँ लेकिन वह यह सोचकर चुप रह गए कि इसमें उन्हीं की कमजोरी साबित होगी, फिर चौथी से कभी काम भी पड़ सकता है। इसलिए उन्होंने बीच-बचाव करते हुए कहा–"अरे छोड़ो भाई, जो हुआ सो हुआ, जब डाक्टर साहब नहीं चाहते तो जाकर दूसरे अस्पताल में दवा करवा लो। अगर पैसे की बात हो तो मैं पैसा देने के लिए तैयार हूँ।"

"नहीं साहब, आप की बात दूसरी है, आप तो अपने पास से पैसा भी देने को तैयार हैं, लेकिन इन लोगों को देखिए। एक दमड़ी देना नहीं उल्टे झगड़ा करना।" चौथी का इशारा सीधा अतिबल सिंह की ओर था।

"झगड़ा मत करो भैया, हम जाकर दूसरी जगह दवा करा लेंगे। जब डांगडर साहब नहीं चाहते तों का हम जबरी उनसे दवा कराएंगे?" रामधनक ने चौथी राम को समझाते हुए कहा।

"क्यों दूसरी जगह कराओगे? यहाँ का केस है यहीं होगा। नहीं तो डाक्टर साहब लिखकर दें कि मैं दवा नहीं करूँगा।" चौथी अपनी बात पर डटा रहा।

"भैया, डागडर दूसरे भगवान होते हैं, उनसे झगड़ा करके दवा कराना ठीक नहीं। जब भगवान रूठता है तब यह भी रूठते हैं। छोड़ो जो भोगदंड लिखा होगा वह तो भोगनै पड़ेगा" रामधनक ने कहा।

"दूसरे भगवान नहीं क्या होते हैं। जब होते थे तब होते थे। अब इ सरकारी नौकर हैं। हम लोगों के नौकर हैं। हम-तुम इनको तनखाह देते हैं।" चौथी राम ने रामधनक को प्रजातान्त्रिक ढाँचा समझाना चाहा।

रामधनक को तनख्वाह देने वाली बात समझ में नहीं आई। उसने सोचा कि मैंने तो अभी तक एक पैसा डाक्टर को दिया नहीं, फिर चौथी यह झूठ क्यों कह रहा है कि हम-तुम तनख्वाह देते हैं। हो सकता है कि चौथी ने दिया हो लेकिन मैंने तो कभी नहीं दिया। इसलिए उसने अपना दोनों कान पकड़ कर कहा–"अरे राम राम, भगवान झूठ न बोलाए, हम गरीब आदमी इतने बड़े साहब को अभी तक एक पैसा नहीं दिए हैं, कहाँ पाएंगे देने के लिए?"

जोर-जोर से झगड़े की आवाज सुनकर, वार्ड के बाहर-भीतर अच्छी खासी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भीड़ इकट्ठी हो गई थी। सभी उपस्थित लोग अपने-अपने ढंग से इस झगड़े का आनन्द ले रहे थे कि "ऐ हटो बाहर जाओ, यहाँ इतनी भीड़ क्यों लगा रखी है?" कहते भीड़ को हटाते हुए राय दरोगा ने सिपाहियों के साथ वार्ड में प्रवेश किया।

चौथी राम ने दरोगा को देखा तो सटपटा गया। उसने सोचा कि डाक्टर के किसी आदमी ने फ़ोन कर के मेरे लिए पुलिस फोर्स मंगा लिया है। मगरू और बुधनी के मन-मस्तिष्क पर एक दहशत सी छा गयी। वे सभी डरकर एकदम शान्त हो गए।

"क्या बात है, यह भीड़ क्यों जुटी है?" दरोगा राय ने पूछा।

"देख लीजिए, इन लोगों ने वार्ड में हंगामा खड़ा कर रखा है, इसमें सीरियस मरीज हैं कुछ हो गया तो कौन जिम्मेदार होगा?" डॉ. रमन ने दरोगा राय को अपना सहायक समझ कर जवाब दिया।

"क्यों भाई क्यों हल्ला मचाए हो तुम लोग?" दरोगा ने चौथी राम से पूछा।

"हल्ला नहीं मचाए हैं साहब, डाक्टर साहब कह रहे हैं कि एक्सरे नहीं करेंगे, प्लास्टर नहीं करेंगे। भला बताइए कितना बड़ा अन्याय है?" चौथी ने अपना पक्ष प्रस्तुत किया।

"एक्सरे प्लेट पास नहीं है तो कहाँ से एक्सरे कर दूँ?"

"ठीक ही तो कह रहे हैं डाक्टर साहब, जब एक्सरे प्लेट नहीं है तो कहाँ से एक्सरे कर देंगे?" जाओ बाजार से एक्सरे प्लेट ले आओ," राय दरोगा ने सुझाव दिया।

अतिबल सिंह ने देखा कि यह तो एकदम से मामला बैठ जाना चाहता है, इसमें चौथी की ही विजय होगी। तो उन्होंने कहा–"दरोगा जी एक्सरे प्लेट की बात जाने दीजिए, वह तो बाद की बात है। पहले इन लोगों से पूछिए कि उस बूढ़े ने हमारे ऊपर लाठी क्यों चलाई थी?"

अब दरोगा रायं को लगा कि मुंखबिर ने जो खबर दी थी शायद उसी का इन लोगों ने प्रयास किया और उसी घटनाक्रम में बूढ़े बाप ने अपनी बेटी की इज्जत के लिए लाठी चलाई है। बात को स्पष्ट करने के लिए उसने चौंकते हुए पूछा–"क्या? लाठी चला दी, क्यों?"

"हाँ साहब, इसने मेरे ऊपर लाठी चला दी। भला बताइए, मैं चुपचाप खड़ा हूँ और इसने मेरे ऊपर लाठी चला दी, कोई बात न चीत। बूढ़ा समझकर मैंने छोड़ दिया नहीं तो...।"

"क्यों रे बूढ़े, तू ने लाठी चला दी थी?"

"हाँ सरकार" रामधनक ने हाथ जोड़कर कहा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"क्यों क्या बात हो गई थी?" पूछते हुए राय दरोगा को विश्वास था कि जरूर इन लोगों ने बुधनी के साथ कुछ न कुछ गड़बड़ किया या करने की कोशिश की।

"कुछ नहीं हुआ था सरकार, हमसे गलती हो गई-माफ कर दें" बूढ़ा रामधनक गिड़गिड़ाया।

"कुछ तो हुआ होगा, बताते क्यों नहीं?"

"हम का बताएँ हजूर, किसी में धरम-करम रह नहीं गया है।"

"साफ-साफ बताएगा कि ले चलकर बन्द कर दूँ हवालात में। उसी में हगोगे मूतोगे, होश ठिकाने आ जाएगा।"

"बन्द कर दीजिए हजूर, चाहे मार दीजिए, बताने लायक बात होती तो बताता।"

"बात बताने लायक नहीं लाठी चलाने लायक थी? वर्दी पहने पहनाए, रिवाल्वर लिए दिए तुम्हारी माँ की भो...में खड़े-खड़े घुस जाऊँगा अगर नहीं बताया तो। मादरचो...अस्पताल को जंगल समझ लिया है?" राय दरोगा ने बूढ़े रामधनक की ओर बढ़ते हुए कहा।

बूढ़ा रामधनक कुछ उत्तर देता कि 'सत्य' साप्ताहिक के सम्पादक ने वार्ड में "अरे वाह यहाँ तो पिपरी की सारी विभूतियाँ इकट्ठी हैं" कहते हुए प्रवेश किया।

सभी उपस्थित लोगों ने चौंककर उनकी ओर देखा तो "सबको सामूहिक नमस्कार, अरे वाह यहाँ तो चौथी भाई भी हैं। क्यों नहीं, क्यों नहीं, आदिवासी, वनवासी संघ के अध्यक्ष हैं, इस अवसर पर नहीं आएंगे तब कब आएँगे? बुरा न मानिएगा, मानना पड़ेगा कि कोई नेता है तो चौथी भाई। क्यों दरोगा जी?" उन्होंने दरोगा की ओर प्रश्नवाचक दृष्टि डाली।

दरोगा ने सकारात्मक सर हिलाया और सोचा कि क्यों न कुछ ऐसा कर दूँ कि सम्पादक खुद रामधनक का बयान ले। इस प्रकार डाक्टर एण्ड पार्टी यहाँ पर बदनाम होगी ही, समाचार पत्रों में भी यह मामला उछाला जाएगा। यह सोचकर उसने कहा–"लीजिए आपके लिए एक समाचार दे रहा हूँ।"

"अरे वाह साहब, बुरा न मानिएगा, आप समाचार नहीं देंगे तो क्या रिक्शावान देगा? अगर देगा भी तो अपने स्तर का देगा। आपके स्तर का समाचार तो वाह, समाचार ही होता है। हम तो समाचार ही लेने के लिए थाने से शराबखाने तक दौड़ा करते हैं। अभी-अभी आपका सिपाही शराबखाने पर मिला था। पीकर धुत्त था लेकिन एक शराबी को शराब पीने के जुर्म में पकड़कर थाने ले जा रहा था। उसी ने बताया कि आप अस्पताल पर मिलेंगे। बुरा न मानिएगा,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सीधा वहीं से चला आ रहा हूँ'' कहते हुए सम्पादक जी दरोगा राय के पास जाकर खड़े हो गए।

सम्पादक जी के पास आते ही दरोगा ने समझ लिया कि सम्पादक जी सवारी पर हैं। उनके मुँह से शराब की दुर्गन्ध आ रही थी। इसलिए दरोगा राय ने समझ लिया इस समय सम्पादक की बातों के आगे टिकना मुश्किल है। दरोगा ने सम्पादक के मनोबल को तोड़ने के ख्याल से कहा–''सम्पादक जी, कमसे कम मंगलवार को तो नागा कर दिया करें।''

''कैसा मंगल, कैसा बृहस्पति? मयखाने की ओर गया था, मिल गई पी ली। पीने लगा तो मंगल ने मुझे मना नहीं किया इसलिए थोड़ी और पी ली।''

''नहीं भाई, हिन्दू होने के नाते मंगल को न पिया करें। यह हनुमान जी का दिन है।''

''वाह रे दरोगा जी, हनुमान जी ने सात दिनों में से एक दिन अपने लिए ले लिया, बचे छः दिन, बुरा न मानिएगा, इतने सारे देवता हैं, उन लोगों ने भी बाँट-बखरा किया ही होगा। किसी न किसी के हिस्से में कोई न कोई दिन तो होगा ही, दिन कोई खाली नहीं, अब आदमी किस दिन पिए?''

''भाई हिन्दू होने के नाते मैं जो जानता था वही कहा, धर्म का मैं पंडित तो हूँ नहीं कि सारी बात बता सकूँ।''

''नहीं-नहीं आप ठीक कह रहे हैं। पंडित नहीं हैं अच्छा है, दरोगा हैं उससे भी अच्छा है। बुरा न मानिएगा, दरोगा होकर धर्म की बात कर रहे हैं, यही बड़ी बात है, नहीं तो कौन धर्म-कर्म की बात करता है? क्यों डाक्टर साहब, क्या मैं झूठ कह रहा हूँ?'' सम्पादक जी ने डाक्टर को वार्ता में घसीटा।

''आप ठीक कह रहे हैं, राय साहब धर्म के पक्के पाबन्द हैं'' डाक्टर ने कहा।

''अरे साहब पाबन्द तो ऐसे हैं कि एक घण्टा पूजा करके तब कुर्सी पर बैठते हैं। बुरा न मानिएगा, एक शायर ने क्या शेर कहा है'' कहकर सम्पादक जी ने हाथ उठाकर शेर पढ़ा–'मजहब की गली को, कभी मंजिल न समझना। यह राह है, पाँवों से कुचलने के लिए है।' बड़ा प्यारा शेर है, एकदम चौंकाऊ समाचार की हेडिंग की तरह। बुरा न मानिएगा, दरोगा जी आप कौन-सा समाचार बता रहे थे?'' सम्पादक जी ने वर्तमान वार्ता की कड़ी को भूत से जोड़ा।

''इस बूढ़े को देख रहे हैं?'' दरोगा ने रामधनक की ओर इशारा करके सम्पादक से पूछा।

''हाँ-हाँ एकदम देख रहा हूँ। अच्छाऽऽ बूढ़ा आदमी बीमार है क्या? बीमार होगा भी तो रोग के विषय में तो डाक्टर साहब ही बता सकते हैं। बुरा न मानिएगा, हमारे डाक्टर साहब बड़े जिन्दादिल आदमी हैं।''

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"उसी ने इसी वार्ड में अतिबल सिंह पर लाठी चला दी।" दरोगा ने अपनी बात जल्दी से पूरी कर दी कि कहीं सम्पादक जी फिर से अपनी बात की रौ में, मुख्य वार्ता से दूर न चले जाँय?

"अच्छा? लाठी चला दी" सम्पादक जी ने चौंक कर रामधनक की ओर देखा फिर अतिबल सिंह की ओर देखकर बोले–"बुरा न मानिएगा, अब उसके हाथ में बन्दूक तो थी नहीं, नहीं तो गोली भी चला सकता था। वैसे है समाचार मजेदार-पिपरी अस्पताल में मरीज ने लाठी चलाई-चौंकाऊ हेडिंग होगी, लोग समझेंगे डाक्टर साहब की दवा के असर ने यह कमाल करवाया। क्यों डाक्टर साहब?"

"यह मरीज होता तब न दवा के असर की बात होती?" डाक्टर रमन ने खिसियाई आवाज में कहा।

"वाह मरीज हो चाहे न हो, है तो मरीज के साथ? कभी-कभी ऐसा नहीं होता कि आप कोई आप्रेशन कर रहे होते हैं और पास में खड़ा मरीज का साथी उसे देखकर बेहोश हो जाता है? दवा मरीज की करते हैं, असर मरीज के साथी पर हो जाता है" कहते हुए उन्होंने बुधनी की ओर देखा।

सम्पादक जी की इस बात पर वहां उपस्थित सभी लोग हँस पड़े। डाक्टर रमन ने भी बेमन से हँसी में सहयोग दिया। सहगल साहब ने हँसते हुए अपनी घड़ी देखकर कहा "वाह सम्पादक जी, आप आए कि सारा माहौल ही बदल गया, नहीं तो हम लोग बेकार की बातों में उलझे हुए थे।"

"बात कोई बेकार नहीं होती, बुरा न मानिएगा, आप बहुत खुशदिल आदमी हैं। आप जैसा कोई अभियंता अभी तक पिपरी में नहीं आया न कभी आएगा, न भूतो न भविष्यति। आपके दीदार से तबीयत प्रसन्न हो जाती है। अरे हाँ, 'दीदार' पिक्चर भी लगी है। अंजनी और रोजी सिनेमा हाल पर मिले थे। यह रोजी कौन है?"

"अंजनी के क्लास में है, लखनऊ यूनिवर्सिटी में पढ़ती है, लेकिन आपको उसका नाम कैसे मालूम हुआ?" सहगल साहब ने पूछा।

"अब लीजिए, नाम क्यों नहीं मालूम होगा? आपके लड़के के साथ उसको देखा तो सोचा कि बड़े आदमी का लड़का है, कहीं आपकी चोरी से कुछ गड़बड़ तो नहीं कर रहा है? इसलिए उससे मिला। बुरा न मानिएगा, वहीं पर आपके लड़के ने खाना वाना खिलाया, परिचय के दौरान नाम मालूम हुआ। वे दोनों साथ कैसे हैं? यह पूछना सभ्यता के खिलाफ लगा तो उनसे न पूछ कर आपसे पूछ लिया।" कहकर सम्पादक जी ने मंगरू की ओर देखा। उसके सिर पर चोट के निशान देखकर वह बोले–"चऽऽचऽऽ तुम्हें तो काफी चोट लग गई है, पट्टी नहीं बंधवायी क्या?"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"बंधी थी उसने खुद नोचकर फेंक दिया" अब तक मौन खड़ी नर्स ने मुँह खोला।

"अरे वाह, क्या समाचार बनता जा रहा है! बूढ़ा लाठी चलाए, घायल पट्टी नोचे, वाह रे मेरा देश! उन्नति कर रहा है, चल नहीं रहा है, दौड़ रहा है। पट्टी नोच दिया तो फिर पट्टी बाँधो, फिर नोचे तो फिर बाँधो। बुरा न मानिएगा, रोगी के मन से डाक्टर को नहीं, डाक्टर के मन से रोगी को चलना पड़ेगा।" अब सम्पादक जी का नशा पूरी रवानी पर था।

आप पट्टी की बात कर रहे हैं, यहाँ से इन लोगों को भगाया जा रहा है"– चौथी राम ने अवसर ताड़कर कहा।

"अच्छा अच्छा, अब बात समझ में आई। हमारे डाक्टर साहब तो हमारे जैसे बीस सम्पादकों की बुद्धि रखते हैं लेकिन मरीजों की सेवा से फुर्सत नहीं मिलती नहीं तो अखबार पढ़ते। अखबार वाले भी क्या निकालते हैं। हरिजन के साथ दुर्व्यवहार डाक्टर निलम्बित।" आज का हरिजन न हुआ छाछठ सौ वोल्ट का करेंट हो गया, गलत हुआ कि गये काम से, बुरा न मानिएगा, यही सब हो रहा है।"

"मैं भगा कहाँ रहा हूँ, मैं तो कह रहा हूँ कि मेरे पास एक्सरे प्लेट नहीं है।" रमन साहब ने अपनी सफाई पेश की।

'हाँ, हाँ–जब नहीं है तो आप यही न कहेंगे–बुरा न मानिएगा, सीधे भगाने वाली बात मेरे भी गले नहीं उतर रही थी। भला आप जैसा बुद्धिमान अधिकारी ऐसा करेगा?"

दूर से फैक्टरी के सायरन ने चिल्लाकर बारह बजने की सूचना दी। सहगल साहब ने चौंककर फिर अपनी घड़ी देखी और कहा–"अब तो हमें अंजनी को लेने सिनेमा हाल जाना है।" कहते हुए अतिबल सिंह के साथ वार्ड के बाहर निकल गए। बंशी को डाँटने-फटकारने की स्कीम को उन्होंने किसी अन्य उपयुक्त अवसर के लिए टाल दिया।

दरोगा राय ने सोचा कि जब तक यह सम्पादक रहेगा अपनी ही हाँकता रहेगा, कौन इससे उलझे? अतिबल सिंह और सहगल साहब चले गए थे। बुधनी का बूढ़ा बाप भी आ गया था। इसलिए उन्होंने, अब बुधनी पर कोई खतरा नहीं आ सकता, इसे समझ लिया और सोचा कि अच्छा है, अब थाने लौट चला जाय।

सम्पादक जी सिगरेट धराने के लिए अपने झोले में माचिस टटोलने लगे। दरोगा राय को वार्ड से खिसकने का यह उपयुक्त अवसर लगा। वह धीमें से वहाँ से खिसक लिए। सिगरेट सुलगा कर सम्पादक जी ने सर ऊपर किया तो दरोगा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

को नदारद पाया–"अरे दरोगा जी कहाँ चले गए? अच्छा! चले गए?" कहते हुए उन्होंने अपने झोले में हाथ डालकर कैमरा निकाला और मगरू की ओर मुखाबित होकर बोले "जरा अपने बेड पर बैठ जाओ, हाँ-हाँ ठीक है बस अपना टूटा हाथ आगे कर लो, सर के फटे हिस्से को हमारी तरफ घुमा लो" मंगरू ने वैसा ही कर दिया तो सम्पादक जी ने अपना कैमरा ठीक करते हुए कहा "डाक्टर साहब देखिए पोज ठीक है न?"

"अब पोज की बात तो आप मुझसे बेटर समझ सकते हैं लेकिन फोटो की क्या जरूरत है?"

चौथी राम ने देखा कि यह तो डाक्टर को बदनाम करने का अच्छा कार्यक्रम है इसलिए उसने कहा–"नहीं-नहीं सम्पादक जी, फोटो जरूर लीजिए।"

"चौथी भाई, बुरा न मानना, आप बहुत अच्छे आदमी हैं लेकिन आप ही की नहीं सभी नेताओं की बड़ी खराब आदत होती है कि दो आदमियों के बीच में नाहक कूद पड़ते हैं। अब भला बताइए, फोटो के विषय में हम, डाक्टर साहब जानेंगे कि आप। बुरा न मानिएगा, आप भाषण में जानेंगे।"

चौथी को बात समझ में आ गई, वह चुप हो गया। सम्पादक जी ने बुधनी को मगरू की बगल में बुलाकर खड़ा किया और फोटो ले लिया। कैमरा बन्द करके झोले में रखा, फिर डाक्टर की ओर मुखातिब होकर बोले–"जरूरत तो कुछ नहीं थी, आया था तो सोचा कुछ न कुछ करता चलूँ। फिर डाक्टर रमन के कान में फुसफुसा कर कहा–"मगरू के बहाने, उसकी बहन का फोटो लिया है।"

डाक्टर रमन ने चुपचाप सम्पादक की बात को सुन तो लिया लेकिन वह सारी चालबाजी समझ रहे थे। उन्होंने नर्स को अपने पास बुलाया और कहा–"जरा वार्ड ब्वाय को बुलाकर कहो कि रामधनी बाबू के यहाँ जाकर देखे एकाध एक्सरे प्लेट है? अगर हो तो लेता आए।"

"अच्छा-अच्छा, एक्सरे प्लेट मँगा रहे हैं? वैसे वंशी तुम्हारा क्या हाल है? ये सब तो तुम्हारे ही गाँव के हैं न? चौबे जी की जमानत हुई?"

अभी नहीं, कल की तारीख पड़ी है, देखिए क्या होता है?"

"होगा क्या, जमानत होगी–पैसा लगेगा।"

रामधनक दरोगा के जाते ही काफी आश्वस्त हो गया था। उसे सम्पादक जी कुछ हमदर्द लगे, इसलिए उसने कहा–"सरकार, हम गरीबन के पास पैसा कहाँ है?"

"पैसा किसी के पास नहीं है, जिसके पास पैसा है वह व्यापार में फँसता है, राजनीति में फँसता है मतलब ऐसी जगहों पर फँसता है जहाँ हम तुम चाह कर भी नहीं फँस सकते।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सम्पादक जी ने अपनी बात समाप्त की ही थी कि वार्ड ब्वाय ने आकर बताया कि–"एक्सरे प्लेट है।"

"अगर आप पाँच मिनट का समय दें तो मैं इसके हाथ का एक्सरे करवा दूँ"–डाक्टर रमन ने सम्पादक से कहा।

"क्यों नहीं, क्यों नहीं, एकदम समय है। बस जरा-सा रुक जाइए" कहते-कहते उन्होंने अपने झोले से एक छोटा-सा टेप रिकार्डर निकाला–"जरा इसका बयान ले लूँ, जब आया हूँ तो लगे हाथ यह भी करता चलूँ" कहकर वह मगरू की ओर मुड़े। डाक्टर का हृदय धक् धक् करने लगा। उन्होंने मन ही मन कहा– "जाने कहाँ से आ टपका" फिर भी वह मौन रहे।

"देखो भाई, मैं तुमसे जो सवाल पूछूँ उसका सही-सही जवाब दो" सम्पादक जी ने मगरू को समझाया।

"हाँ हाँ, खूब सोच समझ कर जवाब देना। तुम जो कुछ भी कहोगे वह सब इस मशीन में भर जाएगा, फिर जब मशीन का बटन दबाया जाएगा तो तुम जो कहे रहोगे वह सब मशीन बोलेगी"–चौथी राम ने अपने ज्ञान का परिचय देने के लिए कहा।

बुधनी, रामधनक ने कभी इस प्रकार की मशीन न तो देखी थी न सुनी थी, जिससे दोनों मशीन देखने के लिए सम्पादक जी के पास खिसक आए।

"अच्छा अब मैं सवाल पूछने चल रहा हूँ। देखो भाई तुम लोग बीच में मत बोलने लगना"–सम्पादक जी ने वहाँ खड़े अन्य सभी लोगों को हिदायत दी। बुधनी डर कर पीछे हट गई, रामधनक भी अपने स्थान पर जाकर खड़ा हो गया।

सम्पादक जी ने सवाल किया "तुम्हारा नाम क्या है?"

"मगरू।"

"कहाँ के रहने वाले हो?"

"भलुआ के।"

"वही अनपरा के पास वाले भलुआ?"

"हाँ"

"यह तुम्हारे सिर में चोट कैसे लगी?"

मगरू ने सिलसिलेवार सारी बात बता दी।

"अच्छा-अच्छा, मोटर सायकिल से चोट लगी और उसी में हाथ भी टूट गया। मोटर सायकिल वाला कौन था, पहचानते हो?"

"नहीं, पहचानता नहीं, बाद में मालूम हुआ कि इन्जिनियर साहब के लड़के अंजनी थे।"

"यह तुमको कैसे मालूम हुआ कि अंजनी थे?"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"रमजान कक्का ने और बंशी कक्का ने बताया, और सभी लोगों ने भी बताया।"

"अच्छा-अच्छा, सबके बताने पर जब तुम्हें मालूम हुआ कि अंजनी थे तो थाने पर रपट लिखाने नहीं गए?"

"चौबे जी के साथ गया था।"

"थाने पर तुम्हारी रपट लिखी गई?"

"पता नहीं साहब, बड़ी देर तक सिपाही हमको थाने के बरामदे में बैठाए रहे। छोटे दरोगा से चौबे जी बात करते रहे, फिर एक चोंगा से टन् टन् टन् की आवाज आई। छोटे साहब ने चोंगा उठाकर पता नहीं का हलो, हलो कहा और फिर उसी में बात करते रहे। बात करके उन्होंने चोंगा रखा और चौबे जी को गरियाने लगे। चौबे जी गारी सुनकर बिगड़ गए तो छोटे दरोगा ने उन्हें बहुत मारा" कहते हुए उस समय के दृश्य को ख्याल करके मगरू के रोंगटे खड़े हो गए।

"उस समय तुमने क्या किया?"

"हम का करते सरकार? हमरे कपार से खून बह रहा था, एक हाथ टूटा हुआ था। हम तो वहीं थाने में एक हाथ से अपना फटा कपार दबाए खून रोक रहे थे। जब छोटे साहब चौबे जी को मार कर गिरा दिए तब तक हमको होश था। उसके बाद ढेर खून निकल जाने से हम बेहोश हो गए।"

"तुम्हें होश कब आया?"

"बंशी कक्का हमको पीठ पर लादे तो थोड़ा-सा होश आया। उसके बाद अस्पताल में होश आया।"

"अस्पताल में दवा मिली?"

"हाँ सरकार अस्पताल में अउतै, रमजान कक्का, बंशी कक्का ने हमको पट्टी बंधवाया और दवा दिलवाया।"

"यह सब जो तुम कह रहे हो, सही कह रहे हो? कोई नशा तो नहीं किए हो?"

"एकदम सही कह रहा हूँ सरकार, कउनों नशा नहीं किया है।"

सम्पादक जी ने टेप बन्द कर दिया। डाक्टर रमन बहुत खुश हुए कि उनके अस्पताल का इन्टरव्यू अच्छा हुआ था। वह खूब समझते थे कि अगर सम्पादक चाहता तो अस्पताल का इन्टव्यू खराब भी हो सकता था। सम्पादक जी ने मुस्करा कर डाक्टर रमन की ओर देखा–"क्यों कैसा रहा?" उन्होंने पूछा।

"एकदम ठीक" डाक्टर रमन ने चहक कर कहा।

"अच्छा, अब आज्ञा दीजिए मैं तो चलूँगा। अरे नहीं बुरा न मानिएगा, जरा टेप इन लोगों को सुना दूँ" कहते हुए सम्पादक जी ने टेप ऑन कर दिया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मगरू ने जब अपनी आवाज सुनी तो बहुत प्रसन्न हुआ। अभी तक उसने अपनी आवाज को इस प्रकार नहीं सुना था। रामधनक और बुधनी भी सुन-सुन कर बहुत प्रसन्न हो रहे थे। सम्पादक जी ने कुछ देर बाद टेप बन्द कर दिया।

"इसमें तो गाना भी टेप हो सकता है?" बंशी ने पूछा।

"क्यों नहीं, क्यों नहीं, कोई अच्छा-सा लोकगीत हो तो टेप करके रेडियो स्टेशन भेज दूँ।

'हे बुधनी एक करमा सुना दे" रामधनक ने उत्साह से कहा।

बुधनी ने शरमा कर अपना सिर नीचे कर लिया तो सम्पादक जी ने कहा– "आज देर हो गई है, रहने दो। एक दिन भलुआ आऊँगा, वहीं टेप करूँगा" कहते हुए सम्पादक जी ने टेपरिकार्डर झोले में रख लिया।

"साढ़े बारह बज रहा है, अब चला जाय। न हो सम्पादक जी आप मेरी गाड़ी से चलिए। रास्ते में छोड़ दूँगा" डाक्टर रमन ने कहा।

"हाँ अब चला जाय, क्यों भाई बंशी, न हो तुम भी साथ चलो, रास्ते में तुम्हारे घर छोड़ते हुए निकल जाएँगे" सम्पादक जी ने बंशी की ओर देखा।

"ठीक तो है, लेकिन जरा मगरू का एक्सरे कर दूँ" कहते हुए डाक्टर साहब एक्सरे रूम की तरफ चले गए। नर्स ने बड़े सम्मान के साथ मगरू को एक्सरे रूम तक पहुँचाया। कुछ देर में डाक्टर साहब वार्ड में आए और "एक्सरे कर दिया है, सुबह देखकर प्लास्टर कर दूँगा। अब चलिए चला जाय" कहते हुए वे अपनी गाड़ी की तरफ बढ़े और चलते समय मगरू को आश्वस्त किया।

"चौथी भाई आप नहीं चलेंगे? लेकिन जाएंगे भी तो कहाँ, घर भी तो आपका दूर है। बुरा न मानना, यहीं रहो, बिरादरी की सेवा भी हो जाएगी" कहकर सम्पादक जी हँसे और बंशी के साथ जाकर गाड़ी में बैठ गए।

रात के अन्धकार में गाड़ी चल पड़ी। सबसे पहले बंशी का क्वार्टर पड़ा। डाक्टर रमन ने गाड़ी रोक दी। बंशी सबको नमस्कार करके जाने लगा तो सम्पादक जी ने उसे रोककर कहा–"सुनो भाई बंशी, बुरा न मानना, यह मेरा झोला अपने साथ लेते जाओ। सुबह मीरजापुर जाते समय मेरे क्वार्टर पर देते जाना। बुरा न मानना, तुमसे सुबह एक काम है।"

बंशी ने सम्पादक जी का झोला लिया और गाड़ी आगे बढ़ गई।

□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

६. बंशी

बंशी तीन बजे सुबह ही सोकर उठ गया। उसकी आँखें नींद पूरी न हो पाने के कारण कड़ुआ रही थीं। अभी तक वह अपनी पत्नी का आभूषण नहीं बेच पाया था। इसीलिए पैसे के अभाव के कारण वह घबरा रहा था। उसने जल्दी-जल्दी अपनी आँखें पानी से धोईं, आँखों की कड़ुआहट कुछ कम हुई। खटर-पटर की आवाज से उसकी पत्नी दुलारी की भी आँखें खुल गईं। उसने लेटे ही लेटे देखा कि बंशी नित्यकर्म के लिए लोटे का पानी लेकर जा रहा है। बंशी काफी रात गए घर लौटा था। इसीलिए दुलारी ने उस समय अपने गहनों के विषय में कुछ नहीं पूछा था। गहनों के प्रति नारी-सुलभ लगाव के कारण वह यह पता लगा लेना चाहती थी कि उसके गहनों का क्या हुआ? बंशी पीछे का दरवाजा खोलकर जब बाहर चला गया तो वह भी जल्दी से उठकर उसकी चारपाई पर गई और वहाँ पर गहनों को झोले में ढूँढ़ने लगी। बिस्तर के नीचे गहने का झोला मिल गया। उसने झोले में हाथ डालकर देखा तो सारे गहने सुरक्षित थे। उसे अपने गहनों के बचे रहने पर बड़ी खुशी हुई। लेकिन यह सोचकर कि आखिर काम कैसे चला? वह परेशान हो गई। दुलारी ने बंशी के कुर्ते की जेबों को भी टटोला कि शायद कहीं से पैसों का प्रबन्ध हो गया हो, परन्तु खाली जेबों को देखकर उसे कोई बात समझ में नहीं आई। उसने गहने के झोले को यथास्थान रख दिया। उसी समय बंशी आँगन में वापस आकर लोटा मटियाने लगा। दुलारी आँगन में लगे हैन्डपम्प से बंशी के लिए पानी निकालते हुए बोली–"गहने नहीं बिके क्या?"

"अभी नहीं।"

"काम हो गया? चौबे जी छूट गए?"

"आज उनको छुड़ाने जा रहा हूँ।"

"पैसे तो तुम्हारी जेब में हैं नहीं।"

"हो जाएंगे, तुम परेशान मत हो।"

"मगरू ठीक हो गया?"

"अब हो जाएगा। उसे खाना भिजवा देना" कहता हुआ बंशी जल्दी-जल्दी लोटा धोकर दातुन कूँचने लगा। दातुन कर उसने स्नान किया और तैयार होकर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गहने तथा सम्पादक जी के झोले को उठाकर सम्पादक जी के कार्यालय की ओर चल पड़ा।

बंशी के बाहर जाते ही दुलारी को अपने गहनों के चले जाने का बहुत दुःख हुआ किन्तु मन ही मन उसने अपने पति की कुशलता के लिए ईश्वर से प्रार्थना भी की।

बंशी पैदल चलकर जब सम्पादक जी के कार्यालय पहुँचा तो सुबह के पाँच बज रहे थे। सम्पादक जी के कार्यालय का टीन का दरवाजा बन्द था। बंशी ने खटखटाया तो सम्पादक जी आँख मलते हुए उठे। दरवाजा खोला तो बंशी को देखकर–"अरे तुम! बंशी! इतनी सुबह कोई काम है क्याऽ? अच्छाऽऽ याद आ गया–मैंने तुमको बुलाया था। बैठो–मैं अभी आता हूँ, बुरा न मानना", कहकर उन्होंने अल्युमिनियम के लोटे में पास की बाल्टी से पानी भरा और खेत की ओर जल्दी-जल्दी निकल गए। बंशी अकेला उनके कार्यालाय में खड़ा रहा। उसने देखा कि कच्ची फर्श पर टाट के टुकड़े बिछे हैं, उस पर एक तोशक, किताबों, पत्रिकाओं का ढेर पड़ा है। एक दो टिन के सन्दूक भी हैं। वहीं पर बैठकर बंशी सम्पादक जी का इन्तजार करने लगा।

सम्पादक जी किस जगह के रहने वाले थे? उनका सही नाम क्या था? किसी को भी ज्ञात नहीं था। एक दिन गेरुआ वस्त्र में पिपरी में लोगों ने उन्हें देखा। दर्शनीय व्यक्तित्व और वार्ता-कुशल गेरुआ वस्त्रधारी सम्पादक ने सबका मन मोह लिया। लोग उनकी स्पष्टवादिता पर और भी मुग्ध तब हुए जब उन्होंने बताया कि "भाई देखो, मैं कोई साधु नहीं हूँ। मैं तो मजनूँ की आत्मा हूँ। बुरा न मानना मेरी लैला ने मुझे धोखा दे दिया, मैं पागल होकर घर से निकल पड़ा। एक साधु ने मुझे अपने पास रखा। उसने मुझे काला वस्त्र पहना दिया। दो वर्ष तक उसके आश्रम में मैं रहा। दिमाग कुछ ठीक हुआ तो एक दिन उसके आश्रम से निकल पड़ा। साधु के यहाँ रहते-रहते मुफ्त खाने, सफर करने के तिकड़मों को सीख चुका था। बुरा न मानना, इसीलिए काला वस्त्र उतारकर गेरुआ पहन लिया और दक्षिणांचल तक आने में कोई असुविधा नहीं हुई। पढ़ा-लिखा था ही इसलिए आदिवासियों के क्षेत्र में जाकर कुछ दवा दारू करने लगा। खूब पैसा मिला लेकिन काम में मन नहीं लगा। अब पाक्षिक अखबार निकालने का मन है। अगर आप लोग सहयोग देंगे तो निकलूँगा, नहीं तो जैसे बीत रही है बिताऊँगा।

उस समय पिपरी से कोई अखबार नहीं निकलता था। इसलिए मुफ्त यश लेने और छपास निकालने के लिए स्थानीय नेताओं और साहित्यकारों ने सहयोग दिया, अखबार निकलने लगा। शुरू में जिन लोगों ने मदद की थी, उन लोगों ने मनचाहा समाचार निकलवाया। स्थानीय नेताओं ने अपने नेताओं की प्रशस्ति

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

छपवाई। सम्पादक जी कुछ दिन सहन करते रहे। बाद में सब लोगों को धता बता कर स्वतंत्र रूप से समाचार छापने लगे। स्वार्थी सहयोगियों ने इनका साथ छोड़ दिया और इनके अखबार को बन्द कराने की साजिश करने लगे। लेकिन सम्पादक जी अकेले ही अपनी युक्ति से समाचार पत्र निकालते चले आ रहे हैं।

बंशी को अधिक इन्तजार नहीं करना पड़ा। थोड़ी देर में सम्पादक जी आ गए। उन्होंने जल्दी-जल्दी मंजन किया, स्नान किया और पाजामा पहनकर तैयार हो गए। बंशी द्वारा लाए गए झोले को अपने कन्धे पर डाला और उसमें हाथ डालकर फोटो कैमरा, टेपरिकार्डर देखा, फिर–"चलो चला जाय" कहकर अपने कार्यालय से बाहर आकर खड़े हो गए। बंशी ने बाहर निकलते हुए पूछा–"यह अपना झोला आपने मुझे क्यों दे दिया था?"

सम्पादक जी ने झुककर अपने कार्यालय में ताला बन्द किया और बंशी की ओर मुस्कुरा कर कहा–"इतनी-सी बात नहीं समझ पाए? झोले में टेप और फोटो था जो दरोगा और डाक्टर के खिलाफ है। मैं अकेला डाक्टर के साथ जा रहा था, अगर वह छिनवा लेता तो मैं क्या करता? बुरा न मानना", कहकर सम्पादक जी हँसे।

"नहीं साहब, डाक्टर साहब शरीफ आदमी हैं", बंशी ने कहा।

"बुरा न मानना–एक्सरे के अपने अवसर पर वह कितना खतरनाक हो गया था! फिर अगर उसी की खिलाफत होती तो एक बात थी। उसके साथ दरोगा की भी तो खिलाफत थी। अब तुम्हीं सोचो–"कहते हुए सम्पादक जी बस स्टेशन की तरफ चल दिए। बंशी भी साथ-साथ चलने लगा। कुछ दूर जाने पर सम्पादक जी ने अपनी जेब में हाथ डालकर रुपए की गड्डी निकाली और बंशी की ओर बढ़ाते हुए बोले–"यह लो पाँच सौ रुपए। बुरा न मानना, इससे चौबे जी को छुड़ाओ। बाद में धीमे-धीमे हमारा पैसा लौटा देना।"

बंशी एकाएक इस अप्रत्याशित सहायता से चौंक उठा। उसने सर उठा कर सम्पादक जी की ओर देखा, तो सम्पादक जी ने कहा–"बुरा न मानना, क्या देख रहे हो? यह कोई अपने पास की कमाई है? वही फोटो की कमाई है, डाक्टर ने दिया है वही दे रहा हूँ, रख लो, यदि हरिश्चन्द्र बनने का विचार होगा तो लौटा देना, बुरा न मानना"–कहकर सम्पादक जी ने हँसते हुए पाँच सौ रुपए बलात् बंशी के झोले में डाले और बंशी से बोले–"देखो भाई बुरा न मानना, अब तो हमें उधर जाना है और तुम्हें इधर। शाम को लौटना तो मिल लेना। जरा चौबे को भी लिवाते आना। उससे मिलना है, अच्छा आदमी है।" बंशी उस अद्भुत मानव को बड़ी देर तक देखता रहा जो उसे पैसे के लिए हाँ या ना कहने का अवसर दिए बिना चला जा रहा था।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बंशी झोले में हाथ डालकर रुपए की गड्डी को उंगलियों से टटोलता हुआ बस स्टेशन की तरफ चल पड़ा। जैसे ही वह बस स्टेशन के पास पहुँचा कि वही सिपाही जो चौबे को हथकड़ी लगाकर पिपरी से मीरजापुर ले गया था, सायकिल से बस स्टेशन की ओर आता दिखाई दिया। पिपरी से मीरजापुर जाने में इस सिपाही से बंशी की अच्छी दोस्ती हो गई थी। इस थाने के पैरवीकार सिपाही को बातचीत के दौरान बंशी ने पाया कि यह अन्य सिपाहियों से कुछ अलग है।

यह बूढ़ा सिपाही जो बलिया का रहने वाला था बड़ा ही घाघ किस्म का आदमी था। वह फौजदारी के वकीलों को थाने का केस देकर कमीशन लेता था। इसके लिए वह मुल्जिमों को अपने विश्वास में लेने के लिए तरह-तरह के हथकन्डे अपनाता था और उन्हें विश्वास में लेकर अपने मनचाहे वकील के पास भेजता था। उसे देखकर बंशी ने नमस्कार किया तो सिपाही साइकिल से उतर गया और बंशी के साथ चलता हुआ बोला, "बड़ी देर कर दी, मीरजापुर वाली बस तो छूट गई।"

"छूट गई? तब तो बड़ा गड़बड़ हो गया। अब तो दस बजे तक पहुँच भी नहीं पाऊंगा।" बंशी ने परेशान होते हुए कहा।

"आधे घण्टे में दूसरी जाएगी। उसी से चले जाना, बारह बजे तक भी पहुँच जाओगे तो काम हो जाएगा"–कहकर सिपाही चाय की दुकान की ओर मुड़ते हुए बोला–"आओ एक-एक कप चाय पी लें तब तक बस आ जाएगी। मैंने तुम्हें ऐसा वकील बता दिया है कि काम चुटकी बजाते हो जाएगा।"

"आपने बहुत एहसान किया नहीं तो हम किस वकील को जानते थे? आपने न बताया होता तो हम परेशान हो जाते।"

"अरे यार छोड़ो, एहसान क्या किया? हम तो हमेशा गरीबों का साथ देते हैं। इसीलिए तो दोनों दरोगा हमसे खिलाफ रहते हैं। पता नहीं किसने थाने पर बता दिया कि मैंने तुम्हें रामदयाल एडवोकेट के यहाँ भेज दिया है। बस दरोगा जी हम पर बिगड़ गए। लगे कहने कि–तुम्हारी वजह से हम मुल्जिमों को सजा नहीं दिलवा पा रहे हैं। मैंने पूछा–'हुजूर, हम क्या मुल्जिमों को छोड़ देते हैं जो आप ऐसी बात कह रहे हैं?' तो जानते हो उन्होंने क्या कहा? कहा कि–'तुमने रामदयाल के यहाँ बंशी को क्यों भेज दिया? दूसरा कोई वकील होता तो उसकी जल्दी जमानत नहीं होती। अब तो वह उसकी जमानत भी करा लेंगे और छुड़ा भी लेंगे।'

"रामदयाल जी को दरोगा जी जानते हैं क्या?" बंशी ने पूछा।

"अब लो, दरोगा जी क्यों नहीं जानेंगे? कई बार वह दरोगा जी को जिरह में उलझा चुके हैं। अभी नए हैं तो क्या हुआ? सब लोग जानते हैं कि जज साहब

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

का उनके यहाँ आना-जाना है। कोर्ट इन्सपेक्टर तो उनका मुरीद ही है। पीना, पिलाना, गाना, बजाना सब एक साथ करते हैं।'' कहकर सिपाही चाय की दुकान में घुस गया। बंशी भी उसके साथ गया, दोनों कोने की टेबुल पर बैठ गए। सिपाही ने गर्म जलेबियों का आर्डर दिया। जब दो जगह जलेबियाँ आ गईं तो उसने बैरे से पूछा–''दही होगी?''

''हाँ साहब है।''

''ठीक है, दो जगह ले आओ। फिर बंशी की ओर मुड़कर बोला–''तुम भी दही लोगे न? भई हम तो बलिया के रहने वाले हैं, बिना दूध दही के तो हमारा काम नहीं चलता।''

''आप मंगा लीजिए, हम वैसे ही खा लेंगे'' बंशी ने पैसा बचाने के लिहाज से कहा।

''अच्छा ठीक है, ऐ एक ही जगह दही लाना।'' सिपाही ने बैरे को आदेश दिया।

थोड़ी ही देर में दही आ गया, सिपाही ने दही के साथ और बंशी ने वैसे ही जलेबी खाकर पानी पिया। बंशी उठने लगा तो सिपाही ने कहा–''बैठो-बैठो, अभी कहाँ जा रहे हो? अभी तो बस आने में काफी देर है।'' बंशी बैठ गया तो उसने कहा ''एक-एक कप चाय भी हो जाय। ऐ, दो जगह खस्ते भेज दो। देखो ठीक-ठाक भेजना। नहीं तो एक भी पैसा नहीं दूँगा।'' सिपाही ने दुकानदार को धमकी दी।

इस आर्डर में अधिक पैसे देने की बात सोचकर बंशी मन ही मन बहुत दुःखी हुआ, लेकिन सिपाही के एहसान को सोचकर उसका दुःख कुछ ही देर में दूर हो गया। जल्दी-जल्दी खस्ता-चाय का नास्ता कर दोनों बाहर आए। बंशी ने नाश्ते का पैसा अदा किया। सिपाही को पान खिलाया और बस स्टेशन की ओर चलने लगा तो सिपाही ने उसे रोक कर कहा–''सुनो वकील साहब के यहाँ जाना तो बता देना कि पिपरी थाने के श्रीवास्तव ने भेजा है। वह हमें मानते हैं। हमारे द्वारा भेजे गए आदमियों से बहुत कम फीस लेते हैं। उन्हें याद दिला देना, घबराना मत। मैं थाने पर हूँ, जो कुछ तुम लोगों के खिलाफ होगा सब बताता रहूँगा। देखता हूँ, दरोगा जी मेरा क्या कर लेते हैं?''

''अब आप ही का भरोसा है''–कहकर बंशी ने बड़ी श्रद्धा के साथ हाथ जोड़कर उन्हें प्रणाम किया और बस स्टेशन की ओर बढ़ गया। थोड़ी देर में बस आ गई। उसने टिकट लिया और सवा ग्यारह बजे मीरजापुर कचहरी में पहुँच गया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

७. अदालत

कचहरी के क्रियाकलापों से अनभिज्ञ बंशी, श्रीवास्तव द्वारा बताए वकील के तख्ते पर पहुँचा। तख्ते पर दूसरे कई वकील बैठे गप मार रहे थे। गरीबों पर होते अत्याचार, बढ़ते झूठ और फरेब पर बहस चल रही थी। बंशी को देखते ही बहस का तारतम्य टूट गया। एक साथ सबकी निगाहें उस के ऊपर उठीं। बंशी ने एक वकील साहब को प्रणाम किया। उन्होंने सोचा कि कोई नया मुवक्किल मेरे पास आया है। इसलिए कुर्सी पर जरा सम्हल कर बैठते हुए बोले–"कहो क्या काम है?"

"रामदयाल साहब को ढूंढ़ रहा हूँ। वह नहीं हैं क्या?"

रामदयाल साहब को? वह तो आज नहीं हैं। क्या काम है? बताओ, काम हो जाएगा। कहकर उन्होंने अपने मुंशी को पुकारा "ऐ मुंशी जी, देखो इनका क्या काम है? इनका कागज पत्र तैयार करवा दो।"

उनका मुंशी तुरन्त दौड़कर आया और बड़ी ही आत्मीयता से बंशी से मिला तथा पूछा–"कहाँ घर है?"

"भलुआ"

भलुआ घर है? भोला पंडित को जानते हो?" मुंशी ने पूछा।

"हाँ-हाँ, वह तो हमारे पिता जी हैं" बंशी ने बड़े उत्साह से बताया। उसे यह जानकर गर्व हुआ कि उसके पिता को कचहरी में भी जानने वाले लोग हैं।

"अच्छा, आप उनके लड़के हैं! अब बताइए घर के आदमी होकर आप मुझे नहीं पहचान रहे हैं।"

"आपका घर कहाँ है?"

"सिरसीरी के पांडे का नाम सुना है?"

"हाँ-हाँ सिरसीरी गाँव का नाम तो सुना है, यह भी सुना है कि वहाँ के पांडे लोगों का कभी जमाना था।"

"बस मैं उसी खानदान का हूँ। मेरा नाम शिवमूरत पांडे है।

"आप हमारे पिता जी को कैसे जानते हैं?"

"जात-बिरादरी के बड़े लोगों को तो हम लोग जानते ही हैं। एक बार आप के पिता जी हमारे लड़के की शादी के लिए आए थे। उस साल हमको अपनी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लड़की की शादी करनी थी। जानते ही हो माटी का चूल्हा सब के घर है। अब दो शादी एक साथ कैसे करता, इसलिए शादी नहीं किया। आप के पिता जी ठीक-ठाक हैं? बड़े सज्जन आदमी हैं।'' मुंशी ने मक्खन लगाया।

''हाँ ठीक हैं, अभी तो वह काफी तन्दुरुस्त हैं।'' अपने पिता का बड़े आदमियों में नाम सुनकर बंशी ने उत्साहित होकर कहा।

''हाँ भाई तन्दुरुस्त क्यों नहीं रहेंगे? नियमी ब्राह्मण हैं।'' कहते हुए मुंशी दूसरे तख्ते पर बैठ गया। बंशी भी उसकी बगल में बैठ गया। मुंशी ने बंशी से सारा मुकदमा समझकर अपना बस्ता खोला और एक वकालतनामा निकालकर बोला–''किसी दूसरे को तो वकील नहीं न रखा है?''

''पिपरी के श्रीवास्तव सिपाही ने रामदयाल एडवोकेट से मेरी बातचीत करवा दी थी।''

''बस बातचीत न? वकालतनामा पर कुछ लिखा-पढ़ी तो नहीं हुई?''

''नहीं अभी कोई लिखा-पढ़ी तो नहीं हुई। हाँ, वहाँ पर वह रामदयाल जी को बता रहा था कि बहुत पहुंच वाले वकील हैं।'' बंशी ने अपनी जान छुड़ानी चाही।

''अरे आप भी बात करते हो–वह बेइमान क्या बताएगा? पहले हमारे यहाँ केस भेजता था। अब जब से उसकी बिरादरी के वकील आ गए हैं, उन्हीं से कमीशन खाने लगा है। ये साले किसी के नहीं होते। उसके चक्कर में मत फँसिए नहीं तो दुह लेगा।''

तब तक मुंशी जी के वकील साहब भी आकर तख्ते पर बैठ गए। अब बंशी बड़े पेशोपेश में पड़ गया। एकाएक वह सिपाही पर अविश्वास नहीं कर पाया। जान-पहचान निकल जाने के कारण मुंशी को भी छोड़ना मुश्किल हो रहा था। इस दुविधा की स्थिति को वकील ने पहचाना। उसने अपनी घड़ी को देखकर कहा–''एक बज रहा है, जमानत की दरख्वास्त पड़ जानी चाहिए नहीं तो आज भी जमानत नहीं हो पाएगी।''

''जमानत नहीं हो पाएगी'' को सुनकर बंशी घबरा गया। वकील ने जमानतनामे का मजमून अपने मुंशी से तैयार करवा कर बंशी से कहा–''पहले कागज, टिकट और टाइप का पैसा मुंशी जी को दे दो और सब बाद में देख लेंगे।''

''कितना पैसा?'' बंशी ने जेब से पाँच सौ की गड्डी निकाल कर पूछा।

मुंशी और वकील दोनों की निगाहें एक ही साथ गड्डी पर पड़ीं। दोनों यह जान गए कि गाय सीधी और दुधारू है। इसलिए उसे अच्छी प्रकार से दुहने के लिए यह आवश्यक था कि सबसे पहले उसका थोड़ा-सा दूध ही निकाला जाय।

''मुंशी जी से पूछ लो कितना पैसा लगेगा'', कहकर वकील साहब अखबार पढ़ने में इस प्रकार तल्लीन हो गए जैसे पैसे के प्रति उनका कोई विशेष

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आकर्षण नहीं है। घाघ मुंशी अपने वकील की इस अदा को बखूबी समझता था। उसने कलम निकाल कर कागज पर हिसाब जोड़कर बताया "बावन रुपए पचास पैसे लगेंगे।" इससे अधिक नहीं लगना चाहिए, अधिक लगेंगे तो देखा जाएगा। फुटकर न रहने के कारण बंशी ने पचपन रुपए मुंशी को निकाल कर दे दिया। मुंशी बंशी के साथ ही साथ अपने मन ही मन रुपए गिनता जा रहा था। आवश्यकता न रहने पर भी उसने रुपए को अपने हाथ में पाकर फिर गिना और कहा–"यह तो पचपन रुपए हैं।"

"हाँ फुटकर नहीं था।"

"देखो भाई, इस तरह अगर कचहरी वालों को पैसा दोगे तो लुट जाओगे। घर के आदमी हो इसलिए समझा दे रहा हूँ। जाओ सामने की पान की दुकान से चार पान बंधवा लाओ, पैसा भुन जाएगा। एक-एक पैसे का हिसाब साफ रखो।" मुंशी ने समझाया।

बंशी उठकर पान लाने चला गया तब वकील साहब ने अखबार से सर उठाकर बिगड़कर कहा–"तुम्हें जिन्दगी भर तमीज नहीं होगी, क्लाइन्ट से जितना हो सके पैसा फँसा लेना चाहिए, जिससे वह छटक न सके।"

"नहीं वह छटकने वाला नहीं। अगर छटकने वाला होता तो पहले ही फँसा लेता।"

"मैं यह सब कुछ नहीं जानता। दो सौ रुपए दिलवा देना, तुम चाहे जो कमा लेना। उससे हमको कोई मतलब नहीं।"

"ठीक है, आपको दो सौ रुपए दिला कर बाकी मैं अपना मेहनताना ले लूँगा।"

'ले नहीं क्या लोगे? चले हो हरिश्चन्द्र बनने! अगर हरिश्चन्द्र बने तो डोमड़े के हाथ बिक जाओगे। अपने बच्चों की कफनखसोटी पर रोटी चलाओगे? समय के अनुसार बदलो। देख नहीं रहे हो, पूरे देश में क्या हो रहा है? आदर्श वाले मर रहे हैं।" वे पता नहीं कब तक भाषण देते लेकिन बंशी को आता देखकर चुपचाप अखबार पढ़ने में तल्लीन हो गए।

बंशी ने पान लाकर मुंशी के सामने रख दिया। मुंशी ने एक पान वकील साहब की ओर बढ़ाया तो वकील साहब ने बिना अखबार पर से ध्यान हटाए कहा–"रख दो, थोड़ी देर में खाऊंगा।"

मुंशी ने एक बीड़ा पान स्वयं खाकर शेष वहीं रखकर, बंशी से बाकी पैसा लिया और मजमून टाइप कराने चला गया। बंशी वहीं पर बैठा अखबार के एक पृष्ठ को पढ़ने लगा। मुंशी थोड़ी देर में टाइप कराकर लौटा तो वकील साहब ने उसे फिर से पढ़कर जमानत के प्रार्थनापत्र पर अपना वकालतनामा लगा, मुंशी को अदालत में उसे पेश करने के लिए भेज दिया, तब वकील साहब ने अखबार

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पढ़ते-पढ़ते ही चाय पी, पान खाया। बंशी ने सहमते-सहमते पूछा–''जमानत तो हो जाएगी न?''

वकील साहब अखबार पढ़ते-पढ़ते ऊब चले थे, उनको विषयान्तर का अवसर मिला। उन्होंने हाथ के अखबार को नीचे रख दिया और बोले–''जमानत क्यों नहीं होगी? पैसे की माँ पहाड़ चढ़ती है। पैसा हो तो गर्दन काटने वाले की भी जमानत हो सकती है। पैसा न हो तो जेब काटने वाले की भी नहीं होगी।''

''सिपाही कह रहा था कि इस केस में जमानत का कानून है'' बंशी ने कहा।

''कैसा कानून? सब जगह है और कहीं नहीं है। जानते हो, पैसा ही कानून बनाता और बिगाड़ता है। आज कल कानून वह है जो हाकिम चाहे, और हाकिम कब चाहेगा? जब उसे पैसा दोगे।''

''तो क्या हमें हाकिम को भी पैसा देना होगा?''

वकील साहब ने सोचा कि आदमी बड़ा नासमझ है। क्यों न हाकिम के नाम पर भी कुछ पैसा ऐंठ लिया जाय? 'पोल खुलने पर बड़ी भद्द होगी' सोचकर उन्होंने अपना विचार बदल दिया। दूसरी बात यह थी कि जमानत के बाद इस मुकदमे को अपने हाथ से जाने नहीं देना चाहते थे। पोल खुलने पर मुकदमा हाथ से निकल सकता था। इसलिए उन्होंने मुस्करा कर कहा–''नहीं भाई, यह कार्य तो हम लोग स्वयं महीने दो महीने में किसी न किसी रूप में किया करते हैं। हाकिमों को मिलाए रखना हम लोगों की मजबूरी है।

बातचीत और आगे बढ़ती कि वकील के मुंशी ने आकर खबर दी कि जमानत की अर्जी पर पुकार हो गई है। वकील साहब बंशी की ओर मुखातिब हो कर बोले–''दो जमानतदार लाए हो?''

''जमानतदार? जमानतदार तो मैं नहीं लाया हूँ।''

''तब क्या यहाँ घास छीलने आऐ हो? एक से एक बेवकूफों से पाला पड़ता है। समझ में नहीं आता हिन्दुस्तान का आदमी कब समझदार होगा!'' वकील साहब ने गुस्से में फनफना कर कहा।

चतुर वकील साहब जानते थे कि अब बंशी रुपया पैसा देकर फँस चुका है। अर्जी पर पुकार भी हो चुकी है। ऐसी हालत में कुछ रोबदार बात कर लेने से मुवक्किल दहशत में आ जाएगा तो पैसे की लेन देन में चीं-चपड़ नहीं करेगा। इसलिए उन्होंने यह जानते हुए भी कि यह कोई जमानतदार लेकर नहीं आया है, उससे पूछा और लताड़ लगाई।

बंशी अपने लिए बेवकूफ, नासमझ जैसे सम्बोधनों को सुनकर भी चुप रहा। अलबत्ता आत्मग्लानि और क्रोध की मिलीजुली प्रतिक्रिया से उसका चेहरा कुछ झुककर तमतमा गया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"कोई बात नहीं, जमानतदार यहीं मिल जाएंगे। कुछ पैसा लगेगा" घाघ मुंशी ने गर्म लोहे पर चोट की।

"कितना पैसा लगेगा?" बंशी ने पूछा।

"वैसे तो एक जमानतदार २००/- लेता है, लेकिन मैं कोशिश करूंगा कि कम में ही काम हो जाए। आपके पास पैसा तो है न?"

बंशी ने अपने जेब का सारा पैसा निकालकर गिना–'चार सौ पैंतालीस रुपया पचहत्तर पैसे'–उसने बता दिया।

"अब बताओ कैसे काम होगा? ३००/- दो जमानतदारों का हो गया, २००/- वकील साहब की फीस, ५/- पेशकार की पेशी, २/- चपरासी और कम से कम १०/- रिहाई का परवाना ले जाने वाला लेगा। मान लो मैं अपना मेहनताना नहीं लूँगा, घर के आदमी हो, लेकिन ५५०/- से कम में काम कैसे होगा?" मुंशी ने हैरानी प्रदर्शित करते हुए कहा।

बंशी हतप्रभ-सा कभी मुंशी का मुँह देखता कभी वकील साहब का। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि इस परिस्थिति में वह क्या करे। उसने झोले से निकालकर अपनी पत्नी के गहने वकील साहब को दिखाते हुए कहा–"साहब हमारे पास यह गहना है। अपना काम करा दीजिए, जो पैसा होगा इसे मुंशी जी के साथ आज ही बाजार जाकर बेचकर दे दूँगा।"

चंट वकील ने देखा कि सचमुच ही बंशी के पास और पैसा नहीं है तो उसने कहा–"ठीक है कम पड़ेगा तो घर से लगा दूँगा। यहाँ तो मेरी जिन्दगी ही इसी प्रकार गरीबों की सहायता में गुजरी है। जनता और पुलिस की लड़ाई में मैं तो गरीब जनता का साथ दूँगा ही चाहे मुझे जो झेलना पड़े। तुम इजलास पर चलो–कह देना वकील साहब आ रहे हैं।" फिर कुछ रुककर कहा–"मुंशी जी जाइए दो जमानतदार ठीक करिए, अभी जरूरत पड़ेगी। जितना पैसा बंशी के पास है ले लीजिए।" बंशी ने सारा पैसा दिया और तुरन्त उठकर इजलास की ओर चला गया। वह मन ही मन वकील साहब की मानवता की सराहना करता रहा। मुंशी जी को दो जमानतदारों की तलाश तो करनी ही थी, क्योंकि वह उन वकीलों को जानते थे, जो वकालत न चलने के कारण जमानत और छोटी-मोटी दलाली का ही काम करते थे। इसलिए वह सीधे उनमें से एक के पास पहुँचे और पचास-पचास रुपए में सौदा तय कर लिया।

दोनों वकील साहब यह अच्छी तरह जानते थे कि इस मुंशी ने कम से कम दो-दो सौ रुपए लिए होंगे। लेकिन वह यह भी जानते थे कि यदि हम लोगों ने अधिक पैसे की मांग की तो कोई दूसरा २५/- में ही तैयार हो सकता है। इसलिए बिना अधिक खींच-तान के उन्होंने सौदा तय कर लिया। मुंशी ने जमानतनामा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तैयार करके उन दोनों से हस्ताक्षर करवा कर उन्हें ५०-५० रुपए दिए। उसी समय बंशी ने आकर बताया कि फिर पुकार हो गई। वकील साहब दौड़े-दौड़े इजलास पर गए और जमानत की पूरी कार्यवाही करके लौटे। बंशी मुंशी जी के साथ इजलाम पर ही रह गया। वह बहुत खुश था कि चौबे जी अब शीघ्र ही जेल से बाहर आ जाएंगे। मुंशी बंशी को दिखाकर न्यायालय के सम्बन्धित कर्मचारियों में से किसी को ५/- तो किसी को १०/- देने लगा। अन्त में जेल तक रिहाई का परवाना ले जाने वाले चपरासी को १५/- दिए गए। तब वह समय से जेल तक रिहाई का परवाना ले जाने को तैयार हुआ। यह सब काम करके जब दोनों अपने वकील की चौकी पर लौटे तो देखा कि उनके वकील और रामदयाल वकील में झड़पें हो रही हैं। कुछ लोग खड़े होकर इस झड़प का अपने-अपने ढंग से आनन्द ले रहे थे। जैसे ही अपने मुंशी को बंशी के वकील ने देखा वह बोले–"लीजिए आ गए, हमारे मुंशी जी, इन्हीं से पूछिए, बंशी उनका रिश्तेदार है कि नहीं?"

"मैं क्यों पूछूं? मैं तो बस इतना जानता हूँ कि वह मुझे ढूंढ़ता आया था और आपने मेरे मुवक्किल को तोड़ा।" रामदयाल वकील ने तमतमाकर कहा।

"ठीक है मैंने तोड़ा–आपने भी तो मेरे शराब बनाने वाले कंजड़ मुवक्किलों को तोड़ा था।"

"जब आपने मेरे जेबकतरें मुवक्किलों को तोड़ा तो मैंने भी उन्हें तोड़ा। क्या बुरा किया? क्या आप से कोई कमजोर है?"

"तब क्यों चिल्ला रहे हैं? चलिए यही तोड़ी ही चलने दीजिए।"

"हाँ-हाँ मैं भी तैयार हूँ। लेकिन मुवक्किल की तोड़ा तोड़ी तक ही नहीं मैं तो हाथ-पाँव के तोड़ा-तोड़ी पर भी उतर जाऊंगा। अभी आप मुझे जानते नहीं।"

"हाँ-हाँ खूब जानता हूँ, अभी आप ही के हाथ पर प्लास्टर लगा था, वही प्लास्टर वाले ही हैं न कि कोई और?"

"चार को प्लास्टर लगवा कर तब मैंने प्लास्टर लगवाया था। यह तो बहादुरों का काम है। कोई नामर्द हूँ?"

"लात खाना बहादुरों का काम नहीं है।"

"आपकी तरह डाका डलवाकर उसमें हिस्सेदारी नहीं लेता।" रामदयाल श्रीवास्तव ने अपने प्रतिद्वंदी वकील के छिपे पक्ष को उजागर कर दिया।

"यह तो बुद्धिमानों का काम है, यह मेरी बुद्धि है कि...।"

"अरे शर्म करो क्या बेकार की बातें कर रहे हो? तुम लोगों ने तो नरक बना दिया है।" एक बूढ़े वकील ने दोनों को डाँटा।

उस वकील के बोलते ही कई अन्य लोग भी बीच बचाव के लिए आ गये। किसी प्रकार से दोनों की तू-तू मैं-मैं बन्द हुई, मुंशी बंशी को लेकर फिर कोर्ट

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

में जल्दी से जल्दी रिहाई का परवाना ले जाने के लिए चपरासी के पास पैरवी करने पहुँच गया।

"टाइप बाबू को कुछ नहीं मिला है, वही रिहाई का परवाना रोके हुए हैं" परवाना ले जाने वाले चपरासी ने मुंशी के पहुँचते ही सूचित किया।

मुंशी टाइप बाबू के पास पहुँचा। टाइप बाबू ने मुंशी को देखते ही कहा "आप ही का है?"

"हाँ बाबू हमारा ही है। जरा जल्दी कर दीजिए" कहते हुए मुंशी ने पाँच रुपए का नोट टाइप बाबू को बढ़ाया।

"यह क्या है? सिर्फ पाँच रुपए? हम चपरासी से भी गए गुजरे हो गए?" टाइप बाबू ने तुनक कर कहा।

"नहीं नहीं असल बात यह है कि बहुत गरीब आदमी है। आप पता कर लीजिए। मुझे तो मेरा मेहनताना भी नहीं मिला है" कहते हुए मुंशी ने दो का एक और नोट टाइप बाबू की ओर बढ़ाया। टाइप बाबू ने उन सात रुपयों को अपनी जेब में रखा और फाइल से परवाना निकालकर पास वाली कैन्टीन की ओर चल पड़े। मुंशी समझ गया कि अब यह कम से कम पाँच रुपए के नाश्ते की चपत लगाकर तभी परवाना देगा। परवाना ले जाने वाला चपरासी भी पीछे-पीछे चल पड़ा।

"आप चपरासी को परवाना दे दीजिए। जिससे समय पर परवाना जेल पहुँच जाय, नहीं तो देर होने पर रिहाई नहीं हो पाएगी।"

टाइप बाबू ने मुंशी की बात मानकर चपरासी को रिहाई का परवाना दे दिया। रिहाई परवाना लेकर चपरासी ने कहा "आने जाने का रिक्शे का किराया तो दे दीजिए।"

"तुम लोग तो यार जो जितना दिलवाता है उसे उतना ही चिचोरते हो" कहकर मुंशी जी ने दो रुपए चपरासी को देते हुए कहा "इनके साथ चले जाओ।" स्वयं टाइप बाबू के साथ कैन्टीन में घुस गये।

बंशी जब चपरासी के साथ जेल के फाटक पर पहुँचा तो चपरासी ने गेट के सिपाही को रिहाई परवाना दिखाया और बंशी से कहा–"इन्हें पाँच रुपया दे दीजिए।"

बंशी की जेब में एक भी पैसा नहीं था। उसने चपरासी से अपनी असमर्थता बताई तो चपरासी ने कहा–"ठीक है, चलो लौट चलें, बिना पैसे के तो काम नहीं होगा।"

बंशी परेशान चपरासी का मुँह देखने लगा। अब तक बंशी कानून के महत्व को समझ चुका था कि कानून लागू कराने के लिए गैर कानूनी काम करने ही

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

होंगे। इसलिए उसने चपरासी से गिड़गिड़ाकर कहा–"अभी आप खर्च कर दीजिए। अभी लौटकर मैं गहना बेचकर पैसा दे दूँगा। यह कहकर उसने झोले में से निकालकर अपनी पत्नी के कर्णफूल को दिखाया। चपरासी ने सोचा ठीक है पचीस खर्च करके पचास ले लूँगा, सौदा कोई बुरा नहीं है। इसलिए उसने अपने पास से निकालकर पाँच रुपए सम्मन सिपाही को दे दिये। सिपाही ने परवाना और पाँच रुपए हाथ में लेकर कहा–"दस रुपए रिहाई बाबू को दो।" सिपाही को वह भी दिया। सिपाही परवाना लेकर जेल के भीतर चला गया। थोड़ी देर में लौटा तो खूब हँस-हँस कर बातें करने लगा। फिर बोला–"यार चार छ: बीड़ा पान तो मंगा दो।" चपरासी ने दो रुपए बंशी को देकर कहा–"दौड़ कर पान लेते आइए। थोड़ी देर में सब काम हुआ जाता है।" बंशी दौड़कर पान लेने चला गया। बंशी के हटते ही सिपाही ने कहा–"देखो कुछ पैसा और दिलवा दो।"

"कहाँ से दिलवा दूँ? देख तो रहे हैं कि उसके पास पैसे ही नहीं हैं। मैं खर्च कर रहा हूँ–भगवान जाने देगा भी कि नहीं। फिर जो पान आ रहा है, उसे एक रुपए बीड़े तो आप जेल में बेच ही लेंगे। वह भी तो आपका फायदा ही है?"

"क्या बात करते हो? आजकल इस जेल में कोई मजा नहीं है। कोई बड़े डाकू, बड़े दिवालिया, बड़े स्मगलर आज कल यहाँ पर नहीं हैं। वे सब रहते हैं तो मजा रहता है। आजकल तो साले चोर चाई बन्द हैं। वे सब तो रिरिया कर मांग लेते हैं। बातें हो ही रहीं थी कि बंशी पान लेकर आ गया। सिपाही ने पान लेकर कहा–"अच्छा भाई अब दस रुपए मेरी दस्तूरी दे दीजिए।"

"कैसा दस रुपया? मतलब किस काम के?"

"अब लो, तुम्हें नहीं मालूम कि जेल से जो आदमी छूटता है वह हम लोगों को मिठाई खाने के लिए देता है?"

बंशी ने चपरासी से कहकर दस रुपए और दिलवा दिए। सिपाही पैसा लेकर अन्दर गया और थोड़ी देर में चौबे जी को अपने साथ लिवा कर लौटा। जब चौबे ने गेट पर बंशी को देखा तो मारे खुशी के उसकी आँखों में आँसू आ गए। चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों का नेतृत्व करते हुए उसे काफी दिन हो गए थे किन्तु इस प्रकार उसे जेल जाने की नौबत नहीं आई थी।

चपरासी के साथ दोनों मुख्य सड़क पर आए और एक ही रिक्शे पर बैठकर मीरजापुर कचहरी की ओर चल पड़े। बंशी ने जब रिक्शा सर्राफ बाजार की ओर मुड़वाया तो "इधर कहाँ?" चौबे ने पूछा।

"जरा सोनार के यहाँ चलना है। लगे हाथ एक फालतू कर्णफूल है उसे बेचता चलूँ।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बंशी ने सोनार के यहाँ कर्णफूल बेचकर चपरासी तथा वकील साहब के मुंशी आदि का हिसाब चुकता किया। अब चौबे समझ गए कि बंशी ने कर्णफूल क्यों बेचा? परन्तु इस हालत में वह कर ही क्या सकते थे? उनका हृदय बंशी के प्रति स्नेह से भर उठा। दोनों पिपरी लौटने के लिए बस स्टेशन पर आए। रास्ते भर बंशी पिपरी में घटी घटनाओं को बताता रहा।

"एकाएक इतनी भीड़ कैसे जुट गई?" चौबे ने पूछा।

"हमारे महामंत्री श्रीमान् मौर्य की सूझबूझ थी। उन्होंने ही माइक लेकर हर तरफ प्रचार किया। लेकिन जानते हो, मेरा अधिकारी जानता है कि मैंने ही यह सब किया। मेरा अधिकारी ही नहीं, बहुत से लोग यही जानते हैं।"

पुलिस जुल्म के खिलाफ लड़ाई लम्बी चलेगी। पुलिस को जहाँ पर सुरक्षा और त्राण का प्रतीक होना चाहिए था, वहाँ जुल्म, भय और बर्बरता का प्रतीक बन चुकी है" कहते हुए चौबे बस स्टेशन के बुकस्टाल पर पहुँचे। उसने एक अखबार खरीदा। अखबार पढ़ते-पढ़ते उसने बंशी से कहा–"यह देखो, तुम क्या कह रहे थे? इसमें क्या छपा है?"

"क्या छपा है?" कहते हुए बंशी भी अखबार पर झुक गया। अखबार में मोटी हेडिंग छपी थी–"पिपरी अस्पताल पर हंगामा।" उसके नीचे खबर दी गई थी कि अस्पताल में दुर्व्यवस्था के कारण पिपरी की जनता ने डाक्टर का घेराव किया। उग्र भीड़ ने ईंट-पत्थर चलाए। यदि समय पर पहुँचकर थाना इंचार्ज ने भीड़ को काबू में नहीं किया होता तो भीड़ अस्पताल जला देती। इस कार्य में पिपरी थाना इंचार्ज तथा छोटे दरोगा को चोटें भी आई हैं।

"यह तो संवाददाता जफरूल की करामात है जो अपनी कार पर पत्रकार लिखकर टहलता है" चौबे ने कहा।

"हाँ-हाँ उसका तो काम ही यही है। दमदार अधिकारियों, नेताओं की चापलूसी और झूठे समाचार भेजने की ठेकेदारी करता है।"

"छोड़ो इस तरह के कमीने हमेशा से होते आए हैं। चलो देखा जाय मगरू का क्या हुआ? जिसके लिए इतना सब हुआ। दोनों बात कर ही रहे थे कि मीरजापुर-पिपरी बस आ गई। वे उससे पिपरी की ओर चल पड़े।

❐

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

८. अंजनी-रोजी

पिपरी में अंजनी और रोजी का मन एकदम नहीं लग रहा था। इतने छोटे से स्थान में लखनऊ जैसे शहर की तड़क-भड़क नहीं थी, न तो लखनऊ विश्वविद्यालय का खुला वातावरण ही था। दूसरी बात यह थी कि अंजनी की अटैची में रखी तीन बोतल व्हिस्की भी समाप्त हो चुकी थी।

वे तीन दिन के हिसाब से अपने साथ लाये थे। दोनों ने प्रयास किया कि ओबरा या राबर्ट्सगंज से एक दो बोतल का इन्तजाम कर लिया जाये लेकिन सहगल साहब उन दोनों को कहीं इधर-उधर अकेले जाने ही नहीं देते थे। दिन भर तो उन दोनों का किसी प्रकार बीत जाता था, किन्तु शाम होते ही वे घबराने लगते। विशेषकर खाने के पहले और चारपाई पर जाकर। ऐसी हालत में वे दोनों जल्दी से जल्दी लखनऊ भाग जाना चाहते थे।

रोजी एकदम झल्लाई हुई थी। वह अपने एयर बैग में अपने सभी सामान भर, जीन्स का पैन्ट पहन शीशे के सामने खड़ी होकर जल्दी-जल्दी मेक-अप कर रही थी, तभी अंजनी ने कमरे में प्रवेश किया–"अरे यह क्या? तैयार हो गई क्या?"

"और क्या तुम नहीं चलोगे तो क्या मैं भी नहीं जाऊँगी?" उसने झल्लाए स्वर में कहा।

"मैंने कब कहा कि मैं नहीं चलूँगा? जरा तुम अपने...।"

"जरा को मारो गोली–हमें अपनी लाइफ देखनी है।...जानते हो? आज पाँच दिन हो गए, मेन्सेज नहीं आया" कहकर वह रुआँसी हो गई।

"यह कैसे हो गया? हमारे समझ में नहीं आता।" अंजनी ने हैरान होते हुए कहा।

"कैसे हो गया? पूछ रहे हैं कैसे हो गया! ड्रिंक के बाद तुम्हें होश भी रहता है? कितनी बार कहा कि निरोध खत्म हो गया है ले आओ, नहीं तो चुपाचाप सो जांओ, लेकिन जब तुम मानो तब तो?"

अंजनी ने अगल-बगल देखकर, धीरे से ड्राइंग रूम का दरवाजा बन्द कर–आगे बढ़कर रोजी को अपनी बाँहों में लपेट लिया। रोजी ने गुस्से में उसकी बाँहों

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

से स्वयं को छुड़ाने के लिए जोर से धक्का दिया। अंजनी का सर दीवार से टकरा गया। वह अपना सर पकड़ कर वहीं जमीन पर बैठ गया। अब रोजी को होश आया। वह दौड़कर उससे लिपट कर उसे बार-बार चूमने लगी और उसका सर सहलाने लगी। सर की चोट कोई ऐसी नहीं थी कि वह इतनी देर तक बैठा रहता, लेकिन वह जानबूझ कर रोजी को पाने के लिए और उसके गुस्से को कम करने के लिए देर तक बैठा रहा। रोजी ने उसके गाल पर अपना गाल रगड़ते हुए कहा–''एक्सक्यूज मी–आई ऐम वेरी सॉरी।''

''नहीं नहीं, छोड़ो कोई चोट नहीं है'' कहते हुए अंजनी उठकर खड़ा हो गया। रोजी उससे लिपटी हुई सोफे तक गई, अंजनी सोफे पर बैठ गया, तो वह भी उसी के साथ सोफे में धँस गई।

''खिड़की से झांककर देखो कोई है तो नहीं?'' अंजनी ने कहा। रोजी ने दौड़कर खिड़की से इधर-उधर झाँका और कहा–''कोई नहीं।''

''बन्द कर दो'' अंजनी ने कहा और अपने सर को पकड़े सोफे पर बैठा रहा। रोजी खिड़की बन्दकर के फिर अंजनी के साथ ही सोफे में धँस कर बैठ गई। ''कहाँ चोट लगी है? जरा देखें'' कहते हुए वह उसके बालों को सहलाने लगी। अंजनी ने एक हाथ रोजी के कमर में डालकर अपना सर उसके कन्धे पर रख दिया। रोजी अब उत्तेजित हो चली थी, उसने कसकर आलिंगन किया। अंजनी रोजी की कमर पकड़े-पकड़े सोफे पर से उठा और उसे लिए दिए पलंग की ओर बढ़ चला।

''यह क्या? फिर वही बात? नहीं अब यह नहीं होगा'' रोजी ने ऊपरी मन से इन्कार किया।

''क्या होगा? कुछ नहीं बस जरा आराम से बैठेंगे'' अंजनी बोला।

''मैं तुम्हारी चालाकी खूब समझती हूँ। हमें बुद्धू मत बनाओ'' रोजी ने मुस्कराते हुए कहा–''रुक जाओ जरा नाइटी पहन लूँ'' कहकर वह अपने बैग से नाइटी निकाल, पहन कर फिर अंजनी के साथ सटकर बैठ गई।

''अच्छा एक बात बताओ, अब जो कुछ होना था वह तो हो चुका है, अब अगर मैं फिर से करूँगा तो क्या होगा?''

''मैं तुम्हारा मोटीवेशन खूब समझती हूँ। हमें मत बनाओ'' कहती हुई वह उससे लिपट गई।

''इसमें मोटीवेशन की कौन सी बात है? यह तो कामन सेन्स की बात है। जब एक बार मेन्सेज रुक गया तो अब दुबारा कुछ करने से फिर तो रुकेगा नहीं।''

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"देखो डियर तुम समझते क्यों नहीं? आखिर मैं लड़की हूँ ना, हमारी जिन्दगी खराब हो जाएगी" कहते-कहते वह अंजनी के कार्य में सहयोग देने लगी। कुछ समय के बाद जब उफान शान्त हुआ तो वह उठकर अपनी जीन्स का पैन्ट पहनने लगी।

"अरे-अरे यह क्या कर रही हो? फिर पैन्ट पहन रही हो? अभी चलोगी क्या? कल सुबह चलेंगे, बनारस एक साथी से कुछ काम है, उससे मिलते चलूँगा।"

"हाँ मुझे अभी चलना है। जितना लेट होगा, परेशानी बढ़ेगी।"

"एक दिन में क्या हो जाएगा? कल सुबह चलेंगे। पापा से पैसे ले लूँ।"

"मम्मी से पैसे ले चुके हो ना?"

"मम्मी से ले चुका हूँ तो पापा से भी ले लूँ। यूनिवर्सिटी का इलेक्शन भी तो लड़ना है। फिर तुम्हारे एबॉर्शन के लिए क्या वह अनम्मा ५०० रुपए से कम लेगी?"

"नहीं इस बार मैं उसके यहाँ एबॉर्शन नहीं करवाऊँगी।"

"क्यों उसके यहाँ क्यों नहीं करवाओगी? वह सबसे सेफ प्लेस है।"

"तुम समझते क्यों नहीं, बार-बार उसी के यहाँ एबॉर्शन करवाने से वह हमारे विषय में क्या सोचेगी?"

"क्या सोचेगी साली? उसे मैं नहीं जानता क्या? अपनी लड़कियों का उसने खुद एबॉर्शन किया है। फिर खुद ही कौन-सी दूध की धोई है?"

"देखो भाई अनम्मा सिस्टर के लिए ऐसी बात मत करो। पिछली बार उन्होंने हमें बहुत समझाया था। कहा था कि देखो तुम लड़की हो, तुम्हारा कैरियर और जिन्दगी दोनों ख़राब हो जाएगी। बार-बार एबॉर्शन से बच्चेदानी में कैंसर हो जाता है। तब मैंने उनसे कहा था–अब ऐसा नहीं करूँगी।" कहकर रोजी सिसकने लगी।

अंजनी उठकर उसके आँसू पोंछने लगा तो रोजी ने उसके हाथों को झटक दिया। हटो–"मैं अपने आँसू खुद पोंछ लूँगी, बड़े आए आँसू पोंछने वाले।" उसी समय बंगले के फाटक खुलने और जीप के हार्न की आवाज आई। "लो पापा आ गए" कहकर अंजनी दौड़कर कमरे का दरवाजा खोलने लगा। रोजी भी झटपट आँसू पोंछकर खिड़की के पट खोलने लगी। खिड़की और दरवाजों को खोलकर दोनों ने एक-एक पत्रिका उठाई और सोफे पर बैठकर पढ़ने में तल्लीन हो गए। बंगले के पोर्च में जीप रुकी। सहगल साहब ने उतर कर अंजनी के कमरे की ओर देखा तो पाया कि वे दोनों पत्रिका पढ़ने में तल्लीन हैं। उन्होंने वहीं से हाँक लगाई–"अंजनीऽ"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"जी पापा" कहता अंजनी अपने सोफे से उठ खड़ा हुआ, रोजी भी अपनी पत्रिका मेज पर रखकर उठ खड़ी हुई। दोनों सहगल साहब के पास पहुँच गए।

"लखनऊ नहीं जाना है? यूनिवर्सिटी तो खुल गई होगी?"

"जाना है पापा, आप ही ने तो मना कर दिया था।"

"अरे भाई उस वक्त बड़ा गड़बड़ हो गया था। इसलिए रोक दिया था, अब वैसी कोई बात नहीं है। कब जा रहे हो?"

"हम लोग तो तैयार बैठे हैं, दोपहर की ट्रेन से चले जाँय?" रोजी ने पूछा।

"ठीक है, ड्राइवर से कह दो-स्टेशन तक छोड़ देगा।"

"हाँ पापा अब तो जितनी जल्दी चले जाँय उतना ही अच्छा है। हमें युनिवर्सिटी के इलेक्शन की तैयारी भी तो करनी है।"

"क्यों अंजनी? तुम भी किसी पद के लिए लड़ोगे क्या?" सहगल साहब ने मुस्कुरा कर पूछा।

"आप कहें तो लड़ जाऊँ।"

"अरे भाई इसमें कहना क्या है? लड़ सको तो जरूर लड़ो। यूनिवर्सिटी के नेता ही तो आगे चलकर एम. पी. एम. एल. ए. बनते हैं।"

"किस पार्टी से टिकट लूँ?" अंजनी ने पूछा।

"किस पार्टी से? यह भी पूछने की बात है? हो सके तो सत्ता पार्टी से लड़ो। मैं तो तुम्हारे लिए मन्त्री ही बनने का स्वप्न देख रहा हूँ। पढ़ते रहो–अगर कोई इन्कमेबुल पोस्ट मिले तो नौकरी कर लेना नहीं तो नेतागिरी कर के मन्त्री बनो।"

"लेकिन इसमें पैसे बहुत लगते हैं।"

"लगने दो, वह तो मैं दे ही रहा हूँ" सहगल साहब ने उत्साह से कहा–"कितने पैसे चाहिए, तुम्हें इलेक्शन जीतने के लिए।"

"यह अभी कैसे बताया जा सकता है? हमारे अगेन्स्ट जैसा कैन्डिडेट होगा उसी के हिसाब से खर्च होंगे।"

"फिर भी, मान लो बहुत तगड़ा कैन्डिडेट है, तब कितना लगेगा? सहगल साहब ने पूछा।

"यह मत पूछिए, अगर भिड़ गया कोई सेठ का बच्चा, फिर तो मुसीबत हो जाएगी। मैं तो अकेले लडूँगा नहीं, अपने कैन्डिडेट को भी तो लड़ाना पड़ेगा।"

"अच्छा ठीक है, अभी ५००० रु. ले लो, फिर जो लगेगा, दूँगा।

अंजनी ने चहक कर कहा–"तब तो मैं श्योर जीतूँगा।"

"ठीक है, जरा ड्राइवर से कहना–बड़े बाबू को बुला लाए।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अंजनी ने ड्राइवर को बुलाकर सहगल साहब की आज्ञा सुना दी। ड्राइवर जीप लेकर बड़े बाबू को बुला लाया। बड़े बाबू ने आकर सहगल साहब को नमस्कार किया और उनकी आज्ञा से पास में पड़ी कुर्सी पर बैठ गए।

"लखनऊ के लिए आफिस का कोई काम है?" सहगल साहब ने पूछा।

"जी है तो, लेकिन उनका कागज तैयार नहीं है।"

"अभी जाईये और उसे तैयार कर के ले आइये और आज ही ड्राईवर के हाथ लखनऊ भेज दें।"

"अभी तो उसके लिए पन्द्रह दिन का समय है। तबतक तैयार कर दूँगा" बड़े बाबू ने कहा।

"नहीं, मैं चाहता हूँ कि हमारे कार्यालय का काम जल्द से जल्द हो। यही तो आप लोगों की खराबी है कि कागज भेजने में पन्द्रह दिन का समय है तो चौदह दिन बैठे रहेंगे। जाइए अभी दो घन्टे में कागज तैयार करके ले आइए। मैं यहीं बैठा हूँ, सिग्नेचर कर दूँगा और उसे आज ही भेज दीजिए। ड्राइवर! बड़े बाबू को लेकर आफिस जाओ, जब कागज तैयार कर लें तो इन्हें लेकर यहीं पर आ जाना" सहगल साहब ने एक साँस में सारे आदेश दे दिए।

ड्राइवर कूदकर जीप पर जा बैठा, बड़े बाबू मन ही मन भुनभुनाते हुए ड्राइवर की बगल में जाकर बैठ गए। दो-तीन घंटे के बाद बड़े बाबू फाइल लेकर जीप में आ गए। सहगल साहब ने कागजात पर हस्ताक्षर किया और कहा–"इसे ले जाकर शक्ति भवन कार्यालय में दे आओ।"

"साहब लखनऊ जाने के लिए मैं घर से तैयार होकर नहीं आया हूँ। न हो तो कल चला जाऊँ?"

"लखनऊ जाने के लिए कौन सी तैयारी करनी है? जीप जा रही है उसमें जाना है, कपड़ा पहने ही हैं। आप के पास सरकारी पैसे तो होंगे ही? ले लीजिए और जाइए और हाँ, ५०००रु. लाकर अंजनी को दे दीजिए, बाद में समझ लिया जाएगा।"

बड़े बाबू को बिना किसी प्रतिवाद का अवसर दिए सहगल साहब, उठकर बंगले के भीतर चले गए।

□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

९. विश्वविद्यालय

सरकारी जीप से अंजनी और रोजी वाराणसी फैजाबाद होते हुए लखनऊ पहुँच गए। ड्राइवर सरकारी कागजात लेकर दफ्तर चला गया। अंजनी हास्टल में अपने मित्रों में खो गया। रोजी ने सबसे पहले अपना गर्भपात करवाया और फिर चहकती हुई अपने हास्टल पहुँची। गर्भपात से पीले पड़े उसके चेहरे को देखकर उसकी सहेलियों ने पूछा–"अरे रोजी तुम्हारा हैल्थ कुछ डाउन लग रहा है, बीमार थी क्या?

"इन्फ्लुएन्जा हो गया था, और बोलो तुम लोगों के क्या हाल चाल हैं?"

"तुमने तो सारे हास्टल की लड़कियों के हाल चाल एक साथ ही पूछ लिया। यहाँ सबके हाल चाल अलग हैं, कैसे बताएँ?" कुमारी हेमांगना मुखर्जी ने कहा।

"अपनी बात अपनी, सबका ठेका मत ले" कहकर सुरेखा ने आँख मारी। हेमांगना सकुचा कर चुप हो गई तो हँसती हुई सुरेखा ने कहा–"हम लोगों के हाल चाल सेम टु सेम हैं। हेमांगना के जीवन से गया बहार फिर लौट आया है। इसके उसका पत्र आया है।"

"अच्छा-अच्छा, क्यों हेमा सुरेखा ठीक कह रही है नऽ? यह तो बहुत खुशी की बात है। रूठा प्यार जब मनुहार करने लगे तो समझो प्यार की तपस्या सफल।" रोजी ने शायराना अन्दाज में कहा।

"इसी बात पर हेमा पार्टी को शाम की शो दिखाए।" सुरेखा ने चहकते हुए कहा।

"देखो, दस बज रहे हैं, चलो पहले क्लास चला जाय," हेमांगना अपने रूम की ओर जाते हुए बोली।

सुरेखा ने आगे बढ़कर उसका रास्ता रोक लिया और बोली–"पहले प्रॉमिस करो तब जाने दूँगी।"

"अरे चलो यार अगर हेमा नहीं दिखाएगी तो रोजी तो जिन्दा है" कहते हुए रोजी ने अपना सीना ठोका। सभी लड़कियाँ–हिप-हिप हुर्रे कहती हुई खड़ी हो गईं। यह हास्टल की शैतान लड़कियों का ग्रुप था। वे जैसे ही अपने रूम की

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ओर जाने को मुड़ीं कि "छात्र एकता जिन्दाबाद" का शोर सुनाई पड़ा। लड़कियां चौंककर शोर की दिशा में देखने लगीं। कोलाहल नजदीक आता जा रहा था। छात्रों का एक जुलूस दूर पर दिखाई पड़ा।

"अरे यह तो छात्र जुलूस है!" रोजी ने कहा।

"है तो लेकिन बात क्या है?" सुरेखा उचक कर जुलूस की ओर देखते हुए बड़बड़ाई। तब तक जुलूस लड़कियों के हास्टल के फाटक पर आकर ठहर गया। नारे लगने लगे। लड़कियों को देखकर लड़कों में विपरीत आकर्षण का उत्साह ठाठें मारकर उबल पड़ा। वे अति उत्साह में नारे लगाते तालियाँ पीटने लगे। एक लड़के ने हास्टल के फाटक से सटकर कहा–"बहनों! आज क्लास नहीं चलेगा, आज हड़ताल है, आप हमारा साथ दें।" तबतक किसी लड़के ने नारा दिया–"बहनें मेरे..." भीड़ ने कहा–"साथ हैं।"

रोजी ने सभी लड़कियों को इकट्ठा किया और उनकी अगुआई करती हास्टल के बाहर आकर जुलूस में शामिल हो गई। जुलूस नारे लगाता आगे बढ़ चला। जुलूस में शामिल अधिकतर छात्र-छात्राएँ नहीं जानती थीं कि आज विश्वविद्यालय में कक्षा का बहिष्कार क्यों कराया जा रहा है। इसलिए वे एक दूसरे से बहिष्कार का कारण पूछते चल रहे थे। कोई किसी को सन्तोषजनक उत्तर नहीं दे पा रहा था। लोग यह सोच कर अपनी उत्सुकता दबाए इस जुलूस के साथ चल रहे थे कि जब यह जुलूस सभा के रूप में परिवर्तित होगा तो वहीं पर इसका कारण भी स्पष्ट हो जायगा। इस जानने की उत्सुकता ने जुलूस में भीड़ को बनाए रखा। विश्वविद्यालय में जहाँ-जहाँ भी क्लास चल रहे थे, जुलूस ने वहाँ-वहाँ जा ऊधम मचाकर पढ़ रहे लड़कों को कक्षा से बाहर आने को मजबूर कर दिया। छात्रों के कक्षा से बाहर जाते ही अधिकतर शिक्षक मुस्कुराते हुए अपने-अपने गन्तव्य पर चले गए।

राजनीति के बूढ़े प्रोफेसर डांगे अपने विषय के प्रकांड विद्वान, निहायत ईमानदार, मितभाषी, मृदुल स्वभाव, लोहियावादी व्यक्ति थे। अच्छे छात्र उनके इन गुणों के कारण उनका बहुत आदर करते थे। किन्तु ऐसे लड़के जो येन केन प्रकारेण अपनी नेतागिरी जमाना चाहते, जिनके पास कोई सोच नहीं था, वे उनसे चिढ़ते थे। प्रोफेसर डांगे विश्वविद्यालयी राजनीति से कोसों दूर, वहाँ के किसी भी गुट से सम्बन्ध नहीं रखते थे। यदा-कदा अवसर आने पर वे इन गुट संचालकों पर अपने भाषणों में निर्मम प्रहार भी कर देते। इसलिए उनसे कोई भी गुट प्रसन्न नहीं था, जबकि नेतागिरी करने वाले छात्र गुट विशेष से सम्बद्ध थे। जिसके कारण वे प्रोफेसर डांगे को अक्सर खडूस, दकियानूस आदि अलंकारों से विभूषित किया करते थे। प्रोफेसर डांगे जैसे ही अपनी कक्षा में पहुँचे जुलूस ने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उनके क्लास को घेर शोर मचाना शुरू कर दिया। प्रोफेसर डांगे ने अपने छात्रों को कक्षा में ही बैठे रहने को कहा और स्वयं बाहर आकर पूछा–"क्या बात है?"

"हम आप को बात बताने नहीं, अपने साथियों से कक्षा-बहिष्कार कराने आए हैं" एल. एल. बी. में चार वर्षों से फेल हो रहे अरुण कुमार ने कहा।

"तुम्हारे साथी कक्षा बहिष्कार क्यों करें? यह तो उन्हें बता दो।"

"यह बात सभा में बताई जाएगी, आप भी वहीं आकर सुन लीजिएगा।" किसी लड़के ने भीड़ के पीछे से कहा।

"मेरे अपने छात्रो, मैं सुनकर क्या करूँगा? समस्या तुम्हारी है, हाँ एक बात मैं कहना चाहता हूँ कि जिस बात को दो-चार लोग मिल बैठकर हल कर सकते हैं, उसके लिए सम्पूर्ण समूह को लगाना कहाँ की बुद्धिमानी है? ऐसे कार्यों से समूह-अत्याचार को बढ़ावा मिलता है। हड़ताल, प्रदर्शन व बहिष्कार तो अन्तिम हथियार के रूप में इस्तेमाल किया जाना चाहिए। सब से पहले विवादित मुद्दे पर आपसी विचार होना चाहिए कि गलती किसकी है? इस विचार गोष्ठी में दोनों पक्ष अपनी-अपनी बात रखें। यदि झगड़ा सुलझ जाता है तब तो ठीक है नहीं तो दोनों पक्षों द्वारा प्रस्तुत तर्क-वितर्क, उनके आपसी प्रश्नोत्तर को, ज्यों का त्यों छपवाकर अथवा किसी प्रचार माध्यम से जिस दिन छात्रों का अवकाश रहे उस दिन सभा के माध्यम से छात्रों तक पहुँचाया जाय। उसे जानकर छात्र गुप्त मतदान द्वारा यह निर्णय करें कि बहिष्कार, हड़ताल, प्रदर्शन हो या नहीं। इस प्रकार तुम्हारा समय, तुम्हारा भविष्य सब कुछ सुरक्षित रहेगा और समूह-अत्याचार को बढ़ावा भी नहीं मिलेगा।" प्रोफेसर डांगे की वाणी में इतना ओज, बातों में इतनी वास्तविकता थी कि सभी छात्र इतनी देर तक मन्त्रमुग्ध हो उनकी बात सुनते रहे। एकाएक किसी छात्रनेता को प्रोफेसर डांगे का संक्षिप्त भाषण संक्रामक रोग की तरह छात्रों में फैलता नजर आया। इसको रोकने के लिए वह जोर से चिल्लाया–"छात्र एकताऽऽ...।" जुलूस में से कुछ लोग ही बोले–"जिन्दाबाद।" नारा बोलने वाले छात्र ने कहा–"प्रोफेसर साहब जब आप भारत के राष्ट्रपति बनिएगा तो इस नियम को संविधान में जरूर जोड़िएगा।" फिर उसने कक्षा में घुसते हुए नारा दिया–"जो हमसे टकराएगा...।" भीड़ में से पचासों लड़के–"चूर-चूर हो जायेगा" कहते कक्षा में घुस गये।

कक्षा में बैठे छात्र घबरा कर बाहर निकल आये। जुलूस उन लोगों को अपने साथ-समेटता, नारे देता आगे को चल पड़ा। प्रोफेसर डांगे हतप्रभ-से कक्षा के बाहर खड़े जाते जुलूस को देखते रहे। कुछ देर बाद बड़े ही निराश मन से सीढ़ियों से उतरने के लिए पीछे मुड़े तो देखा कि उन्हीं की कक्षा का एक छात्र चुप-चाप खड़ा है। "क्या तुम जुलूस में नहीं गए?" उन्होंने पूछा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"नहीं सर, जुलूस में जाकर क्या करता?"

"लड़कों ने जुलूस क्यों निकाला है, कुछ पता है?"

क्रिकेट कैप्टन अंजनी सहगल को वार्डेन ने हास्टल से निकालने की नोटिस दे दी है। उसी के लिए यह सब हो रहा है।"

"क्यों, निकालने की नोटिस क्यों दे दी?"

"क्या बताया जाय सर, जितने मुँह उतनी बातें। वार्डेन साहब का कहना है कि सहगल हास्टल के नियमों को नहीं मानता, हास्टल में शराब पीकर हंगामा करता है। उसके कारण हास्टल में गुन्डई बढ़ रही है आदि-आदि।"

"मिस्टर खन्ना ही तो उस हास्टल के वार्डेन हैं? सहगल और खन्ना में तो बहुत पटती थी।"

"जी सर, इसीलिए तो यह गड़बड़ी हुई है। सहगल तो खन्ना साहब के घर के मेम्बर जैसे हो गया था। वह घर पर रहें न रहें, सहगल उनके घर पड़ा रहता था। खन्ना साहब ने उड़ती कुछ खबरें अपनी पत्नी और सहगल के विषय में सुनीं या कुछ देखा कहा नहीं जा सकता।"

क्या इस समस्या का समाधान हास्टल से निकालने पर हो जाएगा? कभी नहीं" कहते हुए प्रोफेसर डांगे सीढ़ियों से उतर कर अपने क्वार्टर की ओर चले गए, लड़का भी चला गया।

इधर दो चार वर्षों से इस विश्वविद्यालय का वातावरण बहुत बिगड़ गया है। इसके पहले इस विश्वविद्यालय में अपने विषयों के निष्णात लेक्चरार, रीडर और प्रोफेसर हुआ करते थे। उन्हें अपने ज्ञान के प्रति अटूट विश्वास और विद्या के प्रति स्नेह था। लेकिन जब से नये लेक्चरार आए हैं, लगता है विश्वविद्यालय विद्या नहीं राजनीति का अखाड़ा हो। कमोबेश हर विश्वविद्यालय की यही स्थिति हो गई है। इसका कारण यह है कि मन्त्रियों तथा नवधनाढ्यों के बच्चे कान्वेंट और दून स्कूल में मंहगी शिक्षा पाकर, आकर्षक लहजे में अंग्रेजी बोलना सीख गए किन्तु विषय का ज्ञान शून्य ही रहा। इस प्रकार से शिक्षित, येन केन प्रकारेण डिग्रियां प्राप्त करने वाले नवयुवक किसी प्रतियोगितात्मक परीक्षाओं में सफल नहीं हो सके। ऐसे लोगों को सम्मनित नौकरी में लाने के लिए राजनैतिक दबाव से सरकार ने एक सर्कुलर निकाला कि–"शिक्षा के क्षेत्र में नवसृजन करने वालों को विश्वविद्यालय में लेक्चरार पद के चुनाव में वरीयता दी जाएगी।" इस सर्कुलर के अनुसार अपने को योग्य सिद्ध करने के लिए ऐसे नवयुवकों ने योग्य विद्वानों से, पैसे देकर अथवा पहुँच द्वारा थीसिस लिखवा, उसे अपने नाम से छपवा लिया। इस प्रकार ऐसे लोगों की घुस-पैठ विश्वविद्यालयों में हुई। अपने विषय के अज्ञान को छिपाने के लिए इन लोगों ने अंग्रेजी के अपने विशिष्ट लहजे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

में उन्मुक्त जीवन पर युवाओं में भाषण देना प्रारम्भ कर दिया। अंग्रेजी के प्रति प्रचारित सम्मोहन से सम्मोहित होकर छोटे-छोटे शहरों, कस्बों से गए युवक-युवतियाँ इन लोगों के इर्दगिर्द मडराने लगीं, जिसे इन लोगों ने अपनी लोकप्रियता समझ लिया। छात्र-छात्राएँ, लेक्चरार सभी शाम को एक साथ बैठ गप मारते, नशाखोरी करते। आनन्द ही जीवन है–इसे जिन्दादिली से जियो, 'ईट, ड्रिंक एण्ड बी मेरी' जैसे पाश्चात्य विचारों पर लेक्चरारों के भाषण सुनते। आचार्य रजनीश के तत्काल प्रभावित करने वाले सिद्धान्तों को तोड़-मरोड़ कर पेश किया जाता सभी छात्र-छात्राएँ प्रभावित होतीं। वार्डेन खन्ना इस टोली के अगुवा थे। अंजनी, रोजी आदि उनके साथ शाम को बैठकर गप मारते। इसी क्रम में अंजनी सहगल, खन्ना साहब के घर आने-जाने लगा। सुगठित शरीर और आकर्षक व्यक्तित्व वाले अंजनी के साथ खन्ना साहब की पत्नी भी उन्मुक्त जीवन की सहभागिनी बन गई। खन्ना साहब को भनक लग गई। खन्ना साहब के पास विशिष्ट लहजे की अंग्रेजी भले ही रही हो किन्तु अपने लिए यौन संबंधों के मामले में संस्कार भारतीय ही थे। वे इसे सहन नहीं कर पाए। उनकी पहुँच चीफ प्रॉक्टर तक थी। विश्वविद्यालय के सीनेट में इन्हीं जैसे लोगों का वर्चस्व था इसलिए उसमें भी इनका प्रभाव था। इसलिए खन्ना साहब ने अविलम्ब अंजनी सहगल को हास्टल से निकाले जाने की नोटिस तामिल करा दी, जिसके कारण सारा विश्वविद्यालय बन्द हो गया। छात्रों ने वाइस चान्सलर के बंगले को घेर लिया। एक तरफ विश्वविद्यालय का सीनेट दूसरी ओर छात्र, ऐसी स्थिति में वाइस चान्सलर ने लड़कों को आश्वासन दिया कि–"मैं इस मामले को देखूँगा, आप लोग अपनी कक्षाओं में जायँ।" बहुत कुछ समझाने के बाद भी लड़कों पर कोई असर नहीं पड़ा, वे नारे लगाते रहे। छात्र नेताओं का कहना था कि जबतक अंजनी को दी गई नोटिस वापस नहीं ली जाएगी, वे लोग बंगले को घेरे रहेंगे। इसी आपा-धापी में शहर के वे गुंडे जो इस विश्वविद्यालय में पढ़ चुके थे अथवा किसी माध्यम से यहाँ से जुड़े थे वे भी शामिल हो गए। उन लोगों ने पास में पड़े कुछ पत्थरों के टुकड़ों को बंगले की ओर फेंका। फिर क्या था, तमाम लड़के बंगले पर पत्थर चलाने लगे। वाइस चांसलर ने सुरक्षा के लिए पुलिस को फोन कर दिया। पेशेवर बदमाश तो पत्थर चला कर भाग खड़े हुए।

इधर पुलिस बल को देखकर छात्रों ने मोर्चेबंदी कर ली। पुलिस ने लड़कों को वहाँ से हट जाने की चेतावन दी, जवाब में लड़कों ने नारेबाजी शुरू कर दी। लड़कों की भीड़ से दो चार पत्थर पुलिस की ओर फेंके गए। पुलिस की संख्या कम थी, इसलिए वे अपनी सुरक्षा के लिए बंगले के भीतर दीवाल की आड़ लेकर लान में खड़े हो गए। पुलिस को पीछे हटती देख लड़कों में और उत्साह

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जगा, वे दूने वेग से पत्थर फेंकने और नारे लगाने लगे। लड़कों का दबाव बढ़ता देख, अतिरिक्त फोर्स के लिए वायरलेस से कोतवाली खबर की गई। थोड़ी देर में पी.ए.सी. के जवान दो लारियों में भरकर आ गए। उधर जाने कैसे यह खबर फैल गई कि वाइस चान्सलर के बंगले पर भयंकर लाठी चार्ज हुआ जिस में अंजनी सहगल सहित कई छात्र-नेता बुरी तरह घायल हुए हैं। छात्रों में उत्तेजना फैल गई, वे सभी अपने-अपने छात्रावासों से नारे लगाते वाइस चान्सलर के बंगले की ओर बढ़ने लगे। इसी बीच वाइस चान्सलर के बंगले की ओर बढ़ रहे उत्तेजित छात्रों की बगल से दूसरी पी.ए.सी. की गाड़ी निकली। उत्तेजित छात्रों ने उसपर भारी पथराव किया। चार-पाँच पी.ए.सी. के जवान घायल हो गए जिससे उनमें भी उत्तेजना आ गई। आती हुई छात्रों की भीड़ को एकत्रित न होने देने के लिए, तत्काल आए एस. पी. ने आदेश दिया कि–"टुकड़ों में आते जुलूस को जगह-जगह रोक दिया जाय।" इस कार्य के लिए स्थान-स्थान पर पी.ए.सी. की टुकड़ियाँ लगा दी गईं। छात्र अलग-अलग टुकड़ियों में अलग-अलग स्थानों पर वाइस चान्सलर तथा पी.ए.सी. के विरुद्ध नारे लगाते मोर्चाबन्द हो गए। ईंट और पत्थर चलने लगे। पी.ए.सी. ने छात्रों को खदेड़ने के लिए लाठियाँ भाँजीं जिससे कुछ छात्रों को साधारण चोटें आईं। लाठी चार्ज से भागी लड़कों की भीड़ दूसरी जगह सतर्क होकर मोर्चेबन्द हुई। जब पी.ए.सी. उन्हें खदेड़ने के लिए वहाँ पहुँची तो सतर्क लड़कों ने गम्भीर ढेलेबाजी की जिससे कुछ पी.ए.सी. के जवान तथा उनका एक अधिकारी घायल हो गया। फिर क्या था, उत्तेजित पी.ए.सी. ने लड़कों को माँ-बहन की गाली देते खदेड़-खदेड़ कर मारना शुरू कर दिया। अपनी जान बचाने के लिए लड़के हास्टल की ओर भागे। लेकिन पी. ए. सी. वालों ने उनका पीछा वहाँ तक किया और उन्हें हास्टलों में घुस कर मारा। बदमाश लड़के तो अवसर पाकर भाग निकले थे, पीटे गए हास्टल के बेगुनाह लड़के। कुछ लड़कों को पकड़ कर पुलिस थाने ले गई। चारों तरफ सन्नाटा छा गया, लगा जैसे सब कुछ शान्त है।

अंजनी भी अपने हास्टल से भाग कर शहर में आ गया। उसने शहर के एक अच्छे होटल में कमरा बुक करवाया और वहीं अपने मित्रों की एक गुप्त मीटिंग की। मीटिंग का मुख्य मुद्दा था कि इस आन्दोलन को कैसे गर्म किया जाय?

"देखो भाई, आज अगर यह आन्दोलन दब गया तो वाइस चान्सलर शेर हो जाएगा, खन्ना सरीखे वार्डनों का मन बढ़ जाएगा। वे जब चाहेंगे किसी भी लड़के को हास्टल से बाहर कर देंगे" अंजनी ने कहा।

"यार तुम भी तो उसी के घर पर हाथ साफ करने लगे"–प्रफुल्ल सेन ने कहा और हँस पड़ा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"अच्छा प्रफुल्ल, चलो मान लिया कि मैने ऐसा किया। कोई जबरदस्ती तो नहीं किया? उसकी पत्नी की इच्छा से ही न यह हुआ? फिर कुछ अननेचुरल तो नहीं हुआ? अगर यह कार्य गलत है तो खन्ना की पत्नी भी इस गलती में बराबर की भागीदार होती है। यदि मुझे हास्टल से निकालते हैं तो उसे घर से निकालें।"

"वह भी तुम्हारे साथ! वाह! क्या न्याय की बात कही है तुमने"–प्रफुल्ल ने कहा और मित्र मंडली ठठाकर हँस पड़ी।

"क्या हुआ और क्या नहीं हुआ, अब इस पर बात करने का समय नहीं है। अब क्या किया जाय यह सोचने का समय है।" फ्रेंच कट दाढ़ी आँखों पर काला चश्मा लगाए, सिगरेट का धुँआ मुँह से उगलते हुए मानवेन्द्र ने अति गम्भीरता से अपनी बात धीमी किन्तु भारी आवाज में कही।

"कुछ न कुछ चौंकाऊ कार्यक्रम तो देना ही पड़ेगा, नहीं तो वाइस चान्सलर सोच रहा होगा कि बाजी जीत हो गई। ऐसा किया जाय कि विश्वविद्यालय के भीतर सड़क के किनारे जो गुमटियाँ हैं, उनमें से एक दो को आज रात में फूंक दिया जाय। इस से मामला कुछ तूल पकड़ेगा। कल रात दो बम हास्टल के आस-पास इधर-उधर फोड़े जाँय।"–प्रफुल्ल ने कहा।

"तुम लोग बचपने की बात मत करो, गुमटियाँ फूंक दोगे, बम फोड़ दोगे, जलती गुमटियों को पी.ए.सी. वाले बुझा देंगे या जल जाने देंगे। बम के धमाके वे सुनेंगे या आधा शहर सुनेगा, उससे क्या होगा? इस प्रकार की छोटी-मोटी आगजनी और धमाके तो रोज होते रहते हैं। थोड़ी बहुत खुसुर-फुसुर होगी फिर सब शान्त।" सिगरेट की राख झाड़ते मानवेन्द्र ने कहा।

"फिर दादा, आप ही बताइए क्या किया जाय?" अंजनी ने पूछा।

मानवेन्द्र कुछ देर तक मौन छत की ओर ताकता बैठा रहा, फिर सर झटककर उसने सिगरेट का एक गहरा कश लिया और कहा–"पहला काम यह हो कि खाद्य राज्य मंत्री जो कि इसी विश्वविद्यालय के अध्यक्ष रह चुके हैं उनसे सम्पर्क बनाया जाय और उन्हें अपने आन्दोलन का औचित्य बताया जाय। आन्दोलन के औचित्य को बताने के लिए यह आवश्यक है कि छात्रों से सम्बन्धित कुछ मुद्दे तैयार किये जाँय जिसमें अंजनी वाला मुद्दा सबसे अंतिम हो।" उपस्थित लोग मानवेन्द्र की बातें बहुत ध्यान से सुन रहे थे। उन लोगों को उसकी बातें बहुत पसन्द आईं। लोगों के ऊपर अपनी बात का प्रभाव पड़ता देख कर मानवेन्द्र ने मुस्कुरा कर कहा–"इट्स क्लियर?" लोगों के सर हिला कर समर्थन करने पर उसने अपने पैकेट से दूसरी सिगरेट निकाली। उसे मुँह से लगा लाइटर से बड़ी अदा के साथ धरा, कश खींचकर कहा–"देन" तभी कमरे की

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

काल बेल बजी। सभी चौकन्ने होकर एक दूसरे की ओर देखने लगे। अंजनी ने आगे बढ़कर पूछा–"कौन?"

"मैं हूँ, रोजी" आवाज आई। अंजनी ने प्रसन्न होकर दरवाजे की सिटकनी गिरा दी। रोजी मचलती हुई कमरे में "ओफ्फ ओह!, कितनी परेशानी से पता लगा पाई कि तुम लोग यहाँ हो" कहती प्रविष्ट हुई। उसने पास में पड़े पलंग पर अपना पर्स पटका और धम्म से बैठ गई। बैठते ही उसकी निगाह मुँह से धुआँ उगलते मानवेन्द्र पर पड़ी। "अरे मान दादा आप?" कहती हाथ जोड़े पलंग से उठ खड़ी हुई "कब आए?"

"बैठो बैठो, तीन चार दिन से यहीं इसी शहर में हूँ। आज विश्वविद्यालय जा रहा था कि रास्ते में अंजनी मिल गया। बस तब से यहाँ हूँ।"

"आजकल क्या कर रहे हैं? जब आप यहाँ के अध्यक्ष थे तो क्या समय था?" कहकर रोजी ने ऐसा निःश्वास छोड़ा जैसे वह समय विश्वविद्यालय का स्वर्णयुग रहा हो।

"करूँगा क्या? नौकरी तो मेरा एम न तब था न अब है।"

"आजकल किस पार्टी में हैं?"

"जिसमें पहले था उसी में हूँ। आशा है इस बार टिकट मिल जाएगा। अच्छा छोड़ो इन बातों को–"हाँ तो मैं कह रहा था कि–इसके बाद पैसे की व्यवस्था होनी चाहिए ताकि समाचार माध्यमों को कन्ट्रोल किया जा सके। उनसे सम्पर्क करके, समझा-बुझा कर, खा-खिलाकर किसी भी प्रकार। तीसरा कार्य यह हो कि यहाँ से कुछ लोग दूसरे विश्वविद्यालय के अध्यक्षों से मिलें। सभी लोग मिलकर यह सुनिश्चित करें कि प्रदेश भर के स्कूल, कालेज के सभी विद्यार्थी इस आन्दोलन में भाग लें।"

"ग्रेट आइडिया!" रोजी ने चहक कर कहा।

"और सुनो–जाओ दवा की दुकान से कुछ रूई पट्टी लेते आओ, एक फोटोग्राफर भी बुलाते आना।" मान दादा की इस बात को उपस्थित लोगों ने नहीं समझा तो उन्होंने हँस कर कहा–"अरे यारों राजनीति में कुछ स्टंट भी चलता है। रूई-पट्टी अंजनी को जगह-जगह बाँधकर फोटो खिंचवा लो। उसको एक पैम्फलेट पर यह अपील करते हुए छपवाओ कि 'हम अपने छात्र बन्धुओं से यह अपील करते हैं कि वे अफवाहों पर ध्यान न दें। अंजनी पुलिस की मार से मरे नहीं हैं बल्कि घायल हैं। प्रमाण के लिए यह चित्र छापा जा रहा है। आप उत्तेजित न हों, राष्ट्रीय सम्पत्ति को हानि न पहुँचायें। राष्ट्र हमारा है। विश्वविद्यालय हमारे हैं, किसी वाइसचान्सलर के नहीं। अगले अहिंसक कार्यक्रम की घोषणा की प्रतीक्षा करें।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आदि-आदि'–समझे?'' कहकर मान दादा मुस्कुराए और कहा–''इसके बाद तुम लोगों ने जो अपना कार्यक्रम बनाया है, उसे कार्यान्वित करो। लेकिन देरी मत करो, शुरू हो जाओ।''

''लेकिन दादा, मन्त्री से मिलेगा कौन?'' प्रफुल्ल ने प्रश्न उठाया।

''इसको हमारे और रोजी पर छोड़ दो। मुझे मालूम है कि तुम्हारे वाइसचान्सलर से मुख्यमन्त्री भी खुश नहीं हैं, वे अपना आदमी लाना चाहते हैं। रही पैसे की बात, यद्यपि कि मन्त्री जी हमारी पार्टी के नहीं हैं, फिर भी हमारी उनसे पटती है, उनसे कुछ पैसे मैं दिलवा दूँगा। शेष तुम लोग प्रबन्ध कर लो।'' मान दादा ने बड़े इत्मीनान से कहा।

कार्यक्रम के अनुसार तुरन्त अंजनी को घायलों के पोशाक-पट्टियों से लैस किया गया। उसका एक फोटो आनन-फानन में तैयार करा, एक फड़कता हुआ पैम्फलेट, उस पर अंजनी के फोटो सहित छपवाया गया। उसे लेकर प्रफुल्ल अपने एक मित्र के साथ अन्य विश्वविद्यालयों के अध्यक्षों से मिलने चला गया। इधर रोजी को साथ ले मान दादा मन्त्री जी से मिलने चले गए।

दूसरे दिन सुबह मान दादा मुस्कुराते, सिगरेट का कश खींचते हुए अंजनी के होटल वाले कमरे पर हाजिर हुए। कमरे में घुस, वह पसर कर बैठ गये और जेब से १००-१०० की गाड्डियाँ निकाल कर पलंग पर फेंक दीं। अंजनी ने नोटों को उठाकर बिस्तर के नीचे रखते हुए पूछा–''रोजी कहाँ है?''

''वह तो कल शाम को ही मन्त्री जी से वार्ता के बाद अपने घर चली गई।'' फिर अपनी घड़ी देखते हुए बोले–''आठ तो बज रहे हैं, इसी समय तो आने को कहा था।'' उनका यह कहना था कि कमरे का दरवाजा ठेलकर ताजादम रोजी कमरे में प्रविष्ट हुई।

''अरे वाह! तुम तो अंग्रेज हो गई हो, आठ बजे कहा था और ठीक आठ बजे हाजिर!'' मान दादा ने चेहरे पर गम्भीरता बनाए हुए कहा।

''दादा, आप तो शुरू से जानते हैं कि मैं वादे की पक्की हूँ।'' रोजी इठलाते हुए बोली और अपना पर्स अंजनी की बगल में लापरवाही से रखकर बैठ गई।

अंजनी समझ गया कि रोजी घर से नहीं आ रही है। फिर उसने अपने मन में सोचा–''उँह, चाहे घर से आए या जंगल से, मुझे क्या लेना देना, कौन जीवन भर साथ निभाना है?'' तब उसके चेहरे पर मुस्कान उभर आई। उसने पूछा–''काम हो गया दादा?''

दादा को लगा कि अंजनी व्यंगात्मक–दो अर्थी भाषा बोल गया। लेकिन उन्होंने प्रत्यक्ष अर्थ को ही समझने का नाटक करते हुए कहा–''काम होने का

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रमाण यह पैसा तो देख ही रहे हो, रही राजनैतिक संरक्षण की बात, उसे आन्दोलन को आगे बढ़ाओ और देखो।'' कुछ रुककर वह फिर बोले–''और सुनो, पैसे तो अब काम भर के आ ही गए हैं, इसलिए पहला काम यह करो कि आज रात में मैं कुछ किराए के बदमाशों को भेजकर, विश्वविद्यालय के भीतर गुमटियों में आग लगवा देता हूँ–एक दो बम फोड़वा देता हूँ। उन सबों को पैसे दे देना। सुबह के अखबारों में एक गुमटी की जगह पर दस गुमटियाँ जलेंगी और एक बम की जगह पर पन्द्रह बम के धमाके छपेंगे। तब तुम्हारी समझ में–राजनैतिक संरक्षण मिला कि नहीं–आ जाएगा। एक घण्टे बाद मेरी ट्रेन मिलेगी, आज ही मुझे दिल्ली जाना है। मैं तुम लोगों से फिर मिलूँगा।'' कहकर मान दादा ने एक टैक्सी बुलवाई और उसमें अपनी अटैची तथा होल्डाल रखकर, अभिवादन स्वीकार स्टेशन चले गए। उनके जाते ही कमरे की सिटकिनी चढ़ाकर रोजी अंजनी से लिपट गई और बड़बड़ाई–''आई विल किल यू, मैं कितनी प्यासी हूँ, हाउ थर्स्टी एम आइ?''

''अरे दूर रहो, देख नहीं रही हो, मैं घायल हूँ!'' अंजनी ने अपनी पट्टियों की ओर संकेत किया जिसे वह अब भी अपने सर पर बाँधे था।

''ओ! आइ सी, अभी मैं मैजिक से इस चोट को ठीक करती हूँ!'' कहकर रोजी ने उसकी पट्टियों की ओर हाथ ही बढ़ाया कि उसी समय दरवाजे की कालबेल बजी। रोजी ने छिटक कर अंजनी से दूर होते पूछा–''कौन?''

''मैं हूँ श्यामदेव, मान दादा ने भेजा है।'' बाहर से आवाज आई। रोजी ने अंजनी की ओर देखा। अंजनी अपने पलंग पर आराम से बैठते हुए बोला–''खोल दो।''

रोजी ने सिटकिनी खोल दी। एक स्वस्थ बदन का पहलवान नुमा लड़का कमरे में दाखिल हुआ। अन्दर आते ही उसने दोनो को नमस्कार किया और एक पत्र अंजनी को दिया। अंजनी ने उसे पढ़ा और पूछा–''आदमी आ चुके हैं?''

''जी हाँ, उन्हें दूसरे होटल में टिका कर मैं आप के पास आया हूँ।''

अंजनी ने उसे पैसे निकालकर दिया और कहा–''आज की रात यह कार्य हो जाना चाहिए।''

''यदि आप कहें तो एक दो बम पी.ए.सी. वालों पर फिंकवा दूँ। पैसे कुछ अधिक लगेंगे।''

''नहीं नहीं, उन पर बम फेंकने से क्या फायदा? बेकार में एक दो आदमी मरेंगे या जख्मी हो जाएँगे।''

''वाह साहब! तब तो आप नेतागिरी कर चुके। जब आप आदमियों की जिन्दगी का हिसाब रखने लगेंगे तो, इससे अच्छा है नेतागिरी छोड़ दीजिए।''

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"नहीं भाई, जितना मान दादा ने बताया है, मैं उतना ही करना चाहता हूँ।"

"ठीक है, जैसी आपकी इच्छा। अच्छा तो मैं चलता हूँ। नमस्कार" कहकर वह आदमी चला गया। रोजी ने बढ़कर दरवाजा उँठगा दिया और पूछा–"कौन था?"

"मान दादा का आदमी।"

कार्यक्रम के अनुसार गुमटियाँ फूँकी गईं, बमों के धमाके हुए। प्रशासन चौकन्ना हुआ। वाइसचान्सलर ने सभी लड़कों को हास्टल खाली करने का आदेश दिया। हास्टल खाली करा लिए गए और विश्वविद्यालय को अनिश्चित काल के लिए बन्द घोषित कर दिया गया। स्थानीय समाचार पत्रों ने मोटे-मोटे अक्षरों में इस समाचार को ऐसा निकाला जैसे विश्वविद्यालय में पी.ए.सी. और लड़कों में बाकायदा गोरिल्ला युद्ध छिड़ गया हो। पूरे प्रदेश में अंजनी की सहानुभूति में छात्रनेताओं ने छात्रों से कक्षा-बहिष्कार कराया। सारे स्कूल कालेज बन्द हो गए। छात्रों ने भारी तोड़-फोड़ की। सरकारी बसें फूँकी गईं, दुकानें लूटी गईं। किसी-किसी शहर में कर्फ्यू भी लगा। अंजनी के विषय में बाँटे गए पर्चे ने अच्छी खासी अफवाहों को जन्म दिया। कुछ लोगों का मानना था कि यह पर्चा सरकार की ओर से बाँटा गया है, वास्तव में पुलिस वालों ने अंजनी को मार डाला है। कोई कहता पर्चा बाँटने तक अंजनी जीवित था, अब नहीं रहा आदि-आदि...। इस प्रकार एक सप्ताह के भीतर अंजनी पूरे प्रदेश का हीरो बन गया।

❑

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१०. अघोर आगमन

चौबे जी को जेल से छुड़ाकर, बस से जैसे ही बंशी पिपरी बस स्टेशन पहुँचा, उसने देखा कि कर्मचारियों की एक छोटी-सी टोली फूल-माला लिए चौबे जी के स्वागत के लिए खड़ी है। चौबे जी के बस के नीचे उतरते ही–"चौबे जीऽ...जिन्दाबाद" का नारा देती टोली ने उन्हें फूल-मालाओं से लाद दिया। तुरन्त एक जूलूस मुख्य मार्ग से होता मैदान में पहुँचा, जहाँ पहले से ही एक छोटा-सा मंच लगा था। मंच के सामने कुछ श्रोता बैठे थे, अधिकतर लोग इधर-उधर टहलते हुए गप मार रहे थे। मंच पर कोई वक्ता भाषण दे रहा था। उसने दूर से आते चौबे को पहले ही देख लिया इसलिए अपने भाषण को बीच में ही रोककर माइक से सूचित किया कि–"चौबे जी आ गए हैं, अब आप लोग यथास्थान बैठ जायें।" उनका बैठने के लिए कहना था कि बैठे हुए लोग भी उठकर चौबे जी की दिशा में देखने लगे, एक अफरा-तफरी मच गई।

चौबे जी ने मंच पर चढ़कर भीड़ को नमस्कार किया तो सभी लोग मंच की ओर मुखातिब हुए। एक वक्ता ने माइक सम्भाला और लोगों से बैठने की अपील करने लगा। कुछ देर में लोग यथास्थान बैठ गए। भाषण शुरू हुआ, वक्ता नेताओं ने बहुत ही गरम भाषण दिए। सभी नेता इस बात पर एकमत थे कि पिपरी के दरोगा को अविलम्ब सेवामुक्त किया जाय, अन्यथा हम सभी लोग हड़ताल, प्रदर्शन तथा थाने का घेराव करेंगे।

"दो में से किस दरोगा को सेवामुक्त कराएँगे?" भीड़ में से किसी ने पूछा।

"यह कौन-सी पूछने की बात है? थाना इंचार्ज राय को," वक्ता ने कहा।

"लेकिन उन्होंने तो चौबे जी को मारा ही नहीं, मारा तो छोटे दरोगा ने।"

"राय ने छोटे दरोगा पर कोई एक्शन क्यों नहीं लिया? इसलिए वह दोषी हैं।" माइक पकड़े नेता ने कहा, तभी उसके बगल में बैठे दूसरे नेता ने उठकर वक्ता के हाथ से माइक लेने की कोशिश की। दोनों में माइक लेने-देने पर कुछ मिनट किच-किच होती रही, तभी तीसरे ने उठकर उन दोनों को समझा-बुझा कर बैठाया और स्वयं माइक लेकर कहा–"इन्चार्ज ने एक्शन नहीं लिया और छोटे दरोगा ने मारा, इस प्रकार दोनों दोषी हुए। दोनों के खिलाफ प्रस्ताव पास होगा।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इस घोषणा से कुछ लोग अति उत्साहित होकर तालियाँ पीट-पीट कर कहने लगे–"हाँ हाँ, दोनो के खिलाफ, दोनों के खिलाफ।"

यह कैसी विडम्बना है कि जनता अपनी सुरक्षा के लिए तैनात सुरक्षा कर्मियों से अपने को असुरक्षित समझती और डरती है, फिर भी इस सुरक्षा-व्यवस्था को कायम रखा गया है। ब्रिटिश हुकूमत द्वारा संगठित पुलिस शक्ति आज भी उनके द्वारा दिए गए असीमित अधिकारों से लैस, स्वतंत्र भारतीय जनता के लिए उतनी ही असह्य है जितनी ब्रिटिश हुकूमत में थी। कोई भी अंग्रेज यहाँ की जनता पर सीधा अत्याचार करने नहीं आता था, बल्कि पुलिस के ये ही असीमित अधिकार परतन्त्र भारतीय जनता पर जुल्म ढाते थे जो आज भी वर्तमान है। इसलिए आज के स्वतन्त्र भारत में पुलिस के प्रति जनता में घृणा या क्रोध का होना तत्कालीन व्यवस्था के प्रति स्वतन्त्रता की लड़ाई के दौरान उभड़े क्रोध का दबा रूप है। यह दबा रूप जब समूह पाता है अथवा जन आन्दोलन का सहारा पा जाता है तब वह सुलगने लगता है और अनुकूल अवसर पर भड़क उठता है। कोई भी उस असीमित अधिकार से लैस सरकारी संगठन से सीधी टक्कर नहीं लेना चाहता। सामूहिक हमले में डर का भाव कम हो जाता है, इसलिए आज की सभा में पिपरी की जनता ने दिखावे के लिए दर्शक के रूप में किन्तु अन्तर्मन से पुलिसिया जुल्म के खिलाफ खुलकर भाग लिया।

छोटे-से मंच पर, इंटक, एटक, मजदूर महासंघ, चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी संघ, सीटू आदि संघों के नेता बैठे हुए थे। मंच पर बैठने लायक जगह न रहने पर भी कुछ लोग मंच की भीड़ में घुसने का प्रयास कर रहे थे। ध्वनि विस्तारक यन्त्र के लिए आपसी छीना-झपटी चल रही थी। छीना-झपटी करने वालों के मन में पुलिस के प्रति एक आक्रोश था, जिसे वे शीघ्रातिशीघ्र प्रगट कर देना चाह रहे थे। इस आपाधापी से बचने के लिए आज की सभा का तुरन्त एक अध्यक्ष तथा एक संचालक चुना गया। मंच से घोषणा की गई कि आज की सभा के अध्यक्ष सीटू संघ के अध्यक्ष श्री रामवृक्ष राम को चुना गया है। लोगों ने ताली पीटकर इसका समर्थन किया, एक आदमी ने उन्हें माला पहनायी। वे अध्यक्ष के आसन पर आसीन हो गए। मजदूर महासंघ के नेता ने संचालक का भार सम्भाला। संचालक ने कहा–"अभी तक यह सभा औपचारिक ढंग से नहीं चल रही थी। अब मैं अध्यक्ष जी से अनुमति लेकर इस सभा को औपचारिक रूप दे रहा हूँ। कृपया वे वक्ता जो अपनी बात इस मंच के माध्यम से कहना चाह रहे हैं वे मंच के पास आकर अपने नाम लिखा दें, अथवा अपने नाम की चिट भेजवा दें।" संचालक के इतना कहते ही बहुत से लोग अपने नाम लिखवाने अथवा नाम की चिट भिजवाने मंच के पास इकट्ठे हो गए। संचालक ने क्रमवार सबके नाम लिख

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वक्ताओं को मंच पर बुलाना प्रारम्भ किया। उसी समय सम्पादक जी कंधे से झोला लटकाए मंच के सामने दिखाई पड़े। उन्हें देखते ही मंचासीन नेताओं ने उन्हें नमस्कार किया और मंच पर उन्हें बैठने की जगह बनाने के लिए लोग थोड़ा-थोड़ा खिसकने सिमटने लगे। उस क्रम में मंच पर कुछ खुसुर-फुसुर होने लगी, जिससे वक्ता को कुछ परेशानी महसूस हुई तो वक्ता ने पीछे मंच पर बैठे लोगों की ओर मुड़कर देखा, संचालक ने उन्हें बोलते रहने का इशारा किया। इधर सम्पादक जी ने नमस्कार करने वालों का प्रतिउत्तर दे, झोले से कैमरा निकाल सभा में उपस्थित जन समुदाय का विभिन्न कोणों से चित्र ले, कैमरे को झोले में रखा और एक मिनट के लिए मंच पर जा संचालक के कान में कहा-"बनवासी संघ के अध्यक्ष चौथी राम भी सभा में हैं, जरा उन्हें भी बोलने का आमन्त्रण दे दीजिएगा," कहते हुए वह मंच से उतर भीड़ के पीछे एक ओर जाकर खड़े हो गए।

मंच अब व्यवस्थित हो चुका था। लोग अपनी-अपनी जगह पर खड़े अथवा बैठे वक्ताओं के भाषण सुन रहे थे। अधिकतर वक्ताओं की एक ही राय थी कि- "दोनों दरोगाओं के खिलाफ प्रस्ताव पास हो, यदि हम एकजुट होकर लड़ाई नहीं लड़ेंगे तो पुलिस, बड़े अधिकारियों, धनपतियों, नेताओं की स्वार्थपूर्ति के लिए हम कर्मचारियों के साथ मनमानी करेगी, हम पिस जाएँगे।" पुलिस, अधिकारियों, धनपतियों, नेताओं की मिली भगत के कितने ही उदाहरण दिए गए, जिनमें उपरोक्त लोगों की लूट का पर्दाफाश करने वाले कर्मचारियों की हत्या को पुलिस ने आत्महत्या में बदल दिया था। किसी को यह शिकायत थी कि उसके द्वारा पहले कब्जा की गई जमीन से पुलिस ने जबर्दस्ती उसे बेदखल कर दिया। ऐसा लगने लगा जैसे हर वक्ता पुलिस से कहीं न कहीं से परेशान है और उस परेशानी का उपचार वह इस मंच के माध्यम से पा लेना चाहता है। सभी अपना-अपना प्रस्ताव पास कराने के लिए जोर देने लगे। मंच पर अफरा-तफरी का दौर फिर प्रारम्भ हो गया। उसी समय संचालक ने वक्ता से माइक लेकर कहा-"यह मंच अभी हाल में हुए पुलिस-उत्पीड़न के खिलाफ लगाया गया है। कृपया आप लोग बहुत सारी समस्याओं को लाकर वर्तमान संघर्ष को विस्तृत न करें अन्यथा हम किसी एक लक्ष्य पर केन्द्रित नहीं हो पाएँगे और लड़ाई कमजोर हो जाएगी। माननीय सदस्यों ने वर्तमान पुलिस-अत्याचार के अलावा भी जिन अत्याचारों की बात की है समयानुकूल उस पर भी विचार किया जायगा। परन्तु अभी हमें केवल एक मुद्दे पर लड़ाई लड़नी है" कहकर संचालक ने नारा लगवाया-'कर्मचारी एकताऽऽ...' भीड़ चिल्लाई-'जिन्दाबाद।' विभिन्न दिशाओं में लोगों के भागते सोच फिर केन्द्रित हो गए।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"अब मैं बनवासी संघ के अध्यक्ष श्री चौथी राम से आग्रह करता हूँ कि वे मंच पर आएँ और अपने विचारों से हम लोगो को अवगत कराएं," संचालक ने कहा। चौथी राम मंच पर पहुँचे। उन्होंने औपचारिक सम्बोधनो के बाद कहना शुरू किया–"हम गान्ही जी के देश के लोग हैं, जिन्होंने अपने सत्य, अहिंसा से हम लोगो को सुराज दिलाया। उनके देश में जोर-जबरदस्ती की कोई गुंजाइस नहीं है, वह चाहे पुलिस द्वारा हो, चाहे संगठन द्वारा। आप जो अहिंसक ढंग से करने जा रहे वह अच्छा है। हम आप के साथ हैं, हमारे बनवासी भाई आपके साथ है। हमारे समझ में नहीं आता कि दरोगा जी इतने समझदार होते हुए...। भीड़ में एक हल्ला उठा, शान्त रहिए, शान्त रहिए का शोर चारों तरफ होने लगा। "दरोगा जी को समझदारी का प्रमाण पत्र दे रहें हैं?" किसी ने भीड़ में से कहा। भीड़ शान्त हो गई तो चौथी राम ने कहना शुरू किया–"हाँ भाई, जब आपने बुलाया है तो परजातंत्र में सबकी बात सुननी चाहिए। पहले मेरी बात सुन लीजिए, बाद में आप को जो कुछ मुझसे कहना-सुनना हो, कह-सुन लीजिएगा। हम तो आपके बीच के हैं, कोई दिल्ली के नेता नहीं है कि आज कहकर चलें जाएँगे तो फिर आप से मिलेंगे ही नहीं। ओइसे सभी अपने को समझदार समझते हैं, दरोगा जी भी अपने को समझदार समझते होंगे। मैं उन्हीं की समझदारी की बात कर रहा था। हम कौन किसी को परमान पत्र देने वाले हैं?" चौथी राम पढ़े लिखे तो थे नहीं लेकिन नेताओं के साथ रहते, सुनते नेताओं की तिकड़मी भाषा के ज्ञात हो चुके थे। "तो साथियों हम आपके साथ हैं, आप जो निर्णय लेंगे चौथी राम का उस पर पहिला दसखत रहेगा" कहकर चौथी राम मंच के नीचे उतर आए।

कर्मचारी नेताओं ने अन्त में सर्वसम्मति से यह प्रस्ताव पास किया कि–सर्वप्रथम दोनो दरोगाओं के निलम्बन और घटना की जाँच के लिए जनपद के डी.एम. और एम.पी. को पत्र लिखा जाय। यदि प्रशासन ऐसा नहीं करता तो थाने पर एक सप्ताह तक क्रमिक अनशन चलाया जाय। इस पर भी यदि कोई कार्यवाही नहीं होती तो सभी कर्मचारी हड़ताल पर चले जाएंगे। इसी आशय की एक नोटिस बनाकर सब को सुनाया गया और उस पर सभी कर्मचारी नेताओं ने अपने हस्ताक्षर किए।

उधर सम्पादक जी प्रत्येक वक्ता के फोटो लेते और भाषण टेप करते रहे। नोटिस सुनने के बाद तुरन्त सड़क की ओर मुड़े और तेज रफ्तार से मंच के विपरीत दिशा की ओर चल पड़े। कुछ परिचितों ने मंच पर से सम्पादक जी को जाते देखा। वे चिल्लाए 'सम्पादक जीऽऽ...।' सम्पादक जी मंच की ओर मुड़कर अपने दोनों हाथों को नमस्कार की मुद्रा में जोड़कर उपर उठाये हुए चिल्लाए–'अभी आ रहा हूँ; तबतक के लिए नमस्कार।' कहते हुए वे बहुत आगे निकल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आए और सीधे अपने कमरे पर पहुँचे। सबसे पहले उन्होंने आज के कर्मचारी सभा का-'पिपरी में कोबरा की फुंकार' शीर्षक देकर समाचार बनाया। उनके पाक्षिक समाचार पत्र निकलने का समय हो चुका था, इसलिए उन्होंने अपने समाचार पत्र में निकलने वाले सारे समाचारों को क्रमबद्ध किया और उसे लेकर तुरन्त बस स्टेशन की ओर भागे। वहाँ पर जाकर देखा तो पिपरी से वाराणसी जाने वाली बस खड़ी थी, वे तुरन्त बस कन्डक्टर के पास पहुँचे। सबसे पहले उन्होंने उसे नमस्कार किया और अपने झोले में हाथ डालकर अपने पाक्षिक की एक प्रति निकाली और चहककर बोले–"बुरा न मानिएगा, आप को ढूँढ़ते-ढूँढ़ते परेशान हो गया। कई बार बस स्टेशन आया तो मेरे आने से पहले ही आप जा चुके होते, कभी आए ही नहीं रहते थे, यह लीजिए आप अपना अखबार।" कहते हुए पाक्षिक की पुरानी प्रति सम्पादक जी ने कन्डक्टर को पकड़ा दी। कन्डक्टर भी सम्पादक को देखकर चहक उठा–"अरे वाह बहुत दिनों पर मिल रहे हैं, कहाँ थे?" उसने कहा।

"बहुत दिन कहाँ हुए? अभी तो पिछले महीने ही मिला था। क्या करूँ। अखबार का काम ही ऐसा है कि फुर्सत ही नहीं मिलती, जी चाहता है छोड़ छाड़कर चाय पकौड़ी की दुकान कर लूँ। कम से कम रोटी खा कर चैन से सो तो सकूँगा। बुरा न मानिएगा, चलिए चाय-पान हो जाय" कहकर उन्होंने कन्डक्टर का हाथ पकड़ा और उसे लिए दिए कैन्टीन में घुस गये।

सम्पादक जी का हर परिचित यह जानता था कि वे बेवक्त और बेकार किसी से नहीं मिलते, न वे सत्य बोलते हैं और न झूठ। उनकी सारी बातें समयानुकूल होती हैं, जब जैसी स्थिति वैसी बात। उनके व्यक्तित्व में ऐसा जादू था कि वे झूठ बोल रहे हैं अथवा सत्य, उस पचड़े में कोई नहीं पड़ता था। इसका कारण यह था कि सम्पादक जी के अनुभव ने उन्हें मानव मनोविज्ञान का पंडित बना दिया था। वह अपने सामने वाले को कैसे प्रसन्न किया जा सकता है, कैसे अहिंसक ढंग से डराया जा सकता है, इसे भली भाँती जानते थे। वह मिलते ही पूरे वातावरण में आनन्द की वर्षा करते और यह प्रयास करते कि सभी उपस्थित लोगों पर उसके छीटें पड़ें, कोई अपने को उपेक्षित न समझे। उनकी सफलता का सबसे बड़ा रहस्य यही था।

सम्पादक जी ने कैन्टीन में बैठते ही कैन्टीन मालिक को–"जै राम जी चाचा, बुरा न मानिएगा, आप की चाय का कोई जोड़ नहीं है। बस दो कप स्पेशल चाय भेज दीजिए" कहा। पलट कर कन्डक्टर से पूछा–'और कुछ?'

"बस-बस, और कुछ नहीं, अभी-अभी नाश्ता किया है, वह तो आप आ गए, चला आया" कन्डक्टर ने कहा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"अरे भाई नाश्ता वाश्ता तो आप लोगों को कर ही लेना चाहिए। अब यहाँ से बनारस तक जाना कोई हँसी खेल है? बुरा न मानिएगा, हम लोग तो एक दिन जाते हैं कचूमर निकल जाता है और आप लोग हैं कि...। जरा हमारे माथे पर हाथ रखिए, गरम है?" कहकर सम्पादक जी ने कन्डक्टर का हाथ अपने ललाट पर रखा। कन्डक्टर ने कहा–"हाँ कुछ गरम है।"

"बुरा न मानिएगा, बस इसीलिए सोचा कि अखबार के मैटर आप को दे दूँ। आप ने जैसे पिछली बार 'मृदु तारा प्रेस' में मेरा मैटर दिया था वैसे ही इस बार भी दे देंगे तो बड़ी कृपा होगी।" सम्पादक जी ने झोले में से समाचार के बन्डल को निकालते हुए कहा।

"इसमें कृपा की कौन सी बात है? मेरा घर है, देता चला जाऊँगा।"

"हाँ भाई आप ही लोगों की कृपा पर तो जिन्दा हूँ, नहीं तो ये पिपरी वाले? बुरा न मानिएगा, इनका बस चले तो ये हमें जिन्दा खा जायँ। इनका तो बस एक काम है कि कौन कर्मचारी घूस लेता है, किसकी कितनी ऊपरी आमदनी है? इसी की शिकायत करना। अभी कल एक सज्जन हमसे कह रहे थे कि पिपरी वाराणसी बस की इनकम डाउन हो रही है। कन्डक्टर ड्राइवर मिलकर सब पैसा खा जा रहे हैं।"

"कहने वाले साले को यह नहीं दिखाई देता कि परिवहन मंत्री महंगे दामों पर नम्बर दो का समान डीपो में सप्लाई करता रहा है? जी. एम. अच्छी बसों को भी अपने आदमियों के हाथ नीलाम करवा दे रहा है" कन्डक्टर ने गुस्से में कहा। तब तक बैरा दो कप चाय दे गया। सम्पादक जी ने एक कप चाय उठाते हुए कहा–"जब सभी इसी में लगे हैं तो क्या पिपरी वाराणसी के कन्डक्टर ड्राइवर हरिश्चन्द्र बने रहेंगे? जरा इन्हें सहेज कर रख लीजिए" सम्पादक जी ने समाचार के बन्डल को कन्डक्टर की ओर खिसकाते हुए कहा। कन्डक्टर ने उन्हें सहेज कर अपने झोले में रख लिया। सम्पादक जी जल्दी-जल्दी चाय सुड़कने लगे और कैन्टीन के बाहर झाँक, चौंककर बोले–"अरे ये डाक्टर तो यहीं मिल गए, इन्हीं से मिलने जाना था, चलो भगवान ने भेज दिया।"

"कौन डाक्टर?" कन्डक्टर ने पूछा।

"सरकारी अस्पताल के डाक्टर, बहुत अच्छे आदमी हैं, कोई काम हो तो बताइएगा" कहते हुए सम्पादक जी ने जेब से चाय के पैसे निकाल कर चाय वाले के काउन्टर पर रखा और "बुरा न मानिएगा, जरा डाक्टर साहब से मिल लूँ" कहते हुए वह बाहर निकल गए। चाय वाला मुस्कुराने लगा। कन्डक्टर ने हँस कर कहा–"बहुत अजीब आदमी है।"

"बहुत अजीब नहीं साहब, ऐसा आदमी मिलना मुश्किल है। यह कैन्टीन उन्होंने ही मुझे दिलवाई है। पैसे से भी मेरी सहायता की है। उनका पैसा लौटाने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लगा तो कहने लगे–"तुम मेरे छोटे भाई हो, मैंने अपने छोटे भाई को पैसा दिया है, कर्ज नहीं कि उसे तुम लौटा दो। पैसा लौटा कर अपनी जिम्मेदारियों से मुक्त होना चाहते हो? जब तुम्हारा यह बड़ा भाई किसी विपत्ति में पड़े तो तुम मेरी सहायता करने के बजाय यही कहोगे कि–मैने तो पैसा लौटा दिया, सहायता क्यों करूँ? इसीलिए पैसा लौटाना चाहते हो?" यह कहते-कहते चाय वाले का स्वर भर्रा गया।

उधर सम्पादक जी सीधे कमान से छूटे तीर की भाँति डाक्टर साहब के पास पहुँचे। पहुँचते ही उन्होंने अपनी जानी-पहचानी अदा से चहककर कहा–"डाक्टर साहब नमस्कार, बुरा न मानिएगा, आप से मिलने के लिए सोच ही रहा था। आप भी भगवान की तरह अन्तार्यामी हैं, भक्त ने याद किया और भगवान हाजिर। लग रहा है कहीं जा रहे हैं।"

"नहीं, मैं कहीं नहीं जा रहा हूँ। असल में मेरे गुरू जी आए हैं, उन्हीं को छोड़ने आया हूँ" कहकर डाक्टर ने अस्पताल की जीप में काला चोंगा पहने एक अधेड़ व्यक्ति की ओर संकेत किया। सम्पादक जी ने समझ लिया कि कोई वाममार्गी साधु हैं, किन्तु अनजान बनते हुए पूछा–"अच्छा! अच्छा! आप के मेडिकल कालेज के प्रोफेसर साहब हैं क्या?"

"अरे नहीं भाई, ये मेरे आध्यात्मिक गुरु बाबा सूरज राम हैं," फिर धीरे से बोले–"बहुत बड़े सिद्ध हैं। इनका एक सेवाश्रम बीजपुर में बन रहा है। करोड़ों रुपए तो बिल्डिंग में ही लग गए, अभी बन ही रहा है।"

"किसकी देख-रेख में बन रहा है?" सम्पादक जी ने पूछा।

"रिटायर्ड एस. पी. वाई. के. सिंह, मुख्यमन्त्री के फूफा के लड़के हैं, वही सब कर्ता-धर्ता हैं, बाबा के शिष्य हैं।"

"मुख्यमन्त्री के फूफा के लड़के! तब तो बाबा बड़े काम की चीज हैं।"

"मुख्यमन्त्री की बात छोड़िए, बड़े-बड़े पत्रकार, केन्द्रीय मन्त्री बाबा के आशीर्वाद से फल फूल रहे हैं, साधारण सिद्ध नहीं है।" डाक्टर ने बड़े गर्व से कहा।

अवधूतों की सिद्धियों का अभूतपूर्व प्रचार और प्रसार अनादिकाल से चला आ रहा है, जिसकी आड़ में कितने ही अवधूत वेषधारी स्वल्प सिद्ध अघोरियों ने विशिष्ट वर्ग से जुड़कर जनकल्याण का कार्य प्रारम्भ किया, जिसमें उन्हें जनसाधारण से सम्मान तथा विशिष्टों से आर्थिक लाभ मिला। जनसाधारण के श्रम और विशिष्टों के धन से इनके बड़े आश्रम बनकर तैयार हो गए तब उनके लिए 'महात्मा' शब्द छोटा पड़ने लगा, वे परमात्मा अथवा भगवान हो गए। इस दोहरे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लाभ को देखकर तमाम वाममार्गी साधु अहरौरा से सुदूर दक्षिणांचल तक अपना जाल फैलाने लगे। इनके द्वारा जनकल्याण के लिए किए जाने वाले कार्यों के कारण जनसाधारण का आकर्षण भी इनकी ओर झुका। साथ ही साथ जिस समाज में मांस और मदिरा का सेवन हेय दृष्टि से देखा जाता रहा हो किन्तु पाश्चात्य सभ्यता से प्रभावित भारतीय समाज में जिसकी लोकप्रियता दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ रही हो, उस समाज के लिए इससे अच्छा आध्यात्मिक मार्ग कोई अन्य हो ही नहीं सकता जिसमें मांस और मदिरा का सेवन धार्मिक अनुष्ठान के लिए अनिवार्य हो जाता है। फिर ऐसे वातावरण में जबकि भारत ने अपनी खोई आजादी तो पाई किन्तु नैतिकता खो दी थी जिससे अनैतिक ढंग से धनोपार्जन करने वाले नवधनिकों का एक वर्ग भारतीय समाज में एक दोगली संस्कृति के रूप में उभरा। इस संस्कृति ने सत्यनारायण की कथा विरासत में पाई तथा शराब, मांसखोरी और अय्याशी पाश्चात्य सामाजिक प्रवाह से ग्रहण की। पश्चिम की अच्छाइयों को तो नहीं किन्तु, उसकी बुराइयों को आत्मसात् करने वाला यह वर्ग धनवान होने के कारण समाज में विशिष्ट हो गया। इस वर्ग ने राजनीति से लगायत प्रशासन तक को अपनी बाहों में जकड़ लिया। अधिकतर ऐसे ही लोग बड़े मठाधीशों की शिष्य-परम्परा में अपने पूर्व संस्कारों एवं वर्तमान कुसंस्कारों के कारण पुण्य और आनन्द के छलावे में आए। दक्षिणांचल की लूट में हिस्सेदारी करने वाले तमाम ठेकेदार, इन्जीनियर, बड़े-बड़े अधिकारी जो सरकार द्वारा निर्मित उपनिवेशी कालोनियों में शान के साथ रह रहे थे, इधर लाभ और पुण्य की आशा में आकर्षित हुए। इसी आकर्षण ने डाक्टर रमन को भी प्रभावित किया था। वह अपने महा सिद्ध गुरु से सम्पादक जी का परिचय कराना चाह रहे थे, इसलिए उन्होंने कहा–"चलिए आप भी दर्शन कर लीजिए।"

सम्पादक जी ने कुछ समय तक जीप में बैठ अघोर वेशधारी बाबा को देखा, अपनी स्मृति पर जोर दिया। एकाएक वे दौड़ते हुए-से बाबा के पास पहुँचे और बाबा का चरण स्पर्श करते हुए कहा–"अरे! आप हैं, मैं तो पहचान ही नहीं पाया, बुरा न मानिएगा, आप बहुत बदल गए हैं।"

"ओऽऽ बेटा सिद्धनाथ तुम हो? यहाँ क्या कर रहे हो? तुम भी तो बहुत बदल गए हो। जब से चन्दौली छोड़ा, कभी भी नहीं आए। हर गुरुपूर्णिमा पर मैं तुम्हारा इन्तजार करता था कि तुम जरूर आओगे, लेकिन आज १५ वर्षों बाद मिल रहे हो।"

"सरकार! (औघड़ शिष्य अपने गुरु को सरकार कहता है) 'तब से थिर ना भयउ गोसाईं,' जब से आप का आश्रय छोड़ा तब से बिलबिला रहा हूँ।"

"अब कुछ साधना-वाधना करते हो कि नहीं?"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"कुछ नहीं सरकार, सब छूटछाट गया। अब आप मिल गए हैं तो बुरा न मानिएगा, फिर से शुरू करूँगा लेकिन आज आप को जाने नहीं दूँगा।"

डाक्टर साहब ने जब इन दोनों की वार्ता सुनी तो वह समझ गये कि सम्पादक जी बाबा से पूर्वपरिचित हैं। वह भी जीप के पास आ गये। डाक्टर के पास आते ही बाबा सूरज राम ने बड़ी गम्भीर आवाज में कहा–"देखो डाक्टर, यह हमारा बड़ा पुराना शिष्य है। बड़ी अच्छी साधना कर रहा था। छोटे-मोटे साधक इसके सामने कुछ नहीं हैं। हमारे पास कुछ दिन और रह गया होता तो बहुत ऊँचा सिद्ध होता। लेकिन जब मैं इससे लक्ष्मणा सिद्धि करवा रहा था, उसी में कुछ गड़बड़ी के कारण इसका मन उचट गया, बस वहीं गड़बड़ाया...।"

"रहने दीजिए सरकार, उन सब बातों को, अब आज मैं आप को छोडूँगा नहीं।" कहकर सम्पादक जी ने बाबा का बोलना बन्द किया क्योंकि वह जानते थे कि बाबा अपने सामने वाले की प्रशंसा कर के उसका मुँह बन्द करते हैं, साथ ही साथ उसकी प्रशंसा पर अपनी प्रशस्ति का झंडा बड़ी होशियारी से फहराते चलते हैं।

"तुम बहुत हठी हो। अच्छा डाक्टर गाड़ी घुमवा दो आज भर और सिद्ध नाथ के यहाँ रह जाऊँ, नहीं तो यह जान नहीं छोड़ेगा।"

"सरकार, आप के हुक्म की देरी है, गाड़ी तो घूमेगी ही, फिर अब तो डाक्टर साहब हमारे गुरुभाई हो गए" कहकर सम्पादक जी हँसे। सम्पादक सिद्धनाथ को बाबा ने अपनी बगल में बिठाया। जीप के ड्राइबर को पीछे कर के डाक्टर ने स्वयं स्टेयरिंग सम्भाली और गाड़ी मुड़ कर चल पड़ी।

"हाँ तो क्या कर रहे हो?" बाबा ने सिद्धनाथ से पूछा।

"कुछ नहीं सरकार, एक छोटा-सा अखबार निकालता हूँ, किसी तरह दाल रोटी चल रही है।"

"अखबार निकालते हो? देखो डाक्टर, जिस आश्रम को यहाँ खोला जाना है, उसमें एक छापाखना भी खुलेगा। उसकी देख रेख सिद्धनाथ करेगा और हाँ जब तक इसकी व्यवस्था नहीं हो जाती तुम इनके अखबार की सहायता की व्यवस्था करो। हमारा बहुत पुराना शिष्य है" बाबा ने डाक्टर की ओर देखकर कहा।

"बुरा न मानिएगा सरकार, डाक्टर साहब तो हमारी सहायता करते ही हैं, बस अब आप के आशीर्वाद की जरूरत है।"

"हमारा आशीर्वाद तो तुम्हारे साथ हमेशा है सिद्धनाथ।"

"बुरा न मानिएगा सरकार, आप अन्तर्यामी हैं। आप ही की प्रेरणा से तो डाक्टर साहब अपने गुरुभाई की सहायता करते रहे। क्या मैं इनसे कहने गया था मैं आप का गुरुभाई हूँ?"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"सिद्धनाथ, तुम तो जानते हो कि मैं अपनी अघोर अवस्था में होकर सारे शिष्यों को प्रेरणा देता हूँ कि वे अपने गुरु-भाइयों की सहायता करें।"

"आप की शक्ति को हमसे अधिक कौन जानेगा सरकार? बुरा न मानिएगा, अगर हुक्म हो तो डाक्टर साहब से दो बात कर लूँ?" सम्पादक सिद्धनाथ ने कहा।

"हाँ-हाँ कर लो, कर लो," बाबा ने सहमति जताई। डाक्टर ने उत्सुकता से सिद्धनाथ की ओर देखा।

"आज तो दरोगा की खटिया खड़ी हो गई।" डाक्टर की उत्सुकता बढ़ाई।

"कैसे?" डाक्टर ने पूछा, तब सिद्धनाथ ने ब्यौरेवार कर्मचारियों की मीटिंग, उसमें हुए भाषण, दरोगा के खिलाफ पारित प्रस्ताव आदि के विषय में बताया। साथ ही साथ यह भी बताया कि–"मैंने इस समाचार को खूब उछालकर अपने अखबार में निकालने के लिए भेज दिया है" कहकर उन्होंने डाक्टर के चेहरे की ओर देखा। चेहरे पर प्रसन्नता देखकर फिर कहा–"बस अब तुरन्त कुछ पैसों का जुगाड़ करना है, बुरा न मानिएगा, अखबार लाकर डी.एम., एस.पी., मुख्यमन्त्री सब के यहाँ एक-एक प्रति भेज दूँगा। देखें बच्चू कैसे बचते हैं? बुरा न मानिएगा सरकार, बड़ा हरामी दरोगा है। डाक्टर साहब को बहुत बदनाम करना चाहता है। वह तो आपकी डाक्टर साहब के ऊपर छाया है कि वह डाक्टर का कुछ बिगाड़ नहीं सका" सिद्धनाथ ने बाबा की ओर मुखातिब होकर मक्खन लगाया।

"हमारे चेलों का कोई क्या बिगाड़ सकता है? सब माँ की कृपा है। कर दूँगा तान्त्रिक क्रिया, मर जाएगा साला, फट जाएगी माँ...। जरा इसे भी समझा देना।"

"समझा देंगे सरकार, लेकिन एक और हरामी पत्रकार जफरूल यहाँ रहता है। वह दरोगा का आदमी है। अगर उसने हमारे अखबार आने से पहले दरोगा के फेबर में अखबार में निकलवा दिया तो, हमारा समाचार कमजोर पड़ जाएगा" सिद्धनाथ ने बाबा की ओर देखकर कहा। बाबा और सिद्धनाथ पुराने गुरु-चेले थे इसलिए बाबा को समझते देर नहीं लगी कि सिद्धनाथ क्या चाहता है। "डाक्टर अभी पैसे की व्यवस्था कर सिद्धनाथ को दे दो। यह तुरन्त जफरुल के समाचार से पहले अपना अखबार मंगा कर सब जगह भेज दे और हाँ, देखो यहाँ का एस. पी. कौन है?"

"आर. पी. शर्मा हैं" डाक्टर ने सूचित किया।

"कौन आर.पी. शर्मा? वह गोरखपुर वाले राधा प्रसाद शर्मा तो नहीं? बाबा ने अपनी स्मृतियों पर जोर डालते हुए पूछा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"हाँ-हाँ गोरखपुर के ही रहने वाले हैं, राधा प्रसाद शर्मा नाम है" सिद्धनाथ ने चहककर कहा।

"तब तो एक मिनट का काम है। वह तो हमारा गुरु-भाई है। गुरु आश्रम पर कई बार मुझसे मिल चुका है। मुझे खूब अच्छी तरह से जानता है। जाकर दरोगा को समझा देना कि औघड़ बच्चों से भिड़ने की कोशिश ने करे, नहीं तो एक मिनट में बोरिया बिस्तर बँधवा दूँगा, समझा देना।"

सिद्धनाथ बाबा की बाबागिरी के प्रारम्भिक काल के शिष्य थे, इसलिए बाबा के "समझा देना" को बखूबी समझ रहे थे। कुछ रुक कर उन्होंने कहा–"बुरा न मानिएगा सरकार, आप चाहें और न समझे, यह असम्भव है। लेकिन सरकार, आज आप हमारे ही यहाँ रुकेंगे न?"

"देखो भाई तुम दोनों आपस में समझ लो। जहाँ कहोगे वहीं रुक जाऊँगा। औघड़ के लिए जैसे मकान वैसे मसान।

डाक्टर से सिद्धनाथ जी ने बाबा के रहने के विषय में कुछ देर तक वार्ता कर तय किया कि–'दिन भर बाबा डाक्टर के यहाँ रहेंगे। शाम को खाना पीना करके रात्रि शयन मेरे यहाँ करेंगे" यह फैसला सिद्धनाथ ने बाबा जी को सुना दिया।

"लेकिन बेटा, तुम भी मेरे ही साथ खाना खाओगे, क्यों डाक्टर ठीक रहेगा न?"

"हाँ सरकार, बिल्कुल ठीक रहेगा" डाक्टर ने नम्रता प्रदर्शित की।

"बस बस, रुकिए, हमें यहीं उतार दीजिए। आप सरकार को लेकर बंगले पर चलिए मैं अभी आ रहा हूँ" सिद्धनाथ ने दूर पर दिखाई पड़ रहे थाने को देखकर कहा।

"उतार दो, उतार दो, कोई काम होगा। लेकिन बेटा जल्दी आना" बाबा ने सिद्धनाथ के उतरने का कारण समझ लिया था। अभी दक्षिणांचल में पाँव जमाने के लिए उन्हें सिद्धनाथ जैसे शिष्यों की ही अधिक जरूरत थी जो उनका प्रचार माध्यम बन सकें।

गाड़ी रुकी, फिर सिद्धनाथ अपने लक्ष्य पर और गाड़ी अपने गन्तव्य पर चली गई। सिद्धनाथ जैसे ही थाने पर पहुँचे, राय दरोगा बैठे मिल गए। उन्होंने चहककर–"नमस्कार, बुरा न मानिएगा, मेरे मन ने कहा था कि आप अवश्य मिलेंगे, छोटे साहब कहाँ हैं?" एक साँस में कहा और पास पड़ी कुर्सी पर बैठ गए।

"अपने क्वार्टर पर हैं, अभी बुलवा देता हूँ" राय ने अपनी जान छुड़ाने के लिए कहा।

"अरे नहीं साहब, जब आप हैं तो... वैसे छोटे साहब भी बहुत अच्छे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आदमी हैं। बुरा न मानिएगा, यह सब आप के व्यक्तित्व का कमाल है। दूसरे थानों पर तो बड़े दरोगा छोटे दरोगा एक दूसरे की टाँग ही खींचते रहते हैं, लेकिन यहाँ बात ही दूसरी है। आप का सारा स्टाफ आप से मोहब्बत करता है, आप के खिलाफ कोई जा नहीं सकता।''

''देखिए सम्पादक जी, अगर आप मुहब्बत देंगे तो मुहब्बत पाएँगे भी, यह मेरा नियम है'' दरोगा ने अपनी तारीफ से प्रसन्न होकर कहा।

''हाँ हाँ क्यों नहीं। अब आप यही देखिए कि आप मुझे कितना मानते हैं! क्या मैं इसे नहीं जानता? बुरा न मानिएगा, इसीलिए आपके खिलाफ...वैसे आज के कर्मचारी मीटिंग का सारा समाचार तो आप को मिल ही गया होगा?''

''हाँ मिला'' दरोगा ने अन्यमनस्क होकर कहा।

''और यह भी समाचार मिला होगा कि किस तरह पाँच छः गुन्डे टाइप के कर्मचारियों ने मुझे घेरकर अपने मन का आप के खिलाफ समाचार लिखवाया। मैं नहीं लिख रहा था तो मुझे मारने-पीटने की धमकी देने लगे और कहा कि–तुम्हारा कार्यालय फूँक देंगे।''

''क्योंऽऽ? मुझे यह खबर तो नहीं लगी। यह खबर जरूर मिली कि आप उस सभा में दिखाई पड़े लेकिन सभा समाप्त होते ही कर्मचारी नेताओं के बुलाने पर भी नहीं रुके और चले गए।''

''मैं क्यों रुकता? साहब, बुरा न मानिएगा, मुझे आप के खिलाफ समाचार लिखना नहीं था इसलिए भागा। लेकिन वह सब भी कम हरामी नहीं थे, जैसे ही अपने अखबार का सारा मैटर तैयार करके बनारस जाने लगा कि जाकर घेर लिया।''

''और आपसे मेरे खिलाफ समाचार लिखवाया, तो ठीक है, उसे फाड़कर फेंक दीजिए।''

''फाड़कर फेंकने की नौबत आती तब तो? वह सब हमारा सारा मैटर यह कहकर ले लिए कि आप रहने दीजिए, आप जिस प्रेस में छपवाते हैं, हम जाकर छपवा लेंगे और छपवाई भी दे देंगे।''

दरोगा को सिद्धनाथ की गुण्डे वाली बात पर विश्वास नहीं हुआ। उसने अविश्वासी दृष्टि से उनकी ओर देखा और मुस्करा कर कहा–''तब आप ही बताएँ कि क्या किया जाय?''

''छपने दीजिए, हम ऐसा करेंगे कि पूरे अखबार का बन्डल ही आप के यहाँ लाकर दे देंगे, एक भी वितरित नहीं होने देंगे। बुरा न मानिएगा, आप जो उचित समझिएगा उन अखबारों का करिएगा, पैसा मुझे दे दीजिएगा'' कहकर सिद्धनाथ हँसे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"ठीक है, जो आप कहेंगे दे दूँगा" दरोगा ने अनमने भाव से कहा।

सिद्धनाथ ने अगल-बगल गर्दन घुमाकर खोजी दृष्टि से देखा और अपनी कुर्सी दरोगा के पास खिसका कर धीरे से कहा–"साहब, आप के एस.पी. साहब शर्मा जी" फिर गर्दन घुमाकर अगल-बगल देखकर–"बुरा न मानिएगा, मेरे गुरु जी के परम भक्त हैं। हमारे गुरु जी जो कहेंगे वह वही करेंगे। मैं पचासों काम करवा चुका हूँ। गुरु जी बहुत बड़े सिद्ध हैं, मनचाहा काम करा सकते हैं।"

दरोगा की अविश्वासी निगाहें एक बार फिर सिद्धनाथ पर पड़ी। उसने पूछा–"आप के गुरु जी मिलेंगे कहाँ?"

"यही तो आपको बताने भागा चला आ रहा हूँ। मैं अपने गुरु जी से आज ही आप की मुलाकात करवा दूँगा। भगवान की कृपा है कि वह आए हुए हैं लेकिन साहब, बुरा न मानिएगा, आप किसी से कहिएगा नहीं, न तो गुरु जी से ही कि मैंने आप को बुलाया है" लगभग गिड़गिड़ाते हुए सिद्धनाथ ने कहा।

दरोगा को सिद्धनाथ की बातों पर पूरा विश्वास तो नहीं हो रहा था लेकिन सत्य परखने की जैसी इच्छा प्रत्येक व्यक्ति में होती है, उसी लालसा के कारण उसने पूछा–"फिर मुलाकात कैसे कराएंगे?"

"आप ऐसा करिए, आज रात करीब एक बजे मेरे कार्यालय पर मुझसे मिलने के बहाने चले आइए। वहीं पर वह रहेंगे, आप को दर्शन करवा दूँगा।"

"रात एक बजे, आप के गुरु जी जागते रहेंगे?" दरोगा ने प्रश्नवाचक दृष्टि में आश्चर्य प्रगट किया।

"अरे साहब आप आइए तो, यह अघोरी सिद्ध हैं, निद्राजयी। सिद्धि से जिसकी आँखें खुल गईं हैं उसे जगत की निद्रा क्या व्यापेगी?" सिद्धनाथ ने भाव विह्वल होकर कहा।

दरोगा जी के मस्तिष्क पर सत्य कथाओं में पढ़े और परम्परा से सुनी अघोरी सिद्धों की कहानियों का एक संस्कार तो था ही, उसका हल्का असर हुआ। उन्होंने कहा–"अवश्य आऊँगा।"

"अच्छा तो अब मैं चलूँ...अरे हाँ, बुरा न मानिएगा, मेरे कवि सम्मेलन वाली रसीद का क्या हुआ?"

"अभी तो कुछ नहीं हुआ। आप उसकी चिन्ता मत करिए, मैं आप को पाँच हजार रुपए रसीद काटकर दे दूँगा।"

"वह तो मैं जानता हूँ कि आप डाक्टर नहीं हैं, दरोगा हैं। अब यही देखिए आप ऐसे कह रहे हैं और मैंने जब डाक्टर से कहा तो वह कहने लगे–अपने स्टाफ में कुछ कटवा दूँगा।" सिद्धनाथ ने नाक के बल बोलते हुए डाक्टर की नकल उतारी। दरोगा राय हँसने लगे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"अच्छा तो अब आज्ञा दीजिए, नहीं तो अंग्रेजी शराब की दुकान भी बन्द हो जाएगी, पैसे की भी व्यवस्था करनी है।"

"आज अंग्रेजी पिएंगे क्या?" दरोगा ने मुस्करा कर कहा।

"नहीं साहब मेरी इतनी बड़ी औकात कहाँ? यह तो गुरु जी के लिए ले जा रहा हूँ। मेरी श्रद्धा है इसलिए नहीं तो वह तो इतने बड़े सिद्ध हैं कि पानी को शराब बना दें। कई बार हम शिष्यों को बना कर पिला चुके हैं। बुरा न मानिएगा, जैसे हम आप पानी पीते हैं, वैसे ही ये लोग मदिरा पीते हैं। क्या मजाल कि नशा हो जाय।"

दरोगा प्रभावित हो चुका था। उसने अपनी जेब से सौ रुपए का नोट निकाला और सिद्धनाथ की ओर बढ़ा दिया। सिद्धनाथ ने नोट ले लिया और कुर्सी से उठते हुए कहा–"वाह साहब, बुरा न मानिएगा, आप मुझे बहुत मानते हैं, एक क्षण में मेरी मुसीबत हल कर दी। अच्छा तो चलूँ, नमस्कार, आना मत भूलिएगा" कहते हुए वह थाने के परिसर से बाहर हो गए।

सिद्धनाथ के आँखों से ओझल होते ही दरोगा का सम्मोहन टूटा। उसे अपने सौ रुपए चले जाने का बहुत अफसोस हुआ। उसने अपने मन को समझाया कि चलो ठीक है, औघड़ों के विषय में बहुत सुनता रहा आज देखूँगा। अगर सचमुच जैसा सुना है वैसा ही होगा तो ठीक, नहीं तो साले को डन्डा मार-मार कर बन्द कर दूँगा। सम्पादक भोसड़ी वाले लिखते रहें। जहाँ तक पैसे का प्रश्न है, उसके कवि-सम्मेलन वाले चन्दे में से काट लूँगा।"

सम्पादक जी यह जानते थे कि डाक्टर के यहाँ बाबा के लिए शराब की कमी नहीं होगी, फिर भी अपनी अटूट श्रद्धा प्रगट करने के लिए रम का अद्धा अपने झोले में डालकर डाक्टर साहब के बँगले पर पहुँचे। रात्रि के नौ बज रहे थे। सिद्धनाथ ने डाक्टर के ड्राइंगरूम का कालबेल बजाया। चौकीदार ने दरवाजा खोला। ड्राइंगरूम विशिष्ट लोगों से भरा हुआ था। सरकार एक चौकी पर पालथी मार कर ध्यानमुद्रा में आसीन थे। उनका घुटा हुआ छोट-सा सिर, भव्य ललाट पर भभूत, पचास पचपन की आयु में भी भरा लम्बा गौरांग बदन ट्यूब लाइट के दूधिया प्रकाश में अति मनोहर लग रहा था। उनकी दाहिनी ओर अंग्रेजी शराब की बोतल, बगल में शीशे के गिलास करीने से रखे हुए थे। नीचे जमीन पर बैठे लोग सन्न मारे एक टक उनके मुँह की ओर देख रहे थे। सम्पादक सिद्धनाथ ने जैसे ही कमरे में प्रवेश किया, बाबा ने अपनी बड़ी अड़हुल की तरह लाल आँखों को खोलकर उन्हें देखा। सम्पादक जी ने आगे बढ़ बाबा के चरणों पर अपना माथा टेक दिया। कुछ देर एक ही मुद्रा में अपना सिर टेके रहे। बाबा ने सिद्धनाथ के सिर पर, आँखें बन्द कर अपना हाथ फेरना शुरू किया और उनकी आँखों से

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

झरझर आँसू गिरने लगे। बैठे लोग अवाक् बाबा के इस अद्भुत वात्सल्य को अपलक निहारते रहे। कुछ देर वैसे ही हाथ फेरते, गिरते आँसुओं के साथ बाबा बड़बड़ाने लगे–"कहाँ चले गए थे सिद्धनाथ? कहाँ चले गए थे? माँ पहचान ले वही है नऽ? अब यह आ गया कहीं नहीं जाएगा। अरे साली ठगिनी तूँ भी पूरी ठगिनी है। खुद मेले में बेटे को खो देती है और हमसे ढुंढ़वाती है? हमें परेशान करती है। ले तेरा बेटा तुझे दे रहा हूँ। सम्भाल इसे, अब मुझे मत परेशान करना। फिर बाबा ने आँख खोलकर छत की ओर एक टक देखना शुरू किया जैसे किसी को प्रत्यक्ष देख रहे हो। कुछ क्षण के बाद उत्तेजित स्वर में बोले–"हँसती है, खी-खी करके हँसती है, अब बहुत खुश हो गई है। अब चाहिए तुझे...क्या? मानव रक्त! बोल किसका रक्त लेगी? कहकर बाबा ने बैठे हुए लोगों में से एक-एक पर नजर डालनी शुरू की। बाबा की नजर जिस पर पड़ती वह मारे डर के काँप उठता कि कहीं हमें ही रक्त न देना पड़े। लेकिन बाबा एक व्यक्ति को देख फिर छत की ओर ताक कर कहते–"इंसका नहीं?" फिर दूसरे को देखकर कहते–"इसका नहीं?" इसी प्रकार उन्होंने बारी-बारी से सब को देखा और सबके लिए "इसका नहीं" कहकर झल्ला उठे–"तब किसका चाहिए बोल? मुझे परेशान करती है" उन्होंने गरज कर कहा और छत की ओर देखा फिर खिलखिलाकर हँस पड़े–"अच्छा तो कारण चाहिए, वाह माँ तुझे भी मुझ को ही परेशान करने में मजा आता है। आखिर तूँ माँ है। किससे खेलेगी? अपने बेटे से ही तो खेलेगी नऽ! अच्छा ले" कहकर बाबा ने शराब की बोतल उठाई और गिलास में डाल दिया और गिलास को उठाकर आकाश की ओर ऐसे बढ़ाया जैसे किसी को पिला रहे हों। "ले, ले, पीले और पीले" कहते हुए थोड़ी देर तक वह गिलास छत की ओर उठाए रहे। कुछ देर बाद उन्होंने हाथ नीचे किया और बड़ी श्रद्धा से उसमें से एक घूँट लेकर शेष सिद्धनाथ की ओर बढ़ाकर बोले–"ले माँ का प्रसाद है, कभी-कभी ही मिलता है।"

सिद्धनाथ ने बड़ी विनम्रता से उस प्रसाद को लिया और बाबा के चरणों के पास नीचे बैठ एक ही घूँट में उसे पी लिया। पीने के बाद गिलास को बोतल की बगल में रख दिया और बोले–"सरकार, बहुत दिनों बाद आप का प्रसाद मिला है। एक घूँट आप के हाथ का दिया कारण इतना तेज चढ़ रहा है कि मुझे सारी दुनियाँ घूमती नजर आ रही है।

"माँ का जूठा प्रसाद तुझे दिया है। तेरे पर माँ की कृपा है नहीं तो दूसरों को देता तो पगला हो जाता। फिर हँस कर कहा–"बैठे रहो कुछ नहीं होगा।"

खून देने की विपत्ति से छुटकारा पाकर और बाबा को प्रसन्न मुद्रा में देख बैठे लोगों में हर्ष का संचार हो गया। फिर भी एक दहशत का वातावरण बना हुआ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

था। ठीकेदार अतिबल सिंह ने सहमते हुए कहा–"सरकार, अभी जो आप मठ के लिए कह रहे थे...।"

"उसमें मेरा क्या कहना है? मुझको मठ-मठिया से क्या लेना देना है? वह तो मैने एक सुझाव दिया था कि अगर कोई एक स्थान बन जाएगा तो वहाँ पर आप सभी लोग महीने में एक बार इकट्ठे होंगे, भजन भाव होगा। कुछ खाने पीने की व्यवस्था रहेगी तो साधु सन्त आते-जाते वहाँ रुका करेंगे तो आशिर्वाद ही दे कर जाएँगे। कुछ और व्यवस्था करेंगे तो गरीबों के लिए नेत्र शिविर में मुफ्त खिचड़ी दी जाएगी। दीनों की सेवा ही दीनानाथ की सेवा है। क्यों इन्जीनियर?" कहकर बाबा ने सहगल साहब की ओर देखा।

"आप का आशीर्वाद लेना आवश्यक है, नहीं तो आपकी कृपा से हम लोग तो इसे कर ही लेंगे" सहगल साहब ने विनम्रता दर्शाई।

"भाई करना तुम लोगों को है, मेरे पास आशीर्वाद के सिवा और है क्या?"

"बस सरकार, आप का आशीर्वाद ही चाहिए" कहते हुए स्थानीय नेता गुप्ता जी ने जेब से कलम निकाली और एक रजिस्टर पर मीटिंग की कार्यवाही पूरी कर दी। बाबा की अध्यक्षता में संस्था की स्थापना हुई, जिसमें सर्व श्री अतिबल सिंह अध्यक्ष, डाक्टर रमन कोषाध्यक्ष, गुप्ता जी सचिव तथा सहगल साहब मुख्य सचेतक बनाए गए। आश्रम के लिए भूमि के चुनाव की जिम्मेदारी सहगल साहब तथा सिद्धनाथ को दी गई। प्रश्न उठा कि तत्काल कार्य को प्रारम्भिक रूप देने के लिए उपस्थित सभी लोग यथासम्भव आर्थिक सहायता करें। जिन लोगों की जेब में पैसे थे उन्होंने दे दिये, जिनके पास नहीं थे उन्होंने सुबह भेजवाने का वादा किया। कुल पाँच हजार एक सौ रुपए कोष में आ गए।

रात्रि के ग्यारह बज रहे थे। लोग अपने-अपने निवास स्थानों पर जाने के लिए कसमसा रहे थे। बाबा ने इस बात को समझा और कहा–"अच्छा अब आप लोग चलिए, लेकिन एक बात समझ लीजिए कि यहाँ के रुपए-पैसे से मेरा कोई मतलब नहीं रहेगा। बीजपुर में बन रहा सेवाश्रम भी आप ही लोगों का है। उसके लिए सीमेंट छड़ जो कुछ हो सके, करिएगा" बाबा ने सहगल और अतिबल सिंह की ओर देखकर कहा।

"सब हो जाएगा सरकार, बस आप की कृपा बनी रहे" कहते हुए अतिबल सिंह उठे। उनके साथ सभी लोगों ने उठकर बाबा को बारी-बारी से साष्टांग प्रणाम किया और अपने-अपने निवास स्थान को चले गए। चपरासी ने ड्राइंगरूम का दरवाजा बन्द किया।

"भोग लगवाएँ सरकार?" डाक्टर ने पूछा। बाबा की स्वीकारोक्ति मिली

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तब सिद्धनाथ ने अपने झोले से निकालकर रम का अद्धा सरकार के श्री चरणों में रख दिया। सरकार मुस्कराए और इशारे से गिलास में ढालने को कहा। तली हुई मछली के चिखने के साथ डाक्टर रमन, सरकार और सिद्धनाथ बैठ गए। दुधुआ के तीन-चार दौर चले, तबतक मांस का महाभोग भी आ गया। सरकार के प्रसाद ग्रहण कर चुकने पर सिद्धनाथ और डाक्टर रमन ने भी प्रसाद पाया। हाथ मुँह धोकर सरकार ने गोल्ड फ्लेक सिगरेट सुलगाई और आराम कुर्सी पर बैठ कश लेते हुए अपनी आँखें मूद लीं। सम्पादक जी ने धीमे से कहा–''सरकार, मेरे यहाँ नहीं चलेंगे?''

''चलूँगा, गाड़ी लगवाओ'' सरकार ने आँख बन्द किए हुए कहा।

ड्राइवर ने आदेश मिलते ही तुरन्त गेट पर गाड़ी लगा दी, जैसे वह इन्तजार ही कर रहा था कि बाबा कब चलें और उन्हें पहुँचा कर छुट्टी पाऊँ। सरकार और सिद्धनाथ गाड़ी में बैठ गए। डाक्टर रमन भी विदा देने गाड़ी तक आए तो ''अब तुम जाओ आराम करो'' सरकार ने आदेश दिया। डाक्टर रमन ने झुककर बाबा का चरण-स्पर्श किया और गाड़ी चल पड़ी।

कुछ ही देर में सिद्धनाथ अपने कार्यालय पर पहुँच गए। उन्होंने जीप से उतर कर कार्यालय का ताला खोला और अन्धेरे में टटोल कर बिजली जलाई तब सरकार जीप से उतर कर कार्यालय के अन्दर आए। ड्राइवर गाड़ी लेकर जाने लगा तो ''सुबह छः बजे आ जाना'' सिद्धनाथ जी ने उससे कहा। ड्राइवर ''अच्छा'' कहकर चला गया।

सिद्धनाथ जी ने जल्दी-जल्दी जमीन पर दो बिस्तरों को बिछाया और एक बिस्तर की ओर इशारा करते हुए कहा–''आप इस पर सोइए।''

सरकार बिस्तर पर चादर ओढ़कर लेट गए तो सिद्धनाथ जी ने धीरे से कहा–''आज दरोगा को समझा दिया है, वह आता ही होगा।'' कहकर उन्होंने दरोगा से हुई अपनी वार्ता को विस्तार से बताया। सरकार मुस्कराए और कहा–''ठीक है, आने दो।'' सरकार के ऊपर शराब का पूरा नशा चढ़ चुका था, उनकी जुबान लड़खड़ा रही थी।

''हाँ सरकार, आज कुछ ऐसा करिए कि वह जीवन भर के लिए चेला बन जाए, बड़ा लुटेरू है'' सिद्धनाथ जी ने दरोगा की आर्थिक स्थिति की ओर इशारा किया।

सिद्धनाथ जी इन बाबा के साथ, आज से दस वर्ष पूर्व, सिद्धि प्राप्त करने के लिए पाँच वर्षों तक रह चुके थे। तब बाबा चन्दौली बाजार में एक किनारे छोटी सी झोपड़ी लगाकर रहते थे। इनके प्रति लोगों के आकर्षण की वह प्रारम्भिक अवस्था थी। सिद्धनाथ भी अपनी प्रेमिका द्वारा ठुकराए जाने पर इनकी शरण में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उसी समय पहुँचे थे। पाँच वर्षों तक साथ रहने से वे सरकार की वास्तविकता से पूर्ण परिचित थे। वह जानते थे कि सरकार के पास किसी मनुष्य के ऊपर बीती घटनाओं को सटीक बता देने के सिवाय और कोई सिद्धि नहीं थी। उसी की तरफ उनका इशारा था। सरकार ने इस संकेत को समझ लिया और–"देखते रहो मैं क्या करता हूँ" कहते हुए सिद्धनाथ जी की ओर तकिए के सहारे मुखातिब हो अधलेटी अवस्था में हो गए। पुरानी बातों का सिलसिला शुरू हुआ तो सिद्धनाथ जी ने पूछा–"जो सोना आप बना रहे थे, वह बना कि नहीं?"

"हाँ बना, कसौटी पर भी सही आया लेकिन आग में डालते ही काला पड़ गया। वही जो मैं तुम से पीले फूल वाले धतूरे की बात कर रहा था, अगर वह मिल गया होता तो एकदम सच्चा सोना बन जाता।"

"आसाम की पहाड़ियों में यह धतूरा मिलता है, आपने बताया था और जाकर लाने वाले थे, वहाँ नहीं गए क्या?

"कहाँ जा पाया, तबतक मठ के जमीन का ऐसा झगड़ा फंसा कि उसी में उलझ गया, फिर बुढ़ौती है, लम्बा सफर भी तो नहीं हो पाता। हमको सोने से क्या लेना देना है, वह तो सोच रहा था कि बन जाता तो तुम लोगों को दे देता" कहकर बाबा ने निःश्वास छोड़ा।

सोने से मतलब न रखने वाले सरकार की यह एक खूबसूरत चालाकी थी कि वह सर्वप्रथम अपने नवदीक्षित शिष्य को सिद्धियों का लालच देते। उसके लिए शिष्य से वर्षों तैयारी कराते। साथ ही साथ अपने सोना, चाँदी बनाने की कला का भी बखान करते रहते। सालों सिद्धियों के चक्कर में पड़ा शिष्य जब यह देखता कि सिद्धियों का मिलना धोखा है तो वह आध्यात्मिक ज्ञान के लिए अपने व्यर्थ गए समय को सोना प्राप्त करके ही सार्थक करने के प्रयास में लग जाता। लम्बे समय तक साथ रहने से मुफ्त मांस, मदिरा के आदती हो कर अधिकतर शिष्य सरकार की जै-जैकार करने और उनकी सिद्धियों के झूठे प्रचार में लगे रहने को विवश हो जाते। सिद्धनाथ जी खोजी किस्म के आदमी थे। उन्हें जब कुछ नहीं मिला तो वह एक रात चुपचाप मठ से खिसक गए। आज बहुत दिनों के बाद सरकार मिले थे, पुरानी बातों का सिलसिला नहीं टूट रहा था। "याद है आप को, जब हम आप लक्ष्मी मास्टर, अवधेश अहरौरा के किले में सावन की आधी रात में खजाने की खुदाई करने गए थे। रात भर खुदाई हुई पर कुछ नहीं निकला" सिद्धनाथ जी ने बीती घटना की याद दिलाई।

"मैं तो मना कर रहा था कि वहाँ कुछ नहीं है लेकिन लक्ष्मिया मस्टरवा ने जी को लगा दिया, नहीं सरकार चलिए, नहीं सरकार चलिए, मैंने भी कहा चल साले औघड़ का क्या बिगड़ता है? असल में खजाना तिलस्म से बंधा हुआ एक-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दम नीचे तहखाने में है। बगल में जो कूआँ है, उसी में से उसमें जाने का रास्ता है।''

''उसका बीजक मिलता तो काम बनता'' सिद्धनाथ जी ने चुटकी ली। सरकार ने इसे नहीं समझा और बोले-''जिसको बीजक मिल गया वह खोद कर ले गया। सीउर की पहाड़ी पर जिस धन को मैं बताता था उसे पिछले साल बीजक वाले खोद कर ले गए।''

''नहीं सरकार, जैसे हम आप किले में खुदाई करके चले आए, कुछ नहीं मिला, वैसे ही किसी ने खुदाई की होगी पर कुछ मिला नहीं होगा।''

''मिला क्यों नहीं? बहुत माया सब ले गए, क्योंकि सुबह जब चरवाहे वहाँ गए तो उन्हें गड्ढे के पास सोने, चाँदी के सिक्के और दो चार हीरे गिरे मिले।''

''आपको कैसे मालूम कि चरवाहों ने पाया था? किसने देखा था?''

''अब लो, यह सब चीज कोई दिखाता है? लेकिन बात छिपती नहीं।'' सिद्धनाथ जी ने सोचा कि इनसे तार्किक बहस करना व्यर्थ है, इसलिए वार्ता का क्रम दूसरी ओर मोड़ने के लिए उन्होंने कहा-''श्रीनाथ साव के घर का गड़ा खजाना अभी निकला कि नहीं?''

''उसका खजाना ऐसे निकलेगा? इसकी बनियाँ की माँ का... चोदूँ! है तो बड़ा आदमी लेकिन बहुत कंजूस है, खुद मेरे पास नहीं आता। एक दिन मस्टरवा को हमारे पास भेजा था। मैंने मठ पर से ही खजाने का पता बता दिया और यह भी बता दिया कि खजाना जीवधारी हो चुका है। जैसे जीव चलते-फिरते हैं वैसे ही यह खजाना भी डोलता रहता है। उस पर एक चमार और एक ब्राह्मण की बलि देकर बाँधा गया है। मैंने मस्टरवा से कहा कि आधा खजाना मठ के लिए दें तो निकाल दूँगा। मस्टरवा ने सउआ से पूछा और आकर मुझ से कहा-'कि साव जी आधा खजाना देने पर राजी हैं, आप निकाल दीजिए।' मैंने जाँचने के लिए कहा कि एक बोतल अंग्रेजी दुधुआ और पाँच किलो अपने तालाब की मछली साव जी मठ पर भेज दें, मैं माँ का पूजन कर तब खजाने पर हाथ लगाऊँगा। सरवा मस्टरवा गया तो फिर लौटा ही नहीं। मैंने सोचा कि जाओ साले जान छूटी इन लालचियों से। औघड़ को अजाने-खजाने से क्या मतलब?''

''लेकिन आपने तो उसका एक तहखाना खोलवाया था।'' सिद्धनाथ जी ने प्रश्नवाचक दृष्टि सरकार पर डाली।

''तुमको कैसे मालूम?'' सरकार ने भौचक्का होकर पूछा।

''अभी पिछले साल शिवशंकर रापटगंज में मिले थे। बुरा न मानिएगा सरकार, आप के शिष्य शिवशंकर अच्छे आदमी हैं। उन्हें चकिया से लेकर पूरे दक्षिणांचल के चप्पे-चप्पे के मन्दिरों, मूर्तियों का हाल मालूम है। कहाँ कौन-सी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मूर्ति कितनी पुरानी थी और चोरी चली गई, वह सब जानते हैं। उनके शिष्य बताते हैं कि वह सशरीर उन जगहों पर नहीं गए हैं बल्कि ध्यान में देखकर बताते हैं'' सिद्धनाथ जी ने जानबूझकर सरकार को कुरेदा।

''तुम्हें नहीं न मालूम है कि वह कैसे उन मन्दिरों, मूर्तियों के विषय में जानता है। हमारे शिष्य होने से पहले यह और अवधेश मूर्तियों की तस्करी और हिरोइन का धन्धा करते थे। इस दक्षिणांचल में बहुत पुरानी-पुरानी मूर्तियाँ थीं, वे सब काफी उठा ले गए। जब पुलिस पीछे पड़ी तो दोनो भागकर हमारी शरण में आ गए। हमारी बड़ी सेवा की। जानते ही हो, औघड़ का मन जब मस्त होता है तो वह सब कुछ दे देता है। बस एक दिन मस्ती में आया और दोनों को दीक्षित कर दिया।''

''लेकिन वे लोग तो अपने को आपके गुरू का शिष्य बताते हैं'' सिद्धनाथ जी ने बाबा को उकसाया।

''बड़े दरबार का नाम लेकर बड़ी ठगहरी करना चाहते हैं। शिवशंकर ने तो ट्रैक्टर, खेत बारी और भट्ठा बना लिया। सब कारबार उनका बड़ा लड़का देखता है। वह तो अवैध काम छोड़कर अघोरी बाने में टहल रहे हैं, ठीक ही है, लेकिन अवधेसवा तो अभी अघोरी बाने में वही करता है। उसने तो गुण्डई करके चौराहे पर के उस कुरुहुल के बिन्र सधुइया के भीख मांग-मांग कर बनवाए मन्दिर पर भी उसके मरते ही कब्जा कर लिया जिस पर मैं तुम को रहने के लिए कह रहा था। अब तो उस मन्दिर पर दो सौ-चार सौ रोज का चढ़उआ आता है।''

''सुना है सलखन में भी उनका एक मन्दिर बन रहा है?'' सिद्धनाथ जी ने पूछा।

''तुम सलखन की बात कर रहे हो? अरे अहरौरा से मारकुन्डी दुद्धी होते हुए जो सड़क बिहार, मध्यप्रदेश तक गई है उसके किनारे किनारे प्रमुख ट्रक अड्डों पर उनके मन्दिर बन रहे हैं। उन मन्दिरों पर उसी के आदमी पुजारी हैं जो तस्करी के काम में लगे हैं। बसों, ट्रकों से जो चढ़उआ मिलता है, वह अलग की आमदनी है'' कहकर सरकार ने लम्बी साँस खींची और कहा–''ठीक है, जब तक माँ की कृपा है लक्ष्मी बरस रही हैं। अच्छा तो शिवशंकर ने तुम से क्या कहा?''

''यही बता रहे थे कि सरकार ने साव जी का एक तहखाना खुलवाया जिसमें कुछ नहीं था।''

''वह जो तीन खाँची हड्डी मिली उसको नहीं बताया?'' सरकार ने उत्तेजित होकर कहा।

''हाँ हड्डियों के विषय में बता रहे थे।''

''तब, वही तो उस खजाने की मुख्य बाधा थी जिसे मैंने हटवा दिया। मैंने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तो पहले ही बता दिया था कि खजाना जीवधारी हो चुका है, एक जगह नहीं रहता। हमारे अलावा कोई दूसरा होता तो खून फेंक कर मर गया होता। ब्राह्मण और चमार की बलि की हड्डी थी, वही खजाने पर बैठे रक्षा कर रहे थे। मैंने उन्हें बोरे में भर कर नदी में प्रवाहित कर दिया। साव कहने लगे–सरकार, अब असली खजाना भी निकाल दीजिए।''

"निकलवा कर आधा खजाना ले लेते तो गरीबों की सेवा के लिए एक अस्पताल खुल जाता। बेकार ही पड़ा हुआ है, सरकार।''

"मैं पागल हूँ जो निकलवा देता? कौन जाने आधे खजाने के लालच में शिवशंकर खजाना निकलते ही साव से मिलकर मेरी हत्या करवा देता। शिवशंकर पर मेरा विश्वास नहीं है अगर तुम होते तो मैं निकलवा देता'' सरकार ने कहा।

सिद्धनाथ जी सरकार की ऐसी लन्तरानियों से परिचित थे। इसलिए उन्होंने उनका मन रखने के लिए कहा–"बुरा न मानिएगा सरकार, इस बार मैं आप के साथ रहूँगा। इस समय रात के साढ़े बारह हो रहे हैं, दरोगा आता होगा'' कहकर वे अपने बिस्तर पर पसर गए।

"अच्छा, तुम आराम करो मैं निशा-ध्यान कर लूँ'' कहकर सरकार आसन पर बैठ ध्यानमग्न हो गए। कुछ देर बाद कार्यालय की कुन्डी खड़खड़ाई और आवाज आई "सम्पादक जी, सम्पादक जी।''

"कौन है?'' कहते हुए सिद्धनाथ जी ने उठकर दरवाजा खोला और दरोगा को सामने देखकर चौंकने का अभिनय करते हुए बोले–"अरे आप? इतनी रात को कैसे आना हुआ?''

"रोजाना आपके कमरे में अन्धेरा रहता था, आज बिजली जलती देखकर सोचा क्या बात है, जरा देखता चलूँ'' कहते हुए दरोगा ने कमरे में प्रवेश किया तो आसन पर बैठे सरकार को देख, ठिठक कर सिद्धनाथ जी की ओर देखा। सिद्धनाथ जी ने चुप रहने का इशारा कर धीरे से कहा–"हमारे गुरू जी हैं।''

बात की आहट पाकर सरकार ने धीरे से आँखे खोल दीं और पूछा–'कौन है?'

"दरोगा जी हैं सरकार'' सिद्धनाथ जी ने सहमी आवाज में कहा। सरकार ने आँखें उठा दरोगा की ओर देखा तो दरोगा ने खड़े-खड़े ही प्रणाम किया। सरकार ने प्रणाम के उत्तर में रोबीली आवाज में कहा–"बैठो।'' दरोगा पालथी मार कर बैठ गया।

"क्या नाम है?'' सरकार ने पूछा।

"रामचन्द्र राय, गाजीपुर का रहने वाला हूँ'' अब दरोगा भी सरकार से वार्ता करने की तैयारी कर चुका था।

"अच्छा भूमिहार हो!'' कहकर सरकार ने भरपूर निगाहों से दरोगा की ओर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

देखा और हँसकर बोले–"लोहे से लोहे भिड़ गया पट्टीदार से मुकदमे बाजी, वह भी थोड़ी-सी जमीन के लिए। पहली बार तुम्हारी जीत, अपील में उसकी जीत। कत्ल की नौबत, मजबूत पड़ रहा है" सूत्रों को बोलकर सरकार ने छत की ओर देखा और निःश्वाँस लेकर–"माँ तुम्हारी इच्छा" कह आँखें बन्द कर ध्यान मुद्रा में हो गए। उनके द्वारा कहे गए सूत्र वाक्य एकदम सत्य थे। तार्किक वार्ता के लिए तैयार दरोगा की बुद्धि कुंठित हो गई। उन्हें बाबा के परम सिद्ध होने में कोई शक नहीं रहा, वे साष्टांग सरकार के चरणों में लेट गए–"बाबा आप त्रिकालदर्शी हैं। अब आप आज्ञा दें, अपील करूँ या न करूँ?" दरोगा का स्वर काँप रहा था।

"अरे हटा इस साले को, कहाँ से चला आया?" बाबा ने गरज कर कहा। दरोगा ने उस गर्जना से अपने को अपमानित महसूस किया। उसका चेहरा एकबारगी क्रोध से तमतमा उठा लेकिन उस क्रोध पर तुरन्त उसके भय ने आधिपत्य जमा लिया। उसने सिद्धनाथ जी की ओर देखा। सिद्धनाथ ने आँख के इशारे से उन्हें साहस बनाए रखने की सलाह दी और हाथ जोड़कर धीमी आवाज में बोले–"सरकार, कृपा दृष्टि हो जाय, हमारे शुभचिन्तक हैं।"

"अपील कर दे, मेरे निशा पूजन का समय है, अब जा" कहकर सरकार ध्यानमग्न हो गए। सिद्धनाथ जी दरोगा को लेकर चुपके से कार्यालय के बाहर आ गए। दरोगा अब भी सहमा हुआ था। उसने पूछा–"बहुत क्रोधी हैं, फिर बात कैसे होगी?"

सिद्धनाथ जी ने हँसकर कहा–"दरोगा जी आप औघड़ों को नहीं जानते। ये बाहर से जितना गुस्सा दिखाएं समझिए भीतर से उतने ही खुश हैं।"

वे दोनों आपस में फुसफुसा कर बात कर ही रहे थे कि भीतर से आवाज आई–"सिद्धनाथ!"

"आया सरकार" कहते हुए दरोगा को रुके रहने का संकेत कर सिद्धनाथ जी कार्यालय में गए और थोड़ी देर बाद बाहर आकर दरोगा से प्रसन्न मुद्रा में कहा–"सरकार आप को बुला रहे हैं।"

दरोगा जी लगभग दौड़ते हुए सरकार के सामने पहुँचकर हाथ जोड़कर खड़े हो गए।

"तुम सहगल इन्जीनियर से मिल लेना। वह आश्रम-वाश्रम की कोई बात मुझसे कर रहे थे, उनसे जाकर पूछ लेना। कल मैं चला जाऊँगा फिर आऊँगा तो मिलना, जाओ।" सरकार के 'जाओ' कहने के बाद दरोगा को कुछ और पूछने का साहस नहीं हुआ। उसने बाबा के चरणों पर अपना सर टेक दिया। बाबा ने उसके सिर पर हाथ फेरते हुए कहा–"माँ कल्याण करें।"

दरोगा जी आशीर्वाद लेकर खुशी-खुशी कार्यालय के बाहर आए तो देखा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सिद्धनाथ उनका इन्तजार करते बाहर खड़े हैं। दरोगा जी उनसे बाबा जी द्वारा कही बातों को बताने लगे तो सिद्धनाथ ने अपने होठों पर उंगली रखकर चुप रहने का इशारा किया और फुसफुसाकर कहा–"नहीं ऐसी गलती अब मत करिएगा। वह जो बात जिससे कहने के लिए कहें उसी से कहिए और किसी से नहीं।" दरोगा जी सहम कर चुप हो गए। कुछ देर तक बातचीत कर दरोगा जी प्रसन्नतापूर्वक थाने लौट गए और सिद्धनाथ अपने कमरे में आए तो देखा सरकार खर्राटे ले रहे थे। वह भी अपने बिस्तर पर सो गए।

सुबह छः बजे डाक्टर स्वयं ही गाड़ी लेकर सिद्धनाथ जी के कार्यालय पर उपस्थित हुए। गाड़ी से सभी लोगों ने डाक्टर के यहाँ जा नित्य क्रिया से निवृत्त होकर नाश्ता किया और बस स्टेशन की ओर चल पड़े। चलती गाड़ी से सिद्धनाथ जी ने डाक्टर साहब को अपने कवि सम्मेलन की रसीद की याद दिलाई– "डाक्टर साहब, बुरा न मानिएगा, अब बहुत कम दिन रह गये। कल-परसों तक अगर आप कलेक्शन दे देते तो कवि सम्मेलन की तैयारी शुरू कर देता।"

"आज शाम को आकर मुझसे जो इकट्ठा हुआ है, ले जाइए। बड़ी मुश्किल तो यह है कि जिन-जिन लोगों से मैं चन्दा लेता आप ने उन्हीं लोगों को अपनी रसीद दे रखी है।"

"बुरा न मानिएगा, आप लोगों के हजारों हाथ हैं, दो-चार कट ही जाएंगे तो क्या फर्क पड़ता है?"

"फर्क तो नहीं पड़ता पर पीड़ा तो होती ही है।"

"तुम डाक्टर हो पीड़ा की दवा कर लो" सरकार ने हँसकर कहा।

सरकार की बात पर सभी लोग हँसने लगे। डाक्टर साहब ने हँसते हुए कहा–"दवा कर के ही तो कह रहा हूँ कि शाम को पैसा ले जाइए।"

सिद्धनाथ जी कुछ कहना चाह ही रहे थे कि बस स्टेशन आ गया। तीनों आदमी जीप से उतरे तो देखा कि पिपरी–वाराणसी बस खड़ी है। सरकार को बस में बैठा डाक्टर साहब ने कन्डक्टर को टिकट के पैसे दिए। दोनों आदमियों ने सरकार का चरणस्पर्श किया और बस अपने गन्तव्य पर चल पड़ी। डाक्टर साहब सिद्धनाथ जी के साथ वापस लौट आए।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

११. करमा

कातिक आधे से अधिक बीत चुकी है। रात कुछ-कुछ सिहराने लगी है। तीन-चार दिन पहले एक हल्की बरसात हुई जिससे ठण्ढक अकस्मात बढ़ गई है। बरसात से आकाश एकदम निर्मल हो गया है। रात में धुंधले दिखने वाले नभ के तारे चमकीले हो गए हैं। गाँवों में दरवाजों पर अलाव सुलगने लगे हैं। अनवरत सूखे से त्रस्त दक्षिणांचल के किसान इस बरसात से मुदित हो अपने खेतों की जोताई, बोआई में लग गए हैं। बरसात से मिली नमी जाने से पहले किसान अपने खेतों को बो लेना चाहते हैं। इसलिए गाँव के किसान, सीमा सुरक्षा में शत्रु से घिरे सैनिकों की भाँति, जीवन-मरण के संघर्ष में लग गए हैं। उनके लिए इस समय न थकान है, न दिन न रात, बस केवल हल, बैल, बीज लिए वे अपने खेतों में जूझ रहे हैं।

रामधनक बहुत पहले ही मगरू और बुधनी से मिल कर भलुआ लौट आया है। बहुत दिनों के बाद किरपानिधान ने किरपा की है। वह अपने सारे ऊँचे-नीचे खेतों को बो लेना चाहता हैं। कौन जाने जैसे कातिक बरसा वैसे ही अगहन भी चू जाय। वह बूढ़ा बड़के भिनसारे बैलों को चराकर पौ फटने से एक घण्टे पहले हल बैल लेकर खेतों पर पहुँच जाता है। दोपहर तक जोताई कर गाँव लौटकर बैलों को चरने के लिए छोड़, अपने लिए रोटी बनाता है। रोटी बना खाकर जबतक वह अपनी कमर सीधी करता है, तबतक बैल भी चर चुके होते हैं। वह उन्हें पानी पिलाकर जोखरता और उनकी पीठ थपथपा–''वाह हमरे शेर! हिम्मत मत हारना, देखो हम तुम से बूढ़े हैं लेकिन डटे हैं, तुम भी डटे रहो'' कहता हल अपने कन्धे पर रख बैलों को टिटकारता खेतों की ओर चल देता। रात में उसे रतौंधी होती है इसलिए सूरज डूबने से पहले बैलों को ले वह अपने दरवाजे पर आकर पहले बैलों को चराता, फिर टटोलता हुआ भोला पंडित के दरवाजे पर पहुँच जाता।

उस दिन भी रामधनक शाम को भोला पंडित के यहाँ बैठा बीजों की अदला-बदली की बात कर रहा था। उसके पास जौ का बीज नहीं था और भोला पंडित को चने के बीज की कमी पड़ रही थी, इसलिए रामधनक ने कहा–''आप हमसे चना बीज ले लीजिए हम को जौ दे दीजिए।''

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोला पंडित समझ गए कि बीज की अदला-बदली में बराबर का ही लेन-देन होता है लेकिन कहीं रामधनक दाम के हिसाब से अदला-बदली न करे, नहीं तो चना जौ से मंहगा है। इस तरह रामधनक फायदे में रहेगा। इसलिए उन्होंने कहा–"हमारा जौ सोधा बीज है, चने से सस्ता नहीं है।"

"पंडी जी, गाँव गिराँव में अदला-बदली में जौन परपाटी है ओम्मन सस्ता-महंगा से का मतलब? जेतना आप देंगे ओतना लेंगे।"

रामधनक के उत्तर से पंडित जी आश्वस्त हो गए कि चने के बराबर ही जौ देना पड़ेगा तो–"हाँ हो जौन परपाटी है ओके हम-तूँ अपने जियत जिनगी चलावल जाई, आगे लड़िका-पड़िका चाहे जो करें" कहकर उन्होंने जोर से पुकारा–"समरथ्थीऽऽ अरे समरथियाऽऽ तनी अलाव जलावै के गोंइठे पर आग दे जा।" घर में से आवाज आई–"अच्छा बाबू लियावत हई" थोड़ी देर बाद समरथी आग दे गई।

भोला पंडित ने आग को अलाव पर रख फूंकना शुरू किया। हाल ही में हुई बरसात के कारण लकड़ियाँ गीली थीं जिससे देर तक फूंक मारने के बाद भी वह नहीं जलीं। रामधनक ने कहा–"हटो कक्का मैं जला देता हूँ।" फूंक मारते-मारते पंडित जी थक चुके थे। उन्होंने रुककर स्वांस को नियंत्रित करते हुए कहा–"थोड़ी गीली हैं, इसलिए नहीं जल रही हैं, लेकिन मैंने गरमा दिया है। अब फूंको जल जाएगी।"

रामधनक अलाव को फूंकने लगा। भोला पंडित निश्चिंत हो जेब से खैनी निकाल मलने लगे। लम्बे प्रयास के बाद सुलगना छोड़ आग धीमे-धीमे जलने लगी। दोनो अलाव के पास और खिसक कर बैठ गए। उसी समय फन्नू धुंधलके में कुछ दूर पर आता दिखाई पड़ा। उसने पास आकर दोनों से रामजोहार की और अलाव के पास बैठ गया। भोला पंडित ने खैनी पर ठोंक लगाकर दोनों को दिया और पूछा–"क्या हाल चाल है फन्नू?"

"सब ठीक ही है कक्का, बैठा था सोचा चलूँ आप के यहाँ बैठकर देश दुनियाँ की दो चार बात सुन लूँ। फिर अभी परबतिया बालू के ट्रक से नहीं लौटी, मन उकला रहा था, चला आया।"

"अब देश दुनियाँ की कौन सी बात है? बड़े भाग से दऊ राजा चार बूँद बरस दिए, जीयन उपाय हो गया नहीं तो बड़ी खराब हालत होती।"

"हाँ भैया, बरस तो दिए लेकिन जिसके पास हर-बैल है वह तो अपना खेत जोत लेगा, खेतों में पाटा दे लेगा लेकिन हमरे जैसे लोग का करेंगे? न हर न बैल। परबतिया बालू के ठीकेदार के इहाँ ट्रक पर बालू लादकर जो पाती है वह खाने-पीने में ही चला जाता है" कहकर फन्नू उदास हो गया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"इसमें कौन-सी बात है, हमारा एक हरवाह परदेसिया पता नहीं किस ठेकेदार के साथ चला गया, अभी तक लौटा नहीं। उसको यह फिकिर नहीं है कि जोताई का समय है, चलें नहीं तो मालिक का हल खड़ा हो जाएगा।"

उसे फिकिर तो होगी लेकिन ठेकेदार ने उसका पैसा नहीं दिया होगा। वही लेने के लिए बेचारा फंसा होगा नहीं तो वह ऐसा आदमी नहीं है" रामधनक ने कहा।

"हाँ पंडी जी, कौनो कौनो ठीकेदार ठीक होते हैं, नाही त सब मजूरन के फंसाए रहते हैं। ई जवन हमार बाँया हाथ कटा है, ठेकेदार के ही कारन कटा है। पहिले हाथे के दोनो अंगूरी में भारी घाव लगा। ठेकेदार मरहम पट्टी करवा के हमसे काम लेता रहा। घाव सड़ने लगा तब कुछ पैसा देकर अस्पताल भेजा वहीं पर हाथ कट गया। डांगडर बाबू कहने लगे कि–कुछ दिन पहले आते तो हाथ नहीं कटता" कहकर फन्नू ने लम्बी सांस ली फिर कहने लगा–"लेकिन पंडी जी, ठेकेदार के का कहें, सब अपने करम का दोष है।"

"हाँ भैया करमैं का दोष है। यह जनम में तो किसी का कुछ नहीं बिगाड़े हो, ई पूरब जनम की कमाई है" रामधनक ने अलाव को कुरेदते हुए कहा।

हमारे देश में इस कर्मवाद के सिद्धान्त ने जहाँ असमर्थ क्रोध को शान्त कर असहाय आदमी को शान्ति प्रदान की, वहीं जो क्रोध अत्याचारियों के लिए दावाग्नि का कार्य करता उसे कर्मवाद के शीतल जल ने बुझाने का भी कार्य किया है। अत्याचारी भी सोचता है कि उसका अत्याचार, अत्याचार-पीड़ित के कर्म का फल है। इस कर्मवाद से अत्याचार-पीड़ित को शान्त रहने की और अत्याचारी को और अधिक अत्याचार करने की प्रेरणा मिली। भोला पंडित भी इसी कर्मवादी समाज की पैदावार थे किन्तु कुछ जागरूक। इसलिए उन्होंने कहा–"पूरब जनम को कौन जानता है? इस जनम में तो साफ दिखाई पड़ता है कि ठेकेदार के कारन तुम्हारा हाथ कटा। उसका भी हाथ भगवान काटेंगे।"

"जरूर काटेंगे भैया! पाप का घड़ा भरेगा तो फूटेगा ही। का भगवान एक दमै सूत गए हैं?" फन्नू को भगवान के न्याय ने दिलासा दिया।

"भगवान सूते नहीं जाग रहे हैं। यह कलयुग है, एह जुग में भगवान अत्याचारी, पापी को पहले खूब बढ़ाते हैं। बाद में एक-एक पैसे का हिसाब चुकवाते हैं। अब देखो, भगवान जागते न होते तो इतना बड़ा झूरा के बाद ई चार बूँद पानी कैसे बरसाते? ऊ तो पानी बरसा दिए, अब आदमी जइसन करम करेगा, ओइसन पाएगा। का भगवान सबके मुँह में कौर नाएंगे? इहै उनकी लीला देखो कि तुम्हारे पास हल, बैल, बेंगा नहीं है तो भगवान ने परदेशिया को कहीं फँसा दिया कि तुम्हारा भी काम हो जाय। अब तोहार करम, तूँ जइसन करो।" पंडित जी ने वार्ता को अपने सही रास्ते पर खींचा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"पंडी जी, करम को तो हम करबै करेंगे, अब आप अइसन करैं कि हमरो बोआई हो जाय, अउर आपो का काम चल जाय" फन्नू ने आशा भरी निगाह से पंडित जी को देखा।

"ठीक है, तो तूँ दू दिन हमारा खेत जोतो और एक दिन उसी हल बैल से आपन खेत जोतो। बेंगा, बिसार भी हम दे देंगे। होगा तो लौटा देना" कहकर पंडित जी ने रामधनक की ओर देखकर पूछा–"का हो रामधनक! हम ठीक कह रहे हैं नऽ?"

"हाँ कक्का एकदम ठीक है। अभी तक तो गाँव गिराँव में यही रेट से काम होता रहा है। अब फन्नू जइसन सोचैं" कहते हुए रामधनक ने फन्नू की ओर देखा।

"ठीक है पंडी जी, हम तैयार हैं। एक हाथ से तो हल जोत लेते हैं, बस फ़र्सा-कुदार नहीं चला पाते" फन्नू अपनी बात कह ही रहा था कि आगे-आगे मगरू और उसके पीछे बुधनी अपने सिर पर गठरी लिए आ कर खड़े हो गए। रामधनक रतौंधी के कारण उन दोनों को देख नहीं पाया लेकिन आहट से समझ लिया कि कोई आया है। सब से पहले भोला महाराज की निगाह उन दोनों पर पड़ी। उन्होंने कहा–"कौन मगरुआ?"

"हाँ दद्दा पालागी" मगरू ने उत्तर में ब्राह्मणोचित अभिवादन किया।

मगरू के साथ घटी घटना को सारा गाँव जान चुका था। उस घटना का इतना रोमांचक वर्णन गाँव में फैल चुका था कि मगरू गाँव के लिए दर्शनीय व्यक्तित्व बन चुका था। बंशी इस घटनाक्रम का नायक तथा मगरू सहनायक के रूप में जाने जा रहे थे। किस तरह मगरू को बड़े-बड़े साहब देखने गए, कैसे बंशी ने अच्छे-अच्छे लोगों से लोहा लिया। कैसे बहुत बड़ी मजलिस जुटी। यह सब गाँव वाले पहले ही खंड रूप में सुन चुके थे। भोला पंडित को अपने बेटे के कद की पहचान पहली बार हुई थी और वह भी अपना कद औसत से बहुत ज्यादा देखने लगे। उनको लग रहा था कि बंशी के इस कद में उनका भी कद शामिल है और इस सारी विशालता के वही कारण हैं, जबकि यदि उनका बस चला होता तो वह बंशी को पढ़ने-लिखने के झमेले से दूर रख अपने पंडिताई के पुश्तैनी पेशे में लगाते। छोटई महराज के हठ के आगे उनकी एक नहीं चली। उस समय उन्होंने बिगड़कर कहा था–"ठीक है छोटई, अगर तुम इसको पढ़ाना चाहते हो तो अपना खेत बारी देखो, हमारे बश का नहीं है।"

छोटई महराज ने सीना ठोंक कर कहा था–"ठीक है भैया, आप कुछ मत करिए, सब मैं करूँगा लेकिन बंशी को पढ़ाऊँगा।" आज वही छोटई महराज अपने बड़े भाई से अलग अपने परिवार के पालन-पोषण के लिए संघर्षरत हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोला महराज वह सब भूल चुके हैं। इस समय वह मगरू को देखकर गदगद हैं। उन्होंने पास में पड़ी मचिया की ओर इशारा करते हुए कहा–"बैठो मगरू, बैठो।"

"नहीं दद्दा ठीक है। बप्पा, घर की ताली दे दो, बुधनी खड़ी है।" मगरू ने रामधनक से कहा।

"बुधनी भी आई है?" रामधनक ने कहा और अपनी कमर में बँधी ताली को खोल, हाथ में लेकर बुधनी के बिपरीत दिशा में हाथ पसार दिया।

बुधनी खिलखिलाकर हँसती हुई बोली–"वाह रे बप्पा, मैं इधर खड़ी हूँ, तुम उधर किस को ताली दे रहे हो?"

रामधनक ने बुधनी की ओर हाथ घुमा कर बनावटी गुस्से से कहा–"ले ससुरी, मुझे रतौंधी होती है और तूँ हँस रही है।"

बुधनी ने हँसते हुए अपने पिता के हाथ से कुन्जी ले ली और अपने घर की ओर चली। गाँव की महिलाओं ने रास्ते में बुधनी की घेराबन्दी कर ली। बुधनी हँसती, खिलखिलाती सब से बात करती अपने घर तक पहुँची। उसने दरवाजे की ड्योढ़ी पर अपनी गठरी रख दी। कुछ देर तक वह वैसे ही खड़ी-खड़ी सबसे वार्तालाप करती रही फिर "अरे बाप रे, बड़ी देर हो गई, कुछ दिया बाती कर दूँ" कहकर उसने अपने घर का दरवाजा खोला और अपने काम में लग गई। एक को छोड़कर और सब महिलाएँ चली गईं।

इधर भोला महराज के घर मगरू के कारण गाँव के पुरुषों की भीड़ लग गई। "अब हाथ कैसा है?" भोला पंडित ने मगरू से पूछा।

"अब ठीक है, पीरा नहीं होती।"

"हाँ भाई डागदरी कोई माहमूली चीज है? सही डांगदर से भेंट हो जाय तो फिर पीरा-सीरा क्या होगी।"

"दवाई ऐसे-ऐसे हैं कि हमारा इतना बड़ा हाथ काट दिया, हमें कुछ पता नहीं चला" फन्नू ने कहा जैसे एक ही आध्यात्मिक गुरु के दो अनजाने शिष्य जब अकस्मात् परिचित होते हैं तो एक दूसरे से निकटता का अनुभव करने लगते हैं, वैसे ही फन्नू अस्पताल और डाक्टर से पूर्व परिचित होने के कारण मगरू से अपनी निकटता महसूस कर रहा था।

"यह बँधा हुआ हाथ कब खुलेगा?" एक ने मगरू से उसके लगे प्लास्टर को सहलाते हुए पूछा।

"डागदर बाबू ने कहा है कि अगहन बाद खुल जाएगा।"

भोला पंडित जल्दी से अपने बेटे के बड़प्पन का बखान सुनने को बेताब हो रहे थे। लोग थे कि मगरू में ही चिपटे हुए थे। जब उनसे नहीं रहा गया तो कहा–"ई सब तो डागदरी की चीज है भैया। अगर सोरस न होता तो का ऐसा पलस्तर लगता?"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"हाँ ई बात तो आप ठीक कहते हैं। आज के जमाने में तो हर काम सोरस से होता है।" फन्नू ने उनकी बात का समर्थन किया।

"बड़ा दरद हुआ होगा, पलस्तर लगते समय, तुम तो खूब चिल्लाए होगे मगरू" छोटई महराज के तेरह चौदह साल के लड़के ने दर्द की कल्पना से सिहरते हुए पूछा।

अब भोला महराज को अपने बेटे के बड़प्पन की चर्चा का सीधा अवसर प्राप्त हुआ। उन्होंने हिकारत भरी नजर से लड़के की ओर देखते हुए कहा—"अब इस बेचारे को क्या मालूम कि बंशी ने वहाँ क्या-क्या किया? अगर बंशी न होते तो जरूर दरद होता। अच्छा मगरू, बताओ तुम्हारे बंशी कक्का ने तुम्हें कैसे पलस्तर लगवाया?"

"बंशी कक्का भी आज आ रहे हैं। उन्होंने कहा है कि तुम और बुधनी चलो, हम साहब के यहाँ से छुट्टी लेकर आएँगे। उनके साथ सम्पादक जी और छोटे दरोगा भी आएँगे।" मगरू ने बताया।,

"अच्छाऽ! दरोगा जी भी आ रहे हैं?" कहकर भोला महराज जल्दी से उठे और "हे समरथ्थी...हे सुरसत्ती, देखो तुम्हारे बंशी के साथ दो मेहमान भी आ रहे हैं। जरा लालटेन का सीसा साफ करके दरवाजे पर रख दो और यहाँ से यह ढेबरी ले जाओ। मिट्टी का तेल न हो तो छोटई के यहाँ से ले लो" इतनी बातें वह एक साँस में कह ले गए, फिर फन्नू से बोले–'देखो भैया, हमारे यहाँ मेहमान आ रहे हैं, जरा मदद कर दो। न हो तो आज यहीं पर रह जाओ, खा-पी कर तब जाना। अभी छोटई के यहाँ चले जाओ। उन से कह दो कि पिपरी से दरोगा जी आ रहे हैं, जरा अपना माचा, तोशक रजाई दे दें। दो हमारे पास है काम हो जाएगा। अरे भाई सबके यहाँ माटी का चूल्हा है। बड़ी-बड़ा ऐसे ही तोप ढाँक कर अपनी इज्जत बचाते हैं, किसी के पास गँजा नहीं है।"

भोला पंडित का अपने छोटे भाई छोटई के यहाँ फन्नू को भेजने के दो उद्देश्य थे। प्रथम तो यह कि वह जान ले कि उनके यहाँ दरोगा जैसे हाकिम का पदार्पण हो रहा है। तोशक रजाई तो गौण कार्य था।

फन्नू खाने-पीने की सुबिधा से मन ही मन प्रसन्न हो गया। आज उसे मेहमानों के लिए बनाए गए स्वादिष्ट व्यञ्जन खाने को मिलेंगे। वह तुरन्त उठकर छोटई महराज के यहाँ से चारपाई-तोशक आदि ले आया। सुरसत्ती ने बहुत दिनों से पड़ी लालटेन को साफ-सुथरा करके जलाया और दालान के ओसारे में रस्सी से लटका दिया। दालान में दो ही चारपाइयाँ आ सकती थी, इसलिए दो ही चारपाइयों को बिछा कर उनपर तोशक तकिया लगा दिया गया। भोला पंडित ने स्वयं उठकर व्यवस्था का निरीक्षण किया। एक तोशक पर चादर नहीं थी, तकिया

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

की खोली गंदी थी। भोला महराज कुछ देर परेशान रहे फिर–"ऊँह, ठीक है" कहकर फन्नू से बोले–"फन्नू! जरा घर में पूछ लो कि चाह बनाने के लिए घर में सब सामान है? न हो तो छोटई के यहाँ से ले लो, बंशी आएंगे तो पैसा भेजवा देंगे, तब तक मैं गाय लगा दूँ।"

फन्नू ने घर में पूछ कर भोला महराज को बताया कि "सुरसत्ती सब सामान अपने कक्का के यहाँ से ले आई है।" भोला पंडित ने तुरन्त गाय लगाया और दूध को घर रखकर आराम से अलाव के पास आकर बैठ गए और मगरू से बोले–"मगरू जाओ घर में समरथ्थी से गुड़ सुड़ माँगकर पानी पी लो, तब यहाँ बैठो, तब तक वह लोग भी आ जाएंगे।"

"पी लेंगे दद्दा, कौन जल्दी है?"

"जल्दी क्यों नहीं है? उतनी दूर से चले आ रहे हो, भूख नहीं तो प्यास तो जरूरै लगी होगी। जाओ पी लो" भोला पंडित ने दुलारात्मक आदेश दिया। मगरू ने जाकर पानी पी लिया, लौटकर अपने पिता से कहा–"न हो बप्पा, तुम यहीं बैठो, मैं जरा देखता आऊँ कि बुधनी कुछ बना रही है कि नहीं।"

"ऊ बेचारी का बनाएगी? थोड़ा-सा पिसान है वही लिट्टी पो देगी। तुम दोनों खा लेना। हमारा तो सबेरे का रखा है" रामधनक ने कहा।

"काहे रामधनक! पिछली साल तो तुम्हें चैती अच्छी मिल गई थी, सब खतम हो गया क्या?" भोला पंडित ने पूछा।

हाँ! हुआ तो था। उसी में महाजन का लेना-देना किया। कई साल का कर्ज था, दे दा कर छुट्टी पाए, बुधनी के लिए साल भर के लिए दू धोती, अपने और मगरू के लिए जाड़ा का कपड़ा, एक-एक गंजी बनवाए। ऊपर से मगरू का हाथ टूटा उस में दौड़-धूप, कितना चलेगा?"

"बस इतने में ही खतम हो गया?"

"चिउंटी बदे पेसाबै बूड़ा, छोटी-सी खूंटी है एक झटका आया कि उखड़ गई। फिर उसी में इतने दिनों तक खाना-पीना भी तो चला। दो महीने की खर्ची का टोटा पड़ा। ऊ तो कहो छोटई कक्का उधार दे के सम्हार दिए, नाहीं तो भूखों मरते।"

भोला पंडित को रामधनक की भाषा में छोटई की दानशीलता की झलक मिली। उन्हें अच्छा नहीं लगा। दूसरा कोई समय रहा होता तो वह छोटई के प्रति रामधनक के इस भाव को पचा भी लेते। लेकिन इस समय, जबकि उनके यहाँ दरोगा आ रहा था, मगरू उनके बेटे के कीर्तिस्तंभ-सा भलुआ में टहल रहा था, यह बात अच्छी नहीं लगी।

"बनियउटी लाइन में उधार तो सभी देते हैं। अगर उधार नहीं देंगे तो दुकान

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

क्या चलेगी?'' अपने छोटे भाई की परोपकारिता को स्वार्थ सिद्ध करने के लिए भोला महराज ने कहा।

''हाँ पंडी जी, ई बात तो है लेकिन बिपत काल में उबारने वाले कमै मिलते हैं। अब छोटई महराज हुए, बंशी भैया हुए ई लोग परोपकारी जीव हैं।''

भोला महराज को रामधनक द्वारा छोटई और बंशी की बराबरी किया जाना अच्छा नहीं लगा। साथ ही साथ परोपकारियों में अपना नाम न आने से वह और भी चिढ़कर बोले–''तुम को बस कोई एक सेर पिसान दे दे वही परोपकारी दिखाई देने लगता है, आन्हर सियार पिपरौटी मेवा। अरे परोपकार उसे कहते हैं जिसमें अपना कोई स्वारथ न हो।'' उनका संकेत मगरू के प्रति किए गए बंशी के कृत्यों की ओर था।

रामधनक को अब समझ में आया कि भोला पंडित के आगे उनके छोटे भाई की प्रशंसा कर के उसने ठीक नहीं किया। वह बात बदलने की राह खोज ही रहा था कि ''होइहैं सोइ जो राम रचि राखा...'' की आवाज सुनाई पड़ी। रामधनक को बहाना मिल गया। फन्नू तुम तो रमायन सुनने नहीं चलोगे? मेहमान आ रहे हैं। तुम यहीं रहो, तब तक हम चार चउपाई सुनकर अभी आ रहे हैं'' कहता हुआ रामधनक लाठी टेकता उठ खड़ा हुआ।

''चार चौपाई नहीं, चार दम कहो, चौपाई तो बहाना है। अब रतौंधी नहीं हो रही है?'' भोला महराज ने व्यंग किया।

''अब इहै समझ लें, स्वारथ परमारथ दूनो हो जा रहा है। तनी दू दम लग जाता है तो रूखा-सूखा भी सवादिक लगता है'' कहकर रामधनक कुछ हँसता हुआ लाठी से टटोलता छोटई महराज के यहाँ चला गया।

छोटई महराज ने उसे देखते ही कहा–''आओ, आओ रामधनक, आज तो बड़ी देर तक कचहरी बूझते रहे। मैंने तो समझा था कि आज तुम नहीं आओगे। अरे भाई माया का दरबार है, जो फँस जाता है वह जल्दी निकल नहीं सकता।'' उनका स्पष्ट संकेत भोला पंडित की ओर था।

''पालागी कक्का, आ रहा था लेकिन गाँव-घर का धरम है, जब चार आदमी बड़के भैया के यहाँ आ रहे हैं तो जवन कुछ बन परै हम को भी करना चाहिए। ओइसे हम कवन लायक हैं, लेकिन चार मिनट बैठ लिए दूखा-सूखा हो गया।''

''कौन चार आदमी आ रहे हैं? वही दरोगा! ऐसे ही लोग तो इनके यहाँ आएँगे। माया वालों के पास माया वाले ही आएँगे, साधू तो आयेंगे नहीं।'' अपने बड़े भाई के यहाँ दरोगा के आगमन की महानता को छोटई महराज ने एकदम से बौना कर दिया। कल्लू की ओर देख कर बोले–''क्यों कल्लू, क्या मैं झूठ कह रहा हूँ?''

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कल्लू कहीं दूसरी जगह से पहले ही दम लगा कर आया था। गाँजे के नशे में बुत्त, उसने रामधनक और छोटई महराज की वार्ता को नहीं सुना। उसे केवल अपना नाम और–"क्या मैं झूठ कह रहा हूँ?" ही सुनाई पड़ा। उसने बिना कुछ समझे-बूझे ही कहा–"नाहीं पंडी जी, आप भला झूठ बोलेंगे?"

"बात कहै सच्चा, चाहे बाप रहै चाहे कक्का। भाई बात तो हम सच ही कहते हैं, चाहे किसी को अच्छा लगे या बुरा" छोटई महराज अपने रामायण पढ़ने के आसन पर बैठते हुए बोले।

मिट्टी के तेल की ढिबरी, जो एक छोटी सी-शीशी की बनाई गई थी, धुप धुप कर के जल रही थी। उसे उठाकर छोटई महराज ने रामायण के पास रखा, उसमें दो अगरबत्तियों को सुलगा कर रामायण के अगल-बगल घुमाकर, बगल में रखे गेहूँ भरे कनस्तर में खोंस दिया। सभी रामायण के पहले होने वाले कीर्तन को कहने के लिए सावधान होकर बैठ गए। छोटई महाराज ने जेब से गाँजा निकालकर रामधनक की ओर बढ़ाया। उसने गाँजा ले लिया और बनाने लगा। हरि कीर्तन के लिए सावधान बैठे भक्तों के चेहरे पर गाँजा राजा को देखकर रौनक आ गई। उनकी बात और आवाज के लहजे खनकने लगे।

"साँच के आँच का कक्का? ठीक आपै का स्वभाव हमरो है। ओह दिन के पंचाइत में जब आप हमसे पूछे तो मैंने साफ कह दिया कि–भगेलू को फन्नू का मुर्गा ले जाते मैंने देखा था। अब भगेलू हमसे नाराज हैं। रानी रुठिहैं आपन सोहाग लेइहैं" कल्लू ने कहा।

"देखा तुम मूंह पर कह दिए, समरथी जीव हो। दूसरा कोई कहे होता तो देखते भगेलू का लाठी, डन्डा..." रामधनक अपनी बात पूरी भी नहीं कह पाया था तभी भोला महराज ने कहा–"लाठी डन्डा क्या निकालेंगे? क्या पंच मर गए हैं? चोरी और उप्पर से सीना जोरी। ई गाँव में नहीं चलेगा, शहर बाजार में भले चल जाय।"

"जबरा मारै रोऐै न दे भइया, समरथ आदमी कुल करते हैं। हम तन धन दूनों से गरीब आदमी का कर सकते हैं?"

"देखो रामधनक, तुम्हारी यही बात मुझे अच्छी नहीं लगती। इस दुनियाँ में न कोई गरीब है न कोई अमीर। मन अगर अमीर है तो आदमी अमीर, अगर गरीब मन है तो गरीब। मन के हारे हार है, मन के जीते जीत। कहो कल्लू का हम झूठ कह रहे हैं?" छोटई महराज ने पूछा।

"नाहीं कक्का आप ठीक कह रहे हैं" कहते हुए कल्लू ने रामधनक की ओर इस निगाह से देखा जैसे कह रहा हो–'का बात का बतंगड़ बना रहे हो, जल्दी गाँजा बनाओ।' रामधनक ने कल्लू की निगाहों की भाषा को समझ लिया। उसने गाँजे को जल्दी-जल्दी मलते हुए कहा–"दू बीड़ी दो कक्का।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

छोटई महराज ने गाँजे में मिलाने के लिए दो बीड़ी दे दी। रामधनक उसमें से सुर्ती निकाल कर गाँजे में मिलाने लगा। कल्लू ने तुरन्त गाँजे की चिलम ली, उसकी सफाई की और उस पर रखने के लिए सुतली का छोटा-सा गोला बना कर जलाया। इधर गाँजे की चिलम पर रखने के लिए लुत्ती तैयार कर, उधर रामधनक ने चिलम में गाँजा भर, चिलम कल्लू को पकड़ा दी। कल्लू ने उस पर लुत्ती रखी और कहा–"बन्दूक तैयार है कक्का।"

छोटई महराज ने हाथ बढ़ा चिलम ले ली, अपने माथे से लगायी, छोटा-सा अलख जगा कर पहला दम मारा और आँख बन्द कर कुम्भक साध गए। उसी समय तीसरा बेटा दौड़ता हुआ आया और बालसुलभ उत्साह से बोला–"बाबू, बाबू... बड़के बाबू के यहाँ फटफटिया आई है। उस पर बैठकर बंशी भैया आए हैं।"

कुछ क्षण तक साधे गए गाँजे के धुएँ की कुम्भक से लाल हो गई आँखों को खोलकर छोटई महराज ने अपने लड़के की ओर देखा और दोनों नथुनों से धीमे-धीमें धुएँ को निकालते हुए गुस्से से बोले–"तब मैं क्या करूँ? फटफटिया आई है तो राम का नाम लेना छोड़ दूं?" लड़का अपने पिता के इस उत्तर से हतप्रभ हो गया। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि बाबू क्यों गुस्सा हो रहे हैं। छोटई महराज ने इस बात को समझा तो कहा–"बेटा, मैं बिगड़ नहीं रहा हूँ। मैं तो तुम्हें यह बताना चाहता हूँ कि जो पुस्तक में विमान की बात लिखी है जिसे आदमी नहीं चलाता था। बस उस से कहना पड़ता था कि फलाँ जगह चलो तो वह चल देता था। तो जो आदमी ऐसी सवारियों के विषय में जानता है उसके लिए फटफटिया क्या चीज है?"

उनके इस विश्लेषण को लड़के ने समझा या नहीं, लेकिन फटफटिया की सूचना के प्रति उसका उत्साह ठन्ढा पड़ गया और वह धीरे से खिसक लिया।

अपने बड़े भाई के प्रति छोटई महराज का यह आक्रोश अकारण ही नहीं था। आज से कुछ वर्षों पहले जब दोनों भाई एक में थे, आस-पास के लोग दोनों भाइयों को राम-लक्ष्मण की जोड़ी कहते थे। छोटई महराज अपने भाई के लिए पूर्ण रूप से समर्पित थे, बड़े भाई की इच्छा ही उनकी इच्छा थी। उस वक्त बंशी पढ़ रहा था। खेती छोड़कर आय का कोई अन्य साधन नहीं था। भोला महराज जजमानी देखते, कथा-पूजन से चार पैसा लाते, छोटई महराज गाय चराते और खेती बारी देखते। भोला महराज घर के मालिक और उनकी पत्नी मालकिन थी। घर में भोला महराज के ही बच्चे थे। देवरानी अपनी जेठानी का अति सम्मान करती, उनके बच्चों को ही अपना पूरा प्यार देती। कुछ दिनों के बाद देवरानी को पहला बेटा हुआ। जेठानी जेठ ने खूब खुशियाँ मनाईं। प्रति वर्ष बच्चों का आगमन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

होने लगा। चौथे बच्चे के जन्म के समय से दूध के लिए जेठानी और देवरानी में थोड़ी किच-किच हुई। छोटई महराज ने जब इस झगड़े को सुना तो उन्होंने अपनी पत्नी की पिटाई कर दी और हिदायत दी कि "खबरदार जो भैया-भाभी के सामने अपनी जबान खोली।"

उनकी पत्नी पति की इस प्रताड़ना से सहम गई, किन्तु जेठानी के प्रति उनके मन में घोर घृणा भर गई। पूजापाठ से जो चार पैसे मिलते उसे भोला महाराज घर की मालकिन अपनी पत्नी के पास ही जमा कर देते, जिससे उनकी पत्नी का हाथ कभी तंग नहीं रहता। छोटई महराज के पास उस प्रकार का कोई आर्थिक स्रोत नहीं था न तो वह बड़े भैया के रहते इसकी आवश्यकता ही समझते थे। इससे उनकी पत्नी एक-एक पैसे के लिए तरसती रहती किन्तु भयवश अपने पति से कुछ नहीं कहती। उनके द्वारा पैदा किए जाने वाले अन्न पर घर के मालिक मालिकिन का स्वामित्व था। गायों के बछड़े, बछेड़ियाँ बिकती उसका पैसा भी मालिक के ही हाथ जाता।

छोटई महराज की भाभी का घर के मालिक से सीधा सम्बन्ध था। वह अपने पति से अपनी कर्तव्यनिष्ठा, सहिष्णुता और देवरानी की अकर्मण्यता, हठवादिता का अनवरत बखान करती। देवरानी के प्रति की गई शिकायत का जब वह अपने पति पर अनुकूल प्रभाव पड़ता देखती तो बड़े नाटकीय ढंग से कहती–"जाने दीजिए, छोटी है, बुद्धि नहीं है, देवर के तो भाग्य फूट गए, पता नहीं किस कुसाइत में यह शादी हुई।" भोला महराज अपनी पत्नी की इस प्रकार की भाषा में विशालहृदयता देखते, वह मुग्ध हो पत्नी को गृहलक्ष्मी के रूप में देखने लगते। नारी अपने लक्ष्य की पूर्ति कितने टेढ़े-मेढ़े रास्तों से कर सकती है, इसका उन्हें ज्ञान नहीं था। एक चतुर सेनापति की भाँति नारी, दुश्मन के ठिकानों पर ऐसे मार्गों से आक्रमण करती है, जिधर से दुश्मन अपने ऊपर आक्रमण होने की कल्पना भी नहीं कर सकता।

छोटई महराज ने अपनी पत्नी को मार-पीट कर सोचा कि अब युद्धविराम हो गया लेकिन यह उनकी भूल थी। प्रत्यक्ष युद्धविराम तो हो गया लेकिन भाभी ने शीतयुद्ध का मार्ग अपनाए रखा। उनके पास शीतयुद्ध चलाए रखने के लिए अपने पति का क्षेत्र था, उनकी देवरानी के पास ऐसा कोई क्षेत्र नहीं था। अपने जेठ के सामने छोटई महराज की पत्नी अपनी जेठानी के झूठे आरोपों के उत्तर भी नहीं दे सकती थी। अगर उत्तर देती तो भारतीय परम्परा के अनुसार जेठ के सामने बोलने वाली औरत निर्लज्ज और लड़ाकू घोषित कर दी जाती। अपनी देवरानी की इस स्थिति का लाभ भोला महराज की पत्नी ने खूब उठाया और वह अपने पति को यह समझाने में सफल हो गई कि देवरानी बंशी को दूध देने में जलती है। एक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दिन पति के चारपाई के सिरहाने नीचे बैठ उसने बड़े ही दु:खित स्वर में कहा– "समरथी-सुरसत्ती बेचारी दिन भर घर के काम-काज में लगी रहती हैं। अगर ये दोनों अपने घर ब्याह कर चली जाएंगी तो कैसे गृहस्थी चलेगी? देवरानी का यह हाल है कि वह उन दोनों को काटने दौड़ती है। उनको वह दूध कौन कहे माठा भी नहीं देना चाहती" कहते-कहते उसकी आँखों से आँसू चू पड़े। आँसू को आँचल से पोंछकर उसने इधर-उधर देखा कि कोई सुन तो नहीं रहा है। उस खतरे से आश्वस्त होकर फिर फुसफुसा कर कहा–"बंशी जवान-जेहान लड़का है, अगर उसको दूध नहीं दिया जाएगा तो वह करेजाटूट हो जाएगा। पढ़ाई-लड़ाई में खूब खुराक चाहिए। अगर खुराक नहीं मिलेगा तो उसका दिमाग कैसे चलेगा? हमारे पटवारी भैया जब पढ़ रहे थे तो हमारे बाबू उनको एक भैंस का पूरा दूध पिलाया करते थे। तुम्हारी तरह नहीं कि लड़के पर कोई ध्यान ही नहीं दे रहे हों" कहकर वह फिर रोने लगी।

भोला पंडित की पत्नी अपनी बातों के ठीक होने का पुष्टीकरण अपने नैहर के उदाहरणों से इसी प्रकार किया करती। श्रद्धावान भक्त की भाँति पत्नी का अनवरत प्रवचन सुनने से भोला महराज पर जो असर पड़ना था वह पड़ा किन्तु यह प्रभाव बंशी के नौकरी पाने के बाद प्रगट हुआ। बंशी की नौकरी के लिए छोटई महराज ने जमीन-आसमान एक कर दिया। अपने बड़े भाई की इच्छा के विरुद्ध (भले ही वह विरुद्धता दिखावटी ही रही हो) उन्होंने हाकिमों को खुश करने के लिए अपनी दो दुधारू गायों को बेच दिया। हाकिमों के पाँवों पर गिरे, तब जाकर कही बंशी की नौकरी लग पाई। बंशी के नौकरी पा जाने पर वह गाँव गिराँव में सीना तान कर घूमे, बहुत खुश दिखे थे। उसी दिन उनकी पत्नी ने उनसे सहमते हुए कहा–"नन्हका को पिलाने के लिए दूध नहीं है, आज दिन भर भूख से रोता रहा।" पत्नी के इस कथन में छोटई महराज ने बंशी के प्रति पत्नी की इर्ष्या को देखा। उनको बहुत क्रोध आया लेकिन उसे दबा कर वह हँस कर बोले– "अब गाय की और दूध की कौन-सी कमी रहेगी? एक महीने की बात है, किसी तरह दाल का पानी सानी पिलाकर बिता दो। बंशी जैसे ही तनखाह पाएगा वैसे ही एक अच्छी-सी गाय खरीदकर लाएंगे।"

छोटई महराज का यह सपना उसी दिन चूर हो गया जिस दिन उनकी भाभी ने–"अब बहुत सह चुकी, अब मैं नहीं सहूँगी" कहकर अलग चूल्हा जला लिया। बंशी को नौकरी मिले अभी एक माह पूरे नहीं हुए थे। छोटई महराज ने आशापूर्ण निगाहों से अपने बड़े भाई की ओर देखा कि–भैया जरूर भाभी को डाँटकर ऐसा नहीं होने देंगे। किन्तु भोला महराज शान्त बने रहे। उन्होंने कहा–"छोटई औरतों का यह रात दिन का किच-किच किसी तरह दूर करो। चाहे यह एक में रहें या

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अलग रहें पर अब शान्ति चाहिए। मैं तो एकदम परेशान हो गया। तुम तो दिनभर गाय चराते हो, यहाँ दिन भर मैं रहता हूँ। तुम्हारी पत्नी तो इतनी मुँहजोर है कि बखरी के बाहर तक लड़ने की उसकी आवाज सुनाई देती है।''

छोटई महराज ने बहुत कोशिश की कि यह अलगा-गुजारी न हो लेकिन भोला महराज के नकारात्मक सहयोग से वह सफल नहीं हो पाए। अलगा गुजारी होनी ही थी हो गई, इसके लिए तो छोटई महराज दु:खी थे ही किन्तु सब से बड़ा दु:ख उन्हें तब होता जब पत्नी कहती–''देखाऽ, हमारी बात नहीं सुनते थे, अब कैसा उन लोगों ने धोखा दिया? हमारी बात सुनते तो आज हमारे भी हाथ में चार पैसा रहता।'' प्रत्यक्ष प्रमाण द्वारा जब वह अपनी पत्नी के सामने मूर्ख साबित होते तो उनका क्रोध अपने बड़े भाई के प्रति उभड़ जाता।

विश्वास का बीज कालान्तर में प्यार का वृक्ष बनकर सुखद छाया देने लगता है किन्तु जब उस पर आघात लगता है, विश्वासघात होता है, तो वही बीज घृणा का उतना ही बड़ा वृक्ष पैदा करता है जितना विशाल प्यार का वृक्ष रह चुका होता है। इस वृक्ष में स्मृतियों के छोटे-छोटे पैने काँटे होते हैं जो घटनाओं के हल्के झोकों से भी हिलकर हृदय में चुभने लगते हैं।

बंशी अपने चाचा के प्यार और त्याग को पूर्णरूप से नहीं भूल पाया था। उसके हृदय में चाचा के प्रति हल्की श्रद्धा अब भी शेष थी। इसलिए अपने दरवाजे पर आने के कुछ देर बाद उसने दुकान में जाकर अपने चाचा का चरणस्पर्श किया। छोटई महराज ने गदगद होकर आशीर्वाद दिया और पूछा–''अउर सब ठीक है न बंशी? बैठो'' बगल में बोरे के आसन की ओर संकेत किया।

''हाँ चाचा सब आपकी दया है'' कहता बंशी आसन पर बैठ गया।

''मेरी दया क्या सब भगवान की दया है। इस कलजुग में आदमी में कहाँ दया-माया है?'' उनका अचेतन मन मस्तिष्क अनजाने में भी अपने बड़े भाई के कृत्यों को क्षमा नहीं कर पाता था। छोटई महराज नहीं जानते थे कि वे इस तरह की बातें अब बहुत अधिक क्यों कहने लगे हैं। बंशी इस बात को समझता था। उसे अपने पिता द्वारा चाचा को असहाय अवस्था में अलग किया जाना अन्याय लगा था किन्तु पिता के प्रति एक स्वाभाविक लगाव होने के कारण वह विद्रोह भी नहीं कर सकता था। बस पिता और चाचा के बीच अपना सामन्जस्य बनाने का सर्वदा प्रयास करता। वार्ता का रुख मोड़ने के लिए उसने छोटई महराज के बड़े लड़के के लिए पूछा–''हरि मोहन कहाँ है? दिखाई नहीं पड़ा।''

''अभी तुम्हारे दरवाजे से शिव मोहन दौड़ा-दौड़ा आया था। कह रहा था– बंशी भैया फटफटिया से आए हैं–मैंने कहा तुम भी पढ़ो, तुम भी फटफटिया पर चढ़ना'' कहकर छोटई महराज हँसे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"हाँ कक्का, छोटे दरोगा कहने लगे, तुम्हारा गाँव देखेंगे, उन्हीं की फटफटिया पर आया हूँ। साथ में एक सम्पादक जी भी हैं।"

"एक नहीं दस मेहमान आएँ, गेदुर के घर मेहमान आए तो वह भी एक डाल पकड़कर लटके। यह देहात है कोई शहर तो है नहीं कि रोटी के लिए आदमी चोर बनेगा। घाघ ने कहा है–गुड़ गोहूँ गोरस हैं जाके, तृण समान पाहुन है ताके। का हो कल्लू का हम झूठ कह रहे हैं?" छोटई महराज ने ऊँघते कल्लू से पूछा।

"नाहीं कक्का आप ठीक कहत हैं, आवैं न मेहमान कितना खाएँगे?"

बंशी ने देखा कि बात का सिलसिला अगर रोका नहीं गया तो बहुत देर हो जायेगी। इसलिए आसन से उठते हुए उसने कहा–"हरि मोहन को भेज दीजिए, मेहमानों को खिला-पिला दे।"

इस समय छोटई महराज के हृदय में भाई के प्रति उपजे घृणा के वृक्ष पर बंशी के स्नेह की सुमधुर छाया पड़ रही थी। उसके वात्सल्य की स्मृतियाँ उनके हृदय में नर्तन कर रही थीं। वह भाव-विह्वल हो कर बोले–"इसमें कहने की कौन सी बात है? तुम्हारा भाई है उसे लिवा जाओ। कोई अधिक काम हो तो अपनी चाची को भी लिवा जाओ। जाओ घर में कह दो। हमारा तो रामायन पढ़ने का समय हो गया है" कहकर छोटई महराज रामायण पर झुक गए और हाथ जोड़कर 'जै सियाराम जै जै सियाराम' कहा। बैठे भक्तों ने समवेत स्वर में दुहराना शुरू कर दिया।

बंशी ने हरि मोहन को पुकारा और उसे साथ लेकर जब अपने दरवाजे पर आया तो देखा कि दरोगा और सम्पादक जी अपनी-अपनी चारपाई पर बैठे चाय पी रहे हैं। भोला महराज कह रहे थे–"सरकार यह शुरू से ही पढ़ने में बहुत तेज था।" उसी समय बंशी ने दालान में प्रवेश किया। उसे देखते ही सम्पादक जी ने कहा–"अरे आओ भाई, तुम्हारी ही बात हो रही थी। कहाँ चले गए थे?"

बंशी के उत्तर देने के पहले ही भोला महराज बोल पड़े–"कुछ पूछिए मत, गाँव पर भी एक मिनट थिर नहीं रह सकता, सारा गाँव बंशी भैया, बंशी भैया कहता रहता है। कोई रमायन के चौपाई का अरथ पूछने लगता है, कोई कुछ कोई कुछ।"

"यह तो अच्छी बात है पिता जी। जिसे दस आदमी सम्मान दें, उस पर विश्वास करें वही अच्छा आदमी है नऽ?" सम्पादक जी ने चाय का प्याला जमीन पर रखते हुए कहा।

"अरे, अरे आप यह क्या कर रहे हैं? बैठे रहिए। फन्नू! देखो वह चाय का प्याला उठाकर ले जाओ" भोला महराज ने कहा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

फन्नू पास में ही खड़ा था। उसने आगे बढ़कर चाय का प्याला उठाया तभी दरोगा ने भी अपनी चाय समाप्त कर प्याला फन्नू की ओर बढ़ा दिया। एक हाथ के फन्नू के लिए दो प्यालों को एक साथ पकड़ना मुश्किल पड़ा तो हरि मोहन ने आगे बढ़कर प्याला थाम लिया और घर में चला गया। भोला महराज ने जाते हुए हरि मोहन पर उपेक्षात्मक दृष्टि डाली। उसकी ओर से निगाह घुमाकर दरोगा से बोले–"अब सरकार दिशा मैदान हो लें, भोजन भी तैयार हो चला है।"

"इतनी जल्दी खाना तैयार करवा दिया। अभी तो हम लोग गाँव घूमेंगे। क्यों बंशी?" दरोगा ने बंशी की ओर देखते हुए कहा।

"इधर का गाँव क्या आप की तरफ जैसा गाँव है? दो घर इस खलान में तो चार घर उस ऊँचाई पर, रास्ता भी बड़ा ऊबर खाबड़, सुबह देख लीजिएगा" भोला महराज ने अपनी सलाह दी।

दरोगा जी गाँव क्यों देखना चाह रहे हैं, भोला महराज को क्या किसी को पता नहीं था।

"सुबह ड्यूटी पर पहुँचना है, समय कहाँ मिलेगा?" कहते हुए दरोगा जी अपनी चारपाई पर से उठे, उनके साथ सम्पादक जी भी उठे।

बंशी ने ओसारे में लटक रही लालटेन को उतार कर अपने हाथ में ले लिया–"आप बैठिए, मैं इन लोगों को गाँव दिखाकर आ रहा हूँ" अपने पिता से कहा और आगे-आगे पथ दिखाता चल पड़ा।

सबसे पहले बंशी उन लोगों के साथ अपने चाचा की दुकान पर पहुँचा। उस समय छोटई महराज रामायण में भरत मनावन प्रसंग पढ़ रहे थे। उनकी आँखों से आँसुओं की अविरल धारा प्रवाहित हो रही थी। शायद इस प्रसंग ने उनके मन में पल रहे बड़े भाई के विश्वासघात के दर्द को जगा दिया था। अश्रुपूरित पलकों को उठाकर उन्होंने–"तब सतजुग था भैया, ऐसे ही भाई होते थे" कहा और बिलखकर रो पड़े।

सम्पादक सिद्धनाथ छोटई महराज की इस भावविभोर स्थिति को बहुत तन्मय होकर देख रहे थे। इसके विपरित दरोगा ने वहाँ की हवा में तैर रहे गाँजे के धूएं की गंध को सूंघा और पूछा–"ये भक्त गाँजा भी पीते है क्या?"

"रातदिन परिश्रम करने वालों का यह सबसे सस्ता नशा और रामायण सबसे शुद्ध और अच्छा मनोरंजन है" सिद्धनाथ जी ने समझाया।

"ये लाते कहाँ से हैं? कहीं आसपास इसकी अवैध खेती तो नहीं होती या कोई खुफिया तौर पर बेचता तो नहीं?" दरोगा की टोही प्रवृत्ति जग गई। भरत चाहे राम को मनाएं या रावण को, अर्थलोलुपों के लिए कोई अर्थ नहीं रखता।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वार्तालाप की आवाज छोटई महराज के कानों में पड़ी तो उन्होंने अपनी आँसुओं से भीगी आँखों को उठाकर देखा। सामने वर्दीधारी दरोगा, सम्पादक जी तथा बंशी खड़े दिखाई पड़े। सम्पादक जी ने बड़ी श्रद्धा से आगे बढ़कर छोटई महराज का चरणस्पर्श किया। दरोगा अनमना-सा खड़ा रहा।

"आइए, बैठिए आप लोगों की क्या सेवा करूँ?" कहकर छोटई महराज ने रामायण सुनने वालों को इशारा किया। उन लोगों ने तुरन्त बोरा बिछाकर सबको बैठने का आसन तैयार कर दिया।

"नहीं नहीं, बैठना नहीं है। अभी हम लोग आगे चल रहे हैं फिर कभी आएंगे तो आप का रामायण सुनेंगे" दरोगा ने आगे कदम बढ़ाते हुए कहा। उसके पीछे बंशी और सिद्धनाथ भी आगे बढ़ गए। रास्ते में दरोगा ने कहा–"बड़े साहब ने आश्रम के लिए जमीन देखने को कहा है, वही देखने चल रहा हूँ।"

सिद्धनाथ जी ने तुरन्त समझ लिया कि यह पिछली रात बाबा के मिलने का असर है। वह तो चुप रहे लेकिन बंशी ने पूछा–"कैसा आश्रम? किस बाबा के लिए?"

"मुझे पूरी बात नहीं मालूम। बड़े साहब के मुँह से सुना है कि कोई बहुत बड़े सिद्ध बाबा हैं वही जन सेवा के लिए कोई आश्रम खोलना चाह रहे हैं जिसमें बच्चों के लिए स्कूल, गरीबों के लिए अस्पताल आदि की व्यवस्था होगी।"

"इस जंगल में आबादी ही कितनी है जिसके लिए यह सब व्यवस्थाएं होंगी?"

"तुम आज न इसे जंगल देख रहे हो? शीघ्र ही इधर से पक्की सड़क निकलेगी। यहीं पास में नदी उस पार सरकारी फैक्टरी बनेगी, यहाँ की जमीन हीरा हो जाएगी हीरा। यही अवसर है व्यवस्था से लेकर बाबा तक सभी इस हीरे की लूट में लामबन्द हो चुके हैं, तुम भी साथ दो, लाख दो लाख कमा लो" दरोगा ने संजीदगी से कहा।

लखपति होने के लालच ने बंशी का मन डगमगा दिया। उसने पूछा–"किस तरफ की जमीन महंगी बिकेगी?"

"मैं सब बता दूँगा, तुम बस सौदा पटाओ और कुछ मत करो। सस्ती से सस्ती पटाकर कुछ पैसा देकर सट्टा लिखवा लो। साल दो साल में यहाँ की जमीन का भाव आसमान छूने लगेगा। उसी समय उसे बेचेंगे। मुनाफे में सम्पादक जी भी हिस्सेदार रहेंगे।"

"आप लोग अपने कार्यक्रम से कमाइए, जो जी में आए वह दे दीजिएगा लेकिन मुझे किसी काम में शामिल मत करिए, क्योंकि मैं बहुत अभागा व्यक्ति हूँ। अग़र मेरा नाम ले लेंगे तो होता काम भी रुक जाएगा" सम्पादक जी ने हँसकर कहा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तीनों आदमी वार्तालाप करते आगे बढ़े। सामने रामधनक का घर आ गया। अपने झोपड़ीनुमा घर के सामने मगरू बैठा दिखाई पड़ा। वह हड़बड़ाकर उठ खड़ा हो गया। दरोगा और सम्पादक जी दोनों की दृष्टि उस पर पड़ी। "मगरू! यही तुम्हारा घर है?" सम्पादक जी ने पूछा।

"हाँ सरकार, आप लोग कहाँ घूम रहे हैं?"

"तुम्हारा ही घर देखने तो हम लोग चले आ रहे हैं। आज करमा सुनेंगे, सुना है तुम भानर बहुत अच्छा बजाते हो" सम्पादक जी ने कहा।

"हाथ खराब है सरकार नहीं तो बजाकर सुना देता।"

"न हो तो आज किसी और से भानर बजवा कर करमा सुनवाओ। आज हम लोग करमा सुनेंगे, इसलिए तुम्हारे यहाँ आए हैं। आज का करमा हम टेप करेंगे, जैसे अस्पताल में तुम्हारी आवाज को मैंने टेप किया था।"

बुधनी झोपड़ी के दरवाजे से चिपकी सब बातें सुन रही थी। उसे बड़ा उछाह हो रहा था कि जैसे मगरू भैया की आवाज मशीन में भरी गई थी वैसे ही उसकी भी आवाज मशीन में भरी जाय। करमा गाए जाने के लिए अपनी उपस्थिति का ज्ञान कराने हेतु वह झोपड़ी से बाहर निकल आई।

"लो करमा गाने वाली भी आ गई" बंशी ने हँस कर कहा। बुधनी ने शरमा कर अपना सिर नीचे कर लिया और दिखावे के लिए बगल की झोपड़ी की ओर जाने लगी।

"हरे बुधनी देख, साहब लोग आज करमा सुनेंगे। परबतिया, सुगमुनियाँ, इनरिया, अउर दो चार को बुला ले, बंशी भैया के दरवाजे पर आज करमा होगा।" मगरू ने अपनी बहन को सहेजा।

बुधनी तो यही चाहती थी। उसने रुककर कहा–"अभी तो सब ठेकेदार के यहाँ बालू लादने गईं हैं, देर में आएँगी।"

"अभी तो साहब लोग खाना-पीना करेंगे, तब तक सब आ जाएँगी" कहकर मगरू ने बंशी की ओर देखा।

"हाँ हाँ अभी तो खाना-पीना होने में डेढ़-दो घंटे लग ही जाएँगे" बंशी ने मगरू को आश्वस्त किया।

करमा का कार्यक्रम निश्चित कर तीनों लोग आगे नदी की ओर बढ़े। नदी किनारे आकर दरोगा ने खड़े होकर उंगली के इशारे से बताया–"नदी उस पार फैक्ट्री बनेगी। वह जो ऊँची वाली जमीन दिखाई पड़ रही है, वही मुख्य बाजार होगा और ठीक उसकी बगल में जो जंगल विभाग की जमीन है, उस पर सरकारी आवास होगा। मुख्य बाजार और सरकारी आवास के बीच से मुख्य सड़क निकलेगी। समझ रहे हो न?" दरोगा ने बंशी से पूछा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"जी" बंशी ने संक्षिप्त-सा उत्तर दिया।

"वह ऊपर वाली जमीन किसकी है?" दरोगा ने विशाल टीले नुमा जमीन की ओर इशारा किया।

"बहुत खराब जमीन है। उसमें हमारे चाचा की अधिक जमीन है, कुछ मेरी है और फन्नू धांगर की चार पाँच बीघे होगी।"

"फन्नू कौन?"

"वही एक हाथ वाला आदमी जो चाय परस रहा था।"

"ठीक है पहले उसी को पटाओ, गरीब है सस्ते में दे देगा।"

"बहुत गरीब आदमी है, फिर एक हाथ का। मेरा तो कलेजा काँप जाता है।"

"जब ऐसे सोचोगे तो मिल चुके लाख दो लाख। जो बिक सकता है, उसी को खरीदोगे कि टाटा बिड़ला को खरीदोगे। बाबा जी भी तो इसमें से ही लेंगे" दरोगा ने बंशी को समझाया।

"गंजेड़ी शंकर भगवान को गाँजे की चिलम दिखाकर गाँजे को पवित्र कर लेता है, शराबी अपने अघोरी गुरु के नाम पर दो बूंद शराब गिरा कर शराब को पवित्र कर पी जाता है, मुलसलमान अल्लाह का नाम लेकर हत्या को जायज कर लेता है, तो बंशी तुम्हें भी अवसर मिला है, बाबा का नाम लेकर काट दो गर्दन। हाँ यह अवश्य याद रखना कि तुम हिन्दू हो, तुम्हारे यहाँ झटका चलेगा, एक झटके से गर्दन उतरे" कहकर सम्पादक जी हँसे।

दरोगा ने सम्पादक जी के व्यंग को समझा अवश्य किन्तु व्यंग को अपने उपयोग में लेने के लिए उसने कहा–"सम्पादक जी ठीक कह रहे हैं, बंशी इसे समझो।"

दरोगा से लाख-दो लाख की बात सुनकर बंशी को लालच ने फिर घेरा किन्तु सम्पादक जी के व्यंग ने उसकी चेतना को झकझोर दिया। वह बोला–"ऐसा है साहब, कि यहाँ की सारी छोटी जातियाँ हमारे चाचा पर बहुत विश्वास करती हैं। अगर वह चाह लें तो यहाँ सस्ते में अधिक जमीन मिल सकती है।"

"चलो तुम्हारे चाचा से ही बात कर लें। क्यों सम्पादक जी ठीक रहेगा न?" दरोगा ने सम्पादक जी की सहायता के लिए उनकी ओर देखा।

सम्पादक जी ने इस प्रकार से अपने सर को उत्तर की ओर झटका दिया जिसमें हाँ, ना दोनों का बोध था। तीनों छोटई महराज की दुकान पर लौटकर आ गए। जिस समय ये लोग दुकान पर पहुँचे छोटई महराज रात का भोजन कर हाथ में रोटी का टुकड़ा लिए कुत्ते को तूऽऽ, तूऽऽ कर के पुकार रहे थे। वहाँ पर पहुँच कर बंशी–"अब आप लोग बात करिए, तब तक मैं घर पर होता आऊँ" कहा और चला गया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कुत्तों को कौरा देकर छोटई महराज ने हाथ मुँह धोया और इन लोगों की ओर प्रश्नात्मक दृष्टि डाली। पूछा–"गाँव देख आए? बैठिए" सामने पड़ी चारपाई की ओर इशारा किया। दरोगा ने दुकान में झाँककर कहा–"चलिए दुकान के अन्दर ही बैठेंगे।"

छोटई महराज ने दुकान के अन्दर दो बोरे बिछा दिए जिस पर वे दोनों बैठ गए। वह स्वयं अपनी दुकान की गद्दी पर बैठते हुए बोले–"क्या सेवा करूँ?"

"सेवा कुछ नहीं पंडित जी, बंशी आपकी बहुत तारीफ कर रहे थे इसलिए आपके दर्शन के लिए चला आया" दरोगा ने छोटई महराज को चढ़ाया।

छोटई महराज मन ही मन अत्यधिक प्रसन्न हुए और बोले–"सरकार मेरा दर्शन क्या, दर्शन तो सभी एक दूसरे में प्रभु का करते हैं। हम आप के भीतर बैठे प्रभु का दर्शन कर रहे हैं, आप मेरे...।"

"बहुत अच्छी बात कही आपने, यही भारतीय दर्शन है। देखिए दरोगा जी, भारत और भारत की संस्कृति, उसका दर्शन जीवित है तो इन्हीं गाँवों में, इन्हीं जंगलों में। पंडित जी, आप पढ़े कितना है?" सम्पादक जी ने पूछा।

"रमायन बाँच लेते हैं, प्रभु कृपा से कुछ सतसंग करने को मिला है, यही हमारी पढ़ाई है।"

"तब तो महराज आप ही के लायक एक काम यहाँ पर होने जा रहा है, अगर आप चाहें तो हो जाएगा" दरोगा ने पंडित जी की धार्मिक रुचि देखकर समय पर निशाना साधा।

"हमसे कौन काम होगा सरकार, हम अनपढ़ गवाँर किस काम लायक हैं? यह हमार बड़ भल सेवकाई, लेहिं न बासन बसन चोराई।"

"एक बहुत बड़े सिद्ध बाबा हैं, उनको आश्रम के लिए जमीन चाहिए। आप अगर चाहेंगे तो मिल जाएगी" दरोगा ने भक्ति-भावपूर्ण स्वर में कहा।

"सिद्ध बाबा के लिए जब हम चाहेंगे तब जमीन मिलेगी! वाह रे सरकार। सिद्ध अपना मन होता है, जब मनै सिद्ध नहीं है तो कोई सिद्ध नहीं है" कहकर छोटई महराज हँसे।

"नहीं नहीं ये ऐसे-वैसे बाबा नहीं है जैसा आप सोच रहे हैं।"

"सरकार हम सोच नहीं रहे हैं, हम देख रहे हैं। जब बड़के भैया ने मुझे अलग कर दिया, मेरे बाल बच्चे भूखों मरने लगे, कहीं कोई काम न धाम, तब मैं घबरा कर घर से भागा। दो बरिस तक काशी, परयाग, हरिद्वार, बड़े-बड़े आश्रमों में, सिद्धों के यहाँ भटकता रहा। उस समय मैंने देखा कि ये आश्रम वाले हमसे भी अधिक माया के लिए परेशान हैं, पाप में लिप्त हैं। बड़ी हैसियत वाले भक्त को बड़ी इज्जत, छोटी हैसियत वाले को छोटी और मेरे जैसे भिखमंगों को

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दुत्कार मिलती है। बड़ी माया है इन आश्रम वालों की। मैंने सब देखा है। जा रे अपने घर लौट जा। बरम्हा ने सारे संसार को पैदा किया, तूने अपने परिवार को। तूँ अपने परिवार का बरम्हा है, अब जा बिसनू बन कर उनका पालन कर–काशी में गंगा माँ की रेती पर पड़े एक साधु ने मुझे यही उपदेश दिया। घर लौट आया, अब बिसनू का काम कर रहा हूँ।''

छोटई महराज की बात सुनकर दरोगा हतप्रभ हो गया। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह इस दरिद्र विष्णु से क्या कहे। कुछ देर तक चुप रहने के बाद वह बोला–''पंडित जी, जब आप विष्णु बन गए हैं तो लक्ष्मी भी तो चाहिए।''

''वह तो मेरे घर में अनपुरना बन कर, जो कुछ भी उसका बिसनू उसको रूखा-सूखा देता है, उसे बनाकर बच्चों को खिला-जिला रही है, सरकार।''

''नहीं नहीं, मैं उस लक्ष्मी की बात नहीं कर रहा हूँ, मैं तो इस लक्ष्मी की बात कर रहा हूँ'' कहकर दरोगा ने अंगूठे और तर्जनी से रुपया बजाने का इशारा किया।

''आप जिस लक्ष्मी की बात कर रहे हैं, वह लक्ष्मी नहीं माया है। अगर आप इसकी बात करना चाहते हैं तो हमारे बड़के भैया से कर लीजिए।''

''अच्छा पंडित जी, आश्रम की बात जाने दीजिए। आप मुझे अपने उस टीले वाली पथरीली जमीन में से एक बीघा दे दीजिए। जो पैसा कहें, दे दूँ।''

''अरे राम राम, कोई अपनी माँ को बेचता है सरकार? आप कैसी बात कर रहे हैं? पथरीली हो या अच्छी माँ तो माँ–खाबसूरत हो या बदसूरत।''

''माँ तो देश की सारी धरती है पंडित जी, बुरा न मानिएगा, आप अपने खेत को ही माँ कह रहे हैं?'' सम्पादक जी ने छोटई महराज को तर्क का आनन्द लेने के लिए छेड़ा।

''ओइसे तो साहब संसार की सब मेहरारू माँ समान है, लेकिन अपनी माँ एक खास माँ होती है जो पालन-पोसन करती है तो यह खेत हमारी खास माँ है सरकार, छोटई महराज ने हाथ जोड़ कर कहा।''

स्वार्थ न सध पाने के कारण दरोगा को, छोटई महराज के इस आस्थावान निश्छल स्वरूप पर प्यार नहीं क्रोध आ रहा था। दरोगा की पढ़ी-लिखी चतुराई एक अनपढ़ के सीधेपन से हार रही थी। उसने उठते हुए कहा–''अच्छा ठीक है, फिर मिलेंगे।''

दरोगा ने भरसक प्रयास किया कि चलते समय वाणी में मधुरता बनी रहे, किन्तु ऐसा न हो सका। ''फिर मिलेंगे'' शब्द उसके मुँह से ऐसा निकला जैसे वह धमका रहा हो। छोटई महराज उसके इस परिवर्तन को देख कर घबरा गए। उनकी समझ में नहीं आया कि उनसे क्या गलती हो गई?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सम्पादक जी ने झुक कर छोटई महराज के पाँव छुए तो आशीर्वाद देने में उनका गला भर्रा गया। "अगर कुछ गलती हो गई हो तो माफ कर दीजिएगा" उनके मुँह से बड़ी मुश्किल से निकल पाया।

"कैसी गलती, कोई गलती नहीं" कहते हुए सम्पादक जी और दरोगा भोला महराज के दरवाजे की ओर चल पड़े। रास्ते में दरोगा ने कहा–"साला नहीं तो, खाने बिना मर रहा है और ज्ञान बघार रहा है, दरिद्र कहीं का।"

दरोगा को यह पता नहीं था कि भूख ही मनुष्य के ज्ञान की प्रथम कुंजी है। भूख ने ही सबसे पहले आदमी को खाद्य और अखाद्य का ज्ञान दिया था। ज्ञानी महलों में अवश्य पैदा हुए लेकिन ज्ञान उन्हें कुटियों में ही मिला है।

सम्पादक जी दरोगा की झल्लाहट को सुन कर मन ही मन प्रसन्न होते रहे, वह बोले कुछ नहीं। दोनों भोला महराज के दरवाजे पर जब पहुँचे तो वहाँ खाने की पूरी व्यवस्था हो चुकी थी। हाथ-पाँव धोकर दोनों सीधे खाने के आसन पर बैठ गए। घर के मुखिया होने के कारण भोला महराज ने दोनों का खाने में साथ दिया। हरि मोहन ने बंशी की देखरेख में खाना परसा।

खाते-खिलाते रात्रि के ग्यारह बज गए। जब यह लोग खाकर उठे तो कातिक का चाँद पूरब में अपनी आभा बिखेर कर निकल रहा था। निर्मल आकाश में चमेली के फूल जैसे तारे बिखरे पड़े थे। चाँद आकाश की ओर धीरे-धीरे उठता ऐसा लग रहा था जैसे स्वप्न सुन्दरी अपने केश में गूथने के लिए छिटके चमेली के पुष्पों को चाँदी के थाल में चुनने आ रही हो। कार्तिक की मीठी सरदी स्वप्न सुन्दरी के इस अनुपम लावण्य को निरख कर सिहरने लगी थी। उसी समय आगे-आगे मगरू उसके पीछे पाँच छः युवक और युवतियाँ भोला महराज के दरवाजे पर आकर खड़ी हो गईं।

"तुम लोग आ गए? ठीक है, ठीक है। बंशी, बुरा न मानना, जरा चारपाई नीम के नीचे डलवा दो, उसी पर बैठकर हम लोग सुनेंगे" सम्पादक जी ने चहकते हुए कहा। चारपाइयाँ नीम के पेड़ के नीचे डाल दी गईं। सम्पादक जी उत्साह से और दरोगा जी बेमन से अपनी-अपनी चारपाई पर बैठे। पाँच नौजवान एक कतार में और उन्हीं की ओर मुँह किए पाँच युवतियाँ दूसरी कतार में कुछ दूरी बना कर खड़ी हो गईं। मगरू का हाथ ठीक नहीं था, इसलिए उसने मानर बजाने की जिम्मेदारी एक दूसरे नौजवान को सौंप दिया। सम्पादक जी ने अपना कैमरा निकाला। सबसे पहले उन्होंने क्रम से खड़े करमा गायकों का चित्र लिया। नीम के वृक्ष के नीचे चाँदनी टुकड़ों-टुकड़ों में बिखरी पड़ी थी। युवक महुए की शराब पिए गाने को बेताब हो रहे थे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सिद्धनाथ जी ने अपना टेप खोल दिया, भानर पर थाप पड़ी, मगरू ने करमा प्रारम्भ किया और मानर के थाप के साथ-साथ आगे बढ़ा–"बनवाँ में रहतेऽ बनफल खातेऽ सूगाऽऽ गइलै शहर दूध भातेऽ! सूगाऽऽ के तोरा गाढ़े लोहे सिकड़िया। केरे गाढ़े रुनझुन होऽऽ। सूगाऽऽ लोहरा त गाढ़े सूगा लोहे के सिकरिया, सोनरा गढ़े ला रुनझुन होऽऽ। सूगा कै दिन रहे सूगा लोहे के सिकरिया। दस दिन रहे लोहे के सिकरिया, सिरमाटी रहे रुनझुन होऽऽ।" मानर गमक कर बज उठा। युवतियों के पैरों में थिरकन आई। वे एक दूसरी का हाथ पकड़े, झूमते हुए कदम-कदम आगे बढ़ती गाने लगीं–"वाले हे सूगा बिजुल बन में।"

गायक नवयुवक, जितने कदम युवतियाँ उनकी ओर बढ़तीं, वे उतने ही कदम पीछे की ओर खिसकते जाते। कुछ कदम आगे बढ़ने के पश्चात् युवतियाँ भानर के ताल पर पीछे खिसकने लगतीं, युवक उसी ताल पर कदम-कदम गाते हुए आगे बढ़ते। पुरुषों में मगरू का स्वर और महिलाओं में बुधनी का स्वर सारे स्वरों को दबाकर हवा में लहरा जाता। प्रकृति के प्रांगण में सारी रात भानर बजता रहा, स्वर आकाश छूते रहे। दरोगा जी औंघते कब सो गए, उन्हें पता ही नहीं और सम्पादक जी ने कितने चित्र खींचे उन्हें पता नहीं।

करमा के लोक कलाकार थक कर चूर हो गए। उनके ऊपर से महुए का नशा धीरे-धीरे उतरने लगा, उधर पूरब में धीरे-धीरे लालिमा छाने लगी फिर ज्योति की एक सुनहरी रेखा उभरने लगी। सूरज मुँह धुले सुकुमार बालक-सा हँसता प्रगट हुआ तब भानर पर अन्तिम थाप पड़ी।

दरोगा जी कसमसाते उठे तो देखा कि सम्पादक जी अपना झोला समेट रहे हैं और करमा गायक जाने की तैयारी में हैं। सम्पादक जी ने अपनी जेब में हाथ डालकर कुछ नोट निकाला और कहा–"मगरू! बुरा न मानना, ये दस दस रुपए के दस नोट हैं, इन्हें एक-एक सब को दे दो, दरोगा जी की ओर से इनाम है।"

दरोगा जी को सम्पादक जी का यह कार्य पसंद नहीं आया फिर भी हँसते हुए कहा–"ले लो, ले लो मेरी ही ओर से समझो। हमारा इनका पैसा कोई बाँटा हुआ है?"

सभी कलाकारों ने हिचकते हुए पैसे ले लिए और जाने लगे तभी बुधनी ने धीरे से मगरू के कान में कुछ कहा। सम्पादक जी ने हँसकर पूछा–"क्या कह रही है?"

मगरू ने हिचकिचाते हुए कहा–"कुछ नहीं सरकार, कह रही है कि मशीन में जो आपने भरा है उसे सुना दीजिए।"

"अच्छा अच्छा, यह बात है" कहते हुए सम्पादक जी ने टेप चला दिया। टेप बजने लगा, जाते कलाकार ठिठक गए। अपनी आवाज सुनने का सुख वे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रथम बार पा रहे थे, इसलिए बहुत प्रसन्न हुए। बुधनी ने उन लोगों की ओर इस दृष्टि से देखा जैसे कह रही हो–"देखा, मैं तुम लोगों से कितना अधिक जानती हूँ।"

टेप बजता छोड़ सम्पादक जी दरोगा के साथ नित्यक्रिया से निवृत्त होने नदी की ओर चले गये। लौटकर आये तो देखा, सभी लोग अभी भी डटे हुए हैं और टेप बज रहा है। उन्होंने बुधनी की नीलगाय जैसी चंचल सुचिक्कन काया को जी भर निहारा और टेप बन्द करके कहा–"बुधनी फिर आऊँगा तो सुन लेना, अभी तो बहुत है।"

टेप बन्द होते ही सभी लोग अपने-अपने घर की ओर चले गए। बुधनी जाते समय सम्पादक जी की ओर चोर निगाहों से देखती प्रस्थान कर गई। भोला महराज के घर से चाय आई, सबने पी। भोला महराज मेहमानों के पास बैठ गाँव-घर की चर्चा करते रहे। दरोगा को छोटई महराज से की गयी शाम की वार्ता याद आई। उसने कहा–'पंडित जी, मैं यहाँ पर क्यों आया, यह तो आप को मालूम नहीं होगा?'

भोला महराज की दुनियावी बुद्धि चौकन्नी हुई। उन्होंने कहा–"हम को क्या मालूम सरकार, यही करमा सुनने आए होंगे।"

"नहीं भाई, असल बात यह है कि एक सिद्ध महात्मा हैं, वह इधर ही गरीबों की सेवा के लिए अपना आश्रम बनवाना चाहते हैं। उनके आश्रम के लिए कुछ जमीन चाहिए।"

"हम लोगों के धन भाग सरकार जो सिद्ध महात्मा आएँ। लेकिन जमीन इधर बहुत महंगी है। दान में कोई विस्सा दो विस्सा दे देगा, उतने से काम चलेगा नहीं" दरोगा की बातों में पैसे की गन्ध सूंघकर भोला महराज ने कहा।

'कितने बीघे मिलेगी?'

'यही हजार पन्द्रह सौ रुपए बीघे।'

"यह तो अच्छी जमीन का भाव है। हमें जो ऊबड़-खाबड़ बेकार पड़ी जमीन चाहिए।"

"यह मैंने ऊबड़-खाबड़ जमीन का ही भाव बताया है। अच्छी जमीन कौन बेचेगा? रात दिन आबादी बढ़ रही है। बच्चे कहाँ जायेंगे?"

'मैंने बंशी से सारी बातें बता दी हैं वैसे आप से भी बता दूंगा' कहकर दरोगा ने विस्तार से अपने सारे कार्यक्रम की रूप-रेखा जो बंशी को बता चुके थे, भोला महराज को बता दिया।

भोला महराज अति उत्साहित हो गए–"यह सब लौंडे-लपाड़ियों का काम नहीं है सरकार। देखिए मैं सब काम कर देता हूँ कि नहीं। फन्नू को समझाकर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उसकी जमीन का सट्टा दस-पाँच दिन के अन्दर करवा देता हूँ'' कहते हुए भोला महराज जेब से खैनी निकाल कर मलने लगे।

''अधिक मंहगा नहीं होना चाहिए, नहीं तो हम लोगों की हिस्सेदारी में पैसे कम आएँगे।''

भोला महराज जब भी उत्साह में होते हैं तो खैनी मलना शुरू कर देते हैं। उत्साह की तीव्रता के अनुपात में ही खैनी पर उनके अंगूठे का घर्षण बढ़ता-घटता है। इस समय अंगूठे का घर्षण बहुत तेज हो गया था। वह मन ही मन अनुमान लगा रहे थे कि चार-पाँच सौ रुपए बीघे का सौदा पट जाएगा। सट्टा करवा दूँगा, जब जमीन बिकेगी तो दो लाख तो नहीं हाँ एक लाख की हिस्सेदारी तो कहीं गई नहीं। इस कल्पना पर उनके मन ने उन्हें फटकारा–'अरे सट्टा दूसरे के नाम होगा, अगर उसने जमीन बेचकर पैसा नहीं दिया तो क्या करोगे? हाँ यह बात तो है। धोखा हो जाएगा, जरूर होगा। रुपए-पैसे के मामले में किसी पर विश्वास नहीं करना चाहिए।' वह तुरन्त बोले–'सरकार, हिस्सा आप और सम्पादक जी लीजिएगा। मैं तो गरीब आदमी हूँ मुझे सट्टे पर प्रति बीघे एक हजार रुपया दे दीजिएगा।'

बेईमान आदमी किसी पर विश्वास नहीं करता। अपने स्वार्थ के लिए वह विश्वास का दिखावा जरूर करता है। भोला महराज और दरोगा दोनो वैसे ही थे। ''चलिए आपकी शर्त मन्जूर है''– दरोगा ने कुछ देर तक मन ही मन हिसाब किताब बैठा कर कहा।

'देखिए, जमीन के विषय में किसी से चर्चा मत करिएगा' भोला महराज ने सुर्ती पर ठोंक लगाई।

'नहीं, अब क्यों चर्चा करूँगा? छोटई महराज से चर्चा किया था लेकिन...'।

'हाँय? आपने उससे सारी बातें बता तो नहीं दिया? नहीं तो सब चउपट हो जाएगा' भोला महराज ने घबरा कर सुर्ती को मुँह में झोंककर पूछा।

'नहीं सारी बातें नहीं बताईं। वह कह रहा था–जमीन अपनी माँ है, यहाँ कोई अपनी माँ को नहीं बेचेगा।'

भोला महराज दरोगा के उत्तर से आश्वस्त होकर बोले–'अरे उसकी बात छोड़िए, वह पागल है।'

जब समाज का नैतिक पतन प्रारम्भ होता है तो आदर्श क्रिया के लिए अथवा बुरी क्रिया के लिए प्रयोग किये जाने वाले शब्दों के स्वरूप एवं अर्थ बदल जाते हैं। नेता शब्द पहले त्याग, तपस्या और ईमानदारी का एवं दलाल बेईमानी का अर्थ देता था किन्तु आज नेता शब्द ऐयाशी तथा बेईमानी का तथा बड़े व्यापारों में दलाल शब्द सम्मान का अर्थ देने लगा है। इसीलिए भोला महराज ने अपने छोटे भाई की ईमानदारी भरी क्रिया को 'पागल' शब्द से विभूषित किया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वार्ता चल ही रही थी कि बंशी घर के भीतर से पिपरी चलने को तैयार होकर आ गया। दरोगा ने अपनी बुलेट स्टार्ट की। तीनों बुलेट से पिपरी की ओर चल पड़े।

भलुआ से लौटकर सिद्धनाथ जी कवि सम्मेलन की तैयारी में जुट गए। सबसे पहले उनकी तीक्ष्ण दृष्टि बाबा सूरज राम द्वारा बताए गए उनके शिष्यों पर पड़ी। वह जानते थे कि डाक्टर रमन बाबा के माध्यम से मिर्जापुर जनपद के एस०पी० से परिचित हैं। इसलिए सिद्धनाथ जी ने अपने कवि सम्मेलन में एस०पी० को डाक्टर द्वारा आमन्त्रित कराने का कार्यक्रम बना लिया। बाबा के शिष्यों के आर्थिक और सामाजिक उपयोग का मन ही मन कार्यक्रम बना कर उन्होंने चन्दे के लिए दी गई अपनी रसीदों पर दृष्टिपात की। उन्होंने एक कुशल मछुआरे की भाँति अपने फैलाए गए रसीदी जाल को देखा और इस जाल में कितनी मुद्रामीन फँस सकती है, इसका आकलन किया। आकलन कुछ इस प्रकार किया कि व्यय आय से अधिक ही आया। आय-व्यय का सन्तुलन ठीक करने के लिए उन्होंने अपने द्वारा बनाई 'संकेत साहित्य परिषद' की मीटिंग बुलाई।

'संकेत साहित्य परिषद' में सिद्धनाथ जी ने अधिकतर निष्क्रिय लोगों को ही सदस्य बनाया था, ताकि वे इनके क्रिया-कलापों में हस्तक्षेप न करें और जनता यह समझती रहे कि कवि सम्मेलन के लिए उतारे गये चन्दे का उपयोग सदस्यों की देख-रेख में ही किया जाता है, लेखा-जोखा में कोई गड़बड़ी नहीं होती। ऐसे सदस्यों का उपयोग वह तम्बू, कनात, माइक आदि की व्यवस्था में करते। कभी-कभी वे इन लोगों को अदाता के पास चन्दे की रसीद देकर भेज देते, जहाँ चन्दा न मिलने पर उन्हें यह महसूस होता कि कवि सम्मेलन में मिलने वाले पैसे की स्थिति ठीक नहीं है। एकमुश्त रकम मिलने वाली जगहों पर वह स्वयं जाकर चन्दा ले आते।

परिषद की बैठक का आयोजन उन्होंने अपने कार्यालय पर ही किया। निर्धारित समय पर परिषद की मीटिंग हुई जिसमें उन्होंने संभावित आय-व्यय का ब्यौरा दिया। ब्यौरे के अनुसार कवि सम्मेलन के लिए अभी दस हजार रुपए की और आवश्यकता थी। इस अतिरिक्त दस हजार रुपए की कैसे व्यवस्था हो? इस पर मीटिंग में बहुत देर तक बहस होती रही। कोई भी व्यवस्था ढूँढ़ पाने में असमर्थ, परिषद के सदस्यों ने सिद्धनाथ जी के सामने हथियार डाल दिए। सदस्यों की इस निराशा से सिद्धनाथ जी व्यथित होकर बोले–'आप लोग एक-एक रसीद की कापी लीजिए। कम से कम इतने पैसों की व्यवस्था तो कर ही दीजिए कि पैम्फलेट, बिजली तथा मंच के चाय-पान का खर्च पूरा हो जाय। बुरा न मानिएगा, और खर्च मैं कर्ज लेकर या अपना तन बेचकर कहीं न कहीं से पूरा करूँगा। इस

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बार किसी तरह से इज्जत बच जाय, अगले वर्ष से मैं इस झंझट में नहीं पड़ूँगा' कहकर उन्होंने सदस्यों को एक-एक रसीद पकड़ाई और काम में तुरन्त लग जाने की सलाह दे वह तमतमाए हुए कार्यालय के बाहर आकर खड़े हो गए। उनका, कार्यालय के बाहर आना ही मीटिंग समाप्ति की घोषणा थी। सदस्यगण यह सोचते हुए कि यह हर वर्ष यही कहते हैं, अपने-अपने घर चले गए।

सिद्धनाथ जी अपने कार्यालय से सीधे सहगल साहब के यहाँ पहुँचे। सहगल साहब अपनी लान में बैठे हुए थे। उन्हें सिद्धनाथ जी ने नमस्कार किया और पास में पड़ी कुर्सी खींचकर बैठ गए। सहगल साहब ने बड़ी गर्मजोशी से सिद्धनाथ जी का स्वागत किया और मुस्कुरा कर बोले–'आप तो बड़े छुपे रुस्तम निकले।'

'कैसा छुपे रुस्तम? बुरा न मानिएगा, मैंने समझा नहीं।'

'आप साधक भी हैं, यह उस दिन सरकार से सुनकर मैंने जाना।'

'अच्छाऽऽ! बुरा न मानिएगा, मैं तो घबरा गया कि कौन-सी बात मैंने आपसे छुपाई।'

'इतनी बड़ी बात आप छुपाए रहे और कहते है, कौन-सी बात छिपाई?' सहगल साहब ने मुस्कुरा कर कहा।

अपनी साधना के विषय में सिद्धनाथ जी तो जानते ही थे लेकिन इस झूठ का अच्छा प्रभाव देखकर वह बोले–"असल बात यह है, बुरा न मानिएगा, कि जैसे प्रेमिका अपने और प्रेमी के बीच चल रहे प्यार-प्रपंच की गोपनीयता चाहती है वैसे ही ईश्वर भी चाहता है। लौकिक उस स्तर पर यदि समाज को प्रेमी-प्रेमिका के बीच चल रहे प्यार-प्रपंच का पता चल जाता है तो समाज लाखों बिघ्न-बाधाएँ पैदा कर देता है, वैसे ही आध्यात्मिक स्तर पर भी होता है। यह जितना ही गुप्त रहेगा, मिलन उतना ही आसान हो जाता है।

सहगल साहब साधना की इस व्याख्या को सुनकर बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने अनुनय भरे स्वर में कहा–'आप मेरे लिए कुछ बताइए।'

सिद्धनाथ जी सूरज राम बाबा के साथ रहकर इस प्रकार के प्रश्नों को सुलझाने के तमाम लटके-झटके सीख चुके थे। उन्होंने हँस कर कहा–'लीजिए, मैंने साधना की व्याख्या कर दी तो आप मुझे साधक समझने लगे।'

सिद्धनाथ जी अपने साधक न होने की जितनी ही दलील देते गए, सहगल साहब प्यार-प्रपंच की गोपनीयता के सूत्र के अनुसार उन्हें उतना ही बड़ा साधक समझने लगे। वह बार-बार अपने विषय में कुछ बताए जाने का आग्रह करते रहे। सिद्धनाथ जी ने काफी मनावन लेकर कहा–'बुरा न मानिएगा, गुरु की आज्ञा नहीं है कि मैं सब कुछ जानते हुए भी किसी को कुछ बता सकूँ। एक बात मैं आप को बता

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सकता हूँ कि आप जब भी शराब पीने बैठें, पहले पेग से दो बूँद गुरु-स्मरण करके गिरा दें। दो महीने आप यही करिए। देखिए क्या करिश्मा होता है?'' कहकर सिद्धनाथ जी ने हाथ जोड़कर कहा–''बस इस से अधिक नहीं बता पाऊँगा।''

सिद्धनाथ जी ने हाथ जोड़कर ऐसी दयनीय मुद्रा बनाई कि सहगल साहब को लगा जैसे सचमुच ही कुछ और बताने से इनकी हानि हो सकती है। अपने विषय में कुछ जानने की प्रबल उत्सुकता को हठपूर्वक दबाने के कारण उनका चेहरा म्लान हो गया। उनके मलीन चेहरे को देखकर सिद्धनाथ जी ने कहा– ''असल बात यह है कि, बुरा न मानिएगा, आप के ऊपर निकट भविष्य में एक बड़ा संकट आने वाला है जो गुरु-कृपा से टल जाएगा। अब यह मत पूछिएगा कि वह कौन-सा संकट है? मैं जानते हुए भी नहीं बताऊँगा।''

बहुत बड़ी उत्सुकता होते हुए भी सहगल साहब ने कुछ नहीं पूछा। वह कुछ देर मौन रहे, फिर बोले–''अच्छा छोड़िए, यह बताइए कैसे आना हुआ?''

''इधर से जा रहा था, बुरा न मानिएगा, सोचा आप को कवि सम्मेलन की याद दिला दूँ।''

''कब कर रहे हैं?''

''वाह साहब, बुरा न मानिएगा, कवि सम्मेलन के लिए आप जब हरी झंडी देंगे तभी होगा, हम तो निमित्त मात्र हैं।''

''ट्रेन के टाइम टेबुल के अनुसार ही तो हरी झंडी दूँगा। अगर टाइम टेबुल नहीं बताएँगे तो गलत समय पर हरी झंडी दे कर दुर्घटना करवाना है क्या?''

सिद्धनाथ जी ने हँसते हुए कहा–''बुरा न मानिएगा, ट्रेन की बात आप ने खूब कही। अकेला मैं ही ट्रेन, टाइम टेबुल सब हो गया हूँ। परिषद वाले बस पोस्टर पैम्फलेट में अपना नाम छपवाने तक दिलचस्पी रखते हैं। अभी तक एक पैसा नहीं जुटा पाए हैं। ऊपर से तुर्रा यह कि कवि सम्मेलन के मुख्य अतिथि का निर्णय कर उनसे बात कर लीजिए, सूत न कपास, जोलाहा से मटकउवल। मैंने कहा मुख्य अतिथि सहगल साहब को ही...।''

''ना भाई ना, आप किसी प्रशासनिक अधिकारी या किसी बड़े नेता को मुख्य अतिथि बनाइए।''

''एस०डी०एम० साहब से आपकी घनिष्टता है, बुरा न मानिएगा, उन्हीं से बात कर लें।''

''हाँ यह तो आपने ठीक कहा, साहित्यिक अभिरुचि के आदमी भी हैं'' कहकर सहगल साहब ने चपरासी को बुलाया। उससे चाय लाने के लिए आदेश दे कर कहा–'जरा फोन ले आना।'

चपरासी फोन दे कर चाय लाने चला गया। सहगल साहब एस० डी०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एम० के यहाँ फोन किया तो पता चला कि साहब दौरे पर गए हैं। फोन को रखकर सहगल साहब ने कहा–"सीधे डी० एम० को मुख्य अतिथि बनाइए। एस० डी० एम० तो जो मैं कहूँगा वह करेगा ही।"

'बुरा न मानिएगा, आप का...।'

"आपका हमारा कुछ नहीं, यहाँ सारे सम्बन्ध स्वार्थ के हैं। उन्हें मैंने बनने वाले रेणु सागर के नक्शे के आधार पर ऐसी-ऐसी जमीनें आदिवासियों से कौड़ी के भाव खरिदवा दी हैं, जो कालानन्तर में करोड़ों की होंगी।"

इस बात को सुनकर सिद्धनाथ जी का मन एस० डी० एम० और सहगल के प्रति घृणा से भर गया। सहगल साहब ने भी एस० डी० एम० से कहीं अपनी स्वार्थ-पूर्ति की होगी। जिन्हें आदिवासियों की सुरक्षा के लिए भेजा गया है, वही उनका मांस नोच रहे हैं। प्रशासन मांस नोच रहा है और यह औघड़ बाबा धर्म के नाम पर इनसे ताल-मेल बैठाकर आदिवासियों की हड्डियाँ चबाने आ गया है। कितने घृणित हैं ये लोग? अपने मन में उठते भावों को दबाकर सिद्धनाथ जी ने कहा–"बुरा न मानिएगा, जो कमाएगा नहीं वह देगा क्या? उनसे एक काम के लिए अनुरोध किया जाय।"

'किस काम के लिए?'

'इधर चलने वाले प्रोजेक्टों से वह कवि सम्मेलन के लिए चन्दा दिलवा दें।'

"यह तो हो जाएगा। प्रोजेक्टों के लिए एस० डी० एम० का एक फोन ही काफी है।"

"अगर आप इतना करवा देंगे तो पन्द्रह-बीस हजार की व्यवस्था हो जाएगी। बुरा न मानिएगा, फिर कौन स्थानीय बनियों से चन्दे के लिए हें हें करने जाएगा" सिद्धनाथ जी ने चहक कर कहा।

चपरासी चाय दे गया। सिद्धनाथ जी का मन्तव्य पूरा हो चुका था, अब वह जल्दी में थे। उन्होंने झटपट चाय पीकर, लटकउआ झोले को कन्धे पर ठीक से स्थापित किया और 'अच्छा साहब, अब आज्ञा दीजिए' कहकर उठ खड़े हो गए।

"बैठिए, इतनी जल्दी क्या है? आज मैं भी खाली हूँ" सहगल साहब ने बड़ी मिठाई से कहा।

सिद्धनाथ जी पुनः अपनी कुर्सी पर बैठ गए और "एस० डी० एम० के यहाँ चलने के लिए किस समय आप के पास आऊँ?" पूछा।

'शाम आठ-नौ बजे ठीक रहेगा' सहगल साहब ने कहा। उसी समय गेट पर कार का हार्न सुनाई पड़ा। सहगल साहब ने सिर उठा कर देखा तो चपरासी गेट खोलने के लिए दौड़ा जा रहा था। कार डाक्टर रमन की थी।

'वाह माँ तूँ कितनी दयालु है!' सिद्धनाथ जी बोले।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"क्यों? किस बात पर आप माँ की दयालुता का बखान कर रहे हैं?" सहगल साहब ने पूछा।

"मैं डाक्टर साहब से ही मिलने जा रहा था। आपने रोक लिया तो माँ ने डाक्टर साहब को ही यहाँ भेज दिया।"

सिद्धनाथ जी ने अपनी बात जैसे ही खतम की, डाक्टर रमन मुस्कुराते हुए अपनी गाड़ी से उतरे। नमस्कार के आपसी आदान-प्रदान के पश्चात् वह भी एक कुर्सी खींच कर पास में बैठ गए।

'आपकी उम्र बहुत लम्बी है' कहकर सहगल साहब मुस्कुराए।

'कैसे पता? डाक्टर रमन ने उत्सुकता प्रगट की।

'सम्पादक जी आप के यहाँ जाने के लिए सोच ही रहे थे कि आप आ गए।'

"सचमुच आज मेरा दूसरी जगह जाने का कार्यक्रम था। मैं तैयार हो ही रहा था कि आपकी मेम साहब का फोन पहुँचा, बस आप की सेवा में चला आ रहा हूँ" डाक्टर रमन ने हँसते हुए कहा।

'सब गुरु-कृपा है' सिद्धनाथ जी ने आँखें बन्द कर ध्यान मुद्रा में कहा।

"हाँ भाई, गुरु जी तो सर्वव्यापी हैं, वह क्या नहीं जान रहे हैं? हमें तो विश्वास है कि हम लोग यहाँ जो बात कर रहे हैं, इसका भी उन्हें पता है" सहगल साहब ने अति श्रद्धा से कहा।

"सहगल साहब! आप विश्वास की बात कर रहे हैं, मैंने तो अपनी आँख से उनका चमत्कार देखा है। एक बार मैं अपने एक साथी को लिवाकर गुरु पूर्णिमा पर गुरु जी के दर्शन करने आश्रम पर गया। रास्ते में हमारे साथी ने कहा कि ये बाबा साबा बेकार का ढोंग करते हैं। जब हम लोग गुरुजी के पास पहुँचे तो गुरुजी उपस्थित शिष्यों को उपदेश दे रहे थे। हम दोनों को देखते ही उन्होंने कहा कि आज के पढ़े-लिखे लोग साधु पर विश्वास नहीं करते, क्यों डाक्टर? कहकर उन्होंने मेरे साथी की ओर देखा" इसी प्रकार के एक-दो और उदाहरणों को डाक्टर रमन ने सुनाया।

यद्यपि कि सिद्धनाथ जी को इन सब बातों पर विश्वास नहीं था लेकिन अपने तीर को सही स्थान पर लगता देख वे अपने को गुरु के भक्ति रस में डुबाकर आँखें बन्द कर बोले–'आप लोग तो जानते ही हैं कि मैं उनके सान्निध्य में वर्षों रह चुका हूँ। बुरा न मानिएगा, बहुत बड़े सिद्ध हैं सरकार। निपूती को पूत दिया, निर्धन को धन अकूत दिया लेकिन अपने बस वही काली कफनी। मैं भी इन्हें क्या जानता लेकिन बनारस के दशाश्वमेध घाट पर जब अपनी जानलेवा बीमारी से परेशान होकर आधीरात को गंगा में कूदकर आत्महत्या करने पहुँचा तो एक औघड़ मेरे पास आया और कहा–"साला मरने आया है? वहाँ कमच्छा के जंगल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

में तेरा गुरु इन्तजार कर रहा है। जा अभी जा, वही तेरे सारे दुःख दूर करेंगे।'' मैं उस औघड़ के चरणों पर गिर पड़ा और बोला–'महराज वहाँ कैसे पहुँचूँगा?'

'साले पूछता है कि कैसे पहुँचूँगा? जा ट्रेन पकड़कर गौहाटी चला जा। तेरी इस दशा को देखकर कोई टिकट नहीं मांगेगा। गौहाटी पहुँचने पर तेरा उद्धारकर्ता तुझे अपनी ओर खुद खींच लेगा' कहकर वह औघड़ अन्तर्धान हो गया।'' इतनी बात बता कर सिद्धनाथ जी ने अपने श्रोताओं की ओर देखा तो पाया कि उनकी कहानी अपेक्षित असर डाल रही है।

''फिर तो डाक्टर साहब, बुरा न मानिएगा, मरता क्या न करता, मैं सीधे गौहाटी पहुँचा। वहाँ पहुँचकर मेरे होश-हवास खतम हो गए। मुझे होश तब आया जब मेरी नाक में पुराने अन्डू बकरे की सी दुर्गन्ध पहुँची। मैंने आँख खोलकर देखा तो अपने को एक बीहड़ जंगल के बीच पाकर हैरान हो गया। हे भगवान! यह कहाँ चला आया? अब तो जान नहीं बचेगी–मेरे मन में उठा। उसी समय ठीक मेरे सामने एक सिंह ने दहाड़ मारी। भय से मैं काँपने लगा। काँपते-काँपते मैंने शेर की दहाड़ की दिशा में देखा तो यही बाबा सूरज राम नंग धड़ंग आसन मारे ध्यान मुद्रा में बैठे दिखाई पड़े और दहाड़ मारने वाला शेर बगल में बैठा था।''

'मैं होता तो मेरी जान निकल गई होती' सहगल साहब ने सिहरकर कहा।

'बुरा न मानिएगा, निकल तो मेरी भी जाती लेकिन सरकार की कृपा थी इसलिए कुछ नहीं हुआ।'

'फिर आगे क्या हुआ?' डाक्टर रमन ने पूछा।

''हुआ क्या, शेर के उठकर चले जाने के बाद मैं एक सप्ताह तक बाबा के आस-पास झाड़ू-बोहारू करता रहा, बाबा समाधि में पड़े रहे।''

'आपका खाना-पीना कैसे चलता रहा?' सहगल साहब ने पूछा।

'वहीं पास में बाबा की एक छोटी-सी कुटिया थी। भूख लगने पर उस में जाता था तो कभी खीर, कभी पता नहीं किस-किस देश के ताजे फल रखे हुए मिलते थे जिन्हें मैं खाकर पास के सोते में पानी पी लेता था। एक सप्ताह तक उस कुटी के खीर फल खाने से मेरा रोग खतम हो चला और मेरे बदन में अद्भुत ताकत आ गई। आठवें दिन, बुरा न मानिएगा, बाबा ने सूर्यास्त के समय आँखें खोलीं। मैं उनके चरणों में गिर पड़ा। बाबा ने मुस्कुरा कर कहा–'सिद्धनाथ! तेरे सारे पापों को मैंने ले लिया। अब तूँ मुक्त है।' मैंने कहा–''सरकार, मैं अपने पापों से मुक्त हो गया लेकिन आप से मुक्त नहीं होना चाहता।'' सरकार ने मेरी बात मान ली फिर उन्हीं के साथ बहुत दिनों तक रमा रहा।

''फिर उन्हें छोड़कर आप इधर कैसे चले आए?'' डाक्टर रमन ने उत्सुकता प्रगट की।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'गोपनीयम्, गोपनीयम्, यह बताने की बात नहीं है। कुछ दिनों में आप लोग स्वयं जान जाएँगे' कहकर सिद्धनाथ जी हँसे।

डाक्टर रमन के ऊपर गुरुप्रताप का सम्मोहन चढ़ चुका था। वह सिद्धनाथ जी के हँसने के साथ ही उस सम्मोहन से अपने को विरत कर पाए। गुरु की सर्वव्यापकता, उनकी विलक्षण शक्ति पर डाक्टर का विश्वास और दृढ़ हो गया। वह श्रीमती सहगल द्वारा क्यों बुलाए गए थे, इसे जानते थे, दवा तो एक बहाना था। सहगल अवश्य इसी समय कहीं दौरे पर जाने वाले होंगे। आज श्रीमती सहगल से मिलने का साहस उनको नहीं हो रहा था। गुरु जी सर्वव्यापी हैं। अगर सर्वव्यापी हैं तो पहले का भी तो जानते होंगे। पहले का उन्होंने क्षमा कर दिया होगा। पहले का जब क्षमा कर चुके हैं तो अब नया नहीं करना चाहिए। चलो आज से बन्द' उन्होंने अपने मन में संकल्प लिया।

"डाक्टर साहब, बुरा न मानिएगा, एस० पी० साहब को निमन्त्रण देने कब चलिएगा?"

"आँय? एस० पी० साहब के यहाँ, जब कहिए" डाक्टर रमन की तन्द्रा टूटी।

"कल का समय कैसा रहेगा? अगर हम तीनों मिर्जापुर चलकर डी० एम० और एस० पी० से मिल लें तो, बुरा न मानिएगा, काम बन जाता।"

"आप ठीक सोच रहे हैं। ये जनपद के सर्वोच्च अधिकारी हैं, परिचय रहेगा तो समय पर काम आएगा" सहगल साहब ने कहा। उसी समय चपरासी ने आकर सूचना दी कि डाक्टर साहब को मेम साहब बुला रही हैं।

डाक्टर रमन ने चपरासी की सूचना पर ध्यान नहीं दिया, तब सहगल साहब ने कहा–"जरा देखकर कोई अच्छी-सी दवा लिख दीजिए; पता नहीं क्यों यह दर्द दूसरे तीसरे उभड़ जाता है।"

'अभी देख लेता हूँ' कहकर डाक्टर रमन बड़ी देर तक वहीं बैठे गप मारते रहे और मन ही मन अपने गुरु से इस विपत्ति से छुटकारा दिलाने की प्रार्थना करते रहे।

आधे घंटे बाद चपरासी फिर आकर खड़ा हुआ। डाक्टर रमन ने उसकी ओर दृष्टि उठाकर देखा तो कुछ दूर पर श्रीमती सहगल दरवाजे पर खड़ी दिखाई पड़ी। उसी समय सहगल साहब का ड्राइवर जीप लेकर आ गया। सहगल साहब– 'भाई अब तो मैं दौरे पर जा रहा हूँ' कहकर जीप पर सवार हो गए। जीप मुड़कर बंगले के बाहर हो गई।

ब्यसनी ब्यसन से साक्षात्कार होते ही अपने सारे पूर्व संकल्पों को भूल जाता

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

है। इसलिए रमन भी श्रीमती सहगल को देखते ही, गुरु प्रार्थना भूलकर बंगले की ओर चल पड़े।

"भैरवी साधना भी तो हमारे पंथ में होती है। कौन जाने यह पूर्व जन्म की हमारी भैरवी ही रही हो? तभी तो इस उम्र में भी इसके प्रति मेरा आकर्षण है" डाक्टर का मन गलत को सही सिद्ध करने लगा। 'नहीं चलो, बस बातचीत करके चले आएँगे। बातचीत करना तो कोई गलत काम नहीं है' सोचते-सोचते वह सहगल के कक्ष में पहुँच गए। उसके बाद डाक्टर रमन के सारे प्रयासों को निरर्थक करता उनका शैतान मन विजयी हुआ और उन्होंने वह सब किया जो अब तक करते रहे तथा जिसे न करने का संकल्प गुरु भय से ले चुके थे।

सहगल साहब, डाक्टर रमन तथा सम्पादक जी के संयुक्त प्रयास से जिलाधिकारी महोदय माह जनवरी में होने वाले कवि सम्मेलन के उद्घाटन के लिए तैयार हो गए। एस०पी० और एस० डी० एम० को भी कवि सम्मेलन का निमन्त्रण कार्ड दे दिया गया। एस० डी० एम० की कृपा से प्रोजेक्टों से अठारह हजार रुपए मिले। एस० पी० साहब के कारण पिपरी थाना ने स्थानीय व्यापारियों एवं दो नम्बर का धन्धा करने वालों से कवि सम्मेलन के लिए अच्छा पैसा लिया गया। बड़े-बड़े ठेकेदारों ने पैसे से अपनी गरिमामयी उपस्थिति का आभास कराया। थाना और तहसील के संयुक्त प्रयास से सिद्धनाथ जी का झोला पैसे से भर गया लेकिन वह पैसे की कमी का रोना रोते ही रहे। वह यह अच्छी प्रकार से जानते थे कि डी० एम०, एस० डी० एम० और एस० पी के रहने, खाने और ठहरने की व्यवस्था उनके विभाग द्वारा सरकारी स्तर पर किया जाएगा किन्तु वह इन अधिकारियों को कैसे ठहराया, खिलाया जाय, इसकी चर्चा आम आदमियों में अधिक किया करते। इस चर्चा का उद्देश्य मात्र इतना था कि आम आदमी यह जान जाय कि ये अधिकारी आ रहे हैं और इन पर खर्च अधिक गिरेगा।

सभी कवियों को निमन्त्रण कार्ड भेजकर सिद्धनाथ जी लौटती डाक से उनकी स्वीकृति की प्रतीक्षा करने लगे। आकाशवाणी के कलाकार कवि श्री भाष्कर जी को सिद्धनाथ जी ने उनके शहर जाकर कवि सम्मेलन का निमन्त्रणपत्र दिया। भाष्कर जी ने सिद्धनाथ जी का बड़ी गर्मजोशी के साथ स्वागत किया– "आइए, आइए मैं सोच ही रहा था कि इस वर्ष आप के कवि सम्मेलन का निमन्त्रणपत्र क्यों नहीं आया? कहीं आप ने इस वर्ष मुझे काट तो नहीं दिया?" कहकर भाष्कर जी खिलखिलाकर हँसे।

"ऐसा मत कहिए भइया, बुरा न मानिएगा, जिस दिन आप मेरे कवि-सम्मेलन में नहीं आएँगे, उसी दिन कवि सम्मेलन कराना बन्द कर दूँगा" सिद्धनाथ जी ने मक्खन लगाया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'नहीं-नहीं मैं तो मजाक कर रहा था। मैं यह जानता हूँ कि आप चाहे किसी को बुलाएँ या न बुलाएँ लेकिन मुझे नहीं काटेंगे। जहाँ तक आप के कवि सम्मेलन में मेरे न आने की बात है तो बलिया वाले आप ही के कवि सम्मेलन वाले दिन मुझे तीन हजार रुपए देने का निमन्त्रण पत्र भेज चुके हैं लेकिन मैं वहाँ आपका कवि सम्मेलन छोड़कर नहीं जा सकता।'

'तीन हजार! बुरा न मानिएगा, कोई धाकड़ आयोजन दिखाई पड़ता है।'

'आपको विश्वास नहीं हो रहा है? अभी उनका पत्र दिखाता हूँ' कहकर भाष्कर जी अपने बगल की आलमारी को खोलकर, उसमें अंटे पड़े तमाम क़ागज पत्रों को उलटने-पलटने लगे।

सिद्धनाथ जी कुछ देर तक उनका कागज पत्र उलटना-पलटना देखते रहे। उन्हें समझते देर नहीं लगी कि भाष्कर जी के पास तीन हजार का कोई निमन्त्रण नहीं है। उन्होंने व्यर्थ का समय बीतते देखकर कहा–'अरे छोड़िए भैया, फिर ढूंढ़ लीजिएगा।'

'अरे भाई इसी में था। हमारे लड़के इतने शरारती हैं कि कागज पत्रों को इधर-उधर किया करते हैं' भाष्कर जी के चेहरे पर झुंझुलाहट के चिह्न उभर आए।

'बुरा न मानिएगा, सभी घर के लड़के ऐसे ही होते हैं।'

'मिल जाता तो ठीक था। खैर छोड़िए, जब जाना ही नहीं है तो चाहे तीन हजार हो या तीस हजार। अब आप का कार्यक्रम तो नहीं छोड़ सकता लेकिन पिछले साल से पाँच सौ रुपए बढ़ा दीजिए, नहीं तो बड़ा घाटा हो जाएगा।'

सिद्धनाथ जी पैसे की कमी का रोना रोने लगे–"आप तो जानते ही हैं, खुद भी कवि सम्मेलन कराते हैं, आप से क्या छिपा है? आजकल यह हालत हो गई है कि कैबरे डांस के लिए चन्दा माँगिए तो लाखों रुपए उतर आएंगे। लेकिन कवि सम्मेलन के लिए पाँच सौ पैसे कोई देने के लिए तैयार नहीं होता। बुरा न मानिएगा, जी जल जाता है लेकिन अपना-अपना शौक है।"

'आप के साथ तो हमेशा प्रशासन रहता है फिर चन्दा क्यों नहीं...।'

'आपने भी प्रशासन की बात खूब कही। बुरा न मानिएगा, ये प्रशासन वाले कवि सम्मेलन के नाम पर हड़काकर दस हजार वसूल करते हैं तो हमें दो हजार पकड़ा देते हैं। हर काम में कुछ न कुछ खाने की उनकी आदत पड़ चुकी है। फिर मैं अगर इस विषय में कुछ कहूँगा तो जो मिल जा रहा है वह भी नहीं मिलेगा।'

'अरे हाँ, आपको मेरे द्वारा भेजा गया रेडियो कार्यक्रम वाला पत्र मिला कि नहीं?'

'नहीं, अभी तक तो नहीं मिला।'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'मैंने आपका रेडियो कार्यक्रम लगवा दिया है 'महकेला चन्दन जइसन गँउआँ कऽ माटी' शीर्षक से आप को एक गीत पढ़ना है। छः सौ पचपन रुपए मिलेंगे। अभी रेडियो स्टेशन से आप का कागज ला देता हूँ। पता नहीं डाक विभाग वाले समय से आप को दें न दें।'

इस रेडियो कार्यक्रम ने सरस्वती मंच से लक्ष्मी उपासना करने वाले दोनों उपासकों के मध्य हानि-लाभ की ऊँची-नीची होती तुला को स्थिर कर दिया। सिद्धनाथ जी ने पाँच सौ रुपए अधिक देने का वचन दे दिया।

"मीरजापुर के करमा लोकगीत का एक कैसेट तैयार करने के लिए मेरे विभाग ने आदेश दिया है। उसके लिए मैंने अग्रिम यात्रा भत्ता भी ले लिया है। चलिए आप के सहयोग से कवि सम्मेलन के दूसरे दिन यह कार्यक्रम भी करता आऊँगा" भाष्कर जी ने कहा।

सिद्धनाथ जी भलुआ में गाए गए करमा गीत का कैसेट आकाशवाणी से प्रसारित कराने के उद्देश्य से अपने साथ लेते आए थे। उन्होंने सोचा था कि भाष्कर जी को किसी प्रकार पटा कर इस गीत को आकाशवाणी से प्रसारित करवा दूँगा तो भलुआ के लोग, विशेष तौर से बुधनी इसे सुनकर बहुत प्रसन्न होगी। इन दिनों बुधनी के प्रति उनका आकर्षण बहुत बढ़ता जा रहा था। अपने द्वारा सोचे कार्य को इतनी आसानी से होता देख उन्होंने अपने झोले में से करमा का कैसेट निकाला और कहा–'बुरा न मानिएगा, करमा का यह कैसेट मेरे पास है, देख लीजिए शायद आप के काम आ जाय।'

प्रसन्न होकर भाष्कर जी ने सिद्धनाथ जी के हाथ से कैसेट लपक लिया। उसे बजाया तो प्रमुदित होकर बोले–'वाह क्या स्वर है! वाह सम्पादक जी, कोयले से हीरा तरासना कोई आप से सीखे। आज तो आपको जाना नहीं है। शाम को आप को आकाशवाणी का कार्यक्रम दे दूँ फिर मौज मस्ती होगी। सुबह चले जाइएगा।'

'बुरा न मानिएगा, यह करमा कब प्रसारित होगी? यह हमें बता दीजिए।'

'आधी रात के खोंखी आवै, सँझहीं से मुह बावै–अभी तो मैं अपने ढंग से तैयार करूँगा, काटूँगा-छाटूँगा तब न प्रसारित होगा। अभी प्रसारण का समय कैसे बताया जा सकता है?'

'बुरा न मानिएगा, तब मुझे कैसे मालूम होगा?'

'आप के कवि सम्मेलन में आऊँगा तो बता दूँगा।'

उस दिन सिद्धनाथ जी भाष्कर जी के यहाँ रुके। शाम को मौज मस्ती का कार्यक्रम देकर दूसरे दिन पिपरी अपने कार्यालय पर पहुँचे तो उन्हें कवि 'सरल' जी का पोस्ट कार्ड मिला। उन्होंने पोस्टकार्ड को जल्दी-जल्दी पढ़ा। लिखा था–

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'बन्धुवर, श्री सिद्धनाथ जी,

सप्रेम बन्दे,

आपका पत्र मिला, धन्यवाद! आप के तीन जनवरी वाले आयोजन में अवश्य आना होता, आप का पत्र बहुत विलम्ब से मिला। इस तिथि को गोरखपुर, बीसलपुर (पीलीभीत), इटावा (औरइया) में भी आयोजन है। सभी जगहों से मेरे पास निमन्त्रण आया है, जिसमें मानदेय का स्पष्ट संकेत है। आप यदि मानदेय का स्पष्ट संकेत किए होते तो मुझे निर्णय लेने में सुविधा होती। यदि सम्भव हो तो तार द्वारा तुरन्त अवगत कराएँ।

आपका,

'सरल'

'अखिल भारतीय स्तर का कवि, हरामजादा कहीं का! नाम रखा है—सरल-कुटिल कहीं का!' कहकर सिद्धनाथ जी ने पोस्टकार्ड फाड़कर फेंक दिया।

कवि सम्मेलन के आयोजन में आगन्तुक अधिकांश कवियों के स्वीकृति पत्र आ चुके हैं। सिद्धनाथ जी यह जानते थे कि कवि सम्मेलन-आयोजक कवियों को वे जितना मानदेय देंगे वे भी अपने कवि सम्मेलन में उन्हें उतनी ही धनराशि देंगे। इसलिए आयोजकों के स्वीकृति पत्र से वह परम सन्तुष्ट हो गए।

समाज में दुश्चरित्र मानी जाने वाली वेश्याऐं भी अपने परिचित ग्राहकों के पैसे के विषय में कुछ मुरौअत करती हैं, लेकिन इस अध:पतन-काल में लेखनी पुत्रों का पैसे के लिए चरित्र इतना गिर चुका है कि कालान्तर में 'कवि' शब्द पुरुषों के लिए वैसे ही विशेषण का कार्य करेगा जैसा कि महिलाओं के लिए 'वेश्या' शब्द।

❑

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१२. कवि सम्मेलन

तीन जनवरी आ गई। सुबह से ही सिद्धनाथ जी परिषद के सदस्यों के साथ आयोजन को सफल बनाने में जी-जान से लगे हैं। आगन्तुक कवियों के नाम छपे पोस्टर खास-खास जगहों पर चिपकाए जा रहे हैं। एक स्थानीय नव-सिखुआ कवि को पिपरी के मुख्य मार्गों पर कवि सम्मेलन का प्रचार करने के लिए सिद्धनाथ जी भेज चुके हैं। पंडाल तैयार हो गया है। सिद्धनाथ जी खादी का कुर्ता-पजामा पहने, कन्धे पर झोला लटकाए बड़ी तेजी से मंच स्थल पर आये। आते ही उन्होंने मंच के लिए लगाए जा रहे तख्तों को ठीक से लगाए जाने का निर्देश दिया।

'ए ठेला वाले, उधर कहाँ जा रहे हो? दरी उस तरफ गिराओ, हाँ ठीक है, बस वहीं। अरे भाई आप लोग खड़े क्या हैं? जल्दी से दरी बिछवाइए' कहते हुए वह स्वयं दरी का एक कोना पकड़ कर दरी बिछाने का प्रयास करने लगे। उनको दरी बिछाते देख परिषद के खड़े सदस्य भी लग गए। दरी बिछाते-बिछाते सिद्धनाथ जी चिल्लाए–'ए माइक वाले, भोंपू उधर क्यों बाँध रहे हो? उसे इधर इस बिजली के खम्भे पर बांधों।' माइक बाँधने का सही स्थान बताने के लिए वह दरी बिछाना छोड़कर माइक वाले की ओर झपटे। वह कुछ ही दूर चले होंगे कि एक नौजवान ने उन्हें नमस्कार किया। उसे देखते ही वह उसके कन्धे पर हाथ रखकर बोले–'जरा पान वाले के पास जाकर दो सौ पान का आर्डर दे आओ और हाँ, बुरा न मानना, चाय वाले से कह देना कि सम्पादक जी ने कहा है कि चाय रात़ भर चलेगी।'

शाम के सात बजते-बजते मंच सज कर तैयार हो गया। सम्पादक जी इस ठन्डक के मौसम में भी पसीने में डूबे हुए थे। थोड़ा आराम कर कपड़ा बदल कर वह तैयार होने की बात सोच ही रहे थे कि एक आदमी ने आकर बताया कि राबर्टसगंज से कवियों को लेकर जीप आ गई है।

'आप उन्हें जल-जलपान कराइए, बुरा न मानिएगा, कवियों की व्यवस्था तो आप ही को दी गई है। मैं अभी तैयार होकर आ रहा हूँ' कहते हुए सिद्धनाथ जी आगे बढ़ गये।

थोड़ी देर में धुले कपड़े पहनकर वह पंडाल में आए। बिजली के झालरों से सजा पंडाल बहुत सुन्दर लग रहा था। पंडाल की साज-सज्जा से सिद्धनाथ जी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बहुत प्रसन्न हुए लेकिन श्रोताओं की अनुपस्थिति से वह चिन्तित हो गए। पिछले वर्ष से इस बार कम श्रोता आएँगे क्या? अगर कम श्रोता आए तो डी० एम०, एस० पी० पर बुरा असर पड़ेगा, सोचकर सिद्धनाथ जी परेशान हो रहे थे कि उसी समय बाबा सूरज राम की गाड़ी दिखाई पड़ी। सिद्धनाथ जी ने दौड़कर उनकी अगवानी की।

'आप लोग यहाँ की व्यवस्था देखिए, मैं अभी आ रहा हूँ। कोई पूछे तो बता देना सहगल साहब के यहाँ हूँ' उन्होंने पास खड़े एक आदमी को निर्देश दिया और बाबा की गाड़ी में बैठ सहगल साहब के यहाँ चले गए।

सहगल साहब के यहाँ पहले से ही एस० पी० साहब, डाक्टर रमन और अतिबल सिंह बैठे बाबा की बड़ी व्यग्रता से प्रतिक्षा कर रहे थे। बंगले के लान में राय दरोगा तीन-चार सिपाहियों के साथ मुस्तैद खड़ा था।

गाड़ी बंगले के फाटक पर पहुँची, हार्न दिया। एक सिपाही ने दौड़कर फाटक खोल दिया। राय दरोगा ने दौड़कर एस० पी० को सैल्यूट किया और सूचना दी–'सरकार आ गए।'

बैठे लोगों में हड़कम्प मच गई। सभी करीब-करीब एक साथ उठे और सरकार के स्वागत के लिए दौड़े। इस दौड़ में लोगों ने एस० पी० साहब को आगे चलने का अवसर दिया। सरकार जीप में आगे बैठे थे। एस० पी० ने दौड़कर उनका चरण-स्पर्श किया। सरकार एस० पी० के कन्धे पर हाथ रखे धीरे से जीप से उतरे और उनसे बात करते-करते निर्दिष्ट स्थान की ओर चल पड़े। उनके अन्य भक्त चलते समय चरण-स्पर्श कर रहे थे लेकिन सरकार का हाथ, चूँकि यहाँ पर उपस्थित भक्तों में से सबसे शक्तिशाली भक्त के कन्धे पर था, इसलिए अन्य भक्तों की स्पर्शानुभूति उन्हें नहीं हो रही थी।

राय दरोगा सरकार से पिछली मुलाकात में ही बहुत प्रभावित हो चुका था, अपने एस० पी० को सरकार के चरणों में श्रद्धावनत होते देख, उसकी श्रद्धा पर भय की मुहर भी लग गई।

मनुष्य की श्रद्धा पर जब भय की मुहर लग जाती है तो वह विवेकशून्य हो जाता है। ऐसे ही विवेकशून्य भक्तों के शोषण पर मठों के निर्माण और मठाधीशों के ऐशो-आराम चलते हैं।

राय दरोगा भी सरकार का चरण-स्पर्श करना चाहता था किन्तु पीछे-पीछे लगे रहने के बावजूद उसे अवसर नहीं मिला। सरकार बंगले के भीतर चले गए और दरवाजा बन्द हो गया।

अन्दर आकर सरकार अपने सुनिश्चित आसन पर विराजमान हो गए तब भक्त भी यथास्थान बैठ गए। नाश्ता करके सरकार ने काफी पी फिर गोल्ड फ्लैक सिगरेट सुलगाकर सहगल साहब से पूछा–'आनन्द है न?'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'सब आपकी कृपा है।'

'और डाक्टर तुम्हारा क्या हाल है? आश्रम का क्या हुआ? क्यों अतिबल?' सरकार ने डाक्टर रमन और अतिबल सिंह की ओर देख कर पूछा।

'राय दरोगा से भलुआ में जमीन तलाशने की बात मैंने की थी लेकिन अभी तक उन्होंने कोई खबर नहीं की' डाक्टर रमन ने कहा।

'यहाँ के यूनियन वालों की लिखा-पढ़ी से आजकल वह कुछ परेशान हैं। शायद इसीलिए वह आश्रम वाला कार्य नहीं कर पाए।' अतिबल सिंह ने कार्य न होने की सफाई दी।

'कौन राय दरोगा? अच्छा हाँ, पिपरी थाने वाला राय। अरे भाई उसके एस० पी० साहब तो यही बैठे हैं। कहाँ हैं? बुलवाइए।'

सिद्धनाथ जी का मन अपने कवि सम्मेलन पर लगा था। वह जल्दी से जल्दी यहाँ से छुटकारा पाना चाह रहे थे। इस अवसर को उन्होंने ठीक समझ कर कहा–'बाहर दिखाई पड़े थे। मैं अभी उन्हें भेज रहा हूँ, लेकिन सरकार, बुरा न मानिएगा, मैं उधर से ही जरा कवि सम्मेलन...।

हाँ हाँ ठीक है, उधर ही से चले जाना। तुम्हारा आयोजन है तुम नहीं देखोगे तो सब गड़बड़ हो जाएगा।' सरकार भी सिद्धनाथ जी को टालना चाह रहे थे।

सिद्धनाथ जी तुरन्त बाहर निकले और राय दरोगा से कहा–'जाइए, मैंने आपका मामला पेश कर दिया है, सरकार बुला रहे हैं।' राय दरोगा ने सिद्धनाथ जी से कुछ और जानना चाहा लेकिन वह हाथ से भीतर जाने का इशारा करते हुए फाटक से बाहर हो गए।

राय दरोगा ने धड़कते दिल से कमरे में प्रवेश किया और सरकार का चरणस्पर्श कर जहाँ बंशी खड़ा था, उसकी बगल में सावधान मुद्रा में खड़ा हो गया।

'एस० पी० साहब, यह मेरा शिष्य है। इसे कोई तकलीफ न हो' कहकर सरकार ने एस० पी० की ओर देखा।

एस० पी० ने मौखिक रूप से थाने में चौबे जी के साथ घटी घटना का ब्यौरा सुना। कुछ देर मौन रह कर सोचने के बाद बोले–"सरकार के आश्रम के लिए जमीन की व्यवस्था की?"

'नहीं हुजूर, मैं बहुत परेशान था। छोटे दरोगा से कहा, वह नहीं कर पाए।'

'आश्रम के लिए जमीन की व्यवस्था करने की इच्छा है?'

'एकदम है हुजूर'

"तब ठीक है, तुम्हारा स्थानान्तरण के० डी० राम की जगह पर कर दे रहा हूँ। भलुआ के नजदीक पहुँच जाओगे तो जमीन की व्यवस्था भी कर लोगे और यूनियन वाले भी सन्तुष्ट हो जाएँगे कि तुम्हारा स्थानान्तरण हो गया।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"वैसे हुजूर, आप जो आदेश देंगे उसका पालन करूँगा लेकिन चौकी पर...।"

"छोटी-मोटी गलतियों के लिए मैं अपनी पुलिस को दण्डित कर के उनका मनोबल नहीं तोड़ता। तुम यह मत समझो कि मैं तुम्हें चौकी पर भेज कर दण्डित कर रहा हूँ। तुम तेज आदमी हो, आश्रम के लिए जमीन की व्यवस्था कर दोगे, तब मैं तुम्हें मनचाहा थाना दे दूँगा।"

लोकतन्त्र की नींव जनता के मनोबल पर आधारित है। पुलिस इस नींव को भले ही तोड़ दे, लेकिन प्रशासन चलाने के लिए पुलिस का मनोबल नहीं तोड़ा जा सकता। जनता का मनोबल भ्रष्ट सत्ताधारियों के लिए खतरे की घण्टी है और पुलिस का मनोबल उनकी सुरक्षा का कवच है। अंग्रेज भी न्याय और अन्याय को प्रशासन की दृष्टि से देखा करते थे। आज भी वही दृष्टि कार्य कर रही है।

राय दरोगा अपने स्थानान्तरण से सन्तुष्ट नहीं था, फिर भी सुखद भविष्य की आशा में वह चौकी पर जाने को तैयार हो गया। उसने एस० पी० साहब को सैल्यूट मारा और बाहर आ गया।

रात्रि के नौ बज रहे हैं। मंच से रह-रह कर घोषणा की जा रही है कि श्रोता गण पण्डाल के भीतर आकर बैठ जायँ। पण्डाल के बाहर टहल रहे श्रोताओं को तरह-तरह के लालच दिए जा रहे हैं। कभी कहा जा रहा है कि 'पिपरी कवि सम्मेलन का नाम पूरे भारत में आप जैसे शालीन श्रोताओं के कारण ही हुआ है। यहाँ आने वाले कविगण यही कहते हैं कि पिपरी जैसे श्रोता उन्हें कहीं नहीं मिले। इसलिए आप लोगों से अनुरोध है कि आप अपनी तथा अपने नगर की गरिमा को बनाए रखने के लिए अविलम्ब पण्डाल में आकर यथास्थान बैठ जायँ। जब तक आप बैठेंगे नहीं हम पधारे कवियों को मंच पर नहीं बुला सकते।

तमाम कोशिशों के बाद भी जब श्रोता पण्डाल में यथेष्ट संख्या में नहीं आए तो उद्घोषक ने परेशान होकर माइक पर कहा–'अब मैं अपने पधारे हुए सरस्वती पुत्रों से अनुरोध करता हूँ कि वे मंच पर पधारें। पौने दस बजने जा रहा है, कार्यक्रम में विलम्ब हो रहा है।'

उद्घोषक के इस अनुरोध के कुछ देर पश्चात् कवि मंडली द्वारचार की ओर बढ़ते बरातियों की भाँति सजी-धजी आती दिखाई पड़ी। कुछ देर में सभी कवि मंच पर आसीन हो गए। वीर रस के कवि 'तलवार' जी अपनी डेढ़ हाथ की काया को चूड़ीदार पायजामा और शेरवानी से सजाकर, बड़ी-बड़ी घनेरी मूंछों को बड़े मनोयोग से खड़ी किए मंच पर बड़ी अकड़ के साथ बैठे। हास्य रस के कवि 'गर्दभ' जी अपनी विचित्र वेशभूषा से अपनी अलग पहचान बना रहे थे।

कवि मंडली को मंच पर आसीन होता देख श्रोता पंडाल में अपनी जगह

RajGuru Math, Ṣhivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सुरक्षित करने के लिए दौड़ पड़े। एक अफरातफरी मच गई, कुछ धक्कम-धुक्का हुआ, फिर क्रमशः शान्ति छाने लगी।

कवि सम्मेलन के उद्घाटनकर्ता जिलाधीश महोदय अभी तक नहीं पधारे थे। मंच पर खुसुर-फुसुर होने लगी। 'अभी तक नहीं आए तो क्या करिएगा? किसी दूसरे से उद्घाटन करवा दीजिए।'

'लोचन' जी ठीक कह रहे हैं। कब तक इन्तजार करिएगा?' 'तलवार' जी ने सिद्धनाथ जी से कहा।

सिद्धनाथ जी कुछ कहने ही जा रहे थे कि जिलाधिकारी की कार आती दिखाई पड़ी।

जिलाधीश के सामने अपनी पहली पहचान बनाने के लिए सम्पादक जी ने उद्घोषक को हटा कर स्वयं माइक पकड़ लिया और 'हमारे जनपद के माननीय जिलाधीश महोदय पधार चुके हैं। कृपया आप लोग बीच के रास्ते को खाली कर दें ताकि हमारे जिलाधीश महोदय मंच तक आ सकें' कहकर वह माइक पुनः उद्घोषक को पकड़ा कर जिलाधीश के स्वागत के लिए लपके।

सम्पादक जी की घोषणा को सहगल साहब के यहाँ बैठे लोगों ने भी सुना। बाबा सूरज राम ने बैठे लोगों की ओर देखकर कहा-'जिलाधीश आ गए, तुम लोग भी जाओ।'

'आप भी चलेंगे?' एस० पी० ने उठते हुए पूछा।

'तुम लोग चलो, मैं आ रहा हूँ' सरकार ने भीड़ से अलग अपनी पहचान बनाने के उद्देश्य से कहा।

'बंशी! तुम सरकार के साथ आना, हम लोग चल रहे हैं' सहगल साहब ने पास खड़े बंशी को आदेश दिया और सबके साथ मंच की ओर चल पड़े। जिस समय सभी गुरुभाई कवि सम्मेलन स्थल पर पहुँचे, जिलाधीश महोदय की कार पंडाल के पास आकर रुक चुकी थी।

अंग्रेजों ने भारतीय राजाओं को अपमानित करने के लिए, उनके राजसी परिधान-चूड़ीदार पायजामा, शेरवानी और सिर पर कलात्मक पगड़ी को, अपने चपरासियों का परिधान बना दिया था, जो आज भी प्रचलित है, उसी परिधान को धारण किए जिलाधीश के रोबीले चपरासी ने जैसे ही कार का दरवाजा खोला, सम्पादक जी हाथ में गजरा लिए झपटते हुए कार के पास पहुँचे। फोटोग्राफर अपने कैमरे का कोण ठीक करने के प्रयास में अगल-बगल पैंतरे बदलने लगा।

'हमारे मुख्य अतिथि जी पधार चुके हैं।' उद्घोषक ने भए प्रगट कृपाला के अन्दाज में कहा,. 'उन्हें मंच तक आने का रास्ता दीजिए, बीच के रास्ते से हट जाइए, और दूर हटिए, अरे भाई थोड़ा और दूर हटिए।' उद्घोषक लोगों से दूर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हटने के लिए इतनी घबराहट में आग्रह कर रहा था जैसे जिलाधीश जिले की कोई भयंकर छुतही बीमारी हो जिससे छू जाने पर प्राणों पर संकट आ सकता है।

एस० पी० साहब तथा उनके साथ के लोगों ने जिलाधीश का गाड़ी से उतरते ही स्वागत किया। सम्पादक जी ने फूलों का गजरा पहनाया। मुस्तैद फोटोग्राफर ने सम्पादक जी के पूर्व निर्देशानुसार, गजरा पहनाते, जिलाधीश से हाथ मिलाते, उनसे हँसकर बात करते, सम्पादक जी के कई चित्र खींचे। सम्पादक जी के बोलते प्रशस्ति संकलन में ये चित्र भविष्य में काम आएंगे।

मंच पर पहुँचकर जिलाधीश महोदय ने दीप जलाकर कवि सम्मेलन का उद्घाटन किया और अपने संक्षिप्त भाषण में देर से आने के लिए क्षमा माँग कर कवि सम्मेलन के प्रारम्भ होने की घोषणा की और मंच से नीचे उतर मंच के बगल में रखी कुर्सी पर बैठ गए। उनके अगल-बगल सभी अधिकारी अपनी-अपनी पूर्व निर्धारित कुर्सियों पर बैठ गए।

वयोवृद्ध अवकाशप्राप्त शिक्षक श्री द्विजेन्द्र अवस्थी, जिनकी विद्वत्ता, शालीनता का सम्मान स्थानीय एवं अन्य बड़े साहित्यकार करते थे, को सम्मानित करने के लिए सम्पादक जी ने आज के कवि सम्मेलन का अध्यक्ष मनोनीत कराया। तालियों की गड़गड़ाहट से उनका स्वागत किया गया।

संचालन का भार कवि 'विद्रूप' जी ने सम्भाला। सरस्वती वन्दना के साथ कवि सम्मेलन प्रारम्भ हुआ। कवि 'विद्रूप' जी एक कवि को बुलाने के लिए, दूसरों के लिखे दसियों चुनिन्दा शेरों को पढ़कर भूमिका बनाते, फिर कहते 'मेरा आशय श्री फलाँ जी से है। आइए फलाँ जी।' फलाँ जी आते, अपनी दस वर्ष पहले लिखी रचना को इस तेवर से सुनाते जैसे अभी तक इसे किसी ने सुना ही नहीं है। मंच पर बैठे कवि इस रचना को पचीसों बार सुन चुके रहते, इसलिए उनकी कविता पर ध्यान न देकर आपस में कनफुसकी करते रहते। उनके गुट के कवि यथास्थान इस प्रकार वाह-वाह करते जैसे उन्होंने इस कविता को कभी सुना ही न हो।

वीर रस के कवि 'तलवार' जी विद्रूप जी के गुट के थे। इसलिए विद्रूप जी ने 'वीर रसावतार श्री श्याम नारायण पाण्डे के तेवर, भूषण की लेखनी और शिवाजी की तलवार की धार को एक साथ कविता में पिरोने वाले वीर रसावतार, मेरा आशय इन्दौर से पधारे श्री 'तलवार' जी से है, वे आएँ और आप को अपनी तेजस्वी कविता, ओजस्वी वाणी से ओत-प्रोत करें। आप ताली बजाकर उनका स्वागत करें' कहकर 'तलवार' जी को माइक पर बुलाया।

श्रोताओं ने तालियों की गड़गड़ाहट से उनका स्वागत किया। 'तलवार' जी तुलसी दास के शब्दों–'ठवनि युवा मृगराज लजाहीं' की अदा में अपने स्थान से उठे। जनता उनकी कद काठी को देखकर बहुत निराश हुई। उन्होंने माइक पर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पहुँच कर ललकारा–'तलवार हूँ तलवार, उसकी धार देखिए।' एक तो यह उनकी हाल की रचना थी, दूसरे मदिरा की अधिकता ने अगली पंक्ति का विस्मरण करा दिया। उन्होंने सिर झटक कर स्मरण करने का प्रयास किया, अपने पैर के पंजे के बल खड़े होकर हाथ को हवा में लहराया, अगली पंक्ति याद आई, जोर से पहली पंक्ति को फिर दुहराया–'तलवार हूँ तलवार, उसकी धार देखिए।' याद आई अग़ली पंक्ति फिर भूल गई। इस बार उन्होंने जोर से पैर पटक कर फिर हाथ को हवा में लहराया। उनके पैर पटकने की भयंकरता को देखकर 'लोचन' जी ने धीरे से सम्पादक जी से पूछा–"यह तख्त कमजोर हो तो दूसरे पर बैठ जाऊँ?"

'लोचन' जी के इस व्यंग को अन्य कवियों ने सुना, वे हँस पड़े। 'तलवार' जी ने पीछे मुड़कर बड़े क्रोध से हँस रहे कवियों की ओर देखा। संचालक ने स्थिति को सम्भालने के लिए कहा–'आप पढ़िए, आप पढ़िए।"

'तलवार' जी ने फिर दुहराया–'तलवार हूँ तलवार, उसकी धार देखिए।' श्रोताओं में पीछे खड़े किसी ने चिल्लाकर कहा–'गुड्डे के मुँह पर मूंछ की बहार देखिए।'

मंच पर बैठे कवि तथा श्रोता, इस टिप्पणी को सुनकर ठठाकर हँस पड़े। श्रोताओं की ओर से ऐसी हूटिंग हुई कि 'तलवार' जी संचालक पर गलत समय पर बुलाए जाने का तोहमत लगाते, हँसने वाले कवियों पर ताव पेंच खाते, बिना कविता पढ़े अपने स्थान पर आकर बैठ गए।

कवि सम्मेलन में हास्य कविताएँ, जो हास्य कम, भड़ैती अधिक थीं, खूब जमीं। अच्छे स्वर वाले कवियों की हल्की कविताओं पर खूब वाह वाही हुई। जिन कवियों ने साहित्यिक कविताएँ सुनाईं वे नहीं जम पा रहे थे। जैसे ही संचालक ने कवि 'भाष्कर' को कविता पढ़ने के लिए बुलाया, उसी समय सरकार की कार पंडाल के पास आकर लगी। सरकार हाथ में छड़ी लिए बंशी के साथ पंडाल में घुसे। उनको देखते ही, जिलाधीश को छोड़, पिपरी के अधिकांश गणमान्य लोग अपनी कुर्सी छोड़ कर खड़े हो गए। कवि सम्मेलन थम गया। जिलाधीश ने हैरत भरी दृष्टि से सरकार की ओर देखा। जिलाधीश की ओर ध्यान न देकर, सरकार ने खड़े हो गए लोगों को बैठने का इशारा किया और स्वयं एक कुर्सी पर बैठ गए। जिलाधीश अवाक् था। सरकार का देर से आने का मतलब पूरा हो चुका था।

जिलाधीश ने बगल में बैठे एस० पी० पर प्रश्नात्मक दृष्टि डाली। एस० पी० ने फुसफुसाकर कहा–'बाबा सूरज राम हैं।'

'कौन सूरज राम?'

'अभी आप ने अखबार में पढ़ा होगा कि–मुख्यमंत्री, बाबा सूरज राम के यहाँ आशीर्वाद लेने आते हैं।'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जिलाधीश ने ध्यान से सरकार की ओर देखा। उनके चेहरे पर स्पष्ट रूप से बाबा सूरज राम का प्रभाव छा गया था। सिद्ध हों न हों पहुँच वाले तो हैं ही, जिलाधीश ने सोचा, हो सकता है सिद्ध ही हों।

मनुष्य विरासत में मिले विश्वासों का संकलन है। हर व्यक्ति को विश्वास अपने परिवार, अपने समाज से मिलता है जो मनुष्य के मन में बिना किसी वैज्ञानिक आधार के भी जीवित रहता है जैसे कहीं जाते समय बिल्ली का रास्ता काटना, किसी का छींकना असगुन है। इन्हीं मनुष्यों में बड़े अधिकारी, बड़े नेता और पूँजीपति भी हैं जिन्हें जनसाधारण अपने से अधिक बुद्धिमान तथा समाज का मानक मानता है। ये बुद्धिमान और मानक माने जाने वाले लोग जब अपनी विरासत में मिली रूढ़िग्रस्त मानसिकता के वशीभूत हो, बाबाओं के जाल में फंसते हैं तो, बिना कोई तर्क किए जनसाधारण बड़ी संख्या में बाबाओं के जाल में फंसकर शोषित होता है। जनसाधारण यह नहीं सोच पाता कि उसके द्वारा बुद्धिमान और मानक माने जाने वाला वर्ग विश्वासों के माने में सबसे कमजोर है क्योंकि सुविधा भोगी सत्य की खोज में जहमत नहीं उठाना चाहता और इस खोज के लिए उसके पास न सोचने का न खोजने का समय ही है।

सुबह के पाँच बजते-बजते कवि सम्मेलन का पहला दौर समाप्त हुआ। संचालक ने सम्पादक जी से सलाह लेकर अध्यक्ष जी से आग्रह किया कि वे दो शब्द कहें और कवि सम्मेलन के समापन की घोषणा करें।

अध्यक्ष श्री अवस्थी जी जब बोलने के लिए खड़े हुए तो श्रोताओं को पता चल गया कि अब कवि सम्मेलन नहीं होगा। रात भर के खर्च के पश्चात् बचे चालीस-पचास श्रोताओं में से अधिकांश अध्यक्ष के उठने के साथ ही उठकर चले गए। वहाँ पर सम्पादक जी की परिषद् के सदस्य, कुछ गणमान्य अतिथि और ऊँघते तम्बू कनात वाले रह गए। मंच से उठकर जब कुछ कवि जाने लगे तो संचालक जी ने उन्हें रोक लिया। अध्यक्ष जी ने पारम्परिक सम्बोधन के बाद कहा–'मुझ पचासी वर्षीय वृद्ध को आप ने आज के कवि सम्मेलन का अध्यक्ष पद देकर जो गौरव प्रदान किया उसके लिए कृतज्ञ हूँ। आज के कवि सम्मेलन को सुन कर मैं अनायास अपने अतीत से जुड़ गया, जब मैं काशी हिन्दू विश्वविद्यालय का छात्र था, डा० रामचन्द्र शुक्ल, श्री अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' हम लोगों को हिन्दी पढ़ाया करते थे। क्या गरिमा थी उन महान हिन्दी सेवकों की बोल चाल में? हिन्दी के वरदपुत्र 'प्रसाद' जी हमारे पड़ोसी थे। वह अपनी साहित्यिक भाषा और भाव के मूर्तिमन्त रूप थे। उन लोगों को सोचता हूँ और आज के हिन्दी सेवकों को देखता हूँ। काश मैं अतीत को एक घण्टे के लिए वर्तमान बना सकता

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तो आप लोगों को दिखाता कि इस नाम के राष्ट्रभाषा हिन्दी को शिखर पर पहुँचाने वाले वे तपस्वी आज जैसी न तो कवियों की मानसिकता रखते थे न आज जैसी मंचीय कविताएँ लिखते थे।

आज मंचों के माध्यम से व्यक्त होता हिन्दी कविता का स्तर इतने प्रबल वेग से अध:पतन की ओर जा रहा है कि कालान्तर में शृंगार के नाम पर 'तोता मैना' स्तर की कविताएँ और हास्य के नाम पर करैला भाँड़ और बच्चा भाँड़ मंचों पर अवतरित होंगे। मंच-मोहानियों में साहित्य मर जाएगा। प्रसाद, पंत, निराला और महादेवी जी जैसी महान विभूतियों के नाम पर मैं आप कवियों से प्रार्थना करता हूँ कि पैसे के लिए साहित्यकार न बनें।'

'और क्या भीख मांगने के लिए साहित्यकार बनूँ?' 'गर्दभ' जी ने फुसफुसाकर कहा और सम्पादक जी को धीरे से टहोक मारकर बोले–'चलिए मुझे पैसे दीजिए, मुझे गाजीपुर 'भोजपुरी कवि सम्मेलन' में पहुँचना है।'

सम्पादक जी ने उन्हें शान्त रहने का संकेत किया। वे कसमसा कर बैठे रहे। दूसरे कवि भी सम्पादक जी पर अपना ध्यान केन्द्रित किए, बैठे अध्यक्षीय भाषण सुनते हुए भी नहीं सुन रहे थे। अवस्थी जी ने इस बात को समझ लिया। उन्होंने अपना भाषण यह कह कर समाप्त किया कि–"एक ओर साहित्य के नाम पर सस्ती पत्रिकाएँ दूसरी ओर गन्दे उपन्यास विष वमन कर रहे हैं, सिनेमा साहित्य का भूत किशोरों के सिर पर चढ़ कर बोल रहा है। उपरोक्त सारे प्रचार माध्यम बड़े-बड़े पूँजीपतियों के हाथ में है जिसे हम चाह कर भी उनके अर्थलोलुप हाथों से छीन नहीं पा रहे। ऐसी स्थिति में यह वाणी वन्दना का मंच जो हम प्रबुद्ध मध्यम वर्ग के हाथ में है, यदि इसे भी हम वही स्तर देने लगेंगे तो ज्ञान के दृश्य और श्रव्य दोनों माध्यम विषाक्त होकर भावी पीढ़ी को गरल-ज्ञान ही देंगे। हिन्दी साहित्य और भावी पीढ़ी की सुरक्षा आप के हाथ है। छोटी-छोटी साहित्य गोष्ठियां करके आप साहित्य प्रेमी श्रोता पैदा करें। जब प्रबुद्ध श्रोता यथेष्ट संख्या में हो जाँय तब बड़े कवि सम्मेलनों के आयोजन का महत्व होगा। यही मुझ वृद्ध व्यक्ति का विचार और आग्रह है। इन्हीं शब्दों के साथ मैं कवि सम्मेलन के समापन की घोषणा करता हूँ।"

समापन की घोषणा के साथ ही सभी कवि सम्पादक जी की ओर भाग पड़े। सम्पादक जी आगन्तुक अतिथियों की विदाई में व्यस्त, कभी इस अतिथि को, कभी उस अतिथि को विदा करते कवि मंडली की दृष्टि से ओझल हो गए। सम्पादक जी को न पा कर कविगण बेचैन हो गए।

"देखिए मनहर पुर की तरह न हो जाय, नहीं तो लौटने का किराया भी नहीं है," लोचन जी ने 'तलवार' जी से कहा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'हाँ यार, हमें भी डर लग रहा है। अगर उसी संयोजक की तरह बिना पैसा दिए भाग गया तो बे-मौत मारे जाएँगे।'

'भागना तो नहीं चाहिए। मैंने आते ही पता लगा लिया है कि इस बार प्रशासन के सहयोग से काफी पैसा इकट्ठा हुआ है,' 'भाष्कर' जी ने बताया।

'काफी इकट्ठा हुआ है तो क्या? संयोजक को भी तो कुछ चाहिए कि बस कविता सुनने के लिए वह इतनी मेहनत करेगा?' 'लोचन जी ने सम्पादक जी की खोज में अपनी दृष्टि इधर-उधर दौड़ाते हुए कहा।

'हाँ भाई, सभी के पास पेट...' 'तलवार जी आगे कुछ और कहना चाह रहे थे कि उन लोगों की दृष्टि 'गर्दभ' जी के साथ आ रहे सम्पादक जी पर पड़ी। वे लोग सम्पादक जी की ओर लपक पड़े।

'आप लोग कहाँ रह गए थे? आइए' कहकर सम्पादक जी मुड़कर चल पड़े।

'अच्छा बन्धुओं! नमस्कार' 'गदर्भ' जी ने सम्पादक जी के पीछे जाते कवि बन्धुओं को कहा।

'अरे रुकिए, हम लोग भी चल रहे हैं। पैसा पा गये क्या?' 'भाष्कर' जी ने हँस कर पूछा।

'और क्या, बिना पैसा पाए नमस्कार दे रहे हैं?' 'तलवार' जी सम्पादक जी के. पीछे चलते हुए बोले।

'बिना पैसे के तो मैं अपना पाप भी किसी को नहीं देता' 'गर्दभ' जी जरा जोर से चहके।

सम्पादक जी ने कहा–'उन्हें जाने दीजिए, उनकी सवारी तैयार है।' 'गदर्भ' जी मित्रों की अनुमति की परवाह किए बिना चले गए।

'सौ रुपए और माँग रहे थे। कह रहे थे कि मैंने आप का कवि सम्मेलन जमाया है' कहकर सम्पादक जी ने बुरा-सा मुँह बनाया।

'क्यों ज्यादा क्यों माँग रहे थे? उस बार तो जब आपने पचास रुपया कम दिया था तो इन्होंने पैसा फेंक दिया था। आज अधिक क्यों लेंगे?' 'लोचन' जी ने कहा।

'फिर जमाना क्या? इनसे अच्छा संचालन तो 'जावेद' जी करते हैं और इन से कम पैसा भी लेते हैं। हमारे समझ में बात नहीं आती कि जब लोग पहले ही पैसा तय कर लेते हैं तो उससे अधिक क्यों माँगते हैं? क्यों 'तलवार' जी?' 'तलवार' जी ने 'भाष्कर' जी के समर्थन में सिर हिलाया।

यह दूसरी बात थी कि उन्हीं दोनों कवियों ने सम्पादक जी से कुछ और देने का आग्रह इस मुद्दे पर किया था कि–'यार सुना है इस बार आप के पास खूब

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चन्दा इकट्ठा हुआ है। इस बार कुछ अधिक दे दो, अगली बार कुछ कम भी दे दोगे तो हम नहीं बोलेंगे।'

सम्पादक जी ने अधिक चन्दा इकट्ठा होने वाली बात को मान लिया लेकिन तामझाम में पिछले कवि सम्मेलन से इस बार चौगुना खर्च होने का रोना-रोने लगे। उन्होंने बहुत रोनी सूरत बनाकर कहा–'बुरा ना मानिएगा, मैंने सोचा था कि आप लोग 'गर्दभ' जी की तरह लालची नहीं हैं, अपने आदमी हैं। आप लोगों को कुछ कम ही दूँगा तो मेरा भी बेड़ा पार हो जाएगा। लेकिन आप लोग भी अधिक माँग रहे हैं, बताइए क्या करूँ?'

उन दोनों कवियों ने देखा कि यह तो उलटे बेंट कुदारी लग जाना चाहती है। कहाँ तय मानदेय से अधिक लेने की सोची जा रही थी, यहाँ सम्पादक कम ही देना चाह रहा है।

'देखिए सम्पादक जी, मैं कुछ नहीं जानता। आपने मुझे जितना पैसा देने के लिए लिखा था, उससे एक पैसा कम नहीं लूँगा' 'तलवार' जी ने अधिक लेने का आग्रह छोड़ अपना मूल बचाने का प्रबल प्रयास किया।

सम्पादक जी मन ही मन हँसे लेकिन प्रत्यक्ष में काफी दु:खी चेहरा बना कर बोले–'ठीक है, जो मैंने लिखा था वह तो दूँगा ही। बाद में कहीं न कहीं से जुगाड़ करके अमियाने शामियाने का दूँगा। 'भाष्कर' जी आप को भी कम नहीं दूँगा, नहीं तो आप कहेंगे कि...'

'आप के करमा गीत का प्रसारण पाँच अप्रैल को शाम छ: बजे होगा। 'भाष्कर' जी ने सम्पादक जी की बात पूरी होने के पहले ही कहा।

सम्पादक जी इस समाचार को सुनकर प्रसन्न हो गए। उन्होंने अपने झोले से तीन लिफाफे निकाले। एक-एक लिफाफा तीनों कवियों को पकड़ा दिया। तीनों कवियों ने लिफाफे से पैसे निकाल कर गिना और सन्तुष्ट होकर बस स्टेशन की ओर चल पड़े। सम्पादक जी उन लोगों को बस स्टेशन तक छोड़ कर लौट आए।

❑

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१३. अनपरा चौकी

मिर्जापुर के दक्षिणांचल में अनपरा गाँव की भूमि काफी उपजाऊ है। उपजाऊ जमीन के कारण यहाँ के ग्रामीणों का मुख्य पेशा खेती है। सौ-सवा सौ घरों की समृद्ध आबादी वाले इस गाँव में कुछ दोमंजिले कच्चे मकान बड़े ही कलात्मक ढंग से बने हैं जो पटौतन होने के कारण गरमी में ठन्ढे और जाड़े में गरम रहते हैं। इस गाँव की समृद्धि के कारण पहले एक दो दुकानदारों ने बाहर से आकर अपनी दुकानें खोलीं। उनके मुनाफे को देखकर धीरे-धीरे यहाँ पर साप्ताहिक हाट लगने लगी। उत्तर से दक्षिण की ओर जाने वाली कच्ची सड़क के किनारे, सप्ताह में एक बार दूर-दूर से व्यापारी छोटे-छोटे बैलों, घोड़ों और बैलगाड़ियों पर अपना सामान लादकर पहुँचते, जिसे आस पास के आदिवासी, महुआ, चिरौंजी आदि से पलटा करके लेते।

उत्तर से दक्षिण गई सड़क से उत्तर पूरब के कोने में अनपरा गाँव, उससे सटा दक्षिण की ओर हाट लगने के लिए खुली भूमि, सड़क के पश्चिम महुआ, आम, जामुन, चिरौजी और पलाश का एक विशाल बगीचा जिस में सड़क से कुछ दूर हट कर पश्चिम की ओर दो कच्चे कमरे, उसके सामने एक कच्चा बरामदा, बरामदे के सामने कुछ दूर हट कर दो जामुन के पेड़, उसके बाद विशाल बाग, यही अनपरा चौकी है। दो कमरों में एक कमरा सिपाहियों के सोने व सामान रखने तथा दूसरा कमरा दरोगा जी के आवास तथा कार्यालय दोनों में काम आता है। बरामदे में एक किनारे छोटा सा घेरा बनाकर रसोईघर बना लिया गया है।

बूढ़ी महरिन बताशो इस चौकी की रसोईदारिन है। चौकी का खाना और आस-पास की बातों को पका कर सुस्वादु बनाने के अलावा वह दूसरा काम नहीं जानती। लोग बताते हैं कि जबसे यह चौकी खुली है, तभी से वह यहाँ पर खाना पकाने का काम कर रही है। जब उसने यहाँ पर काम शुरू किया था तब उसके एक ही बच्चा था। बाद में उसके और बच्चे हुए जो अब जवान हो चुके हैं। लड़कियाँ शादी ब्याह के बाद अपने घर चली गईं। बड़ा लड़का बाजार में दुकान लगाता है और छोटा इसी चौकी पर चौकीदार है, जिससे बुढ़िया की पहुँच चौकी से चौबारे तक हो गई है। छोटे-मोटे फसादों में लोग बुढ़िया तथा उसके लड़के को चौकी पर अपनी पहुँच बनाने के लिए माध्यम बनाते हैं। इससे उसे अतिरिक्त

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आमदनी हो जाती है। गाँव के शरीफ लोग बुढ़िया का अपने घर में आना और बहू बेटियों से मिलना पसन्द नहीं करते। जब वह चौकी पर काम नहीं करती थी तो लोग उसे बतशिया कहते थे, अब बताशो कहते हैं।

बताशो को मालूम है कि आज पिपरी से नए दरोगा जी आने वाले हैं। उसका चौकीदार बेटा, सीका–कँवरी वालों को लेकर दरोगा का सामान लेने कल ही पिपरी थाने पर जा चुका है। चौकी के सिपाहियों से बताशो ने सुन लिया है कि आने वाले दरोगा बड़े कड़ियल हैं। वह चाक चौबन्द होकर उनका इन्तजार कर रही है। चौकी के दरोगा के० डी० राम चौकी से थाने पर स्थानानन्तरण हो जाने से बहुत प्रसन्न हैं।

अगहन के आकाश में बादल छाए हुए हैं। हल्की बूंदा बांदी हो जाने के कारण मीठी ठन्डक पड़ रही है। दरोगा राय के आगमन का इन्तजार करते दिन के सात बज गए। बताशो चाय बनाकर चौकी वालों को पिला चुकी है। वह बार-बार कच्ची सड़क के उत्तरी छोर तक अपनी दृष्टि दौड़ाकर देखती, निराश होकर राय दरोगा के लिए खौलते चाय के पानी को चूल्हे से उतार कर रख देती। इस बार जब वह बरामदे में आई तो देखा कि सीका–कँवरी वाले सामान लिए हाट के मैदान से चले आ रहे हैं। उसका लड़का सिर पर लाल पगड़ी बाँधे बड़ी अकड़ के साथ आगे-आगे चलता चौकी पर आया। कुछ देर में सींका–कँवरी वाले दरोगा जी का सामान लिए हाँफते हुए चौकी के बरामदे के सामने आए। वे चौकीदार के निर्देशानुसार दरोगा जी के सामान को एक स्थान पर उतार अपनी बेहद मैली फटी अगौंछी से माथे का पसीना पोंछने लगे।

दरोगा के० डी० राम चौकी के कमरे से बाहर निकल आए। उन्होंने पूछा–'दरोगा जी कहाँ हैं?'

चौकीदार ने सलाम कर के कहा–'हुजूर, चिरकुट साव की दुकान पर रुक गए हैं हुजूर।'

'कौन चिरकुट साव, पिपरी वाले? जिनकी एक दुकान यहाँ पर भी है?'

'हाँ सरकार।'

'ठीक है, सामान बरामदे में रखवा दो और हाँ इन सींका–कंवरी वालों को जाने मत देना, अभी आ रहा हूँ' कहकर दरोगा के० डी० राम अपनी पूरी वर्दी में चिरकुट साव की दुकान की ओर चले गए।

लोग बताते हैं कि चिरकुट साव बिहार के रहने वाले हैं। वह पिपरी में बहुत ही दीन-हीन हालत में आए थे। उन्होंने एक बीड़ी के पत्ते के ठेकेदार के यहाँ मजदूर की हैसियत से काम करना शुरू किया। मेहनत और ठेकेदार के लिए अच्छी व्यवस्था करके वह मजदूरों के मेठ बन गए। मेठ बनने के कुछ दिनों बाद

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वह अपना परिवार लेकर के आए जिसमें उनकी समय पहचानने वाली पत्नी, सोलह-सत्रह वर्ष की लड़की सहदेइया तथा दस वर्ष का लड़का सोहन था। उस वक्त जंगली गाँवों की ओर दुकानें बहुत कम थीं। उन्होंने छोटी सी परचून की दुकान एक झोपड़ी बनाकर खोल ली, जिसे उनकी पत्नी तथा लड़की चलाने लगी। एक दिन चिरकुट के ठीकेदार की दृष्टि सहदेइया पर पड़ी। जिस दिन ठीकेदार की दृष्टि सहदेइया पर पड़ी उसी दिन चिरकुट पर लक्ष्मी की भी दृष्टि पड़ी। कुछ ही दिनों में चिरकुट ने साव की उपाधि पा ली। आस-पास के आदिवासियों, वनवासियों की भूमि को रेहन रखते-रखते उन्होंने नदी के कछार में सौ बीघे जमीन लिखा ली। ईमानदार किन्तु निर्धन आदिवासी उनके हाथों लुट जाने के बावजूद उन्हें साव ही मानते हैं। इन दिनों उनकी आढ़त राबर्ट्सगंज में बड़े पैमाने पर चलती है। आज वे लाखों के मालिक हैं।

दरोगा के० डी० राम के जाते ही चौकीदार ने अपनी लाल पगड़ी को ठीक करते हुए रोबदार आवाज में कहा–'ए, पसीना का पोंछ रहे हो? सब सामान हियाँ ओसारे में ठीक से धरो।'

सींका–कँवरी वालों ने चौकीदार के निर्देशानुसार सामान को ओसारे में रख दिया। तब चौकीदारी ने सामने की दुकान से उन लोगों को पानी पीने के लिए गुड़ दिलवा दिया और कहा–'पानी पी कर यहीं रहना, कहीं जाना मत, नहीं तो थाना सिपाही को जानते ही हो।'

महात्मा गाँधी के समय में जमीन्दारों, रजवाड़ों की बेगार-प्रथा के खिलाफ लड़ने वाली भारतीय जनता आज अफसरशाही की बेगार प्रथा के खिलाफ बिना एक शब्द बोले शाम तक बैठी रही। इससे यह पता चला कि स्वतंत्रता के बाद लोग थानासिपाही को और अच्छी तरह से जान गए हैं।

शाम को दरोगा के० डी० राम तथा दरोगा राय ने चौकी परिसर में एक साथ प्रवेश किया। बताशो ने तुरन्त चाय आदि दरोगा जी के सामने भेजवाया। उसी समय चौकीदार ने आकर पूछा–'सरकार, सींका कँवरी वाले बैठे हैं। आप जो हुक्म करें।'

'ऊ साले अभी तक क्यों बैठे हैं? कह दो जाँय' के० डी० राम ने झल्लाकर कहा।

चौकीदार के चेहरे पर कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई। उसने झुककर कहा–'अच्छा सरकार' और चला गया।

दरोगा राय चाय की चुस्की लेते हुए बोले–'यहाँ के मुखबिर तेज तर्रार हैं कि बस माटी के माधो ही हैं?'

'जैसे सब जगह के हैं वैसे ही हैं। हाँ, यह बात दूसरी है कि यह शान्त

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इलाका है, अपराध कम होते हैं। इसलिए मुखबिर पुलिस के वफादार तो हैं लेकिन मँजे हुए नहीं हैं।'

'भलुआ का मुखबिर कैसा है?'

'वहाँ पर तो कोई मुखबिर था नहीं। अभी हाल में मैंने कल्लू को वहाँ का मुखबिर बनाया है। अभी तक कोई काम पड़ा नहीं, इसलिए हम बता नहीं सकते कि वह कैसा है?'

'कुछ जाँच-परख के ही तो उसे मुखबिर बनाया होगा?'

'जाँच-परख तो यही है कि वह बहुत गरीब है, ऊपर से नशेड़ी है। ऐसे लोगों से कुछ पैसा और संरक्षण देकर काम करवाया जा सकता है। वैसे बताशो इस तरह के कामों में आप की पूरी मदद करेगी।'

'कौन बताशो?'

'इसी चौकी की महरिन है। बुलवा दूँ क्या?'

'अभी रहने दीजिए। जब वह यहाँ की महरिन ही है तो उससे बात कर लूंगा। चार्ज लिस्ट वगैरह तो आपने तैयार ही कर लिया होगा?'

'जी हाँ,' कहकर दरोगा के० डी० राम ने टेबुल के ड़ाअर में रखी फाइल को निकाल कर दरोगा राय के सामने रख दिया। राय ने उस पर हस्ताक्षर किया और पूछा–'कब जा रहे हो?'

'जाने का विचार तो आज ही था लेकिन आप के आने में कुछ देर हुई। दूसरी बात, मैंने सोचा कि आप से पिपरी के विषय में कुछ जान लूँ तो अच्छा रहेगा।'

'पिपरी में सब ठीक है। छोटा दरोगा बहुत अच्छा है। वहाँ के बनियों में कोई दम नहीं है। बाहर से आए लोग लूट-पाट करते हैं, उन्हीं से थाने को आमदनी है। वहाँ के नेता सेता सब तीन कौड़ी के हैं। हाँ एक आदमी है 'सम्पादक जी', साला समझ में नहीं आता कि वह क्या चीज है?'

'आप के मुखबिरों ने उसके विषय में कुछ पता नहीं लगाया?'

'वे मादरचो...क्या पता लगाते? जितने मुखाबिर उतनी बातें। अब किस मुखबिर साले की बात पर विश्वास करूँ?'

'एक बार तो आपने कहा था कि वह पथभ्रष्ट योगी है?'

'हाँ भाई, यही बात तो मेरी समझ में नहीं आती। उसका गुरु चमत्कारिक सिद्ध है। अच्छे-अच्छे लोग उसके शिष्य हैं। इस सम्पादक का चेहरा आठ वर्ष पहले जेल से भागे एक खूंखार आदमी के फोटो से कुछ-कुछ मिलता है। कुछ समझ में नहीं आता कि क्या गोरखधन्धा है? देखो किसी न किसी दिन तो स्पष्ट होगा ही।'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दोनों में वार्तालाप होते रात्रि के नौ बज गए। रात्रि भोजन के पश्चात् दोनों सो गए। सुबह उठकर के० डी० राम पिपरी चले गए। उनके पिपरी जाने के पश्चात् दरोगा राय ने बताशो को अपने कार्यालय में बुलवाया। सफेद साड़ी पहने, पक्के पानी की लम्बी अधेड़ बताशो ने कमरे के बाहर अपनी चप्पल निकालकर, हाथ जोड़े कमरे में प्रवेश किया।

'यहाँ कब से महरिन का काम करती हो?' दरोगा राय ने पूछा।

'मुला सरकार, जबसे ई चौकी हियाँ बनी तब से आपै लोगन की सेवा-टहल करती हूँ।'

'चौकी बने तो बहुत दिन हो गया।'

'आधी बीसी बरिस तऽ होई गया, मुला हमार लड़िका हियाँ चौकीदार है जवन आप के सामान लियावै गया रहा।'

'अच्छा-अच्छा, वह तुम्हारा ही लड़का है?'

'जी सरकार' मुला हम माई बेटवा निमक हरामी कभी नाहीं किया सरकार।'

अब राय दरोगा ने ध्यान से उसकी ओर देखा और पूछा–'भलुआ गाँव जानती हो?'

'काहे नाहीं सरकार, मुला हमरे बिरादरी के तीन घर हुआँ हैं। भोला महराज, छोटई महराज, रामधनक, फन्नू, कल्लू सबके...।'

'कल्लू को जानती हो?' कल्लू का नाम आते ही दरोगा राय ने उसकी बात को बीच में ही काट कर पूछा।

'काहे नाहीं सरकार, मुला दरोगा जात समय आप से कुछ नाहीं बताए' बताशो ने अपने चेहरे पर हैरानी का भाव लाकर कहा।

'हाँ बताया है कि कल्लू इस चौकी का मुखबिर है।'

'आउर कुछ नाहीं बताए का हजूर?' बहुत धीमें स्वर में इस बात को कहकर बताशो ने अपने अगल-बगल इस दृष्टि से देखा जैसे वह यह पता लगाना चाह रही हो कि कोई सुन तो नहीं रहा है। बताशो के हाव-भाव देखकर राय दरोगा ने समझ लिया कि वह कोई अत्यधिक गोपनीय बात बताना चाह रही है जिसे दरोगा के० डी० राम ने छिपा लिया है। उन्होंने अगल-बगल देखकर कहा– 'नहीं और तो कुछ नहीं बताया। तुम जो जानती हो, डरो मत, बताओ।'

'अरे नाहीं सरकार, मुला आपै साहब सूबा के साथ हम एतने दिन से हैं। बताशो का पेट एतना पातर नाहीं है कि आप लोगन की बात न पचा सके' कहकर बताशो मौन हो गई।

गोपनीय के प्रति आकर्षण के मनोविज्ञान ने दरोगा राय को पूरी बात जानने के लिए प्रबल वेग से प्रेरित किया। 'क्या बात है? बताओ'' उन्होंने सख्त लहजे में कहा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'घर की बात घर में बतावै में कोई पाप नाहीं है सरकार। मुला ई चौकी के सब सिपाही जानते हैं हजूर। आप केहू से पूछ लें।'

'तुम बताओ, हम तुमसे पूछ रहे हैं। मैं आदमी पहचानता हूँ। मुझे मालूम है कि तुम झूठ नहीं बोलोगी' राय दरोगा ने पुचकारा।

'गलती को माफ करिहैं सरकार। मुला बात ई है कि कल्लू दरोगा जी की बिरादरी का है। उसकी एक बिटिया है इनरिया, रात बिरात चौकी पर आने-जाने लगी। कल्लू ने आपन एक बिगहा पथरही जमीन दरोगा जी के बैनामा कर दिया। पता नहीं ऊ पथरही जमीन लेकर दरोगा जी काऽ करिहैं? उधर इनरिया का...' बताशो ने अपने पेट पर दोनो हाथों का घेरा बनाकर पेट फूलने का इशारा किया।

'इनरिया ने कोई बवेला नहीं मचाया?'

'किस बात का बवेला हजूर? मुला दरोगा जी रुपिया पइसा सब देते रहे। इस सब छिनारन के आउर का चाही? दरोगा जी ने तो इतना दिया, नाहीं तो कवनो बालू वाले टरक डरेबर से फंसती चाहे कवनो ठेकेदार से। ऊ सब दस पाँच पकड़ा कर चले जाते।'

'उसकी जमीन भी तो लिखवा लिया।'

'जमीन की कौन बात करते हैं सरकार? पथरही जमीन का दो सौ रुपिया दरोगा जी दिए नाहीं त कौन पूछता ओ पथरही जमीन को?'

बातचीत से दरोगा ने समझ लिया कि आदिवासी अभी तक अपनी जमीन के भविष्य में बढ़ने वाले मूल्य से अनभिज्ञ हैं। दरोगा के० डी० राम ने अवश्य ही निकलने वाली सड़क के आस-पास ही यह जमीन लिखाई होगी, जो कालान्तर में लाखों रुपए की होगी। के० डी० राम द्वारा अपनी ही बिरादरी को धोखा देकर मात्र दो सौ रुपए में लाखों की जमीन हड़प लिए जाने से राय दरोगा अपनी सफलता के ताने-बाने बुनने लगा। 'क्यों न बाबा के लिए व्यवस्था किए जाने वाले जमीन में धीरे से मैं भी अपनी व्यवस्था कर लूँ। लेकिन मादरचो...एस० पी० भी अपने हिसाब-किताब में लगा होगा। ई साला चमार इतना चतुर निकला और हम कुछ नहीं कर पाए' सोचकर दरोगा राय का मन बड़ा खिन्न हो गया।

व्यक्ति चाहे जिस जाति, धर्म का हो, शक्तिशाली होते ही शोषक हो जाता है और पहले से ही शोषण-शक्ति से सम्पन्न वर्ग में शामिल होकर अपनी अलग पहचान बना लेता है। इसलिए जातियाँ नहीं परिस्थितियाँ शोषक होती हैं।

'एक बाबा जी को मठ बनाने के लिए सुखनइया नदी के दाहिने तरफ पाँच बीघा जमीन चाहिए। अगर कोई बेचने वाला हो तो बताना।'

'उधर तो सरकार, छोटई महराज आउर फन्नू की जमीन है। मुला एक बिगहा कल्लू के कब्जे में रही तो दरोगा जी खरीद लिए।'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'अच्छा ठीक है, तुम जाओ।'

बताशो ने फिर से दरोगा को सलाम किया और चलने के लिए मुड़ते हुए बोली–'मुला सरकार, हम अपने बिरादरी के लोगन से पता करके बताऊँगी।'

दरोगा राय कुछ नहीं बोले। वह कमरे के बाहर आ गई।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१४. नवरात्र पूजन

तीन महीने तक राय दरोगा भलुआ में जमीन प्राप्त करने की जीतोड़ कोशिश करते रहे लेकिन असफलता ही हाथ लगी। बताशो भी इस मामले में कुछ नहीं कर पाई। दरोगा ने जमीन के मामले में मौन साध लिया किन्तु भलुआ में वह अपनी गश्त बराबर लगाता रहा। गश्त के दिन वह शाम को छोटई महराज के रामायण में अवश्य शामिल होता। कभी-कभी वह अपनी तरफ से भक्तों को शंकर की बूटी भी भेंट करता और बड़ी श्रद्धा से रामायण सुनता। गाँव में उठे विवादों को वह वहीं पर पंचायत करके निपटा देता और कहता–'थाना, कचहरी जाना बहुत बड़ी बेवकूफी है। थाने में मुंशी से लेकर दरोगा तक सब साले बेईमान हैं। गरीबों को सताकर पइसा चूसते हैं। यही हाल कचहरी का है।'

दरोगा की ऐसी बातों को सुनकर सभी ग्रामीण मुग्ध हो जाते। रामायण में दरोगा के बैठने से छोटई महराज के यहाँ भक्तों की संख्या भी बढ़ गई।

'धरमात्मा दरोगा है, इसीलिए धरम की जगह पर हाथ जोड़कर बैठता है' छोटई महराज सीना फुलाकर कहते। रामायण सुनने के लिए दरोगा के बैठने के कारण छोटई महराज की भक्ति की शक्ति का प्रताप आसपास के गाँव वालों ने भी महसूस किया किन्तु भोला महराज की व्यावहारिक बुद्धि चौकन्नी हो गई। जब कोई उनसे राय दरोगा के भक्तिभाव की चर्चा करता तो वह हँस कर कहते–'चलो भैया जनम की उढ़री जबै सुधरी।'

समय की बरसात से इस वर्ष अच्छी फसल होने का श्रेय छोटई महराज दरोगा राय को देते हैं। उनका कहना है कि पुन्नात्मा दरोगा के कारण भगवान खुश हो गए। जब राजा पुन्नात्मा होता है तब परजा सुखी होती है। उनकी इस बात का समर्थन उनके गंजेड़ी भक्त बड़े जोरदार ढंग से करते।

सम्मान की लालसा लिए असम्मानित जीवन जीने वाले व्यक्ति को जब कोई रुतबेदार व्यक्ति सम्मान देता है तो वह सम्मान देने वाले व्यक्ति के प्रति अत्यधिक स्नेहासिक्त होकर उसका गुणगान करने लगता है।

देखते-देखते चैत मास आ गया है। चैत के आने पर किसान उतना ही प्रसन्न होता है जितना कोई निर्धन पिता अपने कमाऊ पूत के परदेस से कमाकर लौटने पर होता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सभी किसान अपनी फसल काटकर खलिहान में रख चुके हैं। खलिहानों में पकी फसल की सौंधी महक भर गई है। गाँव के जो सिवान शाम होते-होते वीरान हो जाते थे वहाँ देर रात तक चहल-पहल रहती है। लोग मड़ाई किए गए डाँठों पर लेट कर कहानी किस्सा कहते सुनते कब सो जाते उन्हें पता नहीं लगता।

खलिहान समेटते-समेटते चैत का नवरात्र आ गया। आदिवासी क्षेत्र में भादों की शुक्ल पक्ष एकादशी तथा चैत का नवरात्र ये दो बड़े महत्वपूर्ण पर्वों के समय हैं। भादों माह के शुक्ल पक्ष में एकादशी के दिन आदिवासी अपने करम देव की पूजा करते हैं। सारी रात भानर बजाकर करमा गाते हैं, फिर द्वादशी की शाम को करम देव के प्रतीक करमा डाल को पुरुष वर्ग विसर्जित कर पूजन समाप्त करता है।

कर्म को ही देव तुल्य सम्मान देने की इच्छा ने ही शायद किसी समय में कर्मदेव के पूजन का रूप धारण कर लिया होगा। आज कर्म को देवता मानने वाला आदिवासी अकर्मण्य हो कर जंगलों में भूखों मर रहा है।

चैत के नवरात्र में देवी दूर्गा की पूजा होती है। पूजन करने वाला नौ दिन व्रत रहकर देवी की आराधना करता है। इन दिनों भूत-प्रेत झाड़े-फूँके जाते हैं।

भलुआ में कल्लू इस पर्व पर प्रतिवर्ष अपने घर पर देवी के पूजन का आयोजन करता है। अपने घर के एक कमरे में देवी के कलश की स्थापना कर वह नौ दिन तक व्रत रहकर बड़े भक्ति-भाव से देवी पूजन करता है। लाल चुनरी से आच्छादित जल भरा कलश, कलश के मुँह पर आम का टल्लो, उसपर एक परई में जौ भर, जौ के ऊपर घी का दीपक जलाकर देर रात तक पूजन कर उसी कमरे में कलश के पास जमीन पर सो जाता है। गाँव के श्रद्धालुओं द्वारा चढ़ाए गए कितने ही चुनरी से ढँके नारियल कलश के सामने तरतीब से रखे रहते हैं। सुगन्धित फूलों से ढँके कलश के आस-पास दिन-रात अगरबत्ती दशांग और कपूर के जलने से कमरे में एक मनमोहक सुगन्ध भरी रहती है, जिससे कमरे में घुसते ही आदमी सुगन्ध के सम्मोहन में आने लगता है। इस सम्मोहन को श्रद्धालु देवी के प्रताप का फल समझ, चरणों में झुक अपने दु:ख-दैन्य का रोना रोने लगते हैं।

अपनी व्यथा को प्रगट कर देने से आदमी का मानसिक तनाव कम हो जाता है और जिसके सामने व्यथा कही गई है उसे सर्वशक्तिशाली जान कर, उसकी कृपा होगी, ऐसा विश्वास कर आदमी में आत्मबल का संचार होता है। इसी आत्मबल के कारण आजतक दु:ख दैन्य में पिसता भारतीय समाज जीवित है। यदि इसका विकल्प दिए बिना, यह भी इन से छीना गया तो इनके लिए आत्महत्या ही शेष बचेगी।

चैत नवरात्र पर्व पर होने वाले आदिवासी उत्सव को देखने के लिए सम्पादक जी जब बंशी और उसकी पत्नी के साथ भलुआ पहुँचे तो रात्रि के ग्यारह

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बज रहे थे। गाँव में पहुँचते ही उन्हें ढोलक पर बजती दबका ध्वनि सुनाई पड़ी। वह बड़े उत्साह से उस ओर जैसे ही चले कि बंशी ने उन्हें रोकते हुए कहा–'यह कार्यक्रम रात भर चलता रहेगा। अभी घर से कुछ खा-पीकर तब आएँगे।'

खाने का नाम लेते ही सम्पादक जी को होश आया कि अभी तो सुबह से कुछ खाया ही नहीं है। कुछ न खाने की याद आते ही उन्हें बड़ी तेज भूख मालूम हुई। उन्होंने बंशी का हाथ पकड़कर कहा–'जल्दी चलो, जो कुछ बना हो उसे जल्दी से खिला दो। यह नहीं कि हमारे लिए कुछ बनवाने लगो।'

सम्पादक जी बंशी के साथ जब उसके दरवाजे पर पहुँचे तो भोला महराज बैठे खैनी मल रहे थे। सम्पादक जी और बंशी ने जाकर भोला महराज का पाँव छुआ। भोला महराज आशीर्वाद देते हड़बड़ा कर उठे और समरथ्थी, समरथ्थी पुकारने लगे। थोड़ी देर में घर का द्वार खोलकर समरथ्थी ने हाथ में जलती ढेबरी लिए बाहर को झाँका। भोला महराज के कुछ कहने के पहले बंशी ने कहा–'मैं हूँ, देखो घर में जो कुछ भी बना हो उसे दो थाली में परस कर जल्दी से लाओ।'

'अभी हम लोग तुम्हें जोहकर खाने ही जा रही थीं। अरे भौजी भी आई हैं' बंशी की पत्नी को सामने देख कर समरथ्थी ने बहुत हुलसित होकर कहा और आगे बढ़कर दुलारी के हाथ से झोला ले लिया।

दुलारी और समरथ्थी घर के अन्दर चली गईं। थोड़ी ही देर में आंगन में ही खाने का बुलावा आ गया। बंशी और सम्पादक जी ने आंगन में जाकर भोजन किया। भोजन के बाद बंशी सम्पादक जी के साथ कल्लू के यहाँ पहुँच गया। कल्लू के आंगन में दर्शकों की भीड़ लगी थी। एक आदमी ढोलक पर दुबका बजा रहा था। कल्लू बड़े ही करुण स्वर में देवी गीत गा रहा था, जिसे सुनकर वहाँ पर एकत्रित देवी भक्त जिनमें बूढ़े, नौजवान तथा चौदह पन्द्रह वर्ष के किशोर भी थे, उन्मत्त हो कर उछल-कूद कर रहे थे। वहीं पास में जगह-जगह बैठी औरतें अपना बाल खोले विचित्र ढंग से अपने हाथ पाँव फटकारती हबुआ रही थीं। हबुआने वाली कोई महिला जब हवन कुण्ड के जलते अंगारे को हाथ में ले बड़े वेग से नाचने लगती तो दर्शक जल जाने के भय से उससे दूर हट कर खड़े हो जाते।

हवन का धुआँ अनवरत गति से सुगन्ध बिखेरता ऊपर को उठता सारे आंगन में भर गया था। हवन कुण्ड के पास ही ढेर सारे पतले-पतले लोहे के एक किनारे पर तीखे और दूसरे किनारे पर त्रिशूल के आकार के सांग गड़े थे।

ढोलक की दाबक ध्वनि से उन्मत जब कोई भक्त दौड़ एक सांग उखाड़, सांग के तीखे सिरे से अपने बाँए गाल को छेदता दाहिने गाल के पार कर देता तो सभी लोग एक साथ–'काली मैया की जै' कहकर चिल्ला उठते। भक्त दो-तीन हाथ लम्बे लोहे की सांग को अपने गाल के आर पार किए नाचता रहता।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सम्पादक जी ने आश्चर्य से देखा कि सांग से गाल को इस पार से उस पार बेधने से एक बूँद भी रक्त नहीं निकला। उन्होंने बंशी की ओर देखा। बंशी उनके मन्तब्य को समझ गया और कहा–'आप अपना कैमरा निकाल लीजिए अभी एक से एक अद्भुत करिश्में दिखाई पड़ेंगे।'

सम्पादक जी अपने झोले से कैमरा निकाल कर चित्र खींचने के लिए जैसे ही तैयार हुए वैसे ही भीड़ में से किसी ने उनके कन्धे पर हाथ रखा। उन्होंने मुड़कर देखा तो दरोगा राय मुस्कुराते सामने खड़े थे। सम्पादक जी ने नमस्कार किया तो वे आंगन के कोने में पड़ी चारपाई की ओर उनका हाथ पकड़े बढ़ गए। चारपाई पर दोनो आराम से बैठकर पूजा के दृश्य देखने लगे।

'आप कब आए?' दरोगा ने पूछा।

'आज ही' सम्पादक जी ने संक्षिप्त सा उत्तर दिया और अपना कैमरा ठीक करने लगे।

'पिपरी का क्या हाल है? सरकार मिले थे?'

'ठीक है' सरकार से अभी मुलाकात नहीं हुई। आश्रम की जमीन के विषय में क्या हुआ?'

'अभी तक तो कुछ नहीं हुआ, व्यवस्था में हूँ, हो जाएगा।'

'जहाँ मेरी जरूरत समझिएगा, बताइएगा' सम्पादक जी ने दरोगा के 'हो जाएगा' का 'कैसे हो जाएगा', जानने के लिए कहा।

'आपके सहयोग के बिना आश्रम का काम नहीं होगा' दरोगा ने सम्पादक जी की ओर देख कर कहा।

'बोलिए, कौन सा सहयोग करूँ?'

'समय आएगा तब बताऊँगा। उधर देखिए एक भक्त सांग अपने गले के आर पार कर रहा है' दरोगा ने आश्चर्यचकित होकर कहा।

सम्पादक जी ने चौंककर उधर देखा। ढोलक अपनी विशेष धुन में और चढ़कर बजने लगा। देवी की करुणा का गीत मधुर स्वर में उस ढोल ध्वनि में सनकर पूरे वातावरण पर छाया हुआ था। सांग भक्त की गर्दन के आर पार हो गया। वह सांग को गले के आर पार किए उछल कर नाचने लगा। पूरी भीड़– 'काली मैया की जय' चिल्ला उठी।

अब सम्पादक जी चित्र खींचने के एकदम मूड में आ गए थे। वह चारपाई से उठकर उस आदमी के चित्र विभिन्न कोणों से लेने लगे।

बाल बिखेरे, कुछ जवान लड़कियाँ प्रेत बाधा से हबुआ रही थीं। कुछ नौ दिन व्रत रह कर आज हबुआ कर देवी की सवारी अपने ऊपर बुला रही थीं। जवान लड़के उन्मादियों की भाँति विचित्र ढंग से अपने हाथ पाँव पटकते झूम रहे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

थे। सम्पादक जी सुबह तक चित्र खींचते रहे। उनकी आँखें निरन्तर बुधनी को ढूँढ़ती रहीं। जब वह भीड़ में नहीं दिखाई पड़ी तो उन्होंने बंशी से पूछा–'मगरू नहीं दिखाई पड़ा?'

'अभी तक तो था, चला गया होगा।'

'जरा देखो, रामधनक या बुधनी यहाँ हों तो उन्हें बता दो कि यहाँ से जो करमा गीत मैं टेप करके ले गया था वह कल शाम को सात बजे रेडियो पर आएगा। मैं रेडियो ले आया हूँ। तुम्हारे यहाँ आकर जिसे सुनना हो सुन ले।'

'रामधनक भैया को रतौंधी है। वह तो यहाँ चाहकर भी नहीं आ सके होंगे और बुधनी शुरू में आती थी, इधर दो तीन साल से नहीं आती।'

'अच्छा ठीक है, उन्हें कल बता दिया जाएगा। अब चलो कुछ आराम कर लिया जाय' कहकर सम्पादक जी बंशी के घर आकर सोने का उपक्रम करने लगे लेकिन सुबह हो जाने से उन्हें नींद नहीं आ रही थी। उन्हें रह-रह कर दरोगा की जमीन के विषय में कही गई बात याद आ रही थी। दरोगा किस प्रकार जमीन की व्यवस्था करेगा? जमीन लेने के लिए कहीं कोई षडयंत्र तो नहीं कर रहा है? इसे सोचते-सोचते वह कब सो गए उन्हें पता ही नहीं चला।

सम्पादक जी को बंशी ने 'सम्पादक जी उठिए, दिन चढ़ आया' कहकर जगाया तब उनकी नींद टूटी। वह जल्दी से उठ कर नित्य क्रिया से निवृत्त होने नदी की ओर चले गए। निवृत्त होकर जब वह बंशी के घर की ओर लौटने लगे तो उनकी दृष्टि नदी के पास टीले नुमा भूमि पर पड़ी, जिस पर एक अकेला महुए का पेड़ था। उसी पेड़ के नीचे एक जटाजूटधारी साधु बैठा दिखाई पड़ा। वह उत्सुकतावश टहलते हुए साधु के पास पहुँचे। उसे प्रणाम किया और पूछा–'कहाँ से आगमन हुआ महराज?' साधु मौन रहा, तब उन्होंने समझ लिया कि यह मौन व्रतधारी साधु है। साधु चुपचाप अपने में ही मस्त अपनी झोली से गाँजे की चिलम निकाल कर उसमें पीने से बचे गाँजे को सलाई की तीली से जलाकर पीने लगा। सम्पादक जी ने उससे बात न कर पाने की स्थिति में लौट जाना ही उचित समझा और वे बंशी के घर तक जाने वाले मार्ग पर चल पड़े। जब वह बुधनी के घर के पास पहुँचे तो उसके घर पर ताला लगा देख बहुत निराश हुए। निराशा की स्थिति में वह जल्दी-जल्दी बंशी के दरवाजे पर पहुँचे तो बुधनी को बंशी के घर में से अनाज ढोने का बड़ा दउरा लिए निकलते देख प्रसन्न हो गए। उसी समय बंशी हाथ में दातुन लिए आया। सम्पादक जी ने बंशी से दातून लेकर पूछा–'आज शाम को सात बजे करमा गीत आएगा, इन लोगों को बता दिया?'

'अभी तो नहीं, पर बता दूँगा, काफी समय है।'

'ए बुधनी' सम्पादक जी ने पुकारा। बुधनी ठमक गई। एक बार सम्पादक जी की ओर आँख उठाकर देखा फिर जमीन की ओर देखने लगी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'आज शाम को सात बजे तुम लोगों का करमा गीत रेडियो पर आएगा। सब से कह देना, जिसे सुनना हो यही पर आकर सुन ले। यह हाथ में कौन-सी किताब ली हो? पढ़ना जानती हो क्या?' सम्पादक जी ने बुधनी के हाथ में एक छोटी-सी किताब देखकर पूछा। बुधनी ने लजाकर हाथ में लिए किताब को छिपा लिया और चली गई।

'मार्क्स और गाँधी' किताब है। मुझसे जिद कर के ले जा रही है कि फोटू देखकर लौटा दूँगी' बंशी ने कहा।

सम्पादक जी कुछ देर तक जाती हुई बुधनी की ओर देखते रहे फिर दातून करते-करते बोले–'यह नदी किनारे साधु कब से आया है?'

'सुन तो रहा हूँ कि एक माह से आया है। किसी से कुछ मांगता-जांचता नहीं, न कुछ खाता-पीता है। बस दिन रात गाँजा पीता है और भूख लगने पर नदी की महीन बालू फाँककर पानी पी लेता है।'

जिम जगह रुका है, 'वह किसकी जमीन है?'

'छोटई कक्का की'

'उसके यहाँ गाँव वाले जाते है?'

'अधिकतर लोग शाम को उसके यहाँ जाते हैं। दरोगा जी स्वयं उसका चरण स्पर्श करते हैं। गाँव वालों की उसके प्रति बड़ी श्रद्धा है।'

'छोटई महराज ने कोई एतराज नहीं किया?'

'जब उनका धर्मात्मा दरोगा ही उसका चरणस्पर्श कर रहा है, तब वह क्यों एतराज करेंगे?'

'हूँऽऽ' सम्पादक जी ने लम्बी साँस ली और उनका दातून करना रुक गया। वह विचारमग्न हो गए। कुछ देर बाद उन्होंने अपना सिर उठाकर बंशी को सिर से पाँव तक निहारा फिर कुछ सोचने लगे। कुछ देर मौन रहने के बाद वह धीरे से बोले–'अब बात समझ में आ रही है।'

'कैसी बात?' बंशी ने पूछा।

'पानी लाओ, मुँह धो लूँ, चाय पी लूँ तब तुमसे एकान्त में बात करूँगा।'

विस्मित बंशी ने जल्दी से पानी लाकर दिया। सम्पादक जी ने मुँह धोकर चाय पी और बंशी का हाथ पकड़ नदी की ओर चल पड़े। नदी के पास एकान्त में खड़े होकर सम्पादक जी ने फिर एक बार बंशी को सिर से पाँव तक देखा जैसे वह बंशी को परख रहे हों। उसे देखकर वह कुछ देर तक मौन रहे फिर बोले–'डाक्टर के यहाँ जो बाबा आता है उसने आश्रम की बात चलाई थी। यह बात तुमने मुझसे कही थी, याद है?'

'हाँ याद है' बंशी ने कहा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'फिर छोटा दरोगा जब यहाँ आया था तो यहाँ की जमीन में हमारे तुम्हारे हिस्सेदारी की बात कर रहा था।'

'हाँ यह भी याद है।'

'इस गाँव की नदी किनारे वाली जमीन पाँच सात साल के अन्दर ही बड़ी बहुमूल्य हो जाएगी। इसी तरफ से होती हुई आगे बनने वाली फैक्टरी तक बहुत चौड़ी सड़क जाएगी। सम्भवत: यह स्थान एक सुन्दर बाजार के रूप में विकसित होगा। तुम विश्वसनीय आदमी लगते हो इसलिए तुम से बता रहा हूँ कि लुटेरे आदमखोर गिद्ध इस जमीन को लक्ष्य बनाकर आकाश में मँडराने लगे हैं। अगर गाँव के लोग होशियार नहीं हुए तो ये सब को खा जाएँगे' कहकर सम्पादक जी ने बंशी की ओर उसकी प्रतिक्रिया जानने के लिए देखा।

'अगर लोग हम लोगों की जमीन कब्जा करेंगे तो हम ऊपर लिखा पढ़ी नहीं करेंगे क्या?' बंशी ने उत्तेजित होकर कहा।

सम्पादक जी बहुत उदास होकर नैराश्य भरी हँसी हँसे। कुछ देर तक मौन रहे फिर बोले–'किस ऊपर वाले के पास लिखा पढ़ी करोगे? सत्तासीन मंत्री की बात मैं नहीं जानता, डी० एम०, एस० पी० और ए० डी० एम० तक को मैं जानता हूँ। ये सभी अपने सम्बन्धियों के नाम इधर की काफी जमीन लिखा चुके हैं। दरोगा के० डी० राम ने कल्लू की लड़की की इज्जत भी ली और उसकी जमीन भी मुफ्त में लिखा ली। इसी कड़ी में ये बाबा और दरोगा राय भी जुटे हैं।'

'हम इतने दिनों से इस जमीन को जोतते बोते चले आ रहे हैं। वे कागजातों पर से हमारा कब्जा कैसे कटवा देंगे?' बंशी ने हैरानी भरे स्वर में पूछा।

'तुम तो जानते ही हो कि सिंगरौली और अगौरी परगना गैर पैमाइशी इलाके हैं। इन इलाकों में जमीन की लगान हल पीछे अथवा जिसे तुम लोग स्थानीय भाषा में तोड़ा कहते हो, उसके हिसाब से लगती है। जिस जमीन को तुम लोग जोतते हो उसका नजरी नक्शा पटवारी ने बना दिया है। नजर से देखकर बनाया नक्शा क्या अगल-बगल खिसकाया नहीं जा सकता या दस बीघे के रकबे को आठ बीघा नहीं किया जा सकता? बोलो।' इस प्रकार से सम्पादक जी द्वारा जमीन की स्थिति स्पष्ट किए जाने से बंशी के चेहरे पर व्याकुलता के लक्षण स्पष्ट रूप से उभर आए। उसने बेचैनी से सम्पादक जी की ओर देखा।

'हो सकता है पूरा भलुआ गाँव ही पैसे की ताकत से ये लुटेरे नक्शे में अपनी सुविधानुसार एकाध फर्लांग इधर-उधर खिसकवा दें। हो सकता है जो जमीन आप लोग जोत बो रहे हों वह नजूल की हो जाय। बहुत बड़ी लूट होने वाली है और यह लुटेरा गिरोह इतना शक्तिशाली है कि सत्ता के नाम पर पुलिस की गोलियाँ इनके साथ हैं और व्यक्तिगत स्तर पर खूंखार गुण्डे। न्यायालय अगर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तुम्हारे पक्ष में न्याय दे भी देगा तो उसका परिपालन जनपद स्तर के उन्हीं अधिकारियों को कराना है जो इस लूट में प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप में संलग्न हैं।''

'फिर क्या किया जाय?' बंशी ने स्थिति की भयावहता से निराश होकर पूछा-'बाबा को भगा दूँ क्या?'

'नहीं बाबा को जरा भी मत छेड़ना, नहीं तो तुम्हारी जिन्दगी खतरे में पड़ जाएगी। आते-जाते कहीं भी गोली के शिकार हो सकते हो या हत्या लूट के किसी झूठे मुकदमे में फँसाये जा सकते हो। बुद्धिमानी से काम लो।' सम्पादक जी ने इस बात को इतनी गम्भीरता से कहा कि बंशी के मन पर एक दहशत सी छा गई। बंशी ने सम्पादक जी को इस रूप में बात करते कभी देखा नहीं था। अभी तक उसका ख्याल था कि वह एक मस्त, बेलौस आदमी हैं। गम्भीर से गम्भीर बात को बड़े सहज ढंग से लेते हैं। परन्तु आज उनके गम्भीर रुख और चौकन्नेपन को देखकर उनका एक दूसरा ही रूप उसके सामने उभर आया।

'फिर क्या किया जाय?' बंशी ने पूछा।

'मेरा अनुमान है यह बाबा सूरज राम का आदमी है जो दरोगा राय के षड्यन्त्र से यहाँ बैठाया गया है। हो सकता है मेरा अनुमान गलत हो। भगवान करें गलत हो, नहीं तो यह जमीन तो बचेगी नहीं। सूरज राम और उनके शिष्य, चाहे जैसे भी हों, अगर यह जमीन उनके लिए उपयोगी है तो इसे लेकर छोड़ेंगे' कहकर सम्पादक जी कुछ सोचने लगे।

'आप तो सूरज राम के प्रिय शिष्य हैं। पता लगाइए कि यह बाबा उन्हीं का शिष्य है या कोई और है।'

'जिस प्रकार बाबा मेरे लिए प्रिय हैं, उसी प्रकार मैं भी उनके लिए प्रिय हूँ। हम दोनों एक दूसरे की वास्तविकता को अच्छी तरह जानते हैं' कहकर सम्पादक जी एक कसैली हँसी हँसे। कुछ देर मौन रहकर फिर बोले-'जानते हो, अब मेरे लिए खतरा बढ़ गया है। पता लगाने की कोशिश की तो बाबा को मेरे ऊपर शक हो जाएगा, फिर मुझे अपनी सुरक्षा के लिए यहाँ से भी भागना पड़ेगा। यह बात हमारे तुम्हारे बीच हो रही है। किसी तीसरे को बिना बताए इनके षड्यन्त्रों को काटना है। तुम मेरी बात की गम्भीरता को समझो।'

'इनके षड्यन्त्रों को कैसे काटा जाय? मैं तो नहीं समझ पा रहा हूँ' बंशी ने हताश स्वर में कहा।

सम्पादक जी कुछ देर तक दूर टीले पर महुए के पेड़ के नीचे दम लगाते बाबा की ओर देखते रहे। उनके चेहरे पर एक हलकी सी मुस्कुराहट उभरी। 'ऐसा करो, छोटई महराज को तुम इस बात के लिए राजी करो कि वह जहाँ बाबा बैठा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

है, उसमें की एक बीघे जमीन सस्ते दाम पर या वैसे ही आश्रम को दान कर दें। इससे यह फायदा होगा कि उस टुकड़े पर आश्रम का नाम चढ़ जाएगा, जिसे सूरज राम बहुमूल्य होने के कारण एक इंच भी इधर उधर हटने देना नहीं चाहेगा। उसी आश्रम की जमीन को केन्द्र बिन्दु मान कर उसके आस-पास की अन्य जमीनें जो नजरी नक्शे में हैं, उन्हें नहीं हटने दिया जा सकता है। इस प्रकार कुछ देकर अधिक बचाने का कार्य हो सकता है' सम्पादक जी ने सुझाव दिया।

बंशी को यह कार्यक्रम अच्छा तो लगा लेकिन उसके सामने यह समस्या खड़ी हो गई कि वह कैसे इस काम के लिए छोटई महराज को तैयार करे? अगर वह स्पष्ट रूप से सारी बात बता देता है तो, सीधे-सीधे आदमी होने के कारण वह इतने बड़े षडयन्त्र पर विश्वास ही नहीं करेंगे। अगर विश्वास भी करेंगे तो इतना शोर मचाएँगे कि भेद का भंडाफोड़ हो जाएगा। फिर हम सभी खतरे में पड़ जाएँगे। इस काम को कैसे किया जाय? वह विचार करने लगा तभी सम्पादक जी ने चहककर कहा–'पाँच बज गया, अभी तक कुछ खाना भी नहीं खाया। बुरा न मानना, अब क्या खाएँगे। कुछ दाना वाना खाकर अब शाम को ही खाया जाएगा। रेडियो पर करमा आएगा। चलो चला जाय।'

बंशी ने सम्पादक जी की ओर देखा। अब वह वही पुराने बेफिक्र और मस्त सम्पादक जी थे। बंशी के मस्तिष्क पर अवसाद का घेरा अब तक पड़ा हुआ था। उसने कहा–'कैसे क्या करूँ? कुछ समझ में नहीं आता।'

'कोई बहुत जल्दी नहीं है, रास्ता निकालो फिर देखा जाएगा। अब चलो घर चलें' कहकर वह बंशी के घर की ओर चल पड़े, अपनी उसी मस्तानी चाल में, चुहल करते, हँसते हँसाते। रास्ते में वह बुधनी के घर पर भी रुके। रामधनक से राम जोहार किया और कहा–'दादा आज रेडियो से बुधनी, मगरू का गाया करमा आएगा। आप भी बंशी के यहाँ आकर सुन लें।'

रामधनक सम्पादक जी द्वारा राम राम किए जाने से बहुत गद्‌गद हो गया। उसने कहा–'सरकार, आप बड़ी बड़ा हैं। पहिले हम को राम राम करना चाहिए तवन आप कय के हमरे कपारे पाप चढ़ा दिए।'

'अब बड़े की परिभाषा बदलेगी रामधनक दादा। सबसे बड़े आप हैं आयु और कर्म दोनों से। बुरा न मानना, शहरों से बड़े ये पहाड़ और जंगल होने जा रहें हैं।' रामधनक उनकी बात को किस स्तर तक समझ पाएगा, वह जानते थे। रामधनक की समझदारी का बिना माप तौल किए–'रेडियो सुनने आना' कहते सम्पादक जी आगे बढ़ गए।

रामधनक के यहाँ से चलकर वह सीधे छोटई महराज के यहाँ पहुँचे। छोटई महराज अपनी दुकान में अकेले बैठे मिल गए। सम्पादक जी ने झुककर उनका

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पाँव छुआ। छोटई महराज ने प्रफुल्लित होकर आशीर्वाद दिया और पूछा–'कब आना हुआ?'

परसों का आया हूँ। आते ही सुना कि कोई साधु आए हैं जिन्हें आपने अपनी जमीन में आश्रय दे दिया है। उन्हीं का दर्शन करने गया था।'

'मैंने कौन सा आश्रय दिया है, अभी तो एकदम जवान है। हमारे पुरखों ने कहा है कि–'ज्वान जोगी, वैद्य रोगी, शूर पीठी घाव, कींमिया जब गाँव घूमे उन्हें जनि पतियाव।' हमारा तो इसके ऊपर कौनौ पतियन्तर नहीं है, लेकिन दरोगा जी ने कहा–'रहने दो' मैंने रहने दिया। दरोगा भले मानुष हैं, उनकी बात तो माननी ही पड़ेगी।'

'जी पंडित जी, फिर साधु-संन्यासी के लिए गृहस्थ को त्याग करना ही चाहिए। आप जैसे भक्त गृहस्थ त्याग नहीं करेंगे तो कौन करेगा? बंशी अभी कह रहे थे कि कक्का सच्चे साधु हैं, हो सकता है वह इस साधु को आश्रम बनाने के लिए जमीन दे दें' सम्पादक जी ने छोटई महराज के मन की टोह लेने के लिए कहा।

'अगर बंशी बेटवा कहें तो जरूर दे दूँगा' छोटई महराज आत्म प्रशंसा से बिगलित होकर बोले। सम्पादक जी बंशी की ओर देखकर बोले–'पंडित जी, दान पुण्य बेकार नहीं जाता, क्यों बंशी? तुम भी कुछ बोलो।

'आप ठीक कह रहे हैं। समय आएगा तो कक्का से जरूर कहेंगे।'

'कहकर देखना मैं अपनी बात से हटूँगा नहीं' छोटई महराज ने गर्व से कहा।

सम्पादक जी काम को इतनी आसानी से बनता देख बहुत प्रसन्न हुए। वह अपने स्थान से उठते हुए बोले–'अच्छा ठीक है पंडित जी, अब आज्ञा दीजिए' कहकर वह बंशी के साथ अपने गन्तब्य की ओर चल पड़े।

सम्पादक जी छोटई महराज के यहाँ से चलकर जब बंशी के दरवाजे पर पहुँचे तो देखा कि वहाँ पर ग्रामीणों की एक छोटी सी भीड़ लगी है। वह समझ गए कि ये लोग रेडियो पर आने वाले करमा गीत को सुनने आए हैं। उन्होंने अपनी घड़ी देखी तो पौने सात बज रहा था। जल्दी-जल्दी उन्होंने बंशी द्वारा लाए चबेना गुड़ को खाकर पानी पिया और रेडियो बजा दिया। सम्पादक जी की चारपाई के चारों ओर लोग घेर कर खड़े हो गए। राम धनक भी लाठी टेकता आ गया। गाँव के बूढ़े लोग भोला महराज के इर्द-गिर्द यथास्थान बैठ गए। भोला महराज के दरवाजे पर जुटी श्रोताओं की भीड़ में सिर्फ छोटई महाराज नहीं दिखाई पड़े।

सम्पादक जी ने अपनी दृष्टि घुमाकर बुधनी को इधर-उधर देखा तो वह भीड़ से अलग सुगमुनियाँ के साथ नीम के तने से अपनी पीठ लगाए एक टक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उन्हीं की ओर देख रही थी। सम्पादक जी की दृष्टि जैसे ही उसपर पड़ी, वह इस प्रकार उसी दिशा में देखती रही जैसे वह सम्पादक जी को नहीं बल्कि उनके गोद में पड़े रेडियो को देख रही हो।

रेडियो पर करमा आने की घोषणा हुई। सम्पादक जी ने रेडियो को तेज करते हुए कहा–'आ रहा है अब सुनिए।'

गाँव के लोगों द्वारा गाया गया करमा गीत बजने लगा। सभी गायक कलाकर उसे सुनकर बहुत प्रसन्न हुए। सुगमुनियाँ ने बुधनी की बाँह पर चिकोटी काटी। उसने चिहुँककर–'हट्ट' कहा और मुस्कुरा उठी।

सम्पादक जी ने सब को, विशेष रूप से बुधनी को करमा सुनाकर रेडियो बन्द कर दिया और जिधर बुधनी खड़ी थी उधर ही हाथ जोड़कर कहा–'नमस्कार, अब आप लोग जाइए। मुझे पिपरी जाना है।' इतना कहकर उठकर खड़े हो गए। उनके नमस्कार को भीड़ ने समझा कि उन्होंने सबका अभिवादन किया है, इसलिए सभी उनकी विनम्रता की चर्चा करते हुए अपने घर की ओर चल पड़े और बुधनी खुशी से जड़ बनी वहीं खड़ी रह गई। जब सुगमुनियाँ ने उसका हाथ पकड़कर हिलाया तब उसकी तन्द्रा टूटी और वह सुगमुनियाँ के साथ अपने घर की ओर चली गई।

बंशी और उसके पिता ने सम्पादक जी से इस समय न जाने का बहुत आग्रह किया किन्तु वह नहीं माने। उन्होंने अपनी सायकिल ली और बंशी को एक किनारे ले जाकर फुसफुसाकर बोले–'पागल हो गए हो? अभी तो राक्षस के पंजे की एक उंगली दिखाई पड़ी है' और उंगलियाँ कहाँ हैं? इसका भी तो पता करना है' बंशी के प्रतिवाद करने के पहले वह सायकिल पर चढ़े और पिपरी की ओर चले गए।

शाम साढ़े सात बजे भलुआ से चले सम्पादक जी रात्रि के ग्यारह बजे पिपरी अपने कार्यालय पर पहुँचे। कार्यालय में अपनी सायकिल रख वह पैदल ही भोजन की तलाश में होटल पर आए। होटल में एक-दो ग्राहक बैठे खाना खा रहे थे। वह सीधे होटल मालिक के पास जा कर चौकी पर उसकी बगल में बैठ गए। होटल वाला उन्हें देखकर मुस्कराया और नमस्कार किया। सम्पादक जी ने उसके नमस्कार का प्रतिउत्तर दिया और धीरे से कहा–'कुछ पीने को मिल जाएगा? बुरा न मानिएगा, बहुत थक गया हूँ।'

'इस समय तो ठेका बन्द हो गया होगा।'

'अरे यार चोर दरवाजे से मंगा लो। बुरा न मानना, तुम लोगों की तो पहुँच है।'

'अच्छा ठीक है, देखिए कोशिश करता हूँ' कहकर होटल वाले ने धीरे से एक बैरा को बुलाकर पैसा दिया और शराब लाने का इशारा दिया। लड़का कुछ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

देर बाद शराब लेकर आ गया। उसी समय नशे में धुत्त किसी बात पर बहस करते थाने के दीवान और एक सिपाही ने होटल में प्रवेश किया। उन्हें देखते ही होटल वाले ने धीरे से कहा–'सम्पादक जी, आप पीछे बैठकर पी लीजिए। मैं वहीं गिलास और पानी भेज देता हूँ।'

'क्यों पीछे क्यों? मैं यहीं बैठकर पी लेता हूँ।'

अरे नहीं, ऐसा मत करिए, नहीं तो ये साले पुलिस वाले आप को तो कुछ नहीं कहेंगे लेकिन मेरे पीछे पड़ जाएँगे। कहेंगे कि तुम होटल में शराब बेचते हो मुझे माहवारी दो। आप ही सोचिए, टट्टर घेरकर मड़ई में होटल चला रहा हूँ। क्या आमदनी है जो इन्हें महावारी दूँगा?'

इन लोगों में बातें हो ही रही थी कि दीवान और सिपाही होटल के भीतर एक टेबुल के पास कुर्सी खींच कर बैठ गए। होटल मालिक ने स्वयं उठकर उन दोनों को 'सलाम साहब' कहा और उनके सामने गिलास में पानी और सलाद रख कर पूछा–'क्या लगाएँ साहब?'

'मुर्गा है?' दीवान ने पूछा।

'है साहब', होटल मालिक ने मुस्तैदी से उत्तर दिया।

'दो जगह लाओ' आदेश दे दीवान फिर अपनी वार्ता में मशगूल हो गया।

'पिपरी में इस तरह के एफ० आई० आर० मैं बहुत देख चुका हूँ। देख लेना कुछ नहीं होगा' दीवान ने कहा।

'कैसे आप कहते हैं कि कुछ नहीं होगा? एफ० आई० आर० के गवाह बहुत ठोस हैं। और गवाह भले ही टूट जाँय पर आप क्या समझते हैं चौबे कभी टूटेगा? उसने तो दरोगा राय की गाँऽड़ में पानी भर दिया', सिपाही ने लड़खड़ाती जबान में कहा।

पीछे बैठकर शराब पी रहे सम्पादक जी के कान में इस वार्ता के कुछ अंश पड़े। वह समझ गए कि कोई महत्वपूर्ण एफ० आई० आर० हुआ है, जिसकी ये दोनो बात कर रहे हैं। वह जल्दी-जल्दी शराब पीकर चौकन्नी दृष्टि से देखते हुए होटल के कोने में पड़ी मेज के पास जाकर बैठ गए।

'देखो तुम लड़के हो, समझते नहीं। सहगल कोई दरोगा नहीं है, वह बहुत चालाक और पहुँच वाला है। इस एफ० आई० आर० से बहुत होगा स्टोर कीपर या स्टोर के चौकीदार की नौकरी जाएगी। उसका कुछ नहीं होगा' दीवान ने कहा।

'चौबे जी ने जो ट्रक ड्राइबरों से बयान दिलवा दिया है, उसका क्या होगा? उस बयान से तो सहगल ही फँसेंगे।'

सिपाही की बात सुनकर दीवान ठठाकर हँस पड़ा और बोला–'तुम भी चौबे जी, चौबे जी लगाए जा रहे हो, अरे चौबे क्या है? बस चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी संघ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

का अध्यक्ष और सहगल...? उसे जानते हो, क्या है? वह जितना ऊपर है उससे कई गुना नीचे है। ऐसे-ऐसे अउबे चउबे तो उसकी जेब में रहते हैं।'

उन दोनों की बात और आगे चलती लेकिन बैरे ने दोनों के सामने मुर्गा परस दिया। वे दोनों वार्ता छोड़ अपनी-अपनी प्लेटों पर झुककर हड्डी चिचोड़ने लगे।

उन दोनों की वार्ता से सम्पादक जी ने इतना तो जान ही लिया कि सहगल के खिलाफ कोई महत्वपूर्ण एफ० आई० आर० हुआ है, जिसमें चौबे की महत्वपूर्ण भूमिका है। घटना की विस्तृत जानकारी के लिए वह बेचैन हो उठे।

उन्होंने अपने झोले में हाथ डालकर चल रहे टेप को बन्द किया जिस में दीवान और सिपाही की बातें टेप हो चुकी थीं।

उन्होंने जल्दी से खाना मँगाया, खाया और सरपट अपने कार्यालय की ओर भागे। कार्यालय का ताला खोल कर उन्होंने जैसे ही बिजली जलाई कि सड़क के पार सामने वाली चाय की दुकान से 'सम्पादक जी नमस्कार, अभी आ रहा हूँ' सुनाई पड़ा। सम्पादक जी ने दुकान की ओर देखा तो एक आदमी दुकानदार को जल्दबाजी में पैसा देता दिखाई पड़ा। वह उस आदमी को पहचान नहीं पाए। वह उसे पहचानने का प्रयास कर ही रहे थे कि वह आदमी कार्यालय के दरवाजे के सामने ठिठके खड़े सम्पादक जी के पास आकर खड़ा हो गया।

'आपने मुझे पहचाना नहीं'–उस आदमी ने हँसकर कहा। सम्पादक जी ने आदमी को दो क्षण ध्यान से देखा और उत्साह से चहक कर बोले–'अरे! डाक्टर शुकदेव दास आर्य, आप कब आए? बुरा न मानिएगा, आप का यहाँ आना अचंभव सा लगा इसीलिए बुद्धि चकरा गई। 'मिर्जापुर के आदिवासी, उनकी सभ्यता तथा संस्कृति' पर जो आपने गोष्ठी आयोजित की थी वह मुझे अब भी याद है।'

'मैं भी सोच रहा था कि आप जैसे लोगों की स्मरणशक्ति इतनी कमजोर कैसे पड़ गई?'

'अच्छा छोड़िए, पहले यह बताइए कि कुछ खाना वाना खाया है कि नहीं?' सम्पादक जी आर्य के साथ अपने कार्यालय में घुसते हुए बोले।

'खाना पीना हो चुका है।'

'चलिए एक शुभ कार्य सम्पन्न कर चुके हैं' कहकर सम्पादक जी हँसे और दीवाल की खूंटी पर अपना झोला लटका, जमीन पर बिछे बिस्तर पर आर्य को बैठने का इशारा कर स्वयं भी बैठ गए।

मध्यम कद, साँवले रंग और अनाकर्षक गोल चेहरे के, अत्यधिक मृदुल स्वभाव वाले श्री शुकदेव दास आर्य मिर्जापुर शहर के बाशिन्दे हैं। इन्होंने मिर्जापुर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

की पहाड़ियों की गुफाओं में बने गुफाचित्रों तथा यहाँ के आदिवासियों की सभ्यता संस्कृति पर महत्वपूर्ण कार्य किया है। 'आदिवासियों के लोकगीत तथा लोकनृत्य' नामक शोधग्रन्थ पर इन्हें डाक्टर की उपाधि मिली है। भारत की बड़ी-बड़ी पत्रिकाओं में इनके लेख बड़े सम्मानित ढंग से छापे जाते हैं। ऐसा व्यक्ति क्यों आया है? इसे जानने के लिए सम्पादक जी ने पूछा–'अब बताइए कैसे आना हुआ?'

'चैत्र नवरात्र पर मनाए जाने वाले आदिवासियों के उत्सव पर कुछ लिखना था। सोचा था कि आप के सहयोग से लिख लूँगा किन्तु आप मिले नहीं। जिस दिन आया, ज्ञात हुआ उसी दिन आप कहीं जा चुके हैं।'

'इसका मतलब आप परसों के आए हैं। बुरा न मानिएगा, फिर रुके कहाँ हैं?'

'यहाँ की पोस्ट आफिस में एक बाबू मेरी जान-पहचान का है, उसी के यहाँ।'

'उसके साथ किसी पास के आदिवासी इलाके में चले गए होते तो आप का आना सार्थक हो गया होता।'

'क्या चला जाता उसके साथ? एक तो बाबू आदमी जिसे इन सब में कोई रुचि नहीं, दूसरे मेरे पास कैमरा भी नहीं। बिना चित्र के, ऐसे विषयों पर लिखे लेख का पारिश्रमिक पत्रिका वाले बहुत कम देते हैं। आप मिल गए होते तो आप के कैमरे का उपयोग कर लेता' कहकर डाक्टर आर्य बहुत उदास हो गए।

'एक कैमरा खरीद लीजिए। आप लोगों के लिए कैमरा बहुत आवश्यक है।'

'पैसा नहीं है सम्पादक जी, कैसे खरीद लूँ? अगर पैसा होता तो मेरे पास ऐसे-ऐसे कार्य हैं जिसे अगर मैं पूरा कर दूँ तो विश्व में तहलका मच जाय।'

'परमाणु बम तो नहीं बनाएँगे?' कहकर सम्पादक जी हँसे।

डाक्टर आर्य ने भी हँसते हुए कहा–'एक न एक दिन मैं वह कार्य भी पूरा करूँगा। पैसे के चक्कर में हूँ, वह चाहे जैसे मिले, मुझे उसे पाना है। जानते हैं पैसा साहित्यकारों को जितना तोड़ता है उतना साहूकारों को नहीं।'

'ठीक है, आप जब पैसा पाइएगा, बुरा न मानिएगा, उस में से मुझे बस उतना ही दीजिएगा कि मैं एक अदद बीबी लाकर अपने रणुआपे के समापन की घोषणा कर सकूँ' दोनों ठठाकर हँस पड़े।

'इतनी दूर किराया भाड़ा लगाकर आया...।'

डाक्टर आर्य अपनी बात पूरी कह भी नहीं पाए थे कि सम्पादक जी बोल पड़े–'आप का कार्य मैं कर चुका हूँ। हमारे पास चित्र भी है, टेप भी है।'

डाक्टर आर्य मन ही मन प्रसन्न होकर स्थिति को स्पष्ट करने के उद्देश्य से बोले–'वह तो आप का है। उससे मुझे क्या मिलेगा?'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'सब आप ही को मिलना है। मैं तो यह चाहता हूँ कि आदिवासियों की सभ्यता, संस्कृति तथा उनकी समस्याओं पर भी सार्थक कार्य हो। वह चाहे मेरे द्वारा हो या आप के द्वारा' कहकर सम्पादक जी ने कैमरे से पूरी रील निकाल कर दे दी। आर्य जी ने रील को अपनी जेब में रखा और कहा–'ठीक है, सुबह आप से कुछ मौखिक बातें इस विषय पर करके नोट कर लूँगा तो और अच्छा रहेगा।'

'बहुत सुबह मुझे एक जगह जाना है, जो कुछ पूछना-पाछना हो इसी वक्त पूछ लीजिए। नहीं तो नवरात्र पर टेप किए गए कैसेट को भी ले जाइए' कहकर सम्पादक जी ने डाक्टर आर्य को कैसेट भी पकड़ा दिया।

'बस ठीक है, अब काम हो जाएगा। अब मैं चलूँ, जिनके यहाँ रुका हूँ वे लोग मेरा इन्तजार कर रहे होंगे' कहकर डाक्टर आर्य ने विनम्रता से नमस्कार किया और चले गए। उनके कार्यालय के बाहर निकलते ही सम्पादक जी दरवाजा बन्द कर के सो गए।

सुबह उठकर सम्पादक जी बहुत जल्दी निवृत्त होकर तैयार हो गए लेकिन चैत की धूप उनसे भी जल्दी तीखी हो गई। इस धूप में वह ऐसी जगह जाने के लिए सोचने लगे जहाँ दोपहर आराम से काटी जा सके तथा होटल में सुनी गई एफ० आई० आर० वाली घटना की विस्तृत जानकारी भी मिल जाय। उनके दिमाग में एकाएक कौंधा–'क्यों न डाक्टर रमन के यहाँ चला जाय!' यह विचार आते ही वह डाक्टर रमन के बंगले की ओर चल पड़े।

सम्पादक जी जैसे ही डाक्टर रमन के बंगले पर पहुँचे तो देखा कि डाक्टर कहीं जाने के लिए अपने बंगले के बाहर निकल रहा है। उन्हें देखते ही सम्पादक जी ने चहक कर नमस्कार किया और बिना डाक्टर के प्रत्युत्तर की प्रतीक्षा किए बोले–'लगता है आप कहीं जा रहे हैं। बुरा न मानिएगा, मैं आज पता नहीं क्यों आप के दर्शन के लिए व्यग्र हो गया। गुरु की इच्छा, जो न करा दे।'

सम्पादक जी ने डाक्टर की जाने की इच्छा को रोकने के लिए ही गुरु का नाम लिया। इसका अनुकूल प्रभाव भी पड़ा। डाक्टर पीछे मुड़ते हुए बोला–'अस्पताल जा रहा था, अब नहीं जाऊँगा। आइए बैठिए' कहकर वह अपने ड्राइंग रूम में जाकर एक सोफे पर बैठ गया। सम्पादक जी भी पास में पड़े सोफे पर बैठकर अपने माथे का पसीना पोंछने लगे।

'कवि सम्मेलन के दो-तीन माह बाद मिल रहे हैं। कहाँ चले गए थे?' डाक्टर ने बगल में लगे कूलर के स्विच को दबाते हुए पूछा।

'पूछिए मत साहब, इतना परेशान रहा कि, बुरा न मानिएगा, उस दिन कवि सम्मेलन खतम होने के बाद सरकार कब गए? उस दिन उनसे भी नहीं मिल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पाया' कहकर कूलर की हवा में बदन सुखाते हुए सम्पादक जी ने ऐसा दुःखी चेहरा बनाया जैसे सरकार से न मिल पाने का उन्हें बहुत दुःख है।

'सरकार, एस० पी० साहब और डी० एम० साहब तो कवि सम्मेलन खतम होने के बहुत पहले ही उठकर चले गए थे। बाद में मालूम हुआ कि डी० एम० साहब ने सरकार को अपने यहाँ एक दिन रोक लिया था।'

'डी० एम० के पूर्वजन्म के पुण्य जाग गए। नहीं तो इतनी आसानी से किसी को इतने सिद्ध पुरुष मिलते कहाँ हैं?' सम्पादक जी ने भक्ति-भाव से कहा परन्तु मन में सोचा, 'अब पूरा जिला इस धूर्त के चंगुल में आ गया।'

'सब उनकी कृपा है।'

'हाँ ठीक कह रहे हैं। आप पर–सहगल साहब पर...।' सम्पादक जी अपनी बात पूरी कर भी नहीं पाए थे कि डाक्टर बीच में ही बोल पड़ा–'अरे हाँ, आप ने सुना नहीं कि सहगल साहब पर एफ० आई० आर० हुआ है?'

'नहीं तो! कब? क्यों?' सम्पादक जी ने चौंककर पूछा।

'बात यह हुई कि सरकार के आश्रम के लिए लोहा और सीमेन्ट जाना था। इस विषय पर सहगल साहब ने मुझसे राय ली कि किस दिन भेजा जाय? मैंने सोचा कि चैत्र नवरात्र के दिन आम आदमी पर्व में व्यस्त रहेगा, उसी दिन सारा सामान स्टोर से निकलवा कर भेज दिया जाय तो किसी को कानो कान खबर नहीं होगी। उसी दिन सामान भेजा गया लेकिन यह चौबे पता नहीं पहले से ही पीछे पड़ा था या किसी ने बता दिया, उसने सड़क पर बोल्डर रखवा कर पचीस तीस आदमियों के साथ ट्रकों को पकड़ लिया।'

'ट्रकों को पकड़ लिया,' मतलब कई ट्रक थे क्या?' सम्पादक जी ने पूछा।

'चार ट्रकें थीं। दो पर सीमेंट और दो पर छड़...।'

'थोड़ा-थोड़ा भेजते, एक साथ इतनी भेजने की क्या जरूरत थी?'

'सब वहीं नहीं जा रही थी। यह तो मुझे बाद में पता चला कि दो ट्रक माल बिकने के लिए जा रहा था।

'मौका पाकर इसी में स्टोर बाबू भी अपना हिसाब बैठाने लगा होगा' सम्पादक जी ने बात को और स्पष्ट करने के लिए कहा।

'स्टोर बाबू की अकेले तो हिम्मत नहीं पड़ेगी लेकिन कुछ कहा नहीं जा सकता।'

'डाक्टर साहब, धर्म के काम में बाधाएँ तो आती ही हैं। बुरा न मानिएगा, देख लीजिएगा, सरकार की कृपा से सहगल साहब का कुछ नहीं होगा।'

बेईमान चरित्र को हर जगह 'बिकाऊ है' का लेबुल लगा दिखाई पड़ता है। इसलिए डाक्टर रमन ने बड़ी उपेक्षा से कहा–'होना क्या है? चौबे फोर्थ क्लास

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

का इम्प्लाई, हजार-पाँच सौ का आदमी। उसे समझाया जाएगा, नहीं मानेगा तो पैसा दिया जाएगा।'

'बहुत आदर्शवादी बनता है चौबे, मुझे तो उस पर बड़ा क्रोध आता है' सम्पादक जी ने घृणा से मुँह बिचकाकर कहा।

'अच्छे-अच्छे की आदर्शवादिता देखी गई है, उसकी भी देख ली जाएगी, फिर सहगल साहब के चपरासी बंशी ने, पिछली बार जब वह जेल गया था, तो उसकी बड़ी मदद की थीं। क्या वह बंशी की बात भी नहीं मानेगा?'

प्रसंग को समाप्त करने के लिए सम्पादक जी ने कहा–'मानना तो चाहिए लेकिन बुरा न मानिएगा, कुछ ऐसे होते हैं जो अपनी ही बात मानते हैं। अब इस विषय पर हम लोगों को सोचने की आवश्यकता ही नहीं है। सरकार सर्व-सक्षम हैं, वही सब देख लेंगे।'

'लेकिन हम लोगों को अपना कर्म तो करना ही पड़ेगा' डाक्टर ने फिर प्रसंग के छोर को पकड़ लिया।

'एकदम ठीक कह रहे हैं, इसीलिए मैं सोच रहा हूँ कि अपने कार्यालय और बाजार में दो चार दिन न जाऊ। वे मिलेंगे तो अपना यह एफ० आई० आर० वाला समाचार मेरे अखबार में छापने का आग्रह करेंगे। इसलिए अब मैं यहीं आराम करूँगा। बुरा न मानिएगा, अगर आप अस्पताल जाना चाहें तो जाँय, बस एक गिलास शर्बत पिलवा दीजिए' कहकर सम्पादक जी बेहिचक सोफे पर पसर गए।

'ठीक है, आप आराम करिए। मैं भी आराम करने जा रहा हूँ। शर्बत अभी भेजवा देता हूँ' कहकर डाक्टर भीतर चला गया।

थोड़ी देर में नौकर ने खुशबूदार बेल का शर्बत लाकर सम्पादक जी को दिया। उन्होंने बहुत तृप्ति के साथ उसे पीकर कहा–'वाह! एकदम ठण्ढा है, दिमाग ठण्ढा हो गया। बुरा न मानना, जरा दरवाजे और खिड़कियों के पर्दे गिरा दो, अब मैं सोऊँगा।' नौकर पर्दों को गिरा कर चला गया तब सम्पादक जी लम्बे सोफे पर पसर गए।

□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१५. चोरी की तफ्तीश

सहगल साहब पर हुए एफ० आई० आर० के तीसरे महीने दरोगा ने तफ्तीश कर के रिपोर्ट लगा दिया कि उस चोरी में स्टोर कीपर तथा चौकीदार का हाथ था। दरोगा की रिपोर्ट के आधार पर सहगल साहब ने अपने स्टोर कीपर को सस्पेन्ड कर दिया। स्वामिभक्त स्टोर कीपर को जब अपनी स्वामिभक्ति का यह इनाम मिला तो वह तड़फड़ा उठा। शाम को वह भागा-भागा सहगल साहब के यहाँ पहुँचा और पत्नी के साथ लान में बैठे चाय पी रहे सहगल साहब के सामने हाथ जोड़कर खड़ा हो गया। कुछ अन्धेरा हो जाने के कारण अथवा जानबूझ कर सहगल साहब प्रथम दृष्टि में अपने स्टोर कीपर को पहचान नहीं सके। उन्होंने बड़ी शालीनता से गर्दन घुमाकर पूछा–'क्या काम है?'

बेचारा स्टोर कीपर उनकी इस अपरिचित मुद्रा को देखकर घबरा गया। उसके मुँह से बड़ी मुश्किल से निकला–'सरकार...।'

'अरे तुम हो? स्टोर बाबू। मैं पहचान नहीं पाया। कहो कैसे?'

'आज मुझे सस्पेन्ड का आदेश मिला है। उसी...।'

'अच्छा-अच्छा, उसमें कोई घबराने की बात नहीं है। असल में मामला ही कुछ ऐसा उलझा कि मुझे कागजी खानापूर्ति के लिए तुम्हें सस्पेन्ड करना पड़ा' कहकर सहगल साहब ने चाय की चुस्की ली।

'लेकिन साहब, मैंने तो आपके आदेश का पालन किया था। इसमें मेरी कौन सी गलती है? फिर इसमें मुझे एक पैसा मिलना भी नहीं था।'

'यह तो धर्म का कार्य था, इसमें मिलने-जुलने का कोई प्रश्न ही नहीं उठता। इसमें नहीं तो और में तो तुम को मिलता ही रहा है। खैर छोड़ो इन सब बातों को। इतना विश्वास करो कि तुम्हारा कुछ नहीं होगा। थोड़ा मामला ठण्ढा होने दो मैं तुम्हें बहाल कर दूँगा' कहकर वे बंगले के भीतर चले गये।

सहगल की बातों से स्टोर बाबू को कुछ सान्त्वना मिली। लेकिन जब वह सहगल के पुराने इतिहास को देखता, जिसमें इस आदमी ने अपने बचाव के लिए कितने ही बेगुनाह छोटे कर्मचारियों की नौकरियाँ ले ली थीं, तो वह बेचैन हो उठता।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एक दिन बेचैन स्टोर कीपर चौबे जी के यहाँ पहुँचा तो देखा कि उसके स्टोर का चौकीदार राम रतन बैठा है और चौबे जी उसे कुछ समझा रहे हैं। स्टोर बाबू को देखकर चौबे जी चुप हो गए। स्टोर बाबू ने चौबे जी को नमस्कार किया तो चौबे ने नमस्कार का प्रतिउत्तर देकर पूछा–'और क्या हाल चाल है?'

'कौन सा हाल चाल बताऊँ? आप ने जिस जलती हुई माचिस की तीली को महल में आग लगाने के लिए फेंका था, उससे मुझ गरीब की झोपड़ी जल गई।

'महल का सुख लेने के लिये जब गरीब महल से सटाकर अपनी झोपड़ी खड़ी करता है तो यही होता है' चौबे ने गम्भीर स्वर में कहा।

'चौबे जी! उन महलों की बनावट ही ऐसी है कि झोपड़ियाँ इनसे सटकर खड़ी रहने के लिए लाचार हैं। आपने बड़े लोगों के दरवाजों पर झुन्ड के झुन्ड पिजड़ों में पाली गई ललमुनियाँ चिरई देखी ही होगी। लोगों की मान्यता यह है कि जब कोई विपत्ति इनके पालनकर्ता पर आती है तो द्वार पर सब से पहले यही नन्हें-मुन्ने जीव उसे मिलते हैं। वह इन्हीं के प्राणों को लेकर लौट जाती है और ललमुनियाँ का पालनकर्ता बच जाता है।'

स्टोर बाबू की इस बात को सुनकर चौबे हँस पड़े और बोले–'तो आप अपने को सहगल के पिजड़े की ललमुनियाँ समझते है।'

'मैं ही नहीं' हर कमजोर आदमी किसी न किसी शक्तिशाली के पिंजड़े की ललमुनियाँ है। कितनी ललमुनियाँ सहगल की प्राण-रक्षा में मर चुकी हैं? क्या आप से छिपा है?'

'अभी तो आप सिर्फ घायल हैं। अगर उसके पिंजड़े से निकलना चाहें तो रास्ता है।'

'क्या रास्ता है?' स्टोर बाबू ने पूछा।

'एफ० आई० आर० की नकल लेकर किसी अच्छे वकील द्वारा न्यायालय में सहगल के खिलाफ इस्तगासा दाखिल कर दिया जाय। यदि आप आगे नहीं चलना चाहते तो मैं इस्तगासा करूँगा। आप और आप के चौकीदार राम रतन गवाह हो जाँय' कहकर चौबे ने स्टोर बाबू की ओर देखा।

स्टोर बाबू स्वयं सामने नहीं आना चाहते थे। वह सिर झुका कर कुछ सोचने लगे। उनके असमंजस को देखकर चौबे ने कहा–'ललमुनियाँ जी, अधिक सोचने से कुछ नहीं होगा। अगर अधिक सोचेंगे तो हो सकता है आप बच जाँय लेकिन आप के पिंजड़े की किसी न किसी ललमुनियाँ की बलि चढ़नी ही है। यदि वह आप को बचाएगा तो चौकीदार को मारेगा या हो सकता है आप दोनो को मारे, क्योंकि मैं तो इसे इतनी आसानी से छोड़ूँगा नहीं।'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बहुत सोच-विचार के बाद, दूहू भाँति जब देखा मरना, तो बाबू तैयार हो गए। उसके तैयार होते ही चौबे ने न्यायालय में सहगल के खिलाफ इस्तगासा कर दिया। कुछ दिनों के बाद सहगल को सम्मन मिला कि वह न्यायालय में हाजिर हों। सम्मन पाकर सहगल मन ही मन क्रोध से बौखला उठे। उन्होंने बंशी को बुलाकर कहा–'तुम चौबे को क्यों नहीं समझाते कि यह सब करने से उसे क्या मिलेगा? अगर कोई बात हो तो मुझे बताए।'

सहगल जैसे व्यक्ति की दृष्टि में जो भौतिक उपलब्धि न दे पाए, वह क्रिया व्यर्थ होती है।

'साहब हमारे समझाने से क्या होगा, वह तो जिस बात पर अड़ जाते हैं किसी की नहीं सुनते। वैसे मैं कहूँगा' बंशी ने कहा।

'हाँऽऽ समझाकर देख लो, नहीं तोऽऽ...।' कहकर सहगल अपने शयनकक्ष में चले गए।

शाम का अन्धेरा घिर गया था। बंशी बंगले पर से सीधे अपने क्वार्टर पर आया। कपड़ा बदलकर वह बगल में जब चौबे के क्वार्टर पर पहुँचा तो देखा कि चौबे हाथ में झोला लिए कमरे के बाहर निकल रहे हैं।

'तुम आ गए, चलो ठीक है। मैंने सुबह का बर्तन माँज दिया है। जरा बाजार से सब्जी लेता आऊँ, तब तक तुम चूल्हे पर दाल-चावल का अदहन रख दो' कहते चौबे बाजार की ओर चले गए।

बंशी ने क्वार्टर के दरवाजे को उठंगा दिया और आंगन के बरामदे में जाकर चूल्हा जलाने लगा। उसे अपने पीछे किसी के आने की आहट मिली तो पीछे मुड़कर देखा और सम्पादक जी को मुस्कुराते खड़ा पाया।

'अरे आप! आप कब आए?' कहता बंशी उठकर खड़ा हो गया।

'अभी-अभी तुम्हारे क्वार्टर से होता आ रहा हूँ। क्वार्टर पर ताला लगा देखकर इधर देखने आ गया। बुरा न मानना अगर तुम्हारे पास दो रुपए हों तो दो, सिगरेट लेना है।

'आप बैठिए, अभी ले देता हूँ' कहकर बंशी ने दुकान से सिगरेट ला दिया। सिगरेट लेकर जब वह भीतर आया तो देखा कि सम्पादक जी चूल्हे में फूंक मार रहे हैं।

'यह आप क्या कर रहे हैं?' बंशी ने कहा।

सम्पादक जी बंशी की बात को अनसुनी कर के चूल्हे की बुझ रही लकड़ियों को फूँक मारकर जलाते रहे। लकड़ियों को जला लेने के बाद वह बोले–'आजकल परिवार नहीं है क्या?'

'नहीं, उन्हें घर छोड़ आया हूँ, इसीलिए चौबे जी के साथ बनाता खाता हूँ।'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'चौबे जी कहाँ हैं?'

'बाजार गए हैं?'

'कितनी देर में लौटेंगे?'

'कुछ कहा नहीं जा सकता।'

'क्वार्टर का बाहरी दरवाजा बन्द कर दिया है?' सम्पादक जी ने पूछा।

बंशी के हाँ कहने पर सम्पादक जी ने इत्मीनान की साँस ली और पूछा– 'छोटई महराज ने बाबा को कुछ जमीन लिखी?'

'हमारे कहने से वह जरूर तैयार हो जाते लेकिन माँ और काकी में झगड़ा हो जाने से वह कुछ दिनों से हमारे ऊपर कुपित हो गए हैं। अब उन्हें तैयार करना मुश्किल है' कहकर बंशी उदास हो गया।

'अब तो नाप कराए जाने के आदेश भी आ गए हैं। सहगल साहब के क्या हाल हैं?'

'मुझ से चौबे जी को समझाने के लिए कह रहे थे। अब आप ही सोचिए, मेरे समझाने से वह मानेंगे?'

'वह मानें न मानें, अपनी तरफ से प्रयास करो। बुरा न मानना, मान जाते तो अच्छा था।'

'मैं जानता हूँ, नहीं मानेंगे। लेनिन और स्टालिन बनेंगे। कम्युनिजम का भूत सवार है' बंशी ने झुंझलाकर कहा।

'अन्याय के खिलाफ लड़ने की प्रेरणा क्या मात्र कम्युनिजम ही देता है? हमारे देश में तो अन्याय के खिलाफ लड़ने वालों की, परशुराम और राम से लेकर गोबिन्द सिंह, गाँधी तक एक लम्बी परम्परा है' सम्पादक जी ने मुस्करा कर कहा।

'नहीं' हमें कभी-कभी उनके ऊपर बड़ा क्रोध आता है। अपने आगे किसी की सुनते ही नहीं। कितनी बार अधिकारियों और ठेकेदारों के गुन्डों ने भयंकर पिटाई कर मरा जान के छोड़ दिया। इस बार जेल भी हो आए।'

'सत्य का साक्षात्कार हो जाने पर आदमी मन्सूर बन अनलहक कहता फाँसी पर चढ़ सकता है किन्तु अनलहक कहना नहीं छोड़ सकता' कहकर सम्पादक जी कुछ देर मौन होकर सोचते रहे फिर बोले–'मैं जानता हूँ कि चौबे नहीं मानेंगे, उन्हें मानना भी नहीं चाहिए। चौबे के लिए सबसे आवश्यक है अपनी सुरक्षा। आज के समय में अपने को सुरक्षित करके ही कारगर लड़ाई लड़ी जा सकती है। सरफरोशी की तमन्ना से कुछ नहीं होगा क्योंकि सरफरोश बहुत हो गए हैं, वे कौड़ी के भाव खरीद लेंगे। इस पतनोन्मुख समाज में दो बाहों वाली नैतिकता सहस्रबाहु अनैतिकता से सीधी टक्कर लेकर सुरक्षित नहीं रह सकती।'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सम्पादक जी ने जैसे ही अपनी बात खतम की उसी समय क्वार्टर के दरवाजे पर थपथपाहट सुनाई पड़ी। 'लगता है चौबे आ गए' कहता बंशी दरवाजा खोलने चला गया। थोड़ी ही देर में चौबे जी हाथ में सब्जी का झोला लटकाए रसोई के पास आए। उन्होंने सब्जी के झोले को वहीं पर रख दिया और सम्पादक जी को प्रणाम किया।

'आइए चौबे जी आइए, मैं आप ही की प्रतीक्षा कर रहा था' सम्पादक जी ने प्रणाम का प्रतिउत्तर देकर कहा।

'आप चौके में क्यों बैठे हैं? आइए कमरे में बैठा जायँ' चौबे ने आग्रह पूर्वक कहा।

'मैं चौके में इसलिए बैठा हूँ कि आप लोग जान जायँ कि मैं भी इसी चौके में भोजन करूँगा।'

'मैं तो आपसे अनुरोध करूँगा कि बिना चौके में बैठे आप यहाँ नित्य भोजन करें' चौबे ने अनुनयपूर्ण स्वर में कहा।

'यही तो मेरे लिए मुश्किल है। बुरा न मानना, मैं बन्धन से बहुत घबराता हूँ। रोजाना तुम्हारे यहाँ खाने लगूँगा तो मेरा मन खाना खाने के लिए समय से पहुँचने के बन्धन से बँध जाएगा।'

'आप की शादी हो जाएगी तब कैसे रहेंगे?'

'वैसे कोई उम्मीद तो नहीं है, अगर हो भी गई तो मैं पत्नी से साफ कह दूँगा कि देखो, इस धरती पर सभी आदमी कुत्ते हैं। कुछ पालतू कुछ आवारे। मैं अभी तक आवारा रहा, तुम पालतू बना सको तो बना लो' कहकर सम्पादक जी हँसे।

'मैं समझता हूँ कि भाभी जी असफल रहेंगी' चौबे ने कहा।

'जो परिस्थिति नहीं है उस पर सोचने से क्या फायदा? बुरा न मानना, जरा बंशी से कहो कि यहीं पर सब्जी दे जाय तो यहीं पर काटते भी रहें और बात भी करते रहें।'

'चौबे जी ने बंशी को बुलाया तो बंशी ने आकर बताया कि वह सब्जी काट चुका है, अब उसे बनाना ही रह गया है। बंशी ने चौके में बैठकर सब्जी बनाना शुरू कर दिया। सम्पादक जी ने उसी समय कहा-'बंशी, सहगल साहब का कुछ हाल चाल बताओ।'

सहगल का नाम सुनते ही चौबे के चेहरे पर घृणा की रेखाएँ उभर आईं 'उसका नाम मत लीजिए, वह शैतान नहीं घृणित शैतान है। आप का तो उसके यहाँ आना जाना है, उसे क्यों नहीं समझाते?' चौबे ने कहा।

'तुम उसे समझाने को कह रहे हो और वह मुझ से तुम्हें समझाने के लिए कह रहा है। बताओ किसे समझाऊँ? तुम्हें या उसे?'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'सफेदपोश आदमखोर! उसने पैसे के लिए कितने ही होनहार युवकों की हत्या करवाई, जो भारत के गरीब किसानों, मेहनतकशों, जिन्हें दो जून की रोटी भी नसीब नहीं है, से टैक्स के रूप में वसूल किए गए धन को, उन्हीं के विकास के नाम पर, रात दिन लुटेरों का गैंग बना कर लूट रहा है। उससे किस शर्त पर समझौता हो सकता है? आप वह शर्त बता दीजिए।'

सम्पादक जी के बोलने के पहले ही बंशी ने कहा 'मैं तो कहता हूँ कि क्या इन सारे अन्यायों, अत्याचारों को मिटाने का ठेका आपने ही ले रखा है?'

'सम्पादक जी, बंशी को आप ही समझाइए। यह तो सहगल के यहाँ रहते-रहते हर चीज में ठेकेदारी ही देखते हैं। अरे भइया, अगर इस काम के लिए भी ठेकेदारी प्रथा होती तो इसे भी सहगल के पालतू गूण्डे ही पाते। वह तो कहो है नहीं इसलिए हमें मिल गया है।'

सम्पादक जी का चेहरा अत्यधिक गम्भीर हो गया था। वह अन्तरिक्ष में आँख गड़ाए एक टक देखे जा रहे थे। ऐसा लग रहा था जैसे वह वर्तमान वातावरण से कहीं बहुत दूर चले गए हैं। उन्होंने चल रही वार्ता को सुना या नहीं, चौबे जी को सन्देह हुआ।

'सम्पादक जी, आप कुछ बोलेंगे नहीं?' चौबे ने सम्पादक जी का ध्यान आकृष्ट करने के लिए कहा।

'आँऽऽ, हाँ बोलूँगा। अभी तक मेरी जबान बोलती रही, सोच रहा हूँ कि आज मैं बोलूँ' कहकर सम्पादक जी फिर विचारों में खो गए। ऐसा लगा कि वह जिस भँवर से बाहर निकले थे उसी भँवर में फिर अनायास खिंचकर चले गए। चौबे और बंशी सम्पादक जी के मौन गम्भीर मुख की ओर देखते बैठे रहे। कुछ समय के बाद सम्पादक जी ने दोनों की ओर ध्यान से देखा और उठकर अपना कपड़ा उतारने लगे। बदन पर एक चड्ढी को छोड़कर उन्होंने अपने सारे कपड़े उतार दिए। उनको इस हालत में देखकर दोनों यह नहीं समझ पाए कि वह करना क्या चाह रहे हैं?

'यहाँ मैं पहली बार अपने को यह समझकर तुम दोनों को दिखा रहा हूँ कि तुम में भी कमोवेश वही आग है जिसमें मेरा यह बदन कई बार झुलस चुका है' कहकर सम्पादक जी अपनी जाँघ पर बने एक गहरे घाव के निशान पर उंगली रखकर फिर बोले–'यह निशान है, वैसे मेरे बदन पर और भी निशान हैं जिन्हें आप देख रहे हैं। ये निशान अत्याचार के विरुद्ध सीधे संघर्ष में दिए गए सरकारी गोलियों के निशान हैं। इन्हीं निशानों ने मुझे समझाया है कि आज के अपने स्वतंत्र देश में अत्याचार के खिलाफ कैसे लड़ाई लड़ी जाय? इसीलिए मैं चाहता हूँ कि चौबे जी अपनी सुरक्षा व्यवस्था चौकस रखें। देखना है जोर कितना बाजुए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कातिल में है, का समय नहीं है। हमारा घर ही कातिलों के मुहल्ले में है। कतल ही इनकी रोजी रोटी का साधन है, यही इनका पेशा है। इन पेशेवर कातिलों से बचकर ही इन पर वार किया जाय। आदर्श के लिए हम-आप जैसे लोग आत्महत्या कर लें तो भी इन कातिलों का सुधार नहीं होगा, बुरा न मानना, देखो सब्जी पक गई होगी। मुझे एक जगह जाना है। अगर खाना तैयार हो तो लाओ खाया जाय।'

अब सम्पादक जी के चेहरे से गम्भीरता गायब हो चुकी थी। वह 'बुरा न मानना' की मुद्रा में आ गए थे।

'आपने यह तो बताया नहीं कि किस संघर्ष में आपको ये चोटें आईं?' चौबे ने पूछा।

'आज भोजन दो खा लूँ और चलूँ, फिर किसी दिन सारी बातें बता दूँगा' सम्पादक जी खाली थाली अपनी ओर खींचते हुए बोले।

बंशी ने खाना परस दिया। सम्पादक जी ने जल्दी-जल्दी भोजन किया और हाथ मुँह धोकर कन्धे से झोला लटका कर बिना किसी को प्रतिवाद का अवसर दिए 'नमस्कार' कहते तीर की तरह क्वार्टर के बाहर निकल गए।

सम्पादक जी के जाने के बाद बंशी क्वार्टर का दरवाजा बन्द कर के जब लौटा तो देखा कि चौबे चिन्तन की मुद्रा में अपनी चारपाई पर बैठे हैं। उन्हें चिन्तित देखकर बंशी ने कहा–'चौबे भइया! सम्पादक जी जो सुरक्षा की बात कह रहे थे वह हमें भी ठीक लगी लेकिन उसके लिए बहुत चिन्तित होने की आवश्यकता नहीं है। मैं छाया की तरह आप के साथ रात दिन रहूँगा, जो होगा देखा जाएगा।'

'जहाँ तक अपनी सुरक्षा की बात है, उसके लिए तो मैं काफी सजग रहता हूँ अब और अधिक रहूँगा लेकिन इस समय मैं सम्पादक जी के विषय में सोच रहा हूँ। यह आदमी अनबूझ पहेली-सा मेरे मन में हलचल मचाए हुए हैं। इनके विगत जीवन को कैसे जाना जाय?'

'कल उन्हें फिर पकड़ा जाय। वास्तव में बहुत ही विलक्षण व्यक्ति हैं। मैं तो उन्हें एक मनमौजी टाइप सम्पादक ही समझता था।'

'अभी वह कहाँ मिलेंगे? इसका ही हम पता नहीं लगा सकते और तुम कल की बात कर रहे हो। अगर वह चाहेंगे तभी हमारी-तुम्हारी पकड़ में आएँगे अन्यथा हम-तुम चाहकर भी नहीं पकड़ सकते। एक बात है कि हम लोगों पर बड़ा विश्वास करके उन्होंने...।'

'आप विश्वास करिए मेरे द्वारा ऐसा कभी नहीं होगा। भला इनसे बड़ा हितैषी हमारा और आप का कौन है जो बिन मांगे सहायता देने को दौड़ पड़ता है।'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चौबे को सम्पादक जी द्वारा दी गई सहायता याद आ गई। उन्होंने लम्बी साँस लेकर कहा–'मैं सम्पादक जी जैसे कामरेड को पाकर आज बहुत प्रसन्न हूँ। अब़ बिजली बुझा दो, सोया जाय।'

बंशी ने बिजली बुझा दी। दोनों अपनी-अपनी चारपाइयों पर लेटे सम्पादक जी के ही विषय में सोचते-सोचते कब सो गए, पता ही नहीं चला।

□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१६. डुग्गी

रेणु, बिजुल और सुखनइया नदियाँ कब से इस जंगल की छाती को हरियाली देती बह रही हैं? जब यह धरती सर्वप्रथम सिन्धु से निकली तभी से या उसके कुछ समय पश्चात्? अपने किनारे बसे आदिवासियों को इसने निर्मलता, निर्द्वन्द्वता, निश्छलता प्रदान की या उनके सम्पर्क से इन नदियों में ये गुण आए?

ये नदियाँ बंधकर जब रेणु सागर नहीं बनीं थीं तब अगर यह प्रश्न पूछा जाता तो शायद ये अपनी निश्छल खिलखिलाहट बिखेरती आगे बढ़ जातीं। आज ये बंधी हुई नदियाँ बहुत उदास लगती हैं। इनकी उदासी को देखकर यह समझ में नहीं आता कि ये अपने बन्धन से उदास हैं अथवा अपने जन्मकाल के साथी आदिवासियों के ऊपर सभ्य समाज द्वारा किए गए अमानुषिक अत्याचारों से। यदि इन नदियों का बस चलता होता तो शायद ये भी अपने चिर साथी आदिवासियों के साथ दूर घने जंगलों में चली गई होतीं।

इन वनगमनी स्वछन्द नदियों पर ब्रिटिश हुकूमत की दृष्टि सन् उन्नीस सौ चौंतीस में ही पड़ चुकी थी। उसी समय इन्हें बाँधने का एक कार्यक्रम बना था किन्तु विपरीत समय के कारण यह कार्य उस समय नहीं हो पाया। इन नदियों के आस-पास रहने वाला आदिवासी अपने जंगल, अपने पहाड़, अपने गीत और रस्मो-रिवाज में मस्त संसार की हलचलों से बेखबर जीता रहा।

उसके लिए मनुष्यों में सब से शक्तिशाली तथा परम पूजनीय पटवारी था और देवताओं में करम देव। उसका समाज अपनी आवश्यकता की सारी वस्तुएँ स्वयं पैदा करता था। पनिका जाति अपने समाज के लिए कपड़ा बुनती जिसकी नाप पनिकानी कही जाती थी। बैगा उनकी ओझाई और दवाई की व्यवस्था करता। पठारी जाति, जिसका नामकरण सम्भवतः पठ धातु से सम्बन्धित है, उनके पंडित होती। लोहा पाए जाने वाले पत्थरों को गलाकर, उससे लोहा एकत्रित करके अगरिया जाति लोहे के औजारों का निर्माण करती। यह बाहुजीवी समाज अपने में सम्पूर्ण, संगठित और सुखी था। इन आदिवासियों को नमक और गुड़ ही बाहर से लेना पड़ता था, जिसे इनके समाज में वणिक् कर्म करने वाले लोग बैलों की लेहड़ियों पर घी, शहद, चिरौंजी, त्रिफला आदि वनसम्पदा लादकर झुण्ड में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जंगली मार्गों से सरगुजा अथवा अहरौरा तक जाते और वहाँ से आवश्यक सामान लेकर बरसात के पहले अपने ठिकानों पर लौट आते।

बरसात होने से पहले थल मार्ग चलता और जब बरसात होती रेणु, बिजुल, सुखनइया नदियां हहाकर कर बहती हुई सोन में गिर उसके दोनो पटों को भर देतीं, तब जलमार्ग से लोग रेणु, सोन और गंगा नदी से होते हुए आसनसोल तक पहुँचते।

वन सम्पदा का दोहन करने वाले बड़े-बड़े ठेकेदार और रेणु, बिजुल तथा सुखनइया नदी के किनारे बसने वाले बंसुला, गंजरी, फुलवरिया आदि ग्रामों के मल्लाह इस बरसात का इन्तजार बड़ी तन्मयता से करते। बरसात होते ही ठेकेदारों की लकड़ियों के बड़े लट्ठ आपस में जोड़कर बांध दिए जाते जिसपर एक के ऊपर एक लट्ठों को एक निश्चित ऊँचाई तक सरिया कर बाँध दिया जाता। इसे बहर कहा जाता था। यह उन दिनों की मालगाड़ी थी। मल्लाह उसपर खाना-पीना, हुक्का, तम्बाकू और सूर्ती की व्यवस्था के साथ बड़े-बड़े बाँसों को लेकर चार-चार, छः-छः की संख्या में बैठ जाते। फिर शुरू हो जाती रेणु से सोन, सोन से गंगा नदी होते आसनसोल तक की यात्रा।

चोपन से आगे पूरब तरफ सोन नदी के किनारे बसा आज का कनछ गाँव उन दिनों बाहर वालों का हाल्ट स्टेशन था। मध्य प्रदेश तक से आने वाली बहरें वहाँ रुकतीं। वे वहाँ उतर कर खान-पान करते, लौटने वालों से आगे के रास्ते के बारे में जानकारी लेते, कुछ विश्राम कर आगे बढ़ जाते। छप-छप कर उछलती बरसाती नदी की लहरों पर बहर के ऊपर बैठा आदिवासी मल्लाह अपने लोकगीतों को सुरीले कंठ से गाता, गहन अंधेरे में जब आधी रात को नदी किनारे बसे किसी गाँव के पास से गुजरता तो बरसात की झड़ी में सोता गाँव जान जाता कि बहर वाले जा रहे हैं।

आषाढ़ आधे से अधिक बीत चुका था लेकिन अभी तक बरसात नहीं हुई थी। वातावरण में एक उमस भरने लगी थी। चींटियाँ अपने को सहेज रही थीं, जिसे देखकर लोग अनुमान लगा रहे थे कि अब बरसात जल्द ही होगी।

बैलों की लेहड़ियाँ आवश्यक सामानों से लदी अपने ठिकानों पर लौटने लगी थीं। हर लेहड़े के आगे चलने वाले घण्टहवा बैल जिनकी गर्दनों में एक भारी घण्टा बँधा रहता था, घनन-घनन की ध्वनि करते रात दिन जंगली मार्गों से गुजर रहे थे। बरसात पास देखकर ठेकेदार अपने कामों को बन्द कर रहे थे, जिससे आदिवासी मजदूर भी इन्हीं लेहड़ियों के साथ सिर पर टिन टुक्कड़ पुवाल की चटाई आदि लादे अपने घरों की ओर लौट रहे थे। मगरू भी बुधनी के साथ आज ही भलुआ लौट रहा है। तब का भलुआ गाँव, जहाँ के लोगों की जमीन पर आज

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

का औड़ी आबाद है, औड़ी मोड़ के पश्चिम सुखनइया नदी के पास था। मगरू जब नदी किनारे पहुँचा तो उसने देखा नदी सूख चली है। 'जइसन सुखनइया नाँव है वैसे यह बहुत जल्दी सूख जाती है' मगरू नदी के पास उतरते हुए बोला।

'अरे इ तो तनिको पानी नहीं है, बप्पा कइसे चुवाँड़ तक जाके पानी लाते होंगे?' बुधनी ने चिन्ता व्यक्त की।

'बुढ़ापा में अब जांगर टूट गया है। कोस भर चुवाड़ जाके पानी कइसे लातें होंगे? चलो अब तो आई गए हैं' मगरू ने कहा और लम्बे डग भरता जब वह अपने दरवाजे पर पहुँचा तो देखा कि उसके बप्पा टूटी चारपाई पर कथरी ओढ़े पड़े हैं। छोटई महराज हाथ में कुछ लिए उन्हें खिलाने जा रहे हैं। बुधनी ने दौड़कर अपने सिर की गठरी रामधनक की चारपाई के बगल में पटका और अपने बप्पा के माथे पर हथेली धर दी। माथा तवे की तरह जल रहा था। बुधनी की हथेली के स्पर्श से रामधनक ने आँखें खोल दीं। बुधनी को देख कर उसकी आँखें भर आईं।

'मगरू कहाँ है?' रामधनक ने पूछा।

'मैं यहीं हूँ बप्पा' चारपाई के दूसरी ओर खड़े मगरू ने कहा।

'चलो तुम दोनो आ गए, अब यह ठीक हो जाएँगे। रात दिन तुम दोनो के लिए हुड़क रहे थे' छोटई महराज ने प्रसन्न होते हुए कहा।

'छोटई कक्का! तोहार एहसान जिनगी भर नहीं भूलेगा' कहकर रामधनक ने एक लम्बी कराह ली।

'एम्मन कौन अहसान हो रामधनक। विपत काल में हम तोहरे कामे न आएं, तूँ हमरे कामे न आओ तो क्या दूसरे गाँव क लोग अइहन? कहल नाही गयल हौ कि सौ गोती न एक पड़ोसी। लो पहिले इ दवा खा लो' कहकर छोटई महराज ने अपने हाथ में लिए दवा को रामधनक की ओर बढ़ाया।

बुधनी ने सहारा देकर अपने बप्पा को बैठाया और छोटई महराज द्वारा दी गई दवा को रामधनक को खिला दिया। दवा खाकर रामधनक ने कहा–'अब हमें सुता दो।'

बुधनी ने धीरे से रामधनक को चारपाई पर लिटा दिया और पूछा–'कै दिन से जर आ रहा है बप्पा?'

रामधनक के बोलने के पहले ही छोटई महराज ने कहा–'अतरिया है, पन्द्रह दिन से आ रहा है। तीन दिन जब हमारे यहाँ रमायन सुनने नहीं आए तो हम पता लगाने आए कि क्या हुआ जो नहीं आ रहे हैं। इहाँ आके देखा तो भस्माभूत जर चढ़ा था। सोहन बैगा के यहाँ से जाके दवाई ले आए, वही दवाई चल रही है।'

'न हो दद्दा, सोहन से कुछ ऊपरी फेर हो तो ओहू के देखा दें। मुरगा, शराब

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

और जो कुछ लगेगा वह दे देंगे' मगरू को यद्यपि कि भूत प्रेत में अधिक विश्वास नहीं रह गया था फिर उसने अपने पिता की प्रसन्नता के लिए ऐसा कहा।

'धूत्! हम्मै ऊपरी फेर सेर कुछ नाहीं है। इ ससुरी अतरिया है, हर सालै तो आती है, महीना पन्द्रह दिन में ठीक हो जाएगी' रामधनक ने कराहते हुए कहा।

'हाँ हो, सब ठीक हो जाएगा, इ लो दवाई ठीक से खाना। अब हम चलें जरा दुकान दउरी देखें' कहकर छोटई महराज अपने घर की ओर चले गए।

बुधनी बैठकर अपने बप्पा का माथा सहलाती रही। रामधनक ने करवट लिया और कहा–'अब जा कुछ खइका ओइका बना ले, अब हमरे कपार में पीरा नहीं है' फिर कुछ रुककर बोला–'आषाढ़ गरमा रहा है, जल्दी ही पानी बरसेगा। घर में जलावनों नहीं है। खाना-पीना करके तुम दोनों जंगल से जलावन काट लाओ। न हो अब सांझ हो गई है, आज रहने दो, कल जंगल जाना' कहकर रामधनक ने कथरी से अपना मुँह ढंक लिया।

बुधनी अपने बप्पा के यहाँ से उठकर घर में गई तो देखा कि मगरू लाए हुए सामानों को यथास्थान रख रहा था। उसने बहारन उठा लिया और कहा–'भइया, तुम जाके छोटई दद्दा के यहाँ से गुड़ ले आओ तब तक मैं घर बहार के रोटी सेंक देती हूँ। आज इस समय रोटी गुड़ खा लेंगे, सुबह जंगल चलेंगे।'

सुबह उठकर बुधनी ने अपने बप्पा को दवा दी। रामधनक को बुखार एकदम नहीं था। रामधनक अपने से उठकर चारपाई पर बैठ गया। रामधनक को स्वस्थ देखकर बुधनी प्रसन्न हो गई। उसने कहा–'बप्पा हम जंगल जा रहे हैं। बकरी का दूध गरम कर के रख दिया है, मुँह हाथ धोके पी लेना।'

'हाँ, हाँ तू जा। हम पी लेंगे। बहुत आई समझाने वाली। चमाइन कहीं की' रामधनक ने बनावटी गुस्से से कहा।

बुधनी जानती थी कि उसके बप्पा जब बहुत खुश होते हैं तभी इस तरह की भाषा बोलते हैं। वह हँसती हुई घर के भीतर गई और कुल्हाड़ी अपने कन्धे पर लटका बाहर निकल–'भइया गे, भइया गे' पुकारने लगी।

'मैं तो यहीं हूँ, काहे चिल्ला रही है? बप्पा को सुना रही है कि तूँ बहुत काम करती है?'

'नहीं तुम बहुत काम करते हो। देख नहीं रहे हो कि इतना बेर चढ़ गया?' बुधनी ने तुनक कर कहा।

'तो चल, मैं तो चली रहा हूँ' कहकर मगरू अपने कन्धे से कुल्हाड़ी लटकाए आगे-आगे चल पड़ा। जब वे जंगल के किनारे पहाड़ी की ऊँचाई पर पहुँचे तो पौ फटने लगी थी, हल्का प्रकाश धरती पर अंगड़ाई ले रहा था। एकाएक मगरू ठिठक कर खड़ा हो गया। उसके सामने गैस की रोशनी में बहुत

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

से मजदूर दौड़-दौड़ कर काम कर रहे थे। उसने ध्यान से देखा तो एक पंक्ति में कितने ही क्वार्टर बनते दिखाई पड़े। मगरू ने आस-पास कन्धे से बन्दूक लटकाए भयावनी आकृति के लोगों को टहलते पाया। उसे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि कल्लू ने जो जमीन दरोगा के० डी० राम को लिख दी थी, वह चहारदीवारी से घेर दी गई है। उसी से सटी छोटई महराज की जमीन, जिसपर कुछ दिन पहले बाबा आकर रुका था वह घेरी जा रही थी। बुधनी इतने सारे आदमियों को जंगल के पास देखकर घबरा गई। मगरू ने उसे ढाढ़स बंधाया तो वह अपने कन्धे पर पड़ी कुल्हाड़ी को मजबूती से हाथ में पकड़कर एक पहाड़ी पत्थर के पीछे छिप कर खड़ी हो गई। मगरू बुधनी को इशारा कर एक पेड़ पर चढ़ गया। वहाँ से उसने फिर छोटई महाराज की जमीन की ओर देखा। उसने अपने मस्तिक पर जोर डाला। अरे! यह तो छोटई दद्दा की जमीन के अलावा फन्नू कक्का की जमीन भी घेरी जा रही है। शायद दोनो आदमियों की जमीन को एक में ही घेरा जा रहा है। यह कौन घेरवा रहा है? वह सोचने लगा। तभी जटा-जूट धारी वही बाबा दिखाई पड़ा जो कुछ दिन पहले इस जमीन पर डेरा डाले था। उसके साथ कुछ और तगड़े-तगड़े साधुनुमा लोग टहल रहे थे। मगरू को समझते देर नहीं लगी कि जो बंशी भइया उससे बताते थे कि यहाँ जमीन को बाहरी लोग लूटने की फिराक में हैं, शायद उसी की यह शुरुआत है।

वह पेड़ पर से धीरे से उतर आया। बुधनी ने इशारे से पूछा क्या हो रहा है? मगरू ने उसके पास जाकर धीरे से कहा–'कुछ नहीं, जंगल चलो जल्दी से जलावन काटकर लौटना है और वे दोनो रास्ता बदलकर जंगल में चले गए।

जंगल के भीतर लकड़ी काटने में मगरू का मन नहीं लग रहा था। उसने जल्दी-जल्दी लकड़ियों को काटकर एक गट्ठर बनाया। बुधनी भी मगरू के उतावलेपन को देखकर समझ रही थी कि देखी गई घटना में कहीं कुछ गड़बड़ी जरूर है जिसे वह समझ नहीं पा रही है। वह भी जल्दी-जल्दी एक गट्ठर लकड़ी काट बाँधकर तैयार हो गई। दोनों ने अपने सर पर लकड़ी के गट्ठरों को उठाया और दुलकिया चाल से दो घंटे में अपने गाँव पहुँच गए।

जब वे दोनों अपने गाँव पहुँचे तो दिन के दो बज रहे थे। आसमान धूल से भरा था। ऐसा लग रहा था जैसे अभी आँधी आने वाली हो। घर का दरवाजा बन्द करके रामधनक कहीं चला गया था। रामधनक को चारपाई पर न पाकर बुधनी ने अपने गट्ठर को घर की दीवार के सहारे खड़ा किया और बोली–'बस बप्पा की यही चाल हमें ठीक नहीं लगती, तनी सा आराम हुआ कि लगे घूमने।'

'मुरगी बदे नइहर रेड़वार, जाएँगे कहाँ? छोटई दद्दा के यहाँ गए होंगे' कहते हुए मगरू ने भी अपने लकड़ी के गट्ठर को वहीं खड़ा कर दिया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'जाओ बुला लाओ, नहीं तो फेर बेमार हो जाएँगे। मैं इनरिया, सुगमुनियाँ को साथ लेकर चुवाँड़ से पानी लेने जा रही हूँ' कहती बुधनी दो घड़ा सिर पर एक बगल में दबाए चुवाँड़ की ओर चली गई। मगरू चुपचाप अपने दरवाजे पर बैठा सोचने लगा कि वह क्या करे? अभी चलकर छोटई दद्दा और फन्नू कक्का से कह दूँ तो ठीक नहीं होगा। वहाँ पर बन्दूक लिए सब तैयार बैठे हैं, पता नहीं क्या हो जाय? बंशी भइया को खबर देनी चाहिए, उसने मन ही मन निर्णय लिया। यहाँ से पचीस कोस भुंइ है पिपरी। खूब भिनसारे यहाँ से चल दूँ तो बारह बजते-बजते पहुँच जाऊँगा। वह यह सब सोच ही रहा था कि दूर उसे डुग्गी बजती सुनाई पड़ी। वह उठकर देखने लगा कि यह कैसी डुग्गी बज रही है। उसने देखा कि फन्नू अपने गले में डुग्गी लटकाए एक हाथ से डिम, डिम, डिमिक, डिमिक, डिम डुग्गी बजाकर कह रहा था–'हुकुम रानी साहब का, हुकुम पटवारी सरकार का, बंसुला, गंजरी, फुलवरिया, भलुआ गाँव के लोग आपन घर छोड़ देंऽऽ। ई सब जमीन पानी में बूड़ेगाऽऽ। सब लोग छोड़ देंऽऽ।'

फन्नू शायद और गाँवों से बजाता कहता यहाँ तक आया था, क्योंकि उसके साथ दूसरे गाँव वालों की एक भीड़ हैरान परेशान चल रही थी। मगरू भी दौड़ कर वहाँ पहुँचा। भोला महराज पटवारी से पूछ रहे थे–'सरकार ई कइसन नियाव है? हम लोग कहाँ जाएँ?'

'यह सब छोड़ने के लिए बहुत पहले ही आप लोगों को नोटिस दी जा चुकी थी। उसी वक्त आप लोगों को अपना इन्तजाम कर लेना चाहिए था' पटवारी ने लापरवाही से कहा।

'सरकार इहाँ नोटिस पढ़के कितने आदमी समझेंगे? करिया अक्षर भंइस बरोब्बर, सुन्ना अइसन पड़वा, हजूर हम लोग का जाने कि इ कागद में का हैं?' कल्लू ने रोआंसा होकर कहा।

'अरे भाई, अब तो जान जाओ, इसीलिए तो डुग्गी बजवा दे रहा हूँ। ऐ फन्नू! जाओ आगे वह कोल-चेरों-भुंइया लोगो के जो पुरवे हैं वहाँ भी डुग्गी बजा आओ' पटवारी ने खड़े फन्नू को आदेश दिया।

फन्नू डुग्गी बजाता आगे बढ़ गया। मगरू यह सब देखता सुनता वहीं खड़ा रहा। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या करे? उसी समय रामधनक लाठी टेकता आता दिखाई पड़ा। उसके साथ छोटई, रामरख और भुलोटन आदि बहुत से लोग सहमे डरे किंकर्तव्यविमूढ़ से चले आ रहे थे।

'हे हे मगरू गे' छोटई महराज ने मगरू को देखकर उसे अपने पास बुलाया। मगरू दौड़कर उनके पास पहुँचा। कुछ लोग पटवारी को घेर कर खड़े थे। अलग-अलग छोटे-छोटे झुण्डों में खड़े लोग बातें कर रहे थे। गाँव की बूढ़ी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जवान औरतें, लड़कियाँ, लड़के सभी इन झुण्डों में घुस कर बात को समझने की कोशिश कर रहे थे। कभी-कभी कोई बूढ़ी अपनी नातिन को–'अरे चल हट तूँ का बात सुन रही है, जरा छोटई से पूछ का बात है?' कहती झुण्ड में घुसने का प्रयास करती तो खतरे से अनजान किशोरियाँ–'हाँ हाँ दादी तुम जाओ तुम ही कचहरी बूझो' कहती खिलखिलाती पीछे हट बुढ़िया को रास्ता दे देतीं।

'ई जमिनियाँ सिंगरौली का कश्मीर है, का नाही होता? टुटहो हाथ से कुछ बो दिया जाय तो साल भर का खाना दाना हो जाता है। बाकी आउर सब तो पत्थरै है' छोटई महराज ने उदास होकर कहा।

'ए कक्का, का ई सब पानी में बूड़ जाएगा?' कल्लू ने पूछा।

'हाँ भाई, पटवारी राजा तो इहै कह रहे हैं' रामधनक ने कहा।

तनी एक दाईं आउर पूछो, हे छोटई नाहीं त हम लोग कहाँ जाएँगे?' कल्लू की बूढ़ी माँ ने घबराहट के स्वर में कहा।

'भौजी का पूछें? का दाईं-दाईं पूछने से बात बदल जाएगी?'

'अरे दउआ, ई कइसन बज्जर गिरा रे! हमरे बचवन के पेटवा कइसे भरिहैं रे माई' बुढ़िया राग कढ़ाकर रोने लगी, अब तक हँसते-खिलखिलाते बच्चे और किशोरियाँ बुढ़िया के रुदन से स्तब्ध हो गईं। उन्हें ऐसा लगा जैसे कोई अनहोनी घटना होने वाली है। कुछ लोग बुढ़िया को चुप कराने लगे किन्तु बुढ़िया के ऊपर उनके मनाने का कोई असर नहीं पड़ा। वह और जोर से राग कढ़ाकर छाती पीटती हुई रोने लगी।

आसन्न विपत्ति से झुंझलाए कल्लू ने तेज आवाज में कहा–'हरे माई, रोना धोना हो तो जाके दुआरे बइठ के रो।' कल्लू के डाँटने पर भी जब उसकी माँ नहीं चुप हुई तो वहाँ खड़े लोग बुढ़िया के पास से कुछ दूर हटकर फिर झुण्ड की शक्ल में खड़े हो कर अपनी वार्ता में व्यस्त हो गए। बुढ़िया सब तरफ से बेखबर बैठी रोती रही।

'मगरू तुम पिपरी बंशी के यहाँ चले जाओ। हो सकता है ऊ अपने साहब से मिलकर कोई रास्ता निकालें' भोले छोटई महराज ने कहा।

'अरे हाँ, ई तो आप ठीक कहे, बंशी कुछ कर सकते हैं। मगरू तूँ अब्बै जा। एकदम तिरछा रस्ता बंसुला से बनरहवा होते जंगल से जाएगा तो दस कोस भुंइ परेगी' रामधनक ने उत्साहित होकर कहा।

'चलो हम हूँ चलेंगे' छोटई महराज के लड़के हरि मोहन ने कहा।

'हाँ हाँ तुम दोनों चले जाओ, टंगारी अउर माचिस ले लेना। उस जंगल में भालू मिलते हैं' छोटई ने हुलस कर कहा।

मगरू तो यह चाहता ही था। वह तैयार होकर हरि मोहन के साथ पिपरी की ओर चल पड़ा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१७. लूट

मगरू, हरि मोहन के साथ भलुआ से चलकर जब बंसुला गाँव के पास पहुँचा तो शाम का झुटपुटा घिरने लगा था। उसने देखा कि लोग झुण्ड बना कर जगह-जगह खड़े बात कर रहे हैं। मगरू समझ गया कि हमारे गाँव के लोगों की तरह यहाँ के लोग भी उसी समस्या पर विचार कर रहे हैं। जिसे सुलझाने के लिए वह पिपरी जा रहा है। इन लोगों की समस्याओं को सुलझाने वह जा रहा है, यह सोचकर उसने गर्व का अनुभव किया। अपने को महत्वशाली समझकर आदमियों में जो उत्साह उठता है, उसी उत्साह से भर कर उसके कदम पिपरी की ओर और तेजी से बढ़ चले।

'जरा कदम बढ़ा के चलो, अभी जंगल पार करना है' मगरू ने अपने पीछे चल रहे हरिमोहन से कहा।

'हाँ हाँ चलो, न हो दुलकिया चला जाय।'

'दुलकिया जंगल में लगाया जाएगा। अभी गाँव के पास दुलकिया चलेंगे तो लोग सोचेंगे कि ई सब काहे दउड़ रहे हैं? कुक्कुर भी पीछे-पीछे दउड़ा लेंगे' मगरू ने कहा और उसके कदमों की रफ्तार तेज हो गई।

हरिमोहन भी मगरू का साथ देने के लिए तेज चलने लगा। एक दूसरे का साथ देने के प्रयास में तेज रफ्तार कब अपने आप दुलकिया दौड़ में बदल गई, दोनों को पता ही नहीं चला। उन दोनों को अपनी दुलकिया चाल का पता तब चला जब वे मध्य जंगल में पहुँच गए और अन्धेरे में एक भालू का झुण्ड उनके सामने से गुजरा। दोनों ने ठमक कर कुल्हाड़ी के बेंट पर अपने हाथों की पकड़ सख्त कर ली। भालू का झुण्ड अपनी चाल में आगे निकल गया।

'आगे सूअर भी मिल सकते हैं' हरिमोहन ने पूछा।

'इस जंगल में चीता, बाघ नहीं हैं?' हरिमोहन ने पूछा।

'नहीं, बाघ चीता तो नहीं हैं, कभी-कभी आ जाते हैं' मगरू ने जैसे ही कहा, तभी दूर घन्न, घनन घनन घण्टे की आवाज सुनाई पड़ी।

'बैलों की लेहड़ी वाले जा रहे हैं। चलो उनके साथ हो जाया जाय। वे लोग भी पिपरी में ही पड़ाव करेंगे' मगरू ने कहा और तेज कदमों से ध्वनि की दिशा में चल पड़ा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तीन कतार में कम से कम पाँच छः सौ बैल पीठ पर सामान लादे अन्धेरे में चले जा रहे थे। उनके रखवाले बड़े-बड़े बेंटों में लगी कुल्हाड़ियों को लिए कतारों के अगल-बगल चल रहे थे। दो अनजाने आदमियों को बैलों की लेहड़ी की ओर आता देखकर 'के है? के है?' कहकर एक आदमी चिल्लाया। उसकी आवाज को सुनकर सभी बैल अपने-अपने स्थानों पर अनुशासित सेना के सिपाहियों की तरह ठमक कर खड़े हो फुफकारने लगे। साथ में चलने वाले रखवाले चौकन्ने हो अपने हाथ की कुल्हाड़ियों को उठाए बैलों के अगल बगल–'के हैं? के है?' कहते चक्कर लगाने लगे। पूरा जंगल बैलों की फुफकार और रखवालों की आवाज से गूंज उठा।

'हम पड़हरू हैं, पिपरी तक चलेंगे' मगरू ने अपने स्थान पर खड़े होकर कहा।

दो आदमी उन दोनों के पास आए। दोनों ने कुछ पूछताछ की और जोर से चिल्लाकर कहा–'पड़हरू हैं, रेंगो।' उनके कहते ही,–'ही, हट्ट, हट्ट' की आवाजें आने लगीं। अब तक फुफकारते खड़े बैल घनन घनन घन्न करते आगे चल पड़े।

'भैया जमाना बहुत खराब हो गया है। रस्ते में चोर चांईं बहुत मिलते हैं। इतनी रात को पिपरी काहे जा रहे हो?' एक आदमी ने मगरू से पूछा। मगरू ने सारी बातें सही-सही बता दीं।

'गान्ही बाबा का सुराज आया है, देखो कइसे सबका जियन उपाय होता है? एक पसेरी का गुड़ रुपया सेर बिकने लगा। नून पइसा पसेरी से आना सेर हो गया। अब गरीब अदमी कइसे खाएगा, कइसे जीएगा?' लेहड़ी के साथ चल रहे आदमी ने कहा।

बात करते-कराते मगरू और हरिमोहन बैलों की लेहड़ी के साथ ग्यारह बजे रात में पिपरी के पास पहुँचे। लेहड़ी वालों ने रेणु नदी के इसी पार जंगल के पास अपने बैलों को रोक दिया। वहीं बैलों की पीठ पर से बोझों को उतार कर कुछ लोग बैलों के झुण्ड को लेकर जंगल में चराने और नदी में पानी पिलाने चले गए। शेष बचे लोगों में कुछ लोग सामान की रखवाली और कुछ लोग खाना बनाने की तैयारी में लग गए।

मगरू और हरिमोहन उन लोगों को छोड़कर पिपरी की ओर बढ़ चले। पिपरी की जलती हुई बत्तियाँ दिखाई पड़ रही थीं फिर भी अभी एक घन्टे का रास्ता और शेष था। दोनों एक घन्टे से कम समय में ही बंशी के क्वार्टर पर पहुँच गए। बंशी अपने क्वार्टर में सो रहा था। दरवाजा खटखटाने पर जब वह बाहर आया तो इन दोनों को देखकर अवाक् रह गया। उसने पूछा–'अरे तुम, मगरू, हरिमोहन? गाँव पर सब ठीक तो है न?'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'सब ठीक है भैया, कोई बात ऐसी नहीं है' बंशी को घबराया हुआ देखकर हरिमोहन ने कहा। मगरू ने बंशी की उत्सुकता को शान्त करने के लिए गाँव पर बीती घटना का आद्योपान्त वर्णन कर दिया। जंगल के किनारे घेरे जाने वाली जमीन की बात सुनकर हरिमोहन ने उत्तेजित होकर कहा–'मगरू भैया, आप को यह बात वहीं बतानी चाहिए थी।'

'नहीं' मगरू ने वहाँ यह बात न बता कर ठीक किया है। अभी तुम बच्चे हो, बात की गम्भीरता को नहीं समझ रहे हो। चलो सम्पादक जी के यहाँ इसी वक्त चलें, कहकर कुर्ता पाजामा पहन कर बंशी दोनो को साथ ले सम्पादक जी के कार्यालय की ओर चल पड़ा।

तीनो सम्पादक जी के कार्यालय पर आए तो देखा कि वहाँ एक कविगोष्ठी जमी हुई है। सम्पादक जी ने इन लोगों को देखते ही चहक कर कहा–'आओ, आओ, लो भाई तीन श्रोता और आ गए। बुरा न मानिएगा, ये समाज के सब से पिछली पंक्ति के लोग हैं जिनके लिए आपका प्रगतिशील लेखक मंच लिख रहा है। ये बेचारे चाहे आपकी बात समझें न समझें, बुरा न मानिएगा, आप को यह गर्व रहता है कि आप इन्हीं के लिए लिख रहे हैं। चलिए समझें न समझें कम से कम असली श्रोता तो आए। ये बेचारे सत्यनारायण बाबा की पोथी की तरह आप की कविता को सुनकर हाथ जोड़कर श्रद्धा प्रगट करते अपने घर जाएँगे और आप आत्मगौरव की दक्षिणा से सन्तुष्ट हो कर कोई और रचना करेंगे।'

सम्पादक जी काफी मूड में थे। वह और अधिक बोलते लेकिन बंशी ने जब उन्हें प्रणाम किया तो उसे प्रति उत्तर देने में उनके भाषण का क्रम टूट गया। उसी समय कविता सुना रहे कवि ने अपनी कविता फिर शुरू कर दी। सम्पादक जी वाह वाह करने लगे।

कविगोष्ठी जल्दी ही खत्म हो गई। सम्पादक जी ने वहाँ बैठे सभी लोगों का एक दूसरे से परिचय कराना शुरू किया–'ये हैं मगरू धांगर, सुखनइया नदी के किनारे बसे भलुआ गाँव के। वहीं के यह बंशी हैं। पंडित जी अधिशासी अभियंता सहगल जी के चपरासी हैं। शायद इनके साथ आया यह लड़का भी उसी गाँव का है।' इतना कहकर उन्होंने अपने यहाँ आए आगन्तुकों में से एक-एक आदमी की ओर इशारा करके बताना प्रारम्भ किया–'यह हैं डाक्टर शुकदेव दास आर्य, इन्होंने इस दक्षिणांचल के लोक गीतों, गुफा चित्रों, लोक कथाओं पर शोध पूर्ण कार्य किया है। यह दूसरे आदमी शुभ रंजन दा हैं, रहने वाले बंगाल के, लेकिन कर्मक्षेत्र आदिवासी बेल्ट। आदिवासियों के लिए सोचना, उनके लिए लिखना और उनका संगठन बनाना ही इनका कार्य है। यह तीसरे आदमी श्री सपन कुमार हैं, बहुत अच्छे छायाकार। इनके द्वारा खींचे गए चित्र अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त कर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चुके हैं और यह चौथे मेरे साथी हरनरायन जी हैं, गीतकार, कथाकार, व्यंगकार लेकिन अपने फक्कड़पन के कारण सब बेकार। बुरा न मानिएगा ये सभी लोग यहाँ के जंगल और पहाड़ों की पैदल यात्रा पर निकले हैं।'

'ठीक है तो कल सभी लोग भलुआ की ओर चलें। मगरू आप लोगों को घुमा देगा' सम्पादक जी के कुछ और कहने के पहले ही बंशी ने कहा।

'वाह क्या बात कही! क्यों दोस्तों ठीक रहेगा भलुआ?' सम्पादक जी ने चहक कर कहा। उनके सामने बुधनी की सूरत घूम गई।

'ठीक है कल भलुआ की ओर ही चला जाय' पैदल यात्रियों ने प्रस्ताव का अनुमोदन किया।

'जरा बाहर निकल कर एक बात सुन लीजिए' मगरू ने सम्पादक जी के कान में फुसफुसाकर कहा।

सम्पादक जी तुरन्त उठकर अपने कार्यालय के बाहर आ गए। बंशी ने उनसे भलुआ की सारी बात बता दी। सम्पादक जी ध्यान से सारी बातों को सुनने के बाद बोले–'लूट की शुरुआत हो गई। अच्छा ठीक है' कहते वह अपने कार्यालय में घुसे और पैदल यात्रियों से उन्होंने जोर देकर कहा–'आप लोग कल भलुआ के जंगल पहाड़ों को नहीं वहाँ के लोगों को देखिए, उनके दुःख दर्द को सुनिए। वहाँ के विषय में एक रपट तैयार करके भारत के सभी समाचार-पत्रों में भेजिए। बहुत सही समय पर आप लोगों का यहाँ आगमन हुआ है। बुरा न मानिएगा, सम्भव है आप की पैदल यात्रा, राकेट गति के भ्रष्टाचार से भलुआ में टकराए।'

'क्या मतलब? क्या भलुआ में कुछ गड़बड़ हो रहा है?' शुकदेव दास आर्य ने पूछा।

'आप के गुफाचित्रों के सर्जकों की सन्तानें फिर गुफाओं में जाने के लिए मजबूर की जा रहीं हैं। बनने वाले रेणु सागर की बिजली पूरे देश को उजाले से भर देगी लेकिन उस उजाले का जो अन्धेरा है उसे आप लोग देख लीजिए। बुरा न मानिएगा, जिसे इस क्षेत्र के लोग भोगेंगे' सम्पादक जी ने बहुत उदास होकर कहा।

'ठीक है मगरू ओभी चलो। दो बोज रहा है, हम लोग सुबह पहुँच जाएगा' कहते शुभरंजन दा कार्यालय के बाहर आ गए। कुछ लोगों को न चाहते हुए भी शुभरंजन दा का साथ देना पड़ा। आगे-आगे मगरू और हरिमोहन उसके पीछे पैदल यात्रियों के साथ सम्पादक जी भलुआ पहुँच गये। सम्पादक जी सबके साथ छोटई महराज के दरवाजे पर पहुँचे। छोटई महराज के दरवाजे पर गाँव के लोग जुटे हुए थे। उस भीड़ के बीच में छोटई महराज अपना सिर थामे जमीन पर बैठे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

थे। उनके सिर से खून बह रहा था। रामधनक, कल्लू, फन्नू और भोला महराज सिर से बह रहे खून को रोकने का प्रयास कर रहे थे। छोटई महराज के छोटे बच्चे सिर के खून को देखकर पुक्का फाड़कर रो रहे थे।

अब घबराने की कोई बात नहीं, सोहन बैगा आ गए' भोला महराज ने एक आदमी को आते हुए देखकर कहा।

'अरे तनी जल्दी जाओ भैया, कसाई ने पूरा कपार फार दिया है' रामधनक ने सोहन बैगा को आते देखकर कहा। लंगड़ाता हुआ सोहन बैगा जल्दी-जल्दी छोटई महराज के पास पहुँचा। उसने छोटई महराज के घाव को देखा फिर अपने साथ लाए किसी लता की पत्तियों को अपनी दोनों हथेलियों के मध्य रखकर जोर से दबाकर उसका रस घाव पर टपकाया। उस रस के गिरते ही खून का बहना बन्द हो गया। रस टपकाने के बाद बचे पत्ते की लुगदी को सोहन बैगा ने छोटई महराज की पत्नी को, जो पास में ही रुआँसी खड़ी थी, देते हुए कहा–'इसे घी में भूनकर घाव पर रख देना सब दरद-दरापद दूर हो जाएगा।'

छोटई महराज की पत्नी ने सोहन बैगा द्वारा दी गई लुगदी को अपने हाथ में लिया। उसी समय पिपरी से चले लोग छोटई महराज के दरवाजे पर पहुँचे। हरिमोहन दौड़कर अपने पिता के पास पहुँचा और पूछा–'चोट कैसे लगी?'

वहाँ पर इकट्ठे सारे लोग एक साथ चोट लगने के कारण को बताने लगे जिससे बात स्पष्ट नहीं हो पाई। सम्पादक जी ने आगे बढ़कर सब को शान्त किया और पूछा–'जब इन्हें चोट लगी तो इनके साथ कौन था?' इस प्रश्न का उत्तर भी संमवेत स्वर में मिला, जिससे यह ज्ञात हुआ कि चोट लगने के समय रामधनक साथ थे।

अच्छा ठीक है, अब सारी बात रामधनक दद्दा ही बताएँगे और सभी लोग चुप रहेंगे। हो दद्दा, अब आप पूरी बात बताइए' सम्पादक जी ने कहा।

'सरकार आज सबेरे हम रमायन सुनने आए। रमायन ख़तम होने के बाद कक्का ने कहा कि आज बाबा को कुछ सीधा वीधा देना है न हो तूँ हूँ चलो। हम साथ उहाँ गए। उहाँ पहुँचे तो देखे कि छोटई कक्का आउर फन्नू के जमीन को चारदिवारी से घेर दिया गया है। ई देख के छोटई कक्का बोले–'कि अरे ई हमार जमिनियाँ कौन घेर लिया?' इहै पता लगावै बदे हम दूनो आदमी फटके से भीतर गए। उहाँ उहै बबवा तीन चार मोटे साधुन के संगे बइठा रहा भीतर कोठरी बन रहा था। छोटई कक्का बबवा से पूछे कि का हो बाबा ई हमार जमिनियाँ काहै घेरवा रहे हो? एतना पुछतै बबवा चटक गया, कहा–'मादर...ई तोहार जमीन है? है कउनो कागज पत्तर? एप्पर दश बंरिस से हमार कबजा है। ई नजूल की जमीन है, तुम्हारी बेटी के भो...ड़े की नहीं है।'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

छोटई कक्का को बिटिया की गारी बरदास नहीं हुई। इन्होंने अपने हाथ में लिए सीधा की गठरी को उसके मुह पर खींच के मार दिया। ओही समय बबवा के पास बइठे तीनों चारो आदमी साथे दउड़ परे। एक ने कक्का के कपार पर लाठी मारी, ऊ चकराके गिर परे। कक्का के बचावै बदे हम एनहीं के उपर लोट गए। बाप रे बाप! सब मिल के हमके आउर कक्का के एतना मारे कि दूनो जने बेहोश हो गए। जब होश आया तो देखा कि पहाड़ी के पास दूनो आदमी परे हैं।'

'ई अनियाव कइसे बरदास होगा सरकार?' भोला महराज ने वहाँ खड़े पदयात्रियों से कहा।

'अभी आप लोग शान्त रहिए, अभी हम लोग जाकर वहाँ की स्थिति का पता लगा लेते हैं फिर जैसा होगा किया जाएगा' डाक्टर शुकदेव दास आर्य ने कहा।

बेहद गुस्से से काँपता हरिमोहन अपने घर के भीतर से कुल्हाड़ी लेकर निकल आया। उसने कहा–'चलिए हम भी चलेंगे।'

'बुधनी गे, हमरो टंगारी लेती आ' मगरू चिल्लाया।

हरिमोहन और मगरू के क्रोध को देखकर भीड़ में उत्तेजना फैल गई। सभी पदयात्रियों के साथ लाठी, कुल्हाड़ी लेकर चलने को तैयार होने लगे। सम्पादक जी ने देखा कि अगर इन्हें नियन्त्रित नहीं किया गया तो एक-दो कत्ल अवश्य हो जाएगा। उन्होंने चिल्लाकर कहा–'अभी हम लोगों के साथ कोई नहीं चलेगा। मगरू, हरिमोहन तुम दोनों किसी को वहाँ मत आने देना। हम वहाँ से लौटेंगे तब सब लोग चलेंगे।'

भीड़ सम्पादक जी की बात मानकर रुक गई और सम्पादक जी पदयात्रियों के साथ बाबा की ओर चले गए।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१८. अंजनी आगमन

पिपरी से पदयात्रियों के जाने के बाद बंशी का मन अपने गाँव पर ही लगा रहा। सुबह वह जल्दी-जल्दी तैयार होकर सहगल साहब के बगले पर पहुँचा। उसने सहगल साहब से अपने गाँव जाने की छुट्टी माँगी। सहगल साहब उसकी बात सुनकर कुछ देर मौन रहे फिर बोले–'आज एस० पी०, डी० एम० और सरकार आ रहे है, अगर तुम नहीं रहोगे तो काम कैसे चलेगा? आज नहीं कल चले जाना।'

बंशी मन मारकर अपने काम में लग गया। थोड़ी देर बाद सहगल साहब ने बंशी को पुकारा। साहब का छुट्टी देने का शायद मन हो गया है, सोचता बंशी मन ही मन प्रसन्न होता सहगल साहब के सामने उपस्थित हुआ। सहगल साहब बैठे अखबार पढ़ रहे थे। उन्होंने बिना सिर उठाए ही कहा–'देखो अंजनी आए हुए हैं, उन्हें मेरे पास भेज दो।'

बंशी जिस आशा से आया था, उसकी पूर्ति न होने से बहुत निराश हुआ। उसने बड़े बेमन से कहा–'अच्छा साहब।'

विश्वविद्यालय की सफल हड़ताल के बाद अंजनी उत्तर प्रदेश का एक जाना माना छात्र नेता हो गया था। हड़ताल के दौरान उसका सम्पर्क प्रदेश स्तर से लेकर देश स्तर के नेताओं से हो गया था। उसके सुगठित व्यक्तित्व और उच्चवर्गीय व्यवहार से कितने ही नेता उससे अत्यधिक प्रभावित हुए। उसके प्रति नेताओं के आकर्षण की सबसे बड़ी विशिष्टता उसका धनी सहगल का पुत्र होना था। ऐसे पिता के पुत्रों के प्रति नेताओं का रुझान आर्थिक कारणों से विशेष हुआ करती है।

अब अंजनी पश्चिमी लिवास में नहीं रहता। अत्यधिक महंगी खादी कुर्त्ता, धोती या पायजामा जब वह पहनता है तो ऐसा लगता है जैसे यह पोशाक वह पहन कर ही पैदा हुआ था। गौरांग छः फुटा भरा बदन, ठोढ़ी पर राजनारायण कट दाढ़ी से वह सम्पूर्ण रूप से नेता लगता है।

उसे ढूँढ़ने में बंशी को अधिक मेहनत नहीं करनी पड़ी। सहगल साहब के आदेश को सुनकर जैसे ही वह मुड़ा उसे अंजनी बंगले के फाटक पर दिखाई

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पड़ा। बंशी ने बढ़कर उसे सलाम किया और सहगल साहब के आदेश को उसे सुना दिया। अंजनी ने एक हल्की मुस्कान के साथ पूछा–'कैसे हो बंशी?'

'सब ठीक है साहब' बंशी ने विनम्रता से कहा।

'पापा कहाँ है?'

'ड्राइंग रूम में साहब।'

अंजनी ने सीधे ड्राइंग रूम में पहुँचकर–'हेल्लो पापा' कहकर सहगल साहब को सम्बोधित किया।

'हेल्लो' सहगल साहब ने कहा और पास के सोफे पर बैठने का इशारा किया। अंजनी बैठ गया। तब सहगल साहब ने अपने हाथ के अखबार को परे रखकर कहा–'तुम रात में आए इसलिए बात नहीं हो पाई।'

'जी पापा, मैं भी आप से बात करना चाहता था लेकिन रात अधिक हो गई थी...।'

'किस विषय पर?'

'अब लीजिए, आपने बात करने के लिए कहा तो मैंने नहीं पूछा कि किस विषय पर? मैंने वही कहा तो आप पूछ रहे हैं, किस विषय पर?' कहकर अंजनी हँसने लगा।

'अगर तुम पूछते तो मैं बता देता की मैं तुम्हारे भविष्य के विषय पर बात करना चाहता हूँ।'

'चलिए स्पष्ट हो गया कि मेरी और आप की वार्ता का विषय एक ही है। अब इस पर सार्थक और ठोस चर्चा हो सकती है' अंजनी ने बहुत प्यारे लहजे में कहा।

'अब तुम बी० एस० सी० पास करने के बाद क्या करना चाहते हो?'

'मैं तो जिस बाने को धारण कर चुका हूँ उसी को सार्थक करना चाहता हूँ।'

'अच्छा विचार है लेकिन...' कहकर सहगल साहब कुछ सोचने लगे।

अंजनी कुछ देर तक अपने पिता के गम्भीर मुख की ओर देखता रहा फिर बोला–'लेकिन क्या? क्या आपको मेरा यह कार्य पसन्द नहीं है?'

'नहीं, नहीं ऐसी बात नहीं है कि पसन्द नहीं है। मुझे तो बहुत पसन्द है। इतने कम समय में तुम्हारे द्वारा प्राप्त की गई इतनी बड़ी शोहरत, बड़े-बड़े नेताओं के यहाँ तुम्हारी पहुँच, यह सब साबित कर देता है कि तुम भविष्य में एक अच्छे राजनेता साबित होगे। परन्तु उसके लिए अभी से दिल्ली में अथवा जिसे तुम अपनी कर्मभूमि बनाना चाहो, उस क्षेत्र में घर-मकान कुछ तो होना चाहिए ताकि वहाँ की जनता यह समझ सके कि तुम उनके बीच के आदमी हो।'

'इसको मैं कर चुका हूँ। उसी के लिए आप से बात करने आया हूँ।'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'क्या कर चुके हो?' सहगल साहब ने पूछा और उनके चेहरे पर प्रसन्नता की लहर दौड़ गई।

'दिल्ली में ही एक बंगला एक लाख पच्चीस हजार में पटा कर पच्चीस हजार रुपए एडवांस दे चुका हूँ।'

'मतलब एक लाख रुपए तुम्हें और चाहिए।'

'यस पापा...वह भी दो साल के लिए उधार। आप के पसीने की कमाई को मैं बर्बाद नहीं करना चाहता' कहकर अंजनी मुस्कराया।

'अरे वाह! तुम्हें इतना आत्म विश्वास है कि तुम दो वर्षों में एक लाख रुपए लौटा दोगे' सहगल साहब ने मुस्कुरा कर अपने होनहार पुत्र पर दृष्टि डाली।

'आत्मविश्वास नहीं, गणित है पापा, सीधी गणित। उस बंगले में एक योगाश्रम खुलवा दूँगा जिसमें विदेशियों और देश के नवधनपतियों को योगा सिखाया जाएगा। यू कान्ट इमैजिन पापा, ये विदेशी और काली कमाई वाले देशी नवधनिक इस मामले में कितने मूर्ख होते हैं, पागलों की तरह पैसा देते हैं।'

'इस बीच तुमने योगा भी सीखा है क्या?' सहगल साहब ने आश्चर्य प्रगट किया।

'हम योगा सीखकर क्या करेंगे? तमाम थोड़ा-बहुत योग जानने वाले मारे-मारे फिर रहे हैं। उन्हीं में से किसी भव्य चेहरे वाले को आश्रम में बैठा देंगे। प्रचार तो हम लोग कर ही देंगे कि परम सिद्ध, परम ज्ञानी योगिराज फलाँ,... बस भीड़ टूट पड़ेगी, विदेशियों की। जब विदेशी शिष्यों की संख्या बढ़ेगी तो विदेशी सम्मोहन से सम्मोहित हमारे देश के धनाढ्य भी बड़ी संख्या में आएँगे। सामान चाहे जैसा हो बस पैकिंग और प्रचार जानदार हो' कहकर अंजनी हँसा।

'इस योगाश्रम से राजनीति का क्या संबन्ध है, जो तुम योगाश्रम खोल रहे हो?'

'राजनीति का सम्बन्ध कब, किससे, किस रास्ते से और कहाँ हो सकता है इसी को समझना ही राजनीति है। इस धार्मिक देश में धर्मनिरपेक्ष का नारा देकर धर्म-संस्कारित जनता से वोट लेना भारतीय राजनीतिज्ञों का अपना कौशल है। जो यह कौशल नहीं जानता वह यहाँ की राजनीति में कभी सफल नहीं हो सकता। मैं एक ऐसे मन्त्री को जानता हूँ जो मंच से कहता है कि धर्मों ने धर्म के नाम पर समूचे विश्व में जितना अधर्म किया है, उतना किसी अधार्मिक आदमी ने नहीं किया। आज के वैज्ञानिक युग में धर्म की आवश्यकता नहीं है। मेरे महान देश की आवश्यकता रोजी और रोटी है, दाढ़ी और चोटी नहीं।' उसके इस वक्तव्य को सुनकर अपने को प्रगतिशील समझने वाला समाज उसपर निछावर हो जाता है। लेकिन धार्मिक वोटर उससे क्षुब्ध हो जाता है जिसे नेता जानता है। इसलिए दो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एक महीने के बाद अखबारों में समाचार निकलता है कि उसी मन्त्री ने फलाँ मन्दिर में पूजन किया, फलाँ सन्त से आशीर्वाद लिया या फलाँ दरगाह पर चादर चढ़ाई। इस समाचार को पढ़कर धार्मिक जनता समझती है कि नेता द्वारा दिया गया भाषण धर्मनिरपेक्ष राज्य में प्रगतिशीलों को मूर्ख बनाने के लिए दिया गया था। प्रगतिशील समझता है कि नेता का दर्शन-पूजन दकियानूसियों को मूर्ख बनाने का ढोंग मात्र है। जबकि वास्तविकता यह है कि नेता दोनों को मूर्ख बनाता है।'

'जो मेरा कार्यक्षेत्र है उसका मैं अपने को सबसे अच्छा खिलाड़ी मानता हूँ, इसलिए उस क्षेत्र में मेरे सुझाव या विचार कोई मायने नहीं रखते। हाँ दिल्ली वाले बंगले को जहाँ तक खरीदने की बात है, उसमें सहयोग कर सकता हूँ' अंजनी की बात सुनने के बाद सहगल साहब ने कहा और एक सिगरेट निकाल कर पीने लगे।

'क्या एक सिगरेट आप मुझे आफर नहीं करेंगे?' अंजनी ने मुस्करा कर कहा।

'अवश्य अवश्य' कहते हुए सहगल साहब ने सिगरेट और लाइटर अंजनी की ओर बढ़ा दिया और पूछा–'यह सिगरेट कब से पीने लगे?'

'जब से धुआँधार राजनीति करने वालों का साथ मिला है।'

'धुआँधार राजनीति और इस सिगरेट से क्या सम्बन्ध है?'

'पापा धुआँधार का अर्थ होता है, जिसका आधार ही धुआँ हो।'

धुआँधार के अर्थ को सुनकर सहगल साहब ठहाका मार कर हँस पड़े–'अरे वाह! तुमने धुआँधार का खूब अर्थ निकाला' कहकर वह फिर हँसने लगे।

'मैंने नहीं, यह अर्थ एक ऐसे स्वप्नदर्शी होनहार युवा वैज्ञानिक का है जिस के शोधपत्र ने वैज्ञानिक जगत में हलचल मचा दी है। वह योगियों के प्रतिपादित षटचक्रों पर विश्वास करता है, उसके भेदन की साधना करता है। यह मितभाषी मनोरम मर्द विवेकानन्द और डाक्टर लोहिया के सामाजिक व्यक्तित्व का अद्भुत नमूना है।'

'इतना होनहार वैज्ञानिक षटचक्र-भेदन के चक्कर में यदि बाबाओं के जाल में फंसा तो उसका कैरियर ही चौपट हो जाएगा।'

'आप भी तो एक बाबा के जाल में फंसे हैं' अंजनी ने कहा।

'मैं षटचक्र-भेदन के लिए नहीं अपने लक्ष्य-भेदन के लिए फंसा हूँ।'

'अरे वाह पापा! मैं तो समझ रहा था कि आप अन्धभक्त हैं।'

'नहीं जी, मैं इतना मूर्ख नहीं हूँ। हम और बाबा एक दूसरे के लिए उपयोगी छुरी हैं। जहाँ मुझे आवश्यकता पड़ती है वहाँ उनसे अपने खाने का सामान काट कर खा लेता हूँ, जहाँ बाबा को जरूरत होती है मेरा उपयोग कर लेता है। लेकिन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तुम उस लड़के को समझाओ या उसके पिता जी से कहो। उसके पिता जी क्या करते हैं?'

'वाराणसी संस्कृत विश्वविद्यालय के रिटायर्ड प्रोफेसर हैं। तन्त्रशास्त्र पर उन्होंने बहुत प्रसिद्ध शोध ग्रन्थ लिखा है। लोग बताते हैं कि वह स्वयं बहुत बड़े तान्त्रिक साधक हैं। जिस बंगले को खरीदने की बात कर रहा हूँ वह उन्हीं का है। वह इस बंगले को बेचकर उत्तरकाशी में रहना चाह रहे हैं। तथास्तु त्रिपाठी भी यही चाहते हैं।'

'तथास्तु त्रिपाठी कौन?'

'उन्हीं के लड़के का नाम है। ले दे के उस पूरे बंगले में यही पिता-पुत्र दो प्राणी हैं। तथास्तु की माँ बचपन में ही मर गई और तथास्तु अभी तक अविवाहित हैं।'

'तीन-चार महीने का समय मिल जाता तो मैं आसानी से तुम्हें बंगला खरीदने के लिए पैसे दे देता' सहगल साहब ने कुछ हिसाब लगा कर कहा।

'तीन-चार महीने में कैसे पैसे की आसानी हो जाएगी?' अंजनी ने पूछा।

'नए प्रोजेक्ट के बहुत बड़े-बड़े टेन्डर होने वाले हैं। उस टेन्डर के कमीशन से ही तुम्हारा काम हो जाता लेकिन भलुआ और उसके आस-पास के गाँव वाले दिक्कत पैदा कर रहे हैं।'

'भलुआ मतलब बंशी के गाँव वाले? वे क्यों दिक्कत पैदा कर रहे हैं?'

'गलती भलुआ वालों की नहीं है। गलती है तो जमीनों के लुटेरों की जो नाना प्रकार के भेषों में विभिन्न जनपदो, प्रदेशों से आकर उनकी जमीनों पर कब्जा कर रहे हैं और कानून उनकी सुरक्षा करने में असमर्थ है। कानून का पालन करने वाले भी इस लूट में किसी न किसी कोण से शामिल हैं।'

सहगल साहब ने जैसे ही अपनी बात समाप्त की उसी समय बंशी ने आकर सूचना दी कि एस० पी० साहब का फोन आया है। सहगल साहब ने फोन वहीं मंगा लिया और एस० पी० साहब से बात की तो ज्ञात हुआ कि मन्त्री जी के आश्रम में पधार जाने के कारण बाबा सूरज राम का पिपरी कार्यक्रम स्थगित हो गया है।

'लो बंशी, आज सरकार नहीं आ रहे हैं। अब तुम घर जा सकते हो' सहगल साहब ने मुस्कुरा कर फोन रखते हुए कहा।

'अच्छा साहब' बंशी ने प्रसन्नतापूर्वक कहा और मुड़कर जाने लगा।

'रुको बंशी, हम भी तुम्हारे गाँव चलेंगे। तुम तैयार होकर आ जाओ, मोटरसायकिल से चले चलेंगे' अंजनी ने जाते हुए बंशी से कहा।

बंशी ने 'अच्छा साहब' कहा और तैयार होने के लिए अपने क्वार्टर पर चला गया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'यह बाबा तुम्हारे लिए भी बड़े काम की चीज है' बंशी के जाते ही सहगल ने मुस्कुरा कर अंजनी से कहा।

'मुझे ज्ञात है। इसकी अच्छी राजनैतिक पहुँच है, यही न आप बताना चाहते हैं?'

'तुम्हें कैसे पता?' सहगल ने पूछा।

'राजनीति की ऊँची कुर्सी तक पहुँचने के लिए बहुत से छिपे सुरंग और गलियारे होते हैं। उनका सही नक्शा यदि हम अपने पास नहीं रखेंगे तो राजनीति क्या करेंगे?' अंजनी ने मुस्कुरा कर कहा। उसी समय बंशी आ गया। बंशी को अपनी मोटरसायकिल पर बैठा कर अंजनी भलुआ की ओर रवाना हो गया।

❑

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१९. प्रदर्शन

आकाश में छोटे-छोटे बादलों के झुण्ड बंजारों की भाँति इधर-उधर ताक-झाँक कर उपयुक्त स्थानों की तलाश कर अपना डेरा गिरा रहे थे। हवा एकदम गुम थी। ऐसा लग रहा था जैसे प्रकृति शान्त हो कर कान लगा बरसात के आगमन की आहट ले रही हो। ऐसे उमस भरे मौसम में जब अंजनी बंशी के दरवाजे पर पहुँचा तो भोला महराज, मगरू, कल्लू आदि ग्रामीणों से घिरे खड़े थे और बुधनी रो रही थी। मोटरसायकिल की आवाज सुनकर सभी लोग सहम गए लेकिन जब उन लोगों ने देखा कि उस पर बंशी बैठा है तो लोगों में उत्साह आ गया। सभी लोग बंशी भैया आ गए, बंशी भैया आ गए कहते मोटरसायकिल की ओर लपके। इस स्थिति को देखकर बंशी समझ गया कि अवश्य कोई घटना घटी है। उसने मोटरसायकिल से उतरते ही पूछा–'क्या बात है? कुछ गड़बड़ हुआ है क्या?'

उसके प्रश्न के साथ ही बुधनी और जोर-जोर से रोने लगी। पास में खड़े मनोहर ने बड़े गुस्से में कहा–'बंशी भैया बड़ा अन्याव हो रहा है।'

'अरे चुप रहो, क्या अन्याव अन्याव कर रहे हो' भोला महराज ने मनोहर को डाँटा और अंजनी को खद्दर के लिबास में देखकर बोले–'अब नेता जी आ गए हैं वही सब देखेंगे।'

'यह नेता नहीं हमारे साहब के लड़के हैं, और साहब, यह हमारे पिता जी हैं' बंशी ने परिचय कराया तब अंजनी ने भोला महराज का हाथ जोड़कर अभिवादन किया।

अंजनी के अभिवादन से भोला महराज ने गदगद होकर आशीर्वाद दिया और नीम के पेड़ के नीचे चारपाई निकाल उसके बैठने की व्यवस्था कर बोले–'बैठिए साहब, आप एतना बड़े अदमी हमरे दुआरे पर आए, हमार धन्य भाग। बड़ी गरमी है रस बनवा दूँ कि दूध पिएँगे?'

'कुछ नहीं, बस सादा पानी पिएँगे।'

'हम समझ रहे हैं, साहब आप के पानी पीने लायक हमरे पास का है? जइसन मुँह ओइसन बीड़ा चाहिए।'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'अरे नहीं पिता जी' आप भी कैसी बात कर रहे हैं? बंशी से पूछ लीजिए हम खाना-पीना करके चले हैं। बस गरमी से थोड़ी प्यास लग गई है।'

दोनो में वार्ता हो ही रही थी कि बंशी कुएँ का ठंढा पानी लेकर आ गया। अंजनी ने पानी पिया और–'वह क्यों रो रही है?' अंजनी ने बुधनी की ओर इशारा कर के पूछा।

'छोटई कक्का अउर हमरे बप्पा के पुलिस पकड़ ले गई है' पास खड़े मगरू ने रुआँसा होकर कहा।

'पुलिस क्यों पकड़ ले गई?' बंशी ने पूछा। तब लोगों ने सुबह घटी मार-पीट की घटना को सिलसिलेवार सुनाया और यह भी बताया कि मारपीट के थोड़ी देर पश्चात ही चौकी के दरोगा ने आकर छोटई महराज को गाली गुत्ता दिया तथा झगड़े में घायल बीमार बूढ़े रामधनक को तीन-चार थप्पड़ मारकर छोटई महराज के साथ पकड़कर ले गए।

'आउर दरोगा को बइठा के रमायन सुनाएँ, बड़के भगत के पोंछ बने थे' भोला महराज ने कहा। उन्हें दरोगा के रमायन में बैठने से छोटई में उपजी हेकड़ी याद आ गई।

'इसी गाँव में तुम्हारा घर है?' अंजनी ने मगरू से पूछा। मगरू के कुछ उत्तर देने से पहले ही बंशी ने बताया कि यह वही मगरू है जिसका आप की मोटरसायकिल से एक्सिडेंट हुआ था। मगरू बुधनी तथा गाँव के अन्य लोगों ने अंजनी की ओर चौंककर देखा। अंजनी उठकर मगरू के पास पहुँचा और उसने मगरू के कन्धे पर बड़ी आत्मीयता से अपना हाथ धर मुस्कुराते हुए कहा–'देखो भाई' उस एक्सिडेंट का मुझे बहुत दुःख है। अब तुमने मुझे माफ कर दिया है न?' मगरू अंजनी को क्या उत्तर दे समझ नहीं पा रहा था। भोला महराज ने आगे बढ़कर स्थिति सभांल ली और कहा–'अरे सरकार, आप बड़ मनई हैं। ई नान्ह जात बेचारे के आप क्षमा करैं।'

बंशी, छोटई महराज और रामधनक के पकड़े जाने से अत्यधिक व्यग्र था। उसने पूछा–'कुछ लोगों के साथ सम्पादक जी यहाँ आए थे, वे कहाँ हैं?'

'सभी लोग घटना स्थल पर गए हैं। पुलिस भी दोनों लोगों को पकड़ कर वहीं ले गई हैं' भोला महराज ने बताया।

'पुलिस दोनों आदमियों को लेकर चौकी पर तो नहीं चली गई?' बंशी ने शंका प्रगट किया।

'अभी-अभी तो पुलिस जा ही रही है' मगरू ने कहा।

'चलिए साहब, हम लोग भी वहीं चलें, हो सकता है पुलिस वाले मिल जाँय' कहता बंशी पुलिस के गमन मार्ग पर चल पड़ा। वहाँ पर खड़े लोग भी उत्साहित होकर पीछे-पीछे चल पड़े।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अंजनी और बंशी भीड़ के साथ कुछ ही दूर पहुँचे होंगे कि रास्ते में चौथी राम आते दिखाई पड़ गया। भीड़ में अंजनी और बंशी को देखकर चौथी उत्सुकता बस उन दोनों के पास आ गया। राम जोहार करके उसने भीड़ का कारण पूछा।

'साथ में आइए सब पता लग जाएगा। आप आदिवासी वनवासी संघ के अध्यक्ष भी तो हैं?' अंजनी ने कहा।

'हमारे भाई बिरादर जहाँ जाएंगे, हम तो वहाँ जाएंगे ही। जरा शुकदेव दास आर्य का पता लगाना था। पिपरी में पता लगा कि वह सम्पादक जी के साथ इधर ही आए हैं।'

शुकदेव दास आर्य चौथी राम के साथ इधर के जंगल और पहाड़ी गुफाओं का कई बार भ्रमण कर चुके हैं। चौथी राम इधर के पहाड़ी भागों का अच्छा ज्ञाता है। इसलिए शुकदेव दास उसे अपने साथ भ्रमण के समय रखते हैं। वह भ्रमण के समय चौथी राम को भोजन और अच्छा पारिश्रमिक देते हैं। आजकल चौथी राम के पास कोई काम नहीं है। इसलिए वह शुकदेव दास आर्य की खोज में निकला हुआ था।

'हम लोग जहाँ चल रहे हैं वहीं शुकदेव दास तथा सम्पादक जी भी मिलेंगे' बंशी ने कहा।

'क्या आप लोग उन्हीं से मिलने चल रहे हैं या और कोई काम है?'

चौथी राम के प्रश्न का कोई उत्तर न देकर बंशी अंजनी को यहाँ की जमीन की कानूनी उलझनों को बताने लगा। चौथी राम ने जब देखा कि वे लोग उसकी ओर विशेष ध्यान नहीं दे रहे हैं तो उसने भीड़ में वार्ता कर के सही बात का पता लगा लिया। उसे यह जान कर बड़ी प्रसन्नता हुई कि वह ठीक समय पर यहाँ पहुँचा है। उसने लोगों से कहा कि घटनास्थल पर पहुँचने से पहले आप लोग पाँच मिनट यहीं रुक जाइए। कुछ ही देर की बातचीत से चौथी राम भीड़ में अपनत्व का भाव बना चुका था। इसलिए लोग उसकी बात मानकर रुक गए। तभी मगरू ने कहा– 'बंशी भैया और अंजनी बाबू आगे जा रहे हैं। उन्हीं के साथ चलना है।'

'उन लोगों को चलने दो, हम भी उन्हीं के साथ चलेंगे। उन लोगों ने तो कभी नेतागिरी की नहीं है। उन्हें क्या पता कि जलूस कइसे लेके चलना चाहिए?'

लोग रुक कर चौथी राम की बात सुनने लगे। चौथी राम की उत्तेजनापूर्ण दो टूक बातों को सुनकर लोगों को लगा कि चौथी राम ही उनका सच्चा और बहादुर हितैषी है। अंजनी और बंशी वार्तालाप में खोए भीड़ से काफी दूर चले आए। उन्हें अपने साथ चल रहे लोगों का ध्यान तब आया जब–'हमसे जो टकराएगा, चूर चूर हो जाएगा' का नारा सुनाई दिया। दोनों ने चौंककर पीछे देखा तो चौथी राम भीड़ को कतारबद्ध किए नारा बुलवाते भीड़ के आगे-आगे आते दिखाई पड़े।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रिहन्द डूब में पड़ने वाले आस पास के गाँवों में भी शायद आज की मारपीट तथा घटना स्थल पर बाहर से आए लोगों की खबर फैल चुकी थी जिससे घटना की वास्तविकता जानने की उत्सुकता में अन्य गाँवों के कुछ जागरूक लोग दो-दो, चार-चार की संख्या में घटना स्थल की ओर सहमे-सहमे चले आ रहे थे। जब रिहन्द डूब से दुःखी इन लोगों ने एक जलूस देखा तो वे भी इसी में सम्मिलित हो गए। इन लोगों के आ जाने से जलूस काफी प्रभावशाली हो गया। चौथी राम परम प्रसन्नता में झूमता नारे लगवाता घटना स्थल की ओर चल पड़ा।

'वाह! यह है नेतागिरी। इस मामले में चौथी जी लाजवाब आदमी हैं' भीड़ कों जुलूस में बदल देने की कला को देखकर अंजनी ने कहा।

'हमें तो डर है कि यह कहीं और बवाल न बढ़ा दे?' बंशी ने आशंकित हो कर कहा।

'निश्चिंत रहिए, कहीं कुछ नहीं होगा। मैं इन्हें खूब जानता हूँ। वह 'मैं बिकाऊ हूँ' के रूप में भीड़ के आगे चल रहे हैं।'

'हम लोग इस भीड़ से पहले ही पहुँच जाँय तो अच्छा होगा' कहता बंशी घटना स्थल की ओर तीव्र गति से चल पड़ा।

बंशी और अंजनी जब घटना स्थल पर पहुँचे तो देखा कि सम्पादक जी दरोगा राय से खड़े बात कर रहे हैं और छोटई महराज तथा रामधनक रस्सी से बँधे दरोगा राय से कुछ दूर पर दो सिपाहियों से घिरे जमीन पर बैठे हैं। उन लोगों से कुछ दूरी पर शुकदेव दास आर्य के साथ आए लोग एक जटाजूटधारी बाबा से बात कर रहे हैं। उस निर्माण से उस बीहड़ जंगल में एक सुन्दर बस्ती उभर रही थी। बंशी यह सब देखकर अवाक् रह गया।

जिस ऊबड़-खाबड़ पथरीली भूमि को यहाँ के आदिवासी गले पड़ गए चिर रोगी पूत की तरह मोह बस अब तक पालते-पोसते रहे, उसके चेहरे पर नीरोगिता की लालिमा आनी शुरु हो गई थी। लेकिन बीमारी के समय दुःख सहकर पालने-पोसने वाले माँ-बाप की गोद से दबंग जबरदस्ती छीनकर उसे अपनी गोद में डाले शान से बैठे थे।

सबसे पहले बंशी ने छोटई महराज के पास पहुँच उनका चरण स्पर्श किया। छोटई महराज बंशी को देखकर फफक कर रोने लगे। रामधनक गुम-सुम बैठा था लेकिन उसकी आँखों से आँसुओं की धारा बह निकली। बंशी असमर्थ क्रोध के इन आँसुओं को देखकर बिचलित हो गया। उसने अपने को संयत कर अवरुद्ध कंठ से कहा–'घबड़ाओ मत कक्का, अब इसकी लड़ाई अन्त तक लड़ी जाएगी।'

'अब का घबड़ाना है बचवा? जो इज्जत आधा पेट खा के हम अब तक बचाए रहे ऊ तो चली गई' छोटई महराज ने रुँधे कंठ से कहा और सिसकने लगे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बंशी समझ नहीं पा रहा था कि वह छोटई महराज को कैसे सान्त्वना दे? कुछ देर तक सोचने के बाद उसने कहा–'अपनी जमीन-जायदाद बदे आदमी को सब करना पड़ता है कक्का।'

'ठीक है बचवा, लेकिन ई रामधनक क का कसूर था? न तीन में न तेरह में। बेचारे बूढ़े बीमार आदमी के दरोगा जी अन्नासे मार दिए।'

'सब ठीक हो जाएगा, जरा दरोगा जी से बात कर लूँ' बंशी के पास खड़े अंजनी ने सम्पादक जी से बात कर रहे दरोगा को सुनाने के लिए यह बात बड़े ऊँचे स्वर में कही। दरोगा राय तथा सम्पादक जी ने एक साथ पलटकर स्वर की दिशा में देखा। खद्दर के पोशाक में अंजनी को देखकर दरोगा उसे पहचान नहीं पाया। दरोगा ने समझा कि कोई नेता है जिसे बंशी अपने साथ लिवा कर आया है। आए हुए नेता को क्या उत्तर दिया जाएगा? वह इस विषय पर सोचने लगा और अपनी ओर आते अंजनी को वह पहचानने का प्रयास करने लगा। पास आने पर सबसे पहले सम्पादक जी ने अंजनी को पहचाना। उन्होंने चहक कर कहा–'अरे वाह! अंजनी बाबू, आइए आइए। वनभूमि-नवोत्थान के इस पावन अवसर पर आप का स्वागत है।'

'नमस्कार, आप यहीं है?' कहता अंजनी बंशी के साथ उन लोगों के पास पहुँच गया।

'आप यहाँ कब आए?' दरोगा ने पूछा।

'थोड़ी देर पहले ही आया हूँ। सोचा था कि आज गाँव जंगल घूमूंगा, लेकिन यहाँ आते ही यहाँ की घटनाओं के विषय में ज्ञात हुआ, जिससे सब प्लानिंग ही फेल हो गई।'

'यहाँ की घटनाओं से आप की प्लानिंग क्यों फेल हो गई? इस बार रोजी जी नहीं आई हैं क्या?' दरोगा ने शरारत से मुस्कराते हुए कहा।

'क्यों रोजी से कोई काम है क्या आप का? अगर हो तो बुलवा दूँ' अंजनी ने किंचित क्रोध भरी मुस्कुराहट से पूछा।

'नहीं मेरा कौन सा काम है?' दरोगा कुछ झेंपता हुआ बोला।

'तो फिर' कहते हुए अंजनी के चेहरे पर कठोरता आ गई।

सम्पादक जी वार्ताक्रम में दोनो के चेहरे पर आते उतार-चढ़ाव को देख रहे थे। उन्होंने देखा कि अगर इस वार्ताक्रम में व्यवधान नहीं डाला गया तो माहौल खराब हो जाएगा। इसलिए उन्होंने बीच में ही कहा–'बुरा न मानिएगा अंजनी बाबू, आप को यह पहनावा बहुत अच्छा लग रहा है। आप तो यहाँ तक मोटरसायकिल से आए होंगे?'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'हाँ आया तो मोटरसायकिल से, लेकिन रास्ता इतना खराब है कि कचूमर निकल गया।'

'लौटते समय मुझे भी लेते चलिएगा।'

अंजनी सम्पादक जी को कुछ उत्तर देता कि–'नहीं चलेगी, नहीं चलेगी, हम से जो टकराएगा' आदि नारों के स्वर सुनाई पड़ने लगे। दरोगा ने चौंककर आवाज की दिशा में देखा और पूछा–'यह कौन लोग है?'

'लगता है आस-पास के गाँव वाले आज की घटना के विरोध में प्रदर्शन करने आ रहे हैं' अंजनी ने कहा।

'और मैं शर्त बदकर कह सकता हूँ कि प्रदर्शनकारियों की संख्या काफी है' सम्पादक जी ने दरोगा को डराने के लिए कहा।

दरोगा ने अपने साथ आए दो सिपाहियों की ओर देखा फिर अपनी सर्विस रिवाल्वर पर हाथ फेरा। वह सोचने लगा कि अगर प्रदर्शनकारी उग्र हो गए तब क्या होगा? उसके चेहरे पर एक घबराहट उभरी, उसे सम्पादक जी ने भाँप लिया और 'कहीं जंगली तीर-धनुष लेकर न आ रहे हों। नहीं तो...' कहकर वह चुप हो गए।

'हम तो शान्ति-व्यवस्था के लिए आए हैं। आप लोग जो सलाह दें, वह किया जाय' दरोगा ने कहा।

'हम तो जहाँ तक समझते हैं 'सब से पहले बाबा को कहीं छिपा दीजिए, नहीं तो गुस्से में भरे आदिवासी उन्हें जान से मार सकते हैं। दूसरा काम यह हो कि आप के द्वारा पकड़े गये दोनों आदमी यह कह कर छोड़ दिए जायें कि अंजनी बाबू की सिफारिश पर उन्हें छोड़ा जा रहा है। इस प्रकार प्रशासन की गरिमा की रक्षा भी हो जायेगी और सम्भावित हादसा भी टल जाएगा' सम्पादक जी ने समय को सूंघ कर गम्भीरता से कहा।

दरोगा राय को सम्पादक जी की राय पसंद आ गई। उसने तुरन्त छोटई महराज के पास जा कर सिपाहियों को डाँटते हुए कहा–'तुम लोग भी बहुत बड़े नालायक हो, सही घटना का पता भी नहीं लगा पाते? तुम लोगो के कारण अलानाहक में दो भले आदमी परेशान हुए। अभी छोड़ो इन लोगो को। देखिए पंडित जी आप भक्त आदमी हैं। लोगों के बताने से मैं जान गया कि आप की गलती नहीं है। मैं अभी बबवा की खबर लेता हूँ।' इस प्रकार दोनों को छुड़ाकर दरोगा अंजनी और सम्पादक जी के साथ बाबा के पास पहुँचा। बाबा अपने निर्माणाधीन आश्रम के सामने शुकदेव दास आर्य के साथ आए आदमियों से बात कर रहा था।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'बाबा जी आप तुरन्त मेरे सिपाहियों के साथ कुछ देर के लिए जंगल की ओर चले जाइए' दरोगा ने पहुँचते ही कहा। जलूस की आवाज क्षण-प्रतिक्षण समीप आती जा रही थी।

'क्यों जंगल में क्यों चला जाऊं?' बाबा ने गर्दन ऐंठ कर कहा।

'यह आवाज सुन रहे हैं? ये गाँव के लोग आ रहे है। अगर कुछ हो गया तोऽऽ...?'

''गाँव वालों के डर से मैं अपनी जमीन छोड़कर चला जाऊं? एक दिन तो मरना ही है, आज ही फैसला हो जाय'' बाबा ने सहज रूप में कहा।

बाबा की मृत्यु के प्रति उदासीनता की भाषा एक वीतराग संन्यासी की है या गुन्डे की, दरोगा राय समझ नहीं पाया। नारों की आवाज बहुत पास आ चुकी थी। उसने झल्लाकर कहा–'यहाँ पर शान्ति-व्यवस्था की जिम्मेदारी मेरी है। मैं जैसा कहता हूँ वैसा करिए। जंगल न सही अपने कमरे में ही चले जाइए। जाइए अभी जाइए।' दरोगा का रुख कठोर हो गया।

सभी लोगों के समझाने पर बाबा अपने कमरे के अन्दर चला गया। बाकी लोग प्रदर्शनकारियों को देखने के लिए बाहर ही रह गए, किन्तु अंजनी और सम्पादक जी बाबा के साथ यह सोचकर उसके कमरे में चले गए कि कहीं बाबा जोश में आकर कोई मुर्खतापूर्ण कार्य न कर बैठें।

बाबा के साथ अंजनी और सम्पादक जी ने जिस हालनुमा कमरे में प्रवेश किया उसकी बगल में एक छोटा-सा कमरा और था जिसका दरवाजा इसी बड़े कमरे में खुलता था। छोटे कमरे की एक खिड़की पश्चिम की ओर खुली थी। खिड़की से सटा हुआ एक लकड़ी का तख्त था जिस पर एक आदमी पद्मासन में बैठा खिड़की के बाहर देख रहा था। ऐसा लग रहा था जैसे इस आदमी को यहाँ की हलचल से कोई मतलब नहीं है। वह किसी दूसरी दुनियाँ में खोया हुआ बैठा था। सम्पादक जी की भी दृष्टि उस सिर घुटे छः फुटे पुष्ट तन वाले गौरांग व्यक्ति पर पड़ी। कमरे के भीतर कुछ लोगों की उपस्थिति का भान होते ही उसने इन लोगों की ओर सिर घुमाकर देखा।

'अरे तथास्तु जी आप!' अंजनी के मुँह से खुशी भरी आवाज निकली।

अंजनी के द्वारा नाम लिए जाने पर वह आदमी कुछ बोला नहीं, सिर्फ उसके चेहरे पर परिचय की एक मुस्कान खेल गई। उसकी इस मुस्कान से ऐसा लगा जैसे पूरा कमरा परिचय से भर गया। तथास्तु जी ने तख्त के एक किनारे खिसक कर इन लोगों को तख्त पर ही बैठने का इशारा किया। दोनों बैठ गए तो उन्होंने बड़े कोमल स्वर में अंजनी से पूछा–'आप यहाँ कैसे?'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'मेरे पिता जी यहीं पिपरी में अधिशासी अभियन्ता हैं।'

'आप का परिचय?' तथास्तु ने अपनी बड़ी-बड़ी आँखें सम्पादक जी की ओर उठाकर पूछा।

'आप 'सत्य' नाम का साप्ताहिक निकालते हैं। हम लोग इन्हें सम्पादक जी के नाम से ही जानते और पुकारते हैं' अंजनी ने परिचय कराया तो सम्पादक जी ने हाथ जोड़ दिए।

'जो 'सत्य' का प्रकाशन करता है उसके सत्य नाम का अभी तक प्रकाशन नहीं हो पाया?' कहकर तथास्तु मुस्कुराए।

सम्पादक जी तथास्तु के भव्य व्यक्तित्व से अत्यधिक प्रभावित हो चुके थे। उन्होंने हँसते हुए कहा–'आप ठीक कह रहे हैं। मैं, सब के सत्य का प्रकाशन करता हूँ, बुरा न मानिएगा, अपने सत्य का नहीं। हर औसत आदमी यही करता है। दूसरी बात यह है कि मेरे जैसे गरीबों के सत्य को जानने के लिए किसे फुर्सत है? वैसे आप के सत्य को जानने की जिज्ञासा मुझे है।'

'मेरा सत्य मैं स्वयं हूँ। मेरा नाम तथास्तु सुन ही...।' तथास्तु की बात पूरी होने के पहले ही अंजनी बोल पड़ा–'आप डाक्टर तथास्तु त्रिपाठी दिल्ली के रहने वाले हैं। राष्ट्रपति द्वारा युवा वैज्ञानिक पुरस्कार-प्राप्त त्रिपाठी जी ने अपने शोध पत्रों द्वारा वैज्ञानिक संसार में एक खलबली मचा दी है।'

'मैं समझता हूँ कि आप ईश्वर और यौगिक क्रियाओं पर विश्वास करते हैं?' सम्पादक जी ने पूछा।

'अवश्य'

'वैज्ञानिक होकर भी आप इन अवैज्ञानिक बातों पर विश्वास करते हैं?'

बिना वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाए आप इसे अवैज्ञानिक कैसे कह सकते हैं? मेरा तो मानना है कि भैतिकवादी व्यक्ति को यह भौतिकता प्रदान नहीं कर सका, जिसके कारण इस विषय पर वैज्ञानिक दृष्टिकोण नहीं अपनाया गया।'

'तो क्या आप इस विषय पर वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपना रहे हैं?'

'मैं अपना रहा हूँ?' कहकर तथास्तु मुस्कराए फिर बोले–'मान्यवर हमारे प्राचीन वैज्ञानिक महर्षियों ने सम्पूर्ण रूप से वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपना कर ही इसे विकसित किया है।'

'फिर आज के वैज्ञानिक इसे अवैज्ञानिक क्यों कहते हैं?' सम्पादक जी ने पूछा।

'...क्या आप बता सकते हैं कि पंचतत्वों के चार तत्व पर तो वैज्ञानिकों ने काफी शोध किया किन्तु आकाश तत्व पर उनका क्या शोध है?'

'इस विषय पर मेरा ज्ञान नहीं के बराबर है। इसलिए मैं कुछ बता नहीं सकता।'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'कुछ तो बता सकते हैं जैसे जल तत्व का फार्मूला एच० टू० ओ० है। इस फार्मूला से पानी बन सकता है। इसी प्रकार का कोई फार्मूला आकाश बनाने का है?' तथास्तु ने पूछा।

सभी लोग तथास्तु का मुँह देखने लगे। बाबा को इन लोगों की बात समझ में नहीं आ रही थी। वह अभी तक कसमसाता बैठा था, अब और अधिक बैठना उसके लिए मुश्किल हो गया। वह उठकर बड़े वाले कमरे में जाकर गाँजा मलने लगा। उसी समय प्रदर्शनकारियों की भीड़ नारे लगाती आ गई।

'वार्ता में व्यवधान के लिए क्षमा। प्रदर्शनकारी आ गए हैं। जरा भौतिक संघर्ष को देख लूँ। एक बात और बुरा न मानिएगा, आप जैसा आदमी इस संस्था से, मेरे कहने का मतलब ऐसे लोगों से कैसे जुड़ गया?' सम्पादक जी ने कहा।

'आप का प्रश्न ठीक है।' आज ही इन लोगों का यह घृणित रूप मेरे सामने स्पष्ट हुआ है। ऐसी धर्म संस्थाओं को मिटा दिया जाय या इनसे दूर हो जाया जाय? जहाँ 'परम सत्य' और 'लोक सत्य' में सामन्जस्य ही नहीं, एक भला आदमी उसे सहन नहीं कर सकता। यदि धर्म की दृष्टि में त्याग परम सत्य है तो यह संग्रह कैसा? यदि सत्य का अनुसन्धान परम सत्य है तो यह असत्य आचरण कैसा? समाज के तथाकथित धार्मिक ठेकेदारों के इस दोगले चरित्र ने धर्म के बाह्य आडम्बर को तो पाखण्डपूर्ण बनाया ही अभ्यन्तर धर्मान्वेषियों को भी बड़ी ठेस पहुँचाई है। जबकि धर्म के वाह्य आडम्बर, अभ्यन्तर धर्म की ओर, असली धर्म की ओर, जन साधारण को उन्मुख करने के लिए बनाये गये हैं। इसे कबीर साहब ने बड़ी गहराई से समझा था।

'डॉ० लोहिया से प्रभावित लगते है' सम्पादक जी ने कहा।

'मैं तो कहीं-कहीं मार्क्स से भी प्रभावित हूँ' तथास्तु जी बोले।

'बड़ी प्रसन्नता हुई आप की बात को सुनकर, जरा देख लूँ–लोक सत्य को।'

'कोई खास बात नहीं है। आकस्मिक भीड़ को आकस्मिक रूप से पहुँचे चौथी राम ने व्यवस्थित रूप देकर अगुआई सम्भाल ली है' अंजनी ने कहा।

'चौथी राम अगुआई कर रहे हैं? तब तो ठीक है, बुरा न मानिएगा–चमड़ा कऽ थैली कुकुर रखवार'–कहकर सम्पादक जी हँसे।

चौथी राम के चरित्र को अंजनी भी जानता था, इसलिए सम्पादक जी की टिप्पणी पर हँस पड़ा। तथास्तु इन सब बातों से निर्लिप्त बैठे रहे।

'वार्ता अधूरी रह गई, अभी लौटकर आ रहा हूँ' कहते हुए सम्पादक जी बाहर चले गए। अंजनी भी अपनी उत्सुकता नहीं रोक पाया। वह भी सम्पादक जी के पीछे-पीछे बाहर आ गया। बाहर चौथी राम भीड़ से नारे बुलवाने में व्यस्त था। उस स्थान पर अवैध निर्माण कराने वाले लोग दूर खड़े सहमे से चौथी राम की

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ओर देख रहे थे। शुकदेव दास आर्य के साथ आए छायाकार सपन कुमार ने भीड़ और चौथी राम के विभिन्न कोणों से कई चित्र खींचे। सपन कुमार को चित्र खींचता देखकर चौथी राम ने कहा–'यह फोटू सोटू हमारा बहुत खींचा जा चुका है। हम चाहते हैं कि हमारे बड़े भैया शुकदेव दास जी हिंयाँ के अतियाचार पर कुछ लिखें जिससे दुनियाँ जान जाय कि आदिवासी वनवासी के साथ पुलिस और दबंग किस परकार का जुलुम कर रहे हैं।'

सम्पादक जी चौथी राम के पास पहुँच कर बोले–'वाह भाई चौथी राम जी बुरा न मानिएगा, आप जैसा नेता अगर आदिवासी-वनवासियों को मिला है तो उनके ऊपर अत्याचार करने का किसी के पास साहस नहीं है। अब यही देखिए कि एक आदिवासी पर जरा-सा अत्याचार हुआ कि, बुरा न मानिएगा, आप द्रौपदी की पुकार पर कृष्ण की तरह हाजिर हो गए।'

'सम्पादक जी! हर जगह हमारे आदमी हैं। मुझे खबर लगी कि भलुआ में अतियाचार हो रहा है, बस मैं तुरन्त यहाँ आ गया।' चौथी राम ने सफेद झूठ बोला।

'क्यों नहीं?, क्यों नहीं? यही तो आप की खासियत है। आप के विषय में जो न जाने यह बात उसे बताइए। वैसे, बुरा न मानिएगा, आप के पास यहाँ की क्या रिपोर्ट पहुँची है?'

'यही कि छोटई महराज और रामधनक को दरोगा जी ने अलानाहक पकड़ा है। हम उन्हें छुड़ाने के लिए अपने जान की बाजी लगा देंगे' कहकर चौथी राम भीड़ की ओर मुड़ा और हाथ फटकार कर चिल्लाया–'नहीं चलेगी, नहीं चलेगी' भीड़ चिल्लाई–'तानाशाही नहीं चलेगी।'

'बस, बस शान्त हो जाइए। आप के आदिवासी वनवासी संघ का अध्यक्ष मैं चौथी राम, कसम खाता हूँ कि जबतक दोनों आदमियों को छुड़ा नहीं लूँगा यहाँ से जाऊँगा नहीं। हम आप लोगों को लेकर दरोगा जी का घेराव करेंगे' चौथी राम ने सीना फुलाकर कहा।

'बुरा न मानिएगा, वे दोनों तो आप के आने से पहले ही छोड़ दिए गए हैं' सम्पादक जी ने चौथी राम से फुसफुसा कर कहा।

सम्पादक जी की बात को सुनकर चौथी राम का चेहरा फक् हो गया। कुछ देर तक वह हतप्रभ सा खड़ा रहा, फिर धीरे से सम्पादक जी से बोला–'सम्पादक जी मैंने बड़ी मेहनत की है। आप भीड़ के सामने यह कह दीजिए कि चौथी राम के आने से दोनो आदमी छोड़ दिए गए।'

सम्पादक जी तथास्तु से पुनः वार्ता के लिए व्याकुल हो रहे थे इसलिए उन्होंने स्पष्ट कह दिया कि मैं यह असत्य नहीं कह पाऊँगा। चौथी राम कुछ देर खड़ा सोचता रहा फिर एकाएक भीड़ की ओर मुड़कर बोला–'भाइयों, हम लोगों

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

की एकता को देखकर जैसा कि सम्पादक जी बताए हैं, अभी-अभी दोनो आदमियों को छोड़ दिया गया है। आप लोगों की और परेशानियों को दूर करने के लिए परसों भलुआ में एक सभा होगी। अगर आप लोग ऐसे ही हमारे बुलाने पर आएँगे, अपनी एकता बनाए रहेंगे, तो हम आप के ऊपर कोई अतियाचार नहीं होने देंगे। जयहिन्द।'

इस भाषण से एकत्रित जनता में चौथी राम की धाक जम गई। चौथी राम ने अपना उद्देश्य पूरा कर लिया लेकिन गाँव वालों की वास्तविक समस्या ज्यों की त्यों रह गई। भलुआ में होने वाली सभा में चौथी राम सारी समस्याओं का निदान करेंगे, इस आशा में चौथी राम की जय-जयकार करती भीड़ तितर बितर होकर, अपने-अपने गन्तब्य पर चली गई। भीड़ के छँट जाने के बाद चौथी राम शुकदेव दास आर्य के पास जा कर बोला-'आपका जंगल घूमने का कितने दिन का परोग्राम है?'

'हो सका तो आज ही नहीं तो कल चला जाऊँगा। और तुम्हारा हाल चाल ठीक है न?' शुकदेव दास ने चौथी राम को टालने के लिए कहा।

'हाल चाल क्या है? बड़ी परेशानी है। लेबर सप्लाई का काम ठप पड़ा है। यही प्रोजेक्ट का काम शुरू हो जाय तो हिसाब-किताब ठीक हो जाय। इस बइठौकी में मैंने सोचा था कि आप के साथ दस पाँच दिन रह लूँगा तो कुछ पैसे मिल जाएँगे लेकिन आप भी जा रहे हैं' चौथी राम ने उदास होकर कहा।

असल में इस नए प्रोजेक्ट से उत्पन्न आदिवासियों की समस्याओं पर एक फीचर तैयार कर के मुझे अखबारों में देना है, इसीलिए जा रहा हूँ।'

'अखबारों में देंगे तो उसमें मेरा भी नाम दे दीजिएगा। मैंने आप की बड़ी सेवा की है।'

'तुम अपने नाम को निकलवा कर क्या करोगे?'

'आप चाहे जितना लिखें लेकिन यह काम होगा। इस काम में बहुत लेबर लगेंगे। अगर अखबारों में मेरा नाम निकल गया तो नए अधिकारी और बड़े-बड़े ठेकेदार सब मुझे जान जाएँगे। आदिवासियों में भी मेरा खूब नाम हो जाएगा तो लेबर भी मुझे खूब मिलेंगे।'

चौथी से जान छुड़ाने के लिए शुकदेव जी व्याकुल हो रहे थे। वह भी चौथी के चरित्र से भली भाँति परिचित थे, इसलिए उन्होंने-'अच्छा ठीक है, अब तुम जाओ, मुझे बहुत काम करना है' चौथी से कहा और मुड़कर अपनी मित्र-मंडली में जा मिले। वह चौथी की बातों को सुनकर सोचने लगे कि भला इन अनपढ़ निर्धन आदिवासियों का उद्धार कैसे होगा, जब उनका नेता ही स्वयं अनपढ़ निर्धन होते हुए भी उन्हीं के शोषण में रुचि रखता है?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चौथी राम से फुर्सत पाकर सम्पादक जी सीधे तथास्तु के पास पहुँचे तो देखा कि अंजनी पहले से ही वहाँ बैठा है। सम्पादक जी को देखकर अंजनी ने कहा–'आइए सम्पादक जी, वार्ता को आगे बढ़ाया जाय।'

'हाँ तो आप ने आकाश तत्व की बात की थी। मैं समझता हूँ आज का वैज्ञानिक आकाश में क्या है–इस पर शोध कर रहा है। आकाश क्या है? इस पर तो उसका शोध...फिर शून्य पर क्या शोध? जो शून्य है वह शून्य है' कहते हुए सम्पादक जी अंजनी की बगल में बैठ गए।

'लेकिन हमारा भारतीय दार्शनिक वैज्ञानिक अपना शोध इसी शून्य से प्रारम्भ करता है। सम्पादक जी, अनजाने को जानने की उत्सुकता का अपना एक अलग आनन्द है।'

'क्या ऐसा भी कोई व्यक्ति हो सकता है जिसे कोई उत्सुकता न हो?'

'असम्भव, जानवरों में भी उत्सुकता पाई जाती है। यह उत्सुकता ही सृष्टि का कारण है। अति विकसित और सन्तुलित मानसिकता जब सर्वोच्च उत्सुकता पर पहुँचती है तो ईश्वर से जुड़ जाती है' कहकर तथास्तु ने अंजनी की ओर देखा।

'फिर अपने को विकसित कहने वाले देश भौतिकता में विकसित हैं, उनकी मानसिकता सन्तुलित नहीं है। वे पदार्थवादी दर्शन के प्रणेता हैं जिससे हमारा दूर का भी सम्बन्ध नहीं है। आखिरकार इन पदार्थवादियों के ये सारे विकास क्यों? मानव की सुख-शान्ति के लिए ही न? अगर ये सारे विकास मानव को सुख शान्ति नहीं दे पा रहे हैं तो इसका अर्थ हुआ कि, आदमी की सुख शान्ति के लिए भौतिक विकास के पदार्थवादी दर्शन की सोच ही कहीं मूल रूप में गलत है।'

'फिर इस गलत दर्शन के पीछे सारे विश्व के लोगों की अन्धी दौड़ क्यों चल रही है?' सम्पादक जी ने पूछा।

'विश्व पर भौतिकवादी दर्शन की स्थापना में कई सौ साल लगे हैं। इसको समझने के लिए हमें विगत विश्व इतिहास पर दृष्टिपात करना होगा। अगर हम देखें तो परम शान्ति दायक बौद्ध पंथ के विश्वव्यापी प्रचार के पश्चात मुस्लिम पंथ ने सर्वप्रथम धर्म को तलवार से जोड़ धर्म में असहिष्णुता का प्रवेश कराया। वे तलवार की शक्ति से विश्व के अधिकांश भागों के शासक हुए। वे पुनर्जन्म को नहीं मानते थे जिससे बाद में उनमें सौभाग्य से प्राप्त मानव जीवन को पूरे आनन्द के साथ जीने की परम्परा चल पड़ी जिससे त्यागवादी संस्कृति के स्थान को भोग-वादी संस्कृति ने ले लिया, क्योंकि शासक ही शासित का आदर्श होता है। इसलिए शासित पर उन्हीं के रहन सहन और विचारों का असर पड़ा। इस प्रकार विश्व के अधिकांश हिस्सों में सर्वप्रथम इस पंथ ने भोग और असहिष्णुता को

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्थापित किया। दूसरी बार उन योरोप वासियों की पूरे विश्व पर सत्ता स्थापित हुई जिनकी सभ्यता और संस्कृति की आँखें ही भौतिक परिवेश में खुली थीं। इन लोगों की सफलताओं को देखकर मनुष्यों के अध्यात्मवादी विचार कुंठित हो गए। कुन्ठाग्रस्त व्यक्ति प्रतिक्रिया कर सकता है, क्रिया नहीं। चिन्ता कर सकता है चिन्तन नहीं। क्रिया और चिन्तन-हीन व्यक्ति नकल करता है। यही कारण है कि सम्पूर्ण विश्व योरोप-वासियों के भौतिकवादी विचारों के पीछे अन्धों की भाँति दौड़ रहा है।'

'हर पुरानी विचारधारा चाहे वह सामाजिक हो, आर्थिक हो अथवा धार्मिक, आज पुराने के नाम पर त्याज्य हो गई है। उसके विपरीत कुछ नया करना ही आज प्रगतिशीलता मानी जा रही है। अजीब स्थिति है' सम्पादक जी ने कहा।

'मेरे ध्यान का समय हो गया, अब अधिक नहीं।'

'तथास्तु जी' मेरा एक अन्तिम प्रश्न है कि क्या आप भ्रष्ट समाज के सुधार के लिए हिंसा का अनुमोदन करेंगे?'

'आप का प्रश्न तो ऐसा है कि जैसे कोई अस्पताल के डाक्टर से पूछे कि क्या आप उपचार में आपरेशन का अनुमोदन करते हैं?' तथास्तु ने हँसकर कहा।

'नहीं, नहीं मेरा पूछने का तात्पर्य यह है कि भारतीय संस्कृति में हिंसा का अनुमोदन असाधुता, असहिष्णुता है। फिर...।'

'भारतीय परम्परा में ही राम और कृष्ण भी हुए हैं। क्या वे हमारे समाज के आदर्श पुरुष नहीं हैं?'

'मतलब आप अनुमोदन करते हैं?'

'अवश्य, किन्तु अन्य उपचारों के निरर्थक होने पर। अध्यात्मिकता और भौतिकता की सही समझदारी विकसित होगी तो सब सम्भव हो जायेगा। मेरा प्रयास इसी दिशा में है।'

'आप से मिलकर बड़ी प्रसन्नता हुई। आप अपना दिल्ली का पता लिखवा दें, कभी दिल्ली आना हुआ तो आप से मिलूँगा' सम्पादक जी ने अपनी डायरी निकालते हुए कहा।

तथास्तु ने अपना दिल्ली का पता लिखवा दिया और कहा–'वर्ष दो वर्ष ही मेरा यह पता रहेगा। हो सकता है शीघ्र ही आपको मेरे इस पते पर अंजनी सहगल का नाम लिखना पड़े, क्योंकि इस बंगले को बेचने की बात अंजनी जी से हो चुकी है।'

सम्पादक जी अपने झोले को कन्धे पर ठीक से स्थापित करते हुए उठे और–'जब नाम बदलेगा तो देखा जायेगा। अच्छा नमस्कार' कहकर वह कमरे के बाहर निकले। उन्हीं के साथ अंजनी भी बाहर आ गया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सम्पादक जी ने बाहर आ कर अपनी निगाह इधर-उधर दौड़ाई तो देखा कि बंशी उन्हीं की ओर चला आ रहा है।

उन्होंने बंशी के पास आ जाने पर पूछा–'शुकदेव दास आर्य एण्ड कम्पनी कहाँ है?

'वे लोग जल्दी में थे इसलिए आप को नमस्कार कहकर पिपरी चले गए।'

'रामधनक और छोटई कक्का कहाँ हैं?'

'वे दोनों लोग गाँव पर गए।'

'हमें भी पिपरी जाना है। बंशी तुम भी चलोगे या रुकोगे?' अंजनी ने बंशी से पूछा।

'साहब से छुट्टी ले लिया है अब कल...।'

'अच्छा ठीक है चलो कल ही आना और आप सम्पादक जी?'

'पिपरी जब छोड़कर आ ही गया हूँ, तो बुरा न मानिएगा, एक दो दिन इधर घूम फिर लूँ।' सम्पादक जी भलुआ की ओर कदम बढ़ाते हुए बोले।

तीनों आदमी साथ-साथ भलुआ तक आए। वहाँ से अंजनी पिपरी चला गया। सम्पादक जी भलुआ में ही रुक गए।

दरोगा द्वारा छोड़ दिए जाने के बाद छोटई महाराज गुमसुम से अपने गाँव आये बाबा द्वारा किए गए उनकी जमीन के अपहरण तथा धार्मिक दरोगा द्वारा किए गए अपमान ने उनके सात्विक सोच के धरातल को झकझोर कर उलट-पलट दिया। शाम को वह अपने नियमानुसार रामायण पढ़ने बैठे। रामधनक को छोड़कर उनके रामायण के अन्य सारे श्रोता आ गए। छोटई महाराज ने रामधनक की अनुपस्थिति का कारण जानना चाहा तो पता कि आज रामधनक की हालत बहुत खराब है। वह चारपाई पर पड़े बकझक रहे हैं, दो चार दिन शायद ही और जीवित रहे। इस समाचार को सुनकर छोटई महाराज मौन अन्तरिक्ष में आँखें गड़ाए देर तक बैठे रहे, फिर उन्होंने बड़े बेमन से चिलम चढ़ाने के लिए गॉजा कल्लू की ओर बढ़ाया। कल्लू ने गॉजा बनाकर उन्हें दिया। आज छोटई महराज गॉजे की चिलम से दम मारकर लौ नहीं निकाल पाए। गॉजे का दम लगा कर वे एक लम्बी उसांस भरकर बोले–'रामधनक की तरह सच्चा और मर्द आदमी मैंने इस पूरे इलाके में नहीं देखा। जवानी में इस आदमी को चार मर्दों का जोर था, लेकिन गुमान तनिक-सा नहीं। जिसका संग दिया उसका अन्त तक दिया।'

'हाँ कक्का, होनी के का कहा जाय? नहीं तो ऊ अबहीं मरै लायक थोड़े रहे' कल्लू ने कहा।

'उहै जबसे दरोगवा ने मार दिया तबै से उनके करेजे में साल पइठ गया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

काल दिन भर करेजा पकड़ के हाय मैया हाय बप्पा करत बदहोश हो गए। फेर जब होश आया तब्बै से बकझक रहे हैं' फन्नू ने कहा।

'अइसन हालत है तब तो रमायन तनी जल्दी खतम कर के उन्हें देखने चलना है' कहकर छोटई महराज ने जल्दी-जल्दी रामायण के पृष्ठों को पलटना शुरू किया। अन्य दिनों की भाँति आज वह रामायण का पाठ तन्मयता से नहीं कर पा रहे थे। कभी-कभी वह चोपाई पढ़ते-पढ़ते चुप हो जाते, फिर–'अरे हाँ मैं रामायण पढ़ रहा हूँ' कहकर फिर आगे पढ़ने लगते। रामायण पढ़ते-पढ़ते उन्होंने जैसे ही–

सुन मुनि तोहि कहौं सहरोषा, मोहि जे भजहि तजि सकल भरोसा।
करहुँ सदा तिनकर रखवारी, जिमि बालक राखहिं महतारी।।

चौपाई को पढ़ा, उनके चेहरे पर उद्विग्नता छा गई। उनकी साँस बहुत तेज चलने लगी। अपने को संयत कर के वे कुछ देर मौन रहे फिर अकस्मात कल्लू की ओर मुड़कर बोले–का हो कल्लू भगवान महतारी की तरह भगतों की रखवारी करते हैं? इसे पूछने में उनकी आँख एकदम गुस्से से लाल हो गई। आँखों में मारे क्रोध के पानी भर आया। उनकी इस मुद्रा को देखकर सभी लोग सकते में आ गए। कल्लू कुछ निर्णय नहीं कर पाया कि क्या उत्तर दिया जाय। तभी छोटई महराज ने चीखकर कहा–'कभी नहीं, सब झूठ है!' यह कहने के साथ ही उन्होंने रामायण को उठाकर पटक दिया और फफक कर रोने लगे।

'कुछ देर तक रोने के बाद वह रूँधे गले से बोले–'जा के देखो रामधनक को, भगवान उसकी रखवारी कर रहा है। वाह रे भगवान!' हा हा हा हा कर छोटई महराज हँस पड़े।

'भगवान के यहाँ देर है अन्धेर नहीं है, कक्का' कहकर कल्लू ने उन्हें शान्त्वना देनी चाही। परन्तु छोटई महराज ने जैसे उसकी बात सुनी ही नहीं, वह अपने आसन से उठकर खड़े हो गए और अपने बदन के कपड़ों को एक-एक कर–'लो बबवा इहो ले, ले दरोगवा तु हूँ ले' कह-कह कर उतार-उतार फेंकने लगे। उनकी इस हालत को देख कर भक्तों में दहशत फैल गई। जंगल की आग की भाँति यह बात पूरे गाँव में फैल गई कि बाबा ने छोटई महराज और रामधनक पर जादू चला दिया है, जिससे छोटई महराज पागल हो गए हैं और रामधनक मरने जा रहा है।

छोटई महराज की पत्नी और बच्चे भी शोर सुन कर दुकान में पहुँचे। उनकी हालत को देख कर सभी रोने लगे। अपनी पत्नी को रोता देख छोटई महराज एकदम से भड़क उठे और पत्नी को गाली देते हुए मारने दौड़े। उसी समय

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सम्पादक जी के साथ बंशी वहाँ पहुँचा। उसने पीछे से छोटई महराज का हाथ पकड़ लिया और कहा–'का कक्का, एतना समझदार होके ई का कर रहे हैं?'

छोटई महराज ने एक बार घूर कर अत्यधिक क्रोधित मुद्रा में बंशी की ओर देखा, फिर जैसे पंचर हो जाने पर सायकिल का पहिया धीरे-धीरे पिचक जाता है, वैसे ही क्रोध से तना छोटई महराज का चेहरा धीरे-धीरे सामान्य हो गया, वह कुछ देर तक एक टक बंशी की ओर देखते रहे, फिर रोने लगे।

'आप एतना परेशान क्यों हैं? हम लोग आप की जमीन नहीं जाने देंगे' सम्पादक जी ने आश्वासन भरे स्वर में कहा।

'भैया, हम जमीन जाने से नाहीं रो रहे हैं। ई बबवा अउर दरोगवा ने हमारा जो ईश्वर पर विश्वास था उसे ले लिया। ई बबवा कालनेमी है। जौन रमायन की हम बीस बरिस पूजा करते रहे ओके ई दूनो आज पटकवा दिए। हे भगवान! तूँ कहाँ हो?' कहकर छोटई महाराज फिर रोने लगे।

'ईश्वर पर विश्वास ही लाचार अशक्त दीन-हीनो के जीने का एकमात्र सहारा है, इसे छद्मवेशी भक्त कालनेमियों ने कितनी बार तोड़ा है? इसका इतिहास कोई हिसाब नहीं दे सकता। इतने क्रूर प्रहारों के पश्चात् भी लोगों की ईश्वर पर आस्था बनी हुई हैं, यही आश्चर्यजनक है। क्यों न कह दूँ कि शक्ति ही भक्ति को सुरक्षित रख सकती है। परन्तु इस बात को कहने का यह उपयुक्त अवसर नहीं है', सोचकर सम्पादक जी ने कहा–'कक्का, दानवों की लड़ाई देवताओं से होती ही है। आज भी हो रही है, आप निराश न हों।'

छोटई महराज के बदन पर मात्र एक लंगोट ही शेष बची थी। वह बिना अपने कपड़ों की ओर ध्यान दिए वैसे ही अपने आसन पर बैठ गए। उन्होंने अपने उसी अर्धचेतनावस्था में रामायण को उठाकर अपने सीने से लगा लिया और पुनः रामायण पाठ के लिए उद्यत हुए तभी बंशी ने कहा–'कक्का, अब आज रमायन रहने दो बहुत देर से पढ़ रहे हो।'

यद्यपि कि बंशी ने बहुत देर से रामायण पढ़ने वाली बात एकदम झूठ कही थी किन्तु छोटई महराज अपने होश में न रहने के कारण से सत्य मान गये। छोटई महराज ने रामायण बन्द कर दिया और अपनी जेब से गाँजा निकाल कर कल्लू को बनाने के लिए दिया। उसी समय भोला महराज जुटी भीड़ को हटाते अपने छोटे भाई के सामने पहुँचे। उन्होंने कल्लू को गाँजा मलते देखकर कहा– 'बस, इहै गाँजा साँजा पीने से तो दिमाग खराब होता ही है।'

अभी तक छोटई महराज अपने बड़े भाई की पीठ पीछे चाहे जो बुराई करते रहे हों परन्तु सामने वह उनके मुँह कभी नहीं लगे थे। आज उनकी बात को सुनकर एकदम गरम हो गए। 'हाँ हो हाँ, गाँजा पीने से हमारा दिमाग खराब हो
RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गया है, तोहार दिमाग ठीक है। जाऽ बंशी चार पइसा कमा के न देते तो तोहरो दिमाग हम देखते। कल्लू की माई तीन दिन से खाना नहीं खा रही है, रामधनक खटिया पकड़ लिए हैं, का ई सबका दिमाग खराब है?' छोटई महराज ने चीखकर कहा और फिर रोने लगे।

छोटई महराज को इस प्रकार बोलते देख भोला महराज एक बार तो एकदम हतप्रभ हो गए फिर–'अरे छोटई, ई बिपतकाल है। यह समय में तो धीरज धरो त उतरो पारा। अब तुमको हम का समझाएँ? तुम तो सब जानते हो' भोला महराज ने अपने छोटे भाई की मानसिक स्थिति देख कर पुचकारा।

'हाँ हाँ, हम सब जानते हैं, इसी से बबवा ने ठगा, दरोगवा ने बेइज्जत किया' कहकर छोटई महराज तमतमाए चेहरे से आकाश की ओर ताकने लगे।

'कक्का का ई तोहरै बेइज्जती है? ई तो पूरे गाँव की बेइज्जती है' बंशी ने छोटई महराज को पुनः भावावेश में आते देख सम्भालने की कोशिश की।

'अरे ई साफ औघड़ी मन्तर है। बबवा ने कौनो मसान कर दिया है। किसी गुनियाँ के बुला के दिखाओ' पास खड़ी महिलाओं के झुण्ड में से एक बुढ़िया ने कहा। उसकी बात को सुन कर महिलाओं के बदन में भय की एक सिहरन दौड़ गई। जो महिलायें अपने छोटे बच्चों को लेकर आईं थीं, उन्होंने अपने बच्चों का सिर आँचल से ढंक दिया। जो अधिक भयभीत हुईं वे अपने बच्चों को लेकर वहाँ से खिसक गईं।

मगरू को बुढ़िया की बात सही लगी। उसने सोचा कि बाबा ने अवश्य ही हमारे बप्पा पर भी मसान कर दिया है। वह भीड़ में से चीखकर बोला–'चलो हम अबहीं बबवा को टंगारी से काटकर थाने पर जाके कबूल करेंगे।'

उसकी बात को सुनकर सभी लोगों में उत्तेजना फैल गई। चलो हम भी चलेंगे, चलो हम भी चलेंगे, कहते लोग अपने-अपने घरों से कुल्हाड़ी लेने दौड़ पड़े।

सम्पादक जी ने देखा कि अगर इस उत्तेजित भीड़ को रोका नहीं गया तो अनर्थ हो जाएगा। भीड़ को रोकने का मन ही मन फैसला कर वह पास में पड़ी एक चारपाई पर खड़े होकर चिल्लाए–'सब लोग तैयार होकर यही आ जायँ। हम सभी लोग एक साथ चलेंगे। पहले छोटई कक्का को कपड़ा पहना कर घर ले जाओ।'

सम्पादक जी के कहने का असर हुआ। सभी लोग तैयार होकर वहीं पर आ गए। मगरू ने अपने हाथ की कुल्हाड़ी उठाकर सम्पादक जी की ओर देखा। उसका चेहरा उत्तेजना से तमतमाया हुआ था। सम्पादक जी ने इशारे से मगरू को अपने पास बुलाया और धीरे से कहा–'देखो मगरू, मैं जो कहूँ वही तुम्हें करना है, समझे...।' 'समझे' शब्द को उन्होंने कठोर प्यार भरे आदेशात्मक स्वर में कहा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मगरू प्रारम्भ से ही सम्पादक जी को अपना हितैषी मानता आ रहा था इसलिए वह उनके आदेश को मानने के लिए तुरन्त तैयार हो गया। वह सम्पादक जी की बगल में टंगारी लिए खड़ा हो गया। भीड़ गुस्से से कसमसाती मगरू की ओर देखती खड़ी रही। उसी समय बुधनी 'भैया गे, भैया गे, पुकारती दौड़ी आती दिखाई पड़ी।

बुधनी को इस प्रकार घबराहट में आते देख मगरू का मन विभिन्न आशंकाओं से घिर गया। सम्पादक जी भी रामधनक की हालत से परिचित थे इसलिए उन्होंने सोचा कि अवश्य ही रामधनक मर गया। लेकिन उन्हें अपना अन्दाजा उस समय गलत लगा जब बुधनी हाँफती हुई एकदम मगरू के पास पहुँच उसका हाथ पकड़ हर्ष-विह्वल हो अपने श्वासों को संयत करती रुक-रुक कर कहने लगी–'भैया...बप्पा...एक दम ठीक हो गए हैं। अभी-अभी उठके तुमको पूछ रहे थे। खाना माँगा...बकरी का दूध दिया गटर-गटर पी गए, चलो' कहती बुधनी मगरू का हाथ पकड़ लगभग घसीटने लगी। एकाएक उसकी दृष्टि सम्पादक जी पर पड़ी तो वह अपने उतावलेपन पर शरमा कर सिर नीचे किए मगरू की बाँह छोड़ एक ओर खड़ी हो गई।

'मगरू, तुम जाकर अपने बप्पा को देखो। मैं बंशी के साथ अभी आ रहा हूँ' सम्पादक जी ने कहा।

मगरू बुधनी के साथ अपने घर की ओर चल पड़ा। बुधनी आगे-आगे हर्षातिरेक में लगभग भागती-सी जा रही थी। उन दोनों के जाने के बाद सम्पादक जी ने वहाँ उपस्थित गाँव वालों से कहा–'भगवान जो करता है सबके भले के लिए करता है। अभी सभी लोग बाबा को मारने जा रहे थे कि बुधनी ने आकर ऐसा समाचार सुनाया कि मगरू को अपने घर जाना पड़ा। इसलिए मैं सोचता हूँ कि कल सुबह चौथी राम ने जो पंचाइत बुलाई है उसमें आसपास के गाँव वाले भी आएंगे। उसी पंचाइत में बाबा के मसान वाली बात रखी जाए। पंचायत जो फैसला करेगी वह किया जाएगा। अभी आप लोग अपने-अपने घर जायँ।'

सम्पादक जी की बात गाँव वालों को पसन्द आ गई लेकिन लोग अपने घर जाने के बजाय रामधनक को देखने चल पड़े। छोटई महराज की देखरेख भोला महराज कर रहे थे। यह देखकर सम्पादक जी भी बंशी के साथ रामधनक के घर की ओर चल पड़े। रास्ते में उन्होंने सुझाव दिया कि सब से पहले कल्लू की माँ को देखा जाय, जिसने अपनी जमीन जाने के दुःख में तीन दिन से अन्न-जल छोड़ दिया है।

जब सम्पादक जी भीड़ के साथ कल्लू के दरवाजे पर पहुँचे तो देखा कि वहाँ साक्षात् दरिद्रता नाच रही है। कल्लू के मिट्टी के घर पर पड़ी छाजन जगह-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जगह से सड़ गल कर समाप्त हो चुकी थी। दरवाजे पर लकड़ियों को गाड़कर बनाए गए छोटे से मचान पर तीन-चार काई लगी पानी पीने की गगरियां रखी हुई थीं। घर के दरवाजे इतने छोटे थे कि पर्याप्त झुक कर ही अन्दर प्रवेश किया जा सकता था। कल्लू अपने घर के सामने पीपल के पेड़ की छाया में गर्मी से व्याकुल एक झिलंगही चारपाई पर पड़ा था। उसके आस-पास तीन काले-काले नंग-धड़ंग बच्चे धूल में खेल रहे थे। भीड़ को देख वे बच्चे पीपल के तने के पीछे छिप गए।

छोटई महाराज के झझकने के बाद जिस समय भोला महाराज के सामने कल्लू ने अपने को अपराधी महसूस किया, अपराध बोध के कारण वह उसी समय सब की निगाह बचाकर अपने घर चला आया था। आने के बाद वहाँ पर और क्या बातें हुईं, उससे अनभिज्ञ होने के कारण इतनी भीड़ देखकर वह अकबका गया। सम्पादक जी ने जब आने का कारण बताया तो वह रुआँसा होकर बोला–'माई पता नहीं किस जनम का बैर ले रही है? अभी हाथ में एक पइसा नाहीं है। अइसे में अगर मरेगी तो कइसे कफन-दफन करूँगा?'

'नहीं, माई मरेगी क्यों? उसे समझा कर खाना खिलाओ' सम्पादक जी ने कहा।

'बहुत समझाया लेकिन कहती है कि कौर घन्ट के नीचे उतरता ही नहीं क्या करूँ?'

'उससे कह दो कि अब यहाँ पर किसी का खेत नहीं जाएगा।' चलो हम समझाते हैं।

'हाँ भैया, आप किसी तरह उसे खाना खिला देते। चार-छः महीने और जी जाती तबतक मजूरी-धतूरी करके कुछ पैसों क़ा इन्तिजाम कर लेते' कल्लू अपने घर की ओर चलते हुए बोला।

कल्लू के साथ सम्पादक जी काफी झुककर उस माँदनुमा घर में घुसे। घर में चारों ओर अंधेरा था। छोटी दीवाल से घिरे आँगन में चूल्हा जलने की रोशनी हो रही थी। कल्लू ने चूल्हे के पास बैठी पत्नी को आग तेज करने को कहा। चूल्हे में फूँक मारने से जब प्रकाश हुआ तो सम्पादक जी ने देखा कि बिना किवाड़ के कमरे के कच्चे फर्श पर अर्धनग्न एक नारी कंकाल चीथड़ों पर पड़ा था। सम्पादक जी का मन उस नग्न गरीबी को देख कर सिहर उठा। वह सोचने लगे कि क्या यह बुढ़िया अपने खेतों से प्राप्त इसी सुख के लिए अन्न-जल त्याग कर प्राण देने को उतारू है? अट्टालिकाओं से देश की प्रगति का आकलन करने वाले कभी इस नीची भूमि को देखते जो अट्टालिकाओं की ऊँचाई के कारण गहरी हो गई है।

'माई' कल्लू ने पुकारा।

'आँऽऽ के है? कल्लू!' माँ ने बहुत मुश्किल से आँखें खोलकर पूछा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'हाँ, हम हइ। देख माई पटवारी राजा के ऊपर वाले सरकार आए हैं। ई बता रहे हैं कि अब जमीन नाही जाएगी।'

बुढ़िया के चेहरे पर प्रसन्नता की एक लहर आई फिर विलुप्त हो गई। उसने अविश्वसनीय दृष्टि से सम्पादक जी की ओर देखा और बोली–'पटवारी राजा के उप्पर तो केहू नाहीं होता।'

'होता है माँ जी, मैं हूँ। जब से गान्ही बाबा का राज आया है, तबसे पटवारी राजा के उप्पर एक ओहदा और बन गया है' सम्पादक जी ने कहा।

'अच्छाऽऽ?' बुढ़िया के चेहरे पर विश्वास की एक झलक उभरी।

'गान्ही बाबा के यहाँ तोहार खबर गई रही। उहै हम के भेजे हैं कि जा के कल्लू की माई को दाना-पानी कराओ। अब उसकी जमीन नहीं ली जाएगी' सम्पादक जी बुढ़िया को समझाने के लिए गंवई भाषा में बोले।

सम्पादक जी की बात सुन कर बुढ़िया अपने हाथों का टेक लगाकर बैठने का प्रयास करने लगी। सम्पादक जी ने हाथ बढ़ाकर उसे बैठने में सहयोग दिया। बुढ़िया बैठ गई तो उसने बड़ी श्रद्धा से अपने जुड़े हाथ आकाश की ओर उठाये और बोली–'धन्न हय गान्ही बाबा तू धन्न हय' कहते कहते उसकी आँखों से आँसू झरने लगे।

सम्पादक जी ने बुढ़िया की उस श्रद्धा को देखा जिसमें गान्धी बाबा अब भी जीवित थे। बुढ़िया भले मर जाय परन्तु गान्ही बाबा नहीं मर सकते। भारत के अपढ़ ग्रामीण गरीबों की श्रद्धा के अमर गान्धी स्वयं भले मर गए हों किन्तु उनसे जुड़े सत्तासीन अमरत्व का सुख ले रहे हैं।

'अच्छा माई खइका खइबी?' कल्लू ने पूछा।

'काहे नाहीं, जरूर खाब। जब गान्ही बाबा कहे हैं तऽ भला न खाब?' बुढ़िया ने कहा और उसी दिन से खाना खाने लगी।

सम्पादक जी कल्लू के यहाँ से छुट्टी पाकर सीधे रामधनक के यहाँ पहुँचे। रात हो जाने के कारण साथ आए लोग अपने-अपने घरों को चले गए थे। बंशी ने रामधनक के दरवाजे पर पहुँच कर मगरू को पुकारा। आवाज सुनकर बुधनी हाथ में दीपक लिए बाहर निकली।

'बंशी कक्का! छोटइयो दद्दा आए हैं। दूनो जने खूब बतिया रहे हैं' बुधनी ने हुलस कर कहा। उसके बप्पा उठकर बात कर रहे हैं, इसी में वह निहाल हुई जा रही थी।

'अच्छा तो सब ठीक ठाक है न? बंशी ने पूछा।

'हाँ सब ठीक है लेकिन बइठोगे नहीं का?' बुधनी ने बच्चों की तरह ठुनकते हुए कहा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'रात हो गई है, बइठेंगे नहीं हमारे साथ सम्पादक जी भी हैं, जरा उनके खाने-पीने का प्रबन्ध करना है।'

स्वयं दीपक की रोशनी में रहने के कारण बुधनी ने अन्धेरे में खड़े सम्पादक जी को नहीं देखा था। उसे जब ज्ञात हुआ कि सम्पादक जी भी हैं तो वह घूम कर घर की ओर जाने लगी।

'सुनो' जाती बुधनी को सम्पादक जी ने पीछे से पुकारा। जाती बुधनी हाथ में दीपक लिए घूम कर खड़ी हो गई।

'देखो रात बहुत हो गई है। अगर हम लोग बैठेंगे तो बहुत देर हो जाएगी। सुबह हाल चाल बता जाना। अगर जरूरत होगी तो पिपरी से डाक्टर बुला लिया जाएगा।'

'अच्छा' कहकर बुधनी पूर्ववत खड़ी रही। सम्पादक जी समझ नहीं पा रहे थे कि अब और कौन-सी बात कर के बुधनी को कुछ देर और रोका जाय। यह सत्य है कि पवित्र प्यार वाचाल नहीं होता। सम्पादक जी कुछ और न बोल पाने की स्थिति में मुड़कर बंशी के घर की ओर चल पड़े।

आज भलुआ में सुबह से ही एक सुगबुगाहट तैर रही है। गाँव के सारे लोग अपना दैनिक कार्य जल्दी-जल्दी समेट लेना चाह रहे हैं क्योंकि चौथी राम ने पंचायत का समय दोपहर ही निश्चित किया है। गाँव के बाहर एक महुअरिया है, पंचायत वहीं पर होगी। लोग अपना कार्य करते हुए महुअरिया की ओर झाँक लेते हैं कि दूसरे गाँव के लोग आ तो नहीं गए? इतनी बड़ी पंचायत का होना इस क्षेत्र के लिए एक बड़ी घटना है।

आधा आषाढ़ जा चुका है लेकिन अभी तक पानी न गिरने के कारण वातावरण में एक उमस भरी हुई है। पुरुवा हवा बहुत तेज चल रही है लेकिन लगता है कि वह शरीर में लग ही नहीं रही है। आकाश में आषाढ़ के बादल छोटी-छोटी टुकड़ियों में पुरुवा के झोंके से दौड़ रहे हैं।

बाहरी गाँव के कुछ लोग दो पहर होते होते महुअरिया में आकर पसीना पोंछते खड़े हो गए। वहीं पर अपनी टोली के अलावा अन्य किसी को न पाकर उनके चेहरे पर एक हताशा उभड़ आई, उसी समय भोला महराज ने अपने दरवाजे से उन लोगों को देखा तो गाँव में गोहार लगा दिया कि पंचायत के लिए दूसरे गाँव के लोग आ गए हैं अब भलुआ वाले भी वहाँ चलें। उनके गोहार को सुनकर भलुआ के लोग भी महुअरिया की ओर एक-एक कर चल पड़े।

मगरू, बंशी, भोला महराज, छोटई महराज और सम्पादक जी एक साथ महुअरिया की ओर चले। यद्यपि कि गाँव से महुअरिया की दूरी तीन चार बीघे ही

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

थी किन्तु धूप इतनी तेज थी कि यह दूरी तय करते-करते सभी पसीने से लतपथ हो गए।

'बड़ी तेज धूप है' सम्पादक जी ने पसीना पोंछते हुए कहा।

'काना मनई बदरिहा घाम, एनसे परै दऊ स काम। बदरिहा घाम है बहुत तेज लगता है' छोटई महराज ने कहा।

छोटई महराज की मानसिक स्थिति अच्छी तो नहीं, काम चलाऊ हो चुकी है।

'ऐही घाम से तो बेमारी फइलता है। कहीं हैजा-वैजा न फइले' मगरू ने आशंका व्यक्त की।

'अइसन असगुन मत बोलो। मनाओ कि दऊ राजा खूब बरसैं, जोन्हरी साँवां हो, मचान बन्हैं' भोला महराज ने कहकर सूर्य को प्रणाम किया।

'धरती खूब जर गई है, अगर पानी बरस दिए तो साँवां खूब होगा' बंशी ने कहा।

'वह देखिए चौथी राम भी आ गए' सम्पादक जी ने अपने काफिले के साथ महुअरिया में प्रवेश करते चौथी राम की ओर इशारा करके कहा।

सभी लोग कदम बढ़ाकर जल्दी-जल्दी महुअरिया में पहुँचे। अन्य दिनों की अपेक्षा चौथी राम का वस्त्र आज अधिक साफ-सुथरा था। महुअरिया में पहुँचते ही चौथी राम के साथ आए लोगों ने 'चौथी राम जिन्दाबाद' का नारा लगवाया। कुछ देर तक नारे लगते रहे। अपनी नेतागिरी के प्रति सचेष्ट चौथी राम एक ऊँचे स्थान पर जनता के सामने तब तक हाथ जोड़कर खड़े रहे, जब तक नारे लगते रहे। नारों की आवाज सुनकर अपने घरों में आलस्य में पड़े लोग भी दौड़कर महुअरिया में पहुँच गए। चौथी राम ने जब देखा कि नारे के प्रभाव से जिन्हें आना था वे आ चुके तो उसने हाथ उठाकर नारा बन्द करने का इशारा किया। नारा बन्द हो गया तब चौथी राम ने अपने सामने खड़ी भीड़ को ध्यान से देखा, फिर बोलना शुरू किया–'मेरे प्यारे भाइयों! आप जानते हैं कि हम हियाँ अनियाव और अतियाचार के खिलाफ लड़ने के लिए जुटे हैं लेकिन लड़ाई टंगारी-डंडा से नाहीं गान्ही बाबा के बताए रस्ते से होगी।' फिर चौथी राम ने अपने स्वर को खूब बढ़ा चढ़ाकर कहा–'हम गान्ही बाबा के रस्ते से अतियाचारियों को भगा के दम लेंगे, अपना हक पा के दम लेंगें'

चौथी के साथ आए लोग चिल्लाए–'चौथी भाई...।' भीड़ बोली–'जिन्दा बाद!' जब कई बार यह नारा बोल लिया गया तो चौथी राम ने फिर उन्हें शान्त कराया और कहा–'ई जवन आप पहाड़ी के आरी-आरी गड़ा खम्भा देख रहे हैं, हुआँ से बन्धे की दीवार बनेगी। ओही पर से सड़क जाएगी आउर पिपरी से लेकर
RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मध्य परदेश तक इधर का सब जमीन पानी में बूड़ जाएगा। अरे ई समुन्दर बनेगा समुन्दर, जिसमें यह महुअरिया जइसन लाखन महुअरिया बूड़ जाएंगे।'

चौथी राम के बताए क्षेत्रफल को सुन कर श्रोताओं के रोंगटे खड़े हो गए। भीड़ में एक बेचैन हलचल पैदा हुई। भीड़ में से किसी ने पूछा–'ई सब कब तक बूड़ेगा?'

'सबसे पहिले सरकार घर दुआर गिरवा के हियाँ से सबको भगाएगी। पिपरी में बन्हा बनने का समान गिर गया है। तो भाइयों, हमार कहना हे कि ई काम महीना दू महीना में चालू हो जाएगा। खेत-बारी, घर-दुआर सब चल जाएगा, तब हमारे बाल-बच्चा का खाएंगे?' चौथी राम ने भीड़ में प्रश्न उछाला फिर तीव्र स्वर में बोला–'नहीं हमारे बाल-बच्चा भूखों नहीं मरेंगे। हम बहादुर आदिवासी बनवासी हैं, हम मेहनत-मजूरी से बाल-बच्चा जिला लेंगे। इसका इन्तजाम मैंने कर लिया है लेकिन लड़ाई जारी रहेगी।'

चौथी राम के साथ आए लोग चिल्लाए–'चौथी राम', भीड़ चिल्लाई–'जिन्दाबाद।'

'तोऽ इन्तिजाम ई होगा कि एतना बड़ा काम होने जा रहा है। सब लोग लपट कर काम करैं अउर चन्दा दें, तब सरकार से कचहरी हाईकोरट तक कानूनी लड़ाई लड़ी जाएगी। जहाँ तक ठेकेदार सताते हैं, पइसा नाही देते, आप तनिको नाहीं डरैं। हम आप के साथ रहेंगे जो सताएगा या मजूरी काटेगा हम उसका सिर काट लेंगे।' चौथी के साथ आए लोग फिर चिचियाये–'चौथी भाई' भीड़ ने गर्जना की–'जिन्दाबाद।'

'अबहीं आप लोग शान्त रहैं। कोई आप की जमीन नाहीं ले सकता है। हम एक दिन दूध का दूध अउर पानी का पानी कर के छोड़ेंगे। हियाँ सम्पादक जी पधारे हैं उनसे हमार प्रार्थना है कि आज के पंचाइत की खबर ऊ अपने अखबार में छापें। एक बात आउर...।'

चौथी राम इतना ही कह पाए थे कि बुधनी चीखती पुकारती–'भैया गे, भैया गे' दोहराती बदहवास-सी महुअरिया में दाखिल हुई। वह सम्पादक जी के पास खड़े मगरू के पास आती-आती गिर पड़ी। 'का हुआ? का हुआ?' कहता घबराया मगरू बुधनी के पास पहुँच उसे बाँह पकड़ कर उठाने लगा।

'अरे मोरे बप्पाऽऽ... का करीं रे दैया ऽऽ' सदा गम्भीर रहने वाली बुधनी धैर्य खोकर चीख-चीख रोने लगी।

अरे कुछ बताएगी? बताऽऽ' कहता मगरू अनिष्ट की आशंका से स्वयं रो पड़ा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बुधनी को रोती देखकर ही मगरू को अनिष्ट की आशंका पर पूरा विश्वास हो गया था किन्तु मन के कोने में छिपी आशा की एक किरन उससे 'कुछ बताएगी?' पुछवा रही थी।

बप्पा कुछ बोलता नाहीं है। कल्लू बो भौजी, आउर छोटई बो दादी ओनके भूइयाँ सुताये हैं। हाय मोरे बप्पाऽऽ' कहकर बुधनी फिर से चीखने लगी।

बुधनी के आस पास सारी भीड़ जुट गई। चौथी राम भीड़ को चीरते एकदम मगरू के पास आए और उसके कन्धे को झकझोर कर बोले–'मरद का बच्चा हो के का मेहररुओं की तरह रो रहे हो? चलो हम देखते हैं अगर रामधनक भाई को कुछ हो गया तो ठीक नहीं होगा।'

मगरू में एक चेतना आई। वह तुरन्त अपने घर की ओर चल पड़ा। बुधनी रोती बिलखती आगे-आगे भागने लगी। पूरी भीड़ इस आकस्मिक दुर्घटना से हतप्रभ मगरू के दरवाजे पर पहुँची।

मगरू जब अपने दरवाजे पर पहुँचा तो देखा कि रामधनक को एक मैली चादर से ढंक कर गाँव की औरतें उत्तर दक्षिण लिटा कर मुँह पर आंचल दिए सिसक रही हैं। मगरू अपने पिता की लाश पर गिर पड़ा। बुधनी रामधनक के पाँवों से लिपट कर रोने लगी–'अरे मोरे बप्पा, अब के हम्मै दुलराई मोरे बप्पाऽ।'

रुदन भी संक्रामक होता है। मगरू और बुधनी को रोता देख सारी भीड़ रोने लगी। छोटई महराज का अपना दिली साथी चला गया था, वह भोंकार मार कर रोने लगे।

बंशी और सम्पादक जी ने पकड़कर मगरू को रामधनक की लाश से अलग किया। गाँव की औरतों ने बुधनी को पकड़ा लेकिन वह छइलाकर उनके हाथों से छूट-छूट बार-बार अपने बप्पा के पाँवों पर जा गिरती। किसी प्रकार भी वह अपने बप्पा से अलग नहीं हो पा रही थी। अन्त में थक कर बुधनी को पकड़ने वाली महिलाएँ बुधनी को उसके बप्पा के पाँव के पास ही पकड़कर बैठ गई।

गाँव वालों ने जल्दी जल्दी बाँस की टिकठी पर रामधनक की लाश को रखा और श्माशान की ओर चल पड़े, तभी चौथी राम ने आगे बढ़कर कहा– 'पहिले मशान पर लाश नहीं जाएगी।'

लाश ले जाने वाले चौथी राम की बात सुनकर ठिठक गए। सम्पादक जी ने भी रूमाल से आँखें पोंछ कर चौथी राम की ओर देखा।

'ई लाश पूरे जवार में घुमाई जाएगी। तब सब के मालूम होगा कि आदिवासी बनवासी पर केतना जुलुम किया जा रहा है।' चौथी राम की बात सुनकर टिकठी ढोने वाले एक दूसरे का मुँह देखने लगे। पूरी भीड़ असमंजस की स्थिति में खड़ी हो गई, लेकिन सदा मस्त रहने वाले सम्पादक जी का चेहरा क्रोध

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

से लाल हो गया। वह दौड़कर टिकठी का रास्ता रोक कर खड़े चौथी राम के पास पहुँचे और उसकी बाँह पकड़ कर चीख कर–'हट' कहते उसे दूर ढकेल दिया। इस पर भी उनका क्रोध शान्त नहीं हुआ तो वह चिल्लाकर बोले–'नीच...नेतागिरी करनी है तो जिन्दो की नेतागिरी कर। तू जिन्दों को बहकाने के लिए, लाश का इस्तेमाल करेगा...गिद्ध कहीं का? जिन्दा नहीं छोड़ूँगा, अगर इस तरह की हरकत की तो। अगर तेरे में इन्सानियत और हिम्मत हो तो यह बूढ़ा बहादुर, लाश क्यों हो गया? इस कारण की नेतागिरी कर। गाँवो को दिल्ली बनाना चाहता है?' कहते-कहते सम्पादक जी क्रोध से काँपने लगे।

सारी भीड़ स्तब्ध होकर सम्पादक जी को देखने लगी। बंशी को सम्पादक जी द्वारा दिखाए गए उनके बदन पर गोलियों के निशान याद आ गए। उसने लपक कर उनके कन्धे पर अपना हाथ रख दिया सम्पादक जी ने मुड़कर बंशी की ओर देखा और सचेत हो गए। उनके चेहरे पर शान्ति छा गई।

'बुरा न मानना चौथी भाई, नाटक में बहुत काम कर चुका हूँ। उसी नाटक का एक डायलाग याद आ गया, वही बोल गया। अच्छा लगा?' कहकर सम्पादक जी मुस्कुराए।

अब सम्पादक जी चाहे जो कहें चौथी की हिम्मत टूट चुकी थी। उसने सिर झुक़ाकर धीरे से कहा–'आप ठीक कहते हैं। लाश मसान जाएगी।'

मसान पर मगरू ने मुखाग्नि दी तो चिता भभक कर जल उठी। भीड़ में खड़े छोटई महराज अकस्मात दौड़कर चिता के पास पहुँचकर ठठाकर हँसने लगे, फिर 'कवनो ठगवा नगरिया लुटलै हो राम' गा कर नाचने लगे। लोग उन्हें किसी तरह धर-पकड़ कर घर ले आए। गाँव में श्मशानी शान्ति छा गई। लोग यही चर्चा करते रहे कि काल का भी अजीब खेल है। कैसे झपट्टा मारता है? क़ल बीमारी से ठीक होकर आज रामधनक चटपट मर गए। एक बूढ़ा मर्द चला गया।

❑

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

२०. छोटई महराज

सावन का महीना जाने वाला है। अच्छी बरसात हो जाने के कारण फसल की साँवली सुन्दर तन्दुरुस्त कन्या अठखेलियाँ कर रही है। मक्का का पौधा अपनी कमर पर दो-दो, तीन-तीन सुआपाँखी बालों को सम्हाले पुरुवा हवा से लचक-लचक उठता है। खेत के मचानों पर खेत मालिक वन्य पशुओं से फसल की सुरक्षा के लिए सारी रात तीर-धनुष तथा गुलेल लिए हो-हाऽ... करता जागता रहता है।

'सुकवा निकल आया भोर हो गई। पखवारे भर रतजगा करते हो गए। अब तो फसल तैयार हो जाएगी। किसी की दो दिन पहले किसी की दो दिन बाद' मगरू अपने खेत के मचान पर बैठा सोच रहा था। उसे अपने बप्पा की बड़ी याद आ रही थी–'उसकी सगाई बप्पा सिल्थम पटना में..., धत् उस दो बच्चों वाले अधेड़ दुआह से...कितना बदसूरत है?' मगरू के सामने बुधनी का खूबसूरत भोला चेहरा आ गया। खेत में कुछ दूर पर खुरखुराहट हुई। मगरू धनुष पर तीर चढ़ा कर आवाज की दिशा में सजग हो कर देखते हुए चिल्लाया–ऐ हा, ऐ हा।' आवाज सुनकर दो बनैले सूअर अन्धेरे में भागे। मगरू के धनुष से तीर छूटा, सूअर गुरगुरा कर पीछे लौटा, फिर मुड़कर भागा। 'तीर ओछर लगा नाही तो बच्चू भहरा गए होते' धनुष रखते हुए मगरू बुदबुदाया, फिर उसे अपने बप्पा की याद आई। 'वह होते तो उनका निशाना खाली नहीं गया होता। बेचारे हमारी सगाई के लिए बहुत परेशान थे। तब मेरी उमर ही कितनी थी? बारह-तेरह साल का रहा होऊँगा, तब मेरी दुलहिन आई थी। बड़ी खाबसूरत थी। बीड़ी पत्ता तोड़ने के लिए हम लोग ठेकेदार के यहाँ काम करते थे। दो-तीन साल काम किए होंगे कि एक दिन वह झोपड़ी से गायब हो गई। वही ठेकेदार उसे भगा ले गया। पता नहीं कहाँ होगी? ऊँह हमसे का मतलब चाहे जहाँ हो? ठेकेदार ने कहीं बेच-बाँच दिया होगा। बुधनी की सगाई पहले कर लूँ तब देखा जाएगा।'

मगरू के सोच की धारा जाने कब तक बहती यदि ऊँची पहाड़ी की तलहटी से, जहाँ बाबा का आश्रय बन रहा था, एक अजीब प्रकार की गड़गड़ाहट की आवाज आनी शुरू न हो गई होती। अपने अपने खेतों के मचान पर बैठे किसानों ने भी इस आवाज को सुना। वे समझ नहीं पा रहे थे कि यह कैसी आवाज है?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वे सभी इस आवाज को सुनकर बेचैन हो रहे थे। 'हे भगवान का हो गया इस जंगल को? पता नहीं का-का हो रहा है? अब यहाँ काऽऽ सचमुच सब रहने नहीं देंगे? सभी धड़कते आदिवासी दिलों में एक ही प्रश्न घुमड़ने लगा।

गाँव में जागरण हो गया था लेकिन अभी पौ फटने में देरी थी। तैयार फसलों पर वन्य पशुओं का आक्रमण इस समय कुछ अधिक हो जाता है, इसलिए सभी मचानों पर से हा हू की आवाजें तेज हो गईं किन्तु इन सारी आवाजों को दबाती, बाबा के आश्रम की ओर से आने वाली घरघराहट की आवाज पहाड़ियों से टकरा कर पूरे वातावरण में व्याप्त हो गई।

भोला महराज हाथ में लोटा और कान पर जनेऊ चढ़ाए मगरू के मचान के पास पहुँचे। शायद वह जंगल से नित्य क्रिया से निवृत्त होकर लौटे थे। उन्हें मचान पर से मगरू ने पहचान लिया और–'पालागी दद्दा' कहा।

'खुस रहो बचवा, तनी मचान से नीचे आओ' भोला महराज ने सहमे स्वर में कहा।

मगरू मचान से नीचे उतर आया। तब भोला महराज ने कहा–'उधर ऊपर जंगल की ओर से आ रहा हूँ। वहाँ पर तमाम छोलदारी गाड़ी है। बहुत बड़ा-बड़ा मशीन कल पुर्जा आ के गिरा है। लगता है कि बान्ह बनावै वाले आ गए।'

'अधिक रात से घड़घड़, भड़भड़ जाने ओही का हो रहा है क्या?'

'हाँ ओही का हो रहा है।' अब ई राक्षस खड़ी खेती का सत्यानाश करेंगे। का होगा?

भोला महराज के मुँह से–'खड़ी खेती का सत्यानाश करेंगे' सुनकर मगरू के रोंगटे खड़े हो गए। उसने बहुत प्यार भरी बेबस निगाहों से दो माह से रात दिन जाग कर पाली गई अपनी लहराती खड़ी फसल को देखा। उसका कलेजा मुँह को आ लगा। 'का ई सब हम सबको मार ही के मानेंगे दद्दा?' मगरू की हताश निगाहें भोला महराज पर पड़ी।

'जानै भगवान, अब तो कौनो रास्ता दिखाई नहीं पड़ रहा है। दस दिन और रुक जाते तो अधपकी फसल पक जाती।'

'जा के पैर न फटी बिवाई, सो का जानै पीर पराई दद्दा। ई बान्ह बनाने वाले हाकिम का जानेंगे कि किसान अपने फसल के केतना खून पिया के पालते है? बंशी कक्का के यहाँ...।'

'आज तो ऊ खुद आये वाला है' भोला महराज के कहा। उसी समय मक्के के खेत के उस पार कोई खूब जोर से ठठा कर हँसा। फिर बड़े करुण स्वर में गाने लगा–'कउनो ठगवा नगरिया लूटलै हो...।'

'छोटई दद्दा हैं।'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'हाँ वही हैं। एकदम से दिमाग खराब हो गया। लगता है कि अब ठीक नहीं होगा' कहते हुए भोला महराज हँसने की दिशा में चले गए। मक्के के खेत के पार जा कर देखा तो छोटई महराज फटा चीथड़ा पहने आँखें मूंद कर बैठे हुए गा रहे थे। भोला महराज ने छोटई का हाथ धीरे से पकड़ा और पुकारा 'छोटे'। छोटई महराज को और सभी लोग 'छोटई कहकर पुकारते हैं' सिर्फ भोला महराज ही बचपन से अपने छोटे भाई को 'छोटे' पुकारते आ रहे हैं। अलगा गुजारी के बाद आपस में बोल चाल बन्द हो जाने के कारण छोटई महराज को 'छोटे' पुकारने वाला कोई नहीं रह गया था। बहुत दिनों के बाद छोटे सम्बोधन को सुन कर छोटई महराज एकदम से भावविह्वल हो गए। वह 'भैया' कहकर अपने बड़े भाई से उठकर लिपट गये और रोने लगे।

'चलो घर चलो' भोला महराज ने छोटई महराज का हाथ पकड़ते हुए कहा। अपने पागलपन की हालत में बात-बात में जिद करने वाले छोटई महराज चुप-चाप घर की ओर चल पड़े। गाँव में आकर भोला महराज ने कहा–'छोटई तूँ हमारे साथ रहो, चलो दलान में।'

छोटई महराज एक आज्ञाकारी बच्चे की तरह अपने बड़े भाई के पीछे-पीछे जाकर दालान में भोला महराज की चारपाई पर बैठ गए। भोला महराज की पत्नी ने दालान में आकर अपने देवर के सिर पर हाथ फेरते हुए कहा–'का बबुआ, ई का हाल बनाए हो?'

अपनी भाभी के स्नेह भरे स्पर्श को पाकर छोटई महराज की आँखों से आँसू झरने लगे। भोला महराज छोटई महराज को अपने यहाँ रखना चाह रहे हैं, यह सुनकर छोटई महराज की पत्नी आग बबूला हो गई–'हम्मै ना चाही उनकी दया। मूड़ काटै वारै कऽ रक्षा, तब तो अलग कर दिए। कवन-कवन बिपत हम लोग नहीं सहे? आज आए हैं गाँव देश को अपना अपनापा दिखाने। जाओ हरिमोहन अपने बाबू को लिवा आओ' छोटई महराज की पत्नी ने अपने बेटे को आदेश दिया।

हरिमोहन जब दालान में पहुँचा तो देखा कि उसकी बड़ी माँ कटोरे का दूध छोटई महराज को पिला रही है। उसे कुछ कहने का साहस नहीं हुआ तो वह चुप-चाप दालान में एक किनारे खड़ा हो गया। थोड़ी देर में समरथ्थी ने दालान में प्रवेश किया और कहा–'तुम इहाँ कक्का को दूध पिला रही हो, उधर काकी हजारों गाली दे रही है। वह कह रही है कि जो अपने पूत-भतार का मांस खाए वह हमारे आदमी को रखे।'

समरथ्थी की बात सुन कर भोला महराज की पत्नी एकदम से भड़क उठी। उन्होंने अपने दालान के दरवाजे पर पहुँच कर ऊंचे स्वर में कहा–'किरिया धराने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वाली अपने पूत-भतार का मांस खाए। लिवा जाना हो तो लिवा जाय...क्या हम बान्ह कर रखे हैं? कि ओनके देहें से सोना चानी झर रहे हैं?

गुप्तचर की खबर ने अघोषित युद्ध को घोषित युद्ध में बदल दिया। सुबह का छिड़ा यह वाक्‌युद्ध थोड़ा-थोड़ा विराम लेकर शाम तक चलता रहा। अन्त में हार कर भोला महराज ने कहा–'छोटई अपने घर जाओ। ई औरतें जीने नहीं देंगी।' 'ई औरतें' कहने का उनका मतलब उनकी पत्नी नहीं मात्र छोटे की पत्नी से था।

छोटई महराज चुपचाप सिर झुकाए अपने दरवाजे पर आकर बैठ गए। भोला महराज के मन में छोटई के बालपन की जो निश्छल छवि उभरी थी, उसे इस झगड़े ने समाप्त कर दिया। वे फिर छोटे की पत्नी की इर्ष्याग्नि में जलने लगे।

□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

२१. षड्यन्त्र

रामधनक की मृत्यु के बाद जब सम्पादक जी पिपरी आए तो उन्हें ज्ञात हुआ कि बाँध का कार्य शीघ्र ही प्रारम्भ होने वाला है। उन्हें अनुमान था कि यह कार्य कुआर-कार्तिक तक प्रारम्भ हो जाएगा। कार्य प्रारम्भ करने के समय के चुनाव पर उन्हें अधिकारियों की बुद्धि पर तरस आया। कृषिप्रधान देश के ये शहरप्रधान अधिकारी कितने बुद्धिहीन हैं कि उन्हें यह भी समझ नहीं कि उनके चुने समय पर किसानों की खड़ी फसल जमीन पर मिलेगी। सोच कर उनका मन बेचैन हो उठा। उन्होंने इस विषय पर चौबे से बात की और ठीक समय पर स्टे आर्डर लाने की तैयारी करवा कर वे चुपचाप अपना काम करने लगे। उसी तैयारी का यह नतीजा था कि जब बाँध बनाने के लिए कार्यदल भलुआ पहुँचा तो हाईकोर्ट का स्थगन आदेश जिलाधीश मिर्जापुर के यहाँ पहुँच गया। उधर सहगल को पता लगा कि कल जिलाधीश महोदय के साथ सरकार और एस० पी० साहब पिपरी आ रहे हैं तो उन्हें बड़ी सान्त्वना मिली। सहगल कुर्सी पर बैठे सरकार के आगमन पर तैयारी की योजना बना रहे थे कि उसी समय 'नमस्कार साहब' बुरा न मानिएगा, अब तो बाँध का कार्य शुरु हो गया' कहते सम्पादक जी ने कमरे में प्रवेश किया।

पास में पड़े सोफे की ओर इशारा करते हुए सहगल ने कहा 'बैठिए बैठिए, कहाँ शुरू होने पा रहा है? अभी पता चला है कि भलुआ वाले स्टे आर्डर ले आए हैं।'

'बुरा न मानिएगा, यह बात तो मैं आप ही के मुँह से सुन रहा हूँ।'

'पता नहीं इन जाहिलों को कौन भड़का रहा है?' सहगल ने बुरा-सा मुँह बनाते हुए कहा।

'चौथी राम जी, बुरा न मानिएगा, उनके नेता हैं और आप के खास आदमी हैं। उनसे पूछिए शायद वह बता सकें।'

'चौथी राम तो यह काम कर नहीं सकता। अगर उसे पता होता तो वह इस काम को होने भी न देता क्योंकि उसे लेबर सप्लाई में चार पैसे मिलेंगे। अभी कल ही तो लेबर कमीशन कुछ अधिक करने के लिए बड़ी आरजू-मिन्नत कर रहा था।'

'तब दूसरा कौन इसे कर रहा है?'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'मुझे चौबे पर शक है। अभी सीमेन्ट-छड़ की चोरी वाले मामले में मेरे लिए गैरजमानती वारन्ट लाने के चक्कर में दौड़ रहा है। उसने बंशी को भी बरगला दिया है।'

'अरे नहीं साहब, बुरा न मानिएगा, मुझे तो आपकी बात समझ में नहीं आ रही है।'

'मैं शक की बात कर रहा हूँ। खैर छोड़िए देखा जाएगा। कल जिलाधीश के साथ एस० पी० साहब और सरकार भी आ रहे हैं, कोई न कोई रास्ता निकाला ही जाएगा। बताइए आप का क्या हाल है?'

'बुरा न मानिएगा, सब ठीक है।'

'मैं पिछले महीने सरकार के नए मठ पर गया था। मुख्यमन्त्री ने उसका उद्घाटन किया। बहुत अच्छा समारोह हुआ था। सरकार आप को पूछ रहे थे।'

सरकार की दया-दृष्टि हम पर बनी रहती है। बुरा न मानिएगा, वे बड़े दयालु हैं।

'आप के लिए चाय मगवाऊँ?'

'नहीं, अब मैं चलूँगा, बस आप के दर्शन करने चला आया था। बुरा न मानिएगा, कहते नहीं बन रहा है लेकिन...सौ रुपए हों तो दे दीजिए। क्या करूँ? अभी तक कवि सम्मेलन में लगे शामियाने वाले का पैसा नहीं दिया जा सका। आते-जाते सलाम करता है। अब कभी कवि सम्मेलन नहीं कराऊँगा। कवि सम्मेलन कराने के पहले कवि सम्मेलन कराने के नाम पर और हो जाने के बाद कवि सम्मेलन में हो गए कर्ज के नाम पर सम्पादक जी की गाहे-बगाहे वसूली चलती ही रहती थी। इस प्रकार की वसूली वह किसी जरूरत मन्द की सहायता के लिए ही करते। आज वह इस पैसे को छोटई महराज के यहाँ भेजने के लिए ले रहे थे।

सहगल ने सम्पादक जी को सौ रुपए दिए और पूछा 'कल सरकार आ रहे हैं, आप भी आएँगे न?'

'यह भी कोई पूछने की बात है? साहब बुरा न मानिएगा, वह हमारे गुरु हैं जिन गोविन्द दियो दिखाय' कहते हुए सम्पादक जी उठे और नमस्कार कर के बँगले के बाहर हो गए।

दूसरे दिन सरकार अपने कार्यक्रम के अनुसार एस० पी० साहब के साथ पिपरी पधारे। श्रद्धालु भक्त-समूह ने उनका स्वागत किया। सम्पादक जी ने सरकार के चरणों पर गिर कर यथेष्ट श्रद्धा प्रगट की किन्तु अब सरकार का सिक्का जनपद के सभी प्रमुख अधिकारियों पर जम चुका था। इसलिए जैसे बड़े नोट मिल जाने पर लोग छोटे सिक्कों पर अधिक ध्यान नहीं देते, उसी प्रकार सरकार ने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सम्पादक जी पर अधिक ध्यान नहीं दिया। सम्पादक जी को सरकार के इस व्यवहार पर कोई आश्चर्य अथवा दुःख नहीं हुआ। वे जबरदस्ती सहगल के बंगले में रात तक सरकार के आगे-पीछे लगे रहे। सरकार सम्पादक जी से अपनी जान छुड़ाना चाह रहे थे, इसलिए उन्होंने सम्पादक जी को एकान्त कमरे में बुला कर उन्हें शराब पिलाई और उनके सिर को बड़े प्रेम से सहलाते हुए कहा–'सिद्धनाथ, कोई कष्ट हो तो कहो।'

'आप के रहते कौन-सा कष्ट हो सकता है सरकार? 'अब तो हम इस अखबार-सखबार का काम छोड़कर फिर से आप के ही चरणों में रहना चाहते हैं। यही सोच कर इस बार आए हैं।' सरकार सम्पादक जी से संशंकित थे। इसलिए उनके निर्णय को सुनकर मन ही मन घबरा उठे। उन्हें यह पता था कि यह आदमी अन्धभक्त नहीं बल्कि खोजी प्रवृत्ति का है। ऐसे आदमी को ऐसे समय पर साथ रखना खतरे से खाली नहीं है, जबकि एस० पी० और डी० एम० से षड्यन्त्रकारी गुप्त योजनाएँ करनी हैं। सरकार कुछ देर तक सोचते रहे फिर उन्होंने शराब से लाल हो चुकी अपनी बड़ी-बड़ी आँखों में अति स्नेह भरकर कहा–'बेटा सिद्धनाथ! बस तुम्हारी यही कमजोरी है कि किसी भी काम को तुम पूरा नहीं कर पाते, बीच में ही छोड़कर भागने लगते हो। हमारे यहाँ से तुम अधूरी सिद्धि छोड़कर भागे अब अख़बार को भी अधूरे में ही छोड़कर भागना चाहते हो। क्यों अखबार छोड़कर भाग रहे हो? हमें बताओ।'

'क्या बताएँ सरकार? यह अखबार का काम पैसे वालों का काम है या ऊँची पहुँचवालों का। न हमारे पास पैसा है न ऊँची पहुँच। अगर ऊँची पहुँच होती तो सरकार विज्ञापन इतना मिल जाता कि अखबार आराम से निकल जाता। कब तक हम भीख माँगकर अखबार निकाल पाएँगे? इस सप्ताह का अखबार पैसे के अभाव में नहीं निकाल पा रहा हूँ।' कहते-कहते सम्पादक जी रुआँसे हो गए।

'बस इतनी-सी बात से घबरा गए? मैं मन्त्री से कहकर सरकारी विज्ञापन का प्रबन्ध करा दूँगा। जिले स्तर के विज्ञापन के लिए डी० एम० से कह दे रहा हूँ। वह हमारी झोली उठाओ तो।' सरकार ने सामने खूँटी पर टँगी झोली की ओर इशारा करते हुए कहा।

सम्पादक जी ने झोली उतार कर सरकार को पकड़ा दिया। सरकार ने झोली से पाँच सौ रुपए निकाल कर 'यह लो' कह कर सम्पादक जी की ओर बढ़ाया।

'अरे नहीं सरकार, बुरा न मानिएगा, यह क्या कर रहे हैं?' सम्पादक जी के चेहरे पर परेशानी के भाव उभर आए जो बनावटी थे।

'इसे ले जाकर अपना अखबार निकालो। मैं विज्ञापन की भी व्यवस्था करा दूँगा घबराओ मत। बस यह ध्यान रखना कि मैं तुम्हारा गुरु हूँ' कहकर सरकार

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के चेहरे पर कुटिल मुस्कान आई और क्षण भर में तिरोहित हो गई।

'आप तो हमारे गुरु हई हैं, यह तो मैं सबसे कहता हूँ।'

'हाँ कहते तो हो लेकिन कभी-कभी गड़बड़ा जाते हो। तुम्हारे जैसे लोगों की हमें जरूरत है लेकिन...। खैर यह लो पाँच सौ रुपए, कहकर सरकार ने बलात सम्पादक जी के हाथ में रुपए पकड़ा दिये।

सम्पादक जी ने रुपए ले लिए तब सरकार ने कहा–'यदि तुम अपने मन की भटकन को छोड़कर हृदय से मेरे साथ आ जाते तो बहुत सुखी रहते।'

'सरकार मैं हृदय से आप को गुरु मानता हूँ। हमारे बताने से क्या फायदा? आप तो सब जानते हैं।'

'हाँ बेटे मैं सब जानता हूँ, इसीलिए कह रहा हूँ कि अब जाओ और अपने अखबार की तैयारी करो। यहाँ पर बैठ कर समय बर्बाद करने से क्या फायदा?'

सम्पादक जी समझ गए कि यह सरकार नामधारी धूर्त उन्हें वहाँ से हटाना चाह रहा है। इसलिए वह उसके चरणों पर माथा टेक कर बँगले के बाहर आ गए। बाहर आकर उन्होंने देखा कि ठेकेदार अतिबल सिंह सहगल साहब के कान से मुंह सटा कुछ कह रहा था। सहगल बड़ी गम्भीरता से उसकी बातें सुन कर कभी-कभी अपना सिर हिला रहे थे।

'तुम निश्चिन्त रहो, आज सब ठीक हो जाएगा' सहगल को कहते सम्पादक जी ने सुना। उसी समय सम्पादक जी ने कहा–'साहब नमस्कार। बुरा न मानिएगा, मैं चल रहा हूँ। वैसे डी० एम० साहब को अब तक आ जाना चाहिए था।'

'खबर लगी है कि डी० एम० और एस० पी० दोनों डाक बँगले पर आ गए हैं। यही खबर सरकार को देने जा रहा था कि अतिबल सिंह आ गए और...।'

'अतिबल बाबू तो, बुरा न मानिएगा, रोज ही मिलते हैं। सरकार को खबर कर दीजिए। मैं भी रुकता लेकिन सरकार का दर्शन हो गया बस, अब किसी से क्या मिलना? वैसे बुरा न मानिएगा, मुझे एक जरूरी काम भी है। अच्छा नमस्कार' कहते हुए सम्पादक जी बँगले के बाहर हो गए।

सहगल ने सरकार को डी० एम० और एस० पी० के आने की सूचना दी। सरकार सहगल के साथ उन्हीं की गाड़ी से डाक बँगले पर चल दिए। डी० एम० तथा एस० पी० से चरणस्पर्श लेने के पश्चात् सरकार प्रसन्न मुद्रा में, जबतक अन्य लोगों की भीड़ रही, वार्ता करते रहे। शाम ढलते सरकार ने कहा 'अब तो शाम हो गई, मैं चलूँ, मेरे ध्यान का समय हो गया है।'

'आप यहीं पर बगल वाले कमरे में ध्यान कर लें' डी० एम० बोले।

'इतनी भीड़-भाड़ में' कहकर सरकार ने एकत्रित लोगों पर नजर डाली।

एस० पी० तथा डी० एम० ने सरकार का मन्तव्य समझ लिया। वहाँ पर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एकत्रित लोगों से जाने के लिए कहा गया और अर्दली से कहा गया कि दरोगा से कह दो कि दो पुलिस वालों को गेट पर लगा दें, कोई भीतर न आने पाए।' आदेश का तत्काल पालन हुआ।

एकान्त होने के पश्चात् सरकार ने अतिगम्भीर स्वर में कहा—'तुम लोग सांसारिक बाधाओं को कैसे दूर कर सकते हो इसे मुझसे अच्छी प्रकार जानते हो और दूर करने में सक्षम भी हो। यहाँ पर तुम तीन गुरु भाई बैठे हो (डी० एम०, एस० पी० तथा अधिशासी अभियन्ता), एक दूसरे का हित देखना तुम्हारा कर्तव्य है और मेरा आदेश तथा आशीर्वाद भी है। तुम लोग निर्भय होकर एक दूसरे का सहयोग करो ताकि राष्ट्रीय उन्नति में रुकावट न आए, शेष माँ देख लेंगी। अब मैं ध्यान करने जा रहा हूँ।' कहकर सरकार बगल में कमरे में चले गए।

सरकार के चले जाने के पश्चात् देर रात तक एस० पी०, डी० एम० एवं सहगल में मन्त्रणा होती रही। मन्त्रणा के बाद यह निश्चय किया गया कि अब भलुआ में मठ का कार्य सम्पन्न हो चुका है, इसलिए चौबे से निपटने के लिए राय दरोगा को पिपरी बुला लिया जाय और रिहन्द जलाशय के निर्माण के लिए तथाकथित ग्रामीणों द्वारा जो हाईकोर्ट का स्थगन आदेश आ गया है, उसे डी० एम० ने बीस दिनों तक अपने यहाँ ही रोके रहने का आश्वासन दिया। इसी बीस दिन के अन्दर पुलिस बल द्वारा बन्धे के दायरे में आने वाले सारे गाँवों को खाली करा देने का कार्यक्रम बना। ये सारे कार्य प्रत्यक्ष रूप में राष्ट्रहित में होने वाले थे। इसलिए अधिकारियों को बड़े नेताओं द्वारा व्यवधान उत्पन्न किए जाने का कोई भय नहीं था। राष्ट्रीय हित के लबादे में छिपे ऐसे ही चतुर अराष्ट्रीय मस्तिष्क, जन-साधारण का अपने हित में शोषण करके प्रशस्ति भी पा लेते हैं।

राष्ट्रीय हित के पोषक दोनों अधिकारी सारी व्यवस्था करके रात में ही सरकार के साथ मिर्जापुर चले गये। उनके जाने के पश्चात् डाक बँगले के बरामदे में बैठे अतिबल सिंह ने कमरे में प्रवेश किया जहाँ सहगल साहब प्रसन्न मुद्रा में बैठे हुए थे। उन्होंने खड़े होकर अतिबल सिंह के कन्धे पर हाथ मार कर–'सब ठीक हो गया, मजा करो।' उन्होंने टेबल के ऊपर रखे गिलास में अंग्रेजी शराब भर कर अतिबल की ओर देखते हुए कहा–'लो सरकार का प्रसाद भी ले लो।'

राय दरोगा की तैनाती पिपरी में हो गई। उसकी तैनाती के दूसरे दिन जब बंशी अपने क्वार्टर पर पहुँचा तो आँगन में सूखने के लिए डाला गया उसका कुर्ता-पायजामा गायब था। उसने सोचा कि शायद चौबे जी उसका कुर्ता-पायजामा पहन कर कहीं गए होंगे। शाम को जब वह चौबे के क्वार्टर पर खाना बनाने खाने पहुँचा तो चौबे के बदन पर अपना कपड़ा न देख कर उसने चौबे से अपने कपड़ों के खो जाने की बात बताई।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'अब तक तो यहाँ इस प्रकार की छोटी चोरियाँ नहीं होती थीं। और कुछ तो नहीं गया?'

'और था ही क्या जो जाता?'

'जो हुआ सो हुआ, अब जाकर घर से बाल-बच्चों को ले आओ। सुबह शाम चूल्हा फूंकने से जान बचे।'

'सोच रहा हूँ कि कल शाम को गाँव जाकर अपना परिवार ले जाऊँ।'

'नमस्कार मित्रों, बुरा न मानना आज मैं भी यही खाऊँगा' कहते हुए सम्पादक जी ने कमरे में प्रवेश किया और अपने कन्धे के झोले को पास पड़ी चारपाई पर रख बैठ गए।

'आइए आइए जरूर खाइए' चौबे जी ने हर्षित होते हुए कहा।

'सहगल तो आप के ऊपर बहुत बौखलाया है। बुरा न मानना बाबा, एस० पी०, डी० एम० और सहगल की मीटिंग हुई है। कुछ न कुछ गुल जरूर खिलेगा, होशियार!'

'छोड़िए सम्पादक जी, जो होगा देखा जाएगा।'

'नहीं चौबे जी, जब हो जाएगा तब नहीं देख पाएँगें। इस समय स्वार्थ में अन्धे धर्मान्ध अधिकारियों के हाथ में रेणुसागर निर्माण के राष्ट्रहित का जो हथियार मिला है वह अचूक है। उससे वे कुछ भी कर सकते हैं। उनके सारे अपराध राष्ट्रहीत में क्षम्य हो जाएँगें। इस समय अपराधियों का समूह ठेकेदारों के रूप में सहगल के आगे-पीछे लगा है। जिस दिन सहगल अपने को सुरक्षित समझ लेगा वह इन अपराधियों का प्रयोग आप के खिलाफ कभी भी कर सकता है। मैं समझता हूँ कि आज की मीटिंग से वह अपने को सुरक्षित समझ चुका होगा।'

सम्पादक जी द्वारा स्थिति के विश्लेषण से चौबे के मन में पहली बार भय का संचार हुआ। जब न्याय और सुरक्षा ही षड्यन्त्र में शामिल हो जाय तो सत्य मर कर ही अमर हो सकता है।

देर रात तक तीनों मित्र वार्ता करते रहे। किसी ने कुर्ता-पायजामा खोने की बात सम्पादक जी से नहीं बताई। खाना खा कर सम्पादक जी अपने कार्यालय चले गए।

निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार जब बंशी अपना परिवार लेकर अपने क्वार्टर पर पहुँचा तो देखा कि चौबे के क्वार्टर के सामने भीड़ लगी हुई है। बंशी पत्नी को अपने क्वार्टर पर भेज कर चौबे के क्वार्टर पर गया। वहाँ उसे पता लगा कि रात में किसी ने क्वार्टर के भीतर घुस कर चौबे की हत्या कर दी है। बंशी हड़बड़ाया हुआ क्वार्टर के भीतर गया तो देखा कि दरोगा राय चौबे की लाश को सील करवा कर दो गवाहों के सामने वहाँ पर पाई गई एक शराब की टूटी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बोतल, दो कुल्हड तथा खाने से बची कुछ नमकीन की फेहरिस्त बनवा रहा था। चौबे और बंशी के क्वार्टर के बीच जो दीवार थी उस पर खून के धब्बे कुछ इस प्रकार बने थे कि जैसे हत्या करने के बाद हत्यारा इसी दीवार को फाँदकर भागा हो।

क्वार्टर के बाहर कर्मचारियों की भीड़ बढ़ती ही जा रही थी। लोग अपने जुझारू और ईमानदार नेता की हत्या से दुःखी थे। चौबे के साथ रहने वाले कर्मचारी हत्या के कारण को स्पष्ट समझ रहे थे। इसके पहले भी एक स्टोर का चौकीदार, जो सहगल की चोरी में शामिल नहीं हो पाया था, अपने घर में जला हुआ पाया गया था। उसे पुलिस ने व्यभिचारिणी पत्नी के कारण आत्महत्या बताया था। भय के कारण सब कुछ जानने वालों के मुँह पर ताले लगे हुए थे। कुछ लोग फुसफुसा रहे थे 'बनता था बड़ा चरित्रवान, छिप कर शराब पीता था।'

'अरे यार सभी नेता ऐसे ही होते हैं। नेता होकर कोई देवदूत बन जाएगा क्या?' भीड़ में जितने मुँह उतनी बातें हो रही थी।

तीसरे दिन पुलिस ने बंशी के क्वार्टर के पीछे कूड़े के ढेर में छिपाया गया खून से सना कुर्ता-पायजामा बरामद किया। मुखबिर की निशानदेही पर बंशी को हथकड़ी लग गई। सहगल ने कानूनी कार्यवाही के तहत बंशी को तुरन्त सस्पेन्ड कर दिया और चैन की साँस ली।

दूसरे दिन समाचार निकला 'जुझारु नेता चौबे का हत्यारा गिरफ्तार' इस सुर्खी के नीचे दरोगा राय की बड़ी प्रशंसा की गई थी कि उन्होंने अपनी सूझबूझ से हत्यारे को बहुत जल्द गिरफ्तार कर लिया। हत्या का कारण हत्यारे की पत्नी से मारे गये व्यक्ति का प्रेम-प्रपंच बताया गया था।

इस आकस्मिक विपत्ति से बंशी की पत्नी अर्धविक्षिप्त सी हो गई। वह पड़ोसियों की गोड़धरिया कर रही थी कि कोई उनके साहब से जा कर कह दे तो वह उन्हें छुड़ा लेंगे। आपसी चर्चाओं से इस षड्यन्त्र में सहगल साहब के होने का सब को पता लग गया था। इसलिए लोग आश्वासन तो दे देते पर गया कोई नहीं।

बंशी की पत्नी दोपहर होने तक अपने को नहीं रोक पाई। वह सीधे सहगल के कार्यालय पर पहुँची और सहगल के पैरों पर जा कर गिर पड़ी। सहगल साहब ने चौंक कर उसकी ओर देखा और पूछा–'तुम कौन हो?'

'ऊ कतल नहीं किये हैं सरकार, ऊ कतल नहीं किये हैं।' कहकर बंशी की पत्नी घूँघट के नीचे से घिघिया कर रोने लगी।

सहगल के कमरे के बाहर बैठने वाले चपरासी को सुर्ती की तलब लगी थी। वह उसकी खोज में बगल में ही चला गया था। एक दूसरे चपरासी को सुर्ती बनाते देख जैसे ही उसने सुर्ती माँगी उसे सहगल के कमरे से 'तुम कौन हो' सुनाई पड़ा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उसने जल्दी से अधबनी सुर्ती लेकर अपने होठों में दबाया और दौड़कर सीधे सहगल के कमरे में घुसकर बंशी की पत्नी की बाँह पकड़कर 'इतना मना किया पर नहीं मानी, चल बाहर' कहता हुआ उसे घसीटने लगा। सहगल ने चपरासी को मना किया और बोले 'देखो, मैं भी जानता हूँ कि बंशी ने कत्ल नहीं किया है लेकिन कानून के हाथ में फँस गया है। तुम घबराओ मत, जो हो सकेगा मैं मदद करूँगा। इस महीने उसने तेरह दिन काम किया है। वह पैसा दिलवा देता हूँ, अपना काम चलाओ। चपरासी के साथ चली जाओ, वह बड़े बाबू से तुम्हें पैसे दिलवा देगा।'

बंशी की पत्नी चपरासी के साथ बड़े बाबू की ओर चल पड़ी। रास्ते में चपरासी ने बहुत डरते-डरते कहा–'देखो तुम मेरी बहन की तरह हो बंशी भैया को हम बहुत मानते हैं इसलिए बताए दे रहे हैं कि सहगल के यहाँ फिर कभी अकेले मत आना। ई कभी मदद नहीं करेगा।' चपरासी की बातें सुनकर बंशी की पत्नी अवाक् रह गई। महिला सुलभ ज्ञान के कारण वह अकेले न जाने के तात्पर्य को भलीभाँति समझ गई।

सहगल के आदेश पर बाबू ने बंशी की पत्नी से एक रसीद लेकर तेरह दिन का पैसा दे दिया। पैसा लेकर वह रोती बिलखती जब अपने क्वार्टर पर आई तो देखा कि सम्पादक जी एक बूढ़ी औरत के साथ उसके क्वार्टर के सामने खड़े हैं। सम्पादक जी को पहचान कर बंशी की पत्नी विलाप करके रोने लगी। सम्पादक जी के साथ आई बूढ़ी औरत ने आगे बढ़ कर उसे सम्भाला और समझा बुझा कर क्वार्टर के अन्दर ले गई।

सम्पादक जी भी क्वार्टर के आँगन में आ खड़े हुए और बोले–'जो हो गया वह रोने से नहीं दूर होगा। साहस से काम लो। मैं हवालात में बंशी से मिल कर आ रहा हूँ। उनसे फिर मिलूँगा। उनको कष्ट नहीं होगा। उन्होंने तुम्हारे लिए कहा है कि तुम भलुआ चली जाओ। भलुआ चलने के लिए कल सुबह तैयार रहना, मैं आऊँगा। आज रात यह माँ तुम्हारे पास रहेगी। बंशी ने कत्ल नहीं किया है इसलिए घबराने की कोई बात नहीं है। परेशानी होगी लेकिन छूटेंगे जरूर। बुरा न मानना बूढ़ी माँ तुम्हारे साथ रहेगी। अब मैं चलता हूँ सुबह आऊँगा।' कहकर सम्पादक जी चले गए।

□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

२२. विस्थापन

सुबह पिपरी से चलकर दिन के दो बजे सम्पादक जी बंशी की पत्नी के साथ भलुआ पहुँचे। कुआर की कसैली धूप से वह अधमरे हो गए थे। वहाँ पहुँच कर वे हक्के बक्के रह गए। बीस-पच्चीस घरों की बस्ती का कहीं अता पता नहीं था। ऊँची-नीची जगह बुलडोजरों से समतल की जा रही थी। चारों तरफ पी० ए० सी० की गाड़ियाँ खड़ी थीं। सम्पादक जी ने परेशान हो कर अपनी दृष्टि अगल-बगल दौड़ाई तो उन्हें महुअरिया में खाकी वर्दी और सरकारी कर्मचारियों से अलग मेहनतकश देहातियों की एक हलचल दिखाई पड़ी। वह उसी ओर चल पड़े। बंशी की पत्नी अपनी विपत्ति के निवारण हेतु यहाँ आई थी किन्तु उससे बड़ी विपत्ति यहाँ उपस्थित पाकर संज्ञाशून्य-सी सम्पादक जी के पीछे-पीछे चल पड़ी। सम्पादक जी कन्धे से झोला लटकाए पसीने से तर बतर प्यास से व्याकुल हो रहे थे। वे जब महुअरिया में पहुँचे तो देखा कि एक-एक महुए के नीचे एक-एक परिवार अपनी गृहस्थी के सामानों से छोटा-छोटा घेरा बनाए पड़ा है। ब्राह्मण, चमार, खरवार, धांगर किसी के घेरे में कोई अन्तर नहीं था। बिल में बरसाती पानी चले जाने से जैसे चूहे भींग कर अपने बिलों से बाहर आकर मरे-मरे से चलते हैं, भलुआ वाले अपने घरों से खदेड़े जाकर महुअरिया में वैसे ही चल फिर रहे थे। सभी के आवास और व्यक्तित्व एक जैसे हो गए थे।

आस-पास के खेत बुलडोजरों के नीचे पड़कर कुचल गए थे। शायद दया करके कर्मचारियों ने किसानों की फसलों को काट लेने का अवसर दिया था। क्योंकि महुअरिया में पकी अधपकी फसलों का जगह जगह अम्बार लगा था। यहाँ के किसान भलुआ की भूमि पर अन्तिम फसल काट चुके थे।

सम्पादक जी को सब से पहले बुधनी ने देखा। वह दौड़कर बंशी की पत्नी के पास आई। उसके हाथ का झोला अपने हाथ में लेकर बोली–'चलो काकी, दद्दा बीच वाले महुआ के नीचे टिके हैं। अब तो सब बिलाय गया।'

बंशी की पत्नी राग कढ़ाकर रोने लगी। लोगों ने समझा कि वह इस हालत को देखकर रो रही है। सब उसे समझाने लगे कि यह विपत्ति सबके ऊपर पड़ी है। सबको देखकर सन्तोख करो।' इसी सूत्र ने भारत के बहुसंख्यक दीन-हीनों को

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दारुण दुःखपूर्ण जीवन जीने में रस पैदा किया। इसी सूत्र ने अल्पसंख्यक शोषक अत्याचारी धनाढ्यों के विरुद्ध विद्रोह नहीं होने दिया।

जब लोगों को बंशी की पत्नी के रोने का वास्तविक कारण ज्ञात हुआ तो बंशी के घरवालों में रोना-पीटना मच गया। भलुआ के सम्पूर्ण विस्थापित बस्ती में ऐसा कोई व्यक्ति नहीं था जो दुःखी न हुआ हो। अगर कोई दुःखी नहीं हुआ तो वह थे छोटई महराज। वह एक जगह बैठकर सबका रोना देखकर ठठाकर हँस रहे थे।

'अरे काहे रो रहे हो? ई कुछ नाही रहेगा। तुलसी है धरा को प्रमान। यहां जो फरा सो झरा, जो बरा सो बुताया। ई धरती माई सबको अपने कोरा में समवा लेगी। बचवा भी समाएगा। जौन हमसे रमायन पटकवा दिया, हमारी धरती माई को ले लिया।' हा हा हा...ठठाकर हँसकर फिर गाने लगे–कवनो ठगवा नगरिया...।'

बड़ा करुण दृश्य था। महुअरिया में हर तरफ फैला गरीबी का साम्राज्य, उसके मध्य में चीथड़ों में लिपटे छोटई महराज उस साम्राज्य के सम्राट जैसे बैठे हँस रहे थे।

प्यास से व्याकुल सम्पादक जी ने मगरू से पानी मगा कर पीया और छोटई महराज के पास जाकर पालथी मार जमीन पर 'पा लागी' कहकर बैठ गये।

'खुस रहो, खुस रहो' परम मस्ती में आशीर्वाद दिया छोटई महराज ने।

'हमें आप पहचान रहे हैं?'

छोटई महराज ने सम्पादक जी की ओर कुछ देर तक टकटकी लगाकर देखा फिर बोले' पहचानने की शक्ति होती तो बबवा को न पहचान जाता?'

'मैं सम्पादक जी हूँ, बंशी के साथ आता था।' सम्पादक जी ने याद दिलाने की कोशिश की।

छोटई महराज ने उनकी बातों पर कोई गौर नहीं किया। उन्होंने उनकी ओर से इस प्रकार मुँह फेर लिया जैसे कह रहे हों 'उँह, तुम कोई हो हम से क्या मतलब?'

सम्पादक जी छोटई महराज के परिवार की सहायता के लिए पिपरी से किसी प्रकार तीन सौ रुपए की व्यवस्था कर के चले थे। यहाँ पर विस्थापन के कारण सभी परेशानी में थे। वह कुछ देर तक सोचते रहे फिर उन्होंने वे सारे रुपए छोटई महराज के लड़के हरिमोहन को ही दे दिए। रुपए देकर जैसे ही मुड़े कि बुधनी ने पास आकर कहा 'बंशी भैया के जेहल चले जाने से उनके परिवार में चूल्हा नाही जला है। हमरे इहाँ खयका खाएँगे?'

'क्या बना है?' सम्पादक जी ने मुस्कुरा कर पूछा।

'साँवा का भात है। न हो तो जोन्हरी का लावा भून दें।'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बुधनी के यहाँ साँवा का भात खाकर सम्पादक जी जैसे ही पिपरी चलने को तैयार हुए, उनकी दृष्टि महुआ के पेड़ के नीचे शोर मचाती महिलाओं की भीड़ पर पड़ी। सम्पादक जी ने मगरू से उस भीड़ का कारण पूछा तो मगरू ने बताया कि 'इनरिया को बच्चा हो रहा है। बेचारी बड़ी अभागन है। कल्लू की बिरादरी वाले दरोगा ने बेचारे का धन, धरम दोनो ले लिया। जब तक जमीन पर कब्जा नहीं पाया था, तब तक इनरिया को अपनी व्याहता की तरह रखा था, खरचा भी देता था और कहता था कि हम तुम से कोरट में शादी करेंगे। जब कब्जा पा गया तब खरचा लेने गए इनरिया के बाप को मार कर भगा दिया और कहा कि अगर इधर-उधर हमारी बदनामी करोगे तो जेहल भेजवा देंगे।'

मगरू द्वारा इनरिया की हालत सुनकर सम्पादक जी अत्यधिक दुःखी हुए। वे सोचने लगे कि क्या हो गया है, इस आध्यात्मिक देश के लोगों को? पर द्रव्येषु लोष्ठवत् का सिद्धान्त क्या हुआ? जिस देश में बड़े-बड़े युद्ध भी आध्यात्मिक आधार पर लड़े गए उसके सारे आदर्श कहाँ गए? शोषण का प्रतीक मानी जाने वाली हरिजन जाति का दरोगा के० डी० राम परिस्थितियाँ पा कर शोषक हो गया है। व्यवस्था द्वारा प्रदत्त स्थितियाँ व्यक्ति को शोषक बनाती हैं। जातियाँ नहीं परिस्थितियाँ शोषक होती हैं। व्यवस्था ऐसी हो कि शोषण की स्थिति ही न पैदा हो। यही सब सोचते-सोचते सम्पादक जी बड़े दुःखी मन से पिपरी की ओर चल पड़े।

बंशी को जेल गए छः महीने हो गए। अभी तक उसकी जमानत नहीं हो पाई है। सम्पादक जी एक बार जेल में बंशी से मिल कर गायब हुए तो कुछ पता ही नहीं चला कि वह कहाँ गए? चौथी राम विस्थापित श्रमिकों के कमीशन से लखपतीं बन चला है। आदिवासी जातियाँ जो अपने रहन-सहन में किसी बाहरी हस्तक्षेप को सहन नहीं कर पाती थीं वे अपने आस-पास फैलती बाहरी भीड़ को देखकर बिना भगाए चुप-चाप रात के अन्धकार में अपनी झोपड़ियों को छोड़ और घने जंगलों में चली गईं। उनकी जमीनों पर चौथी राम ने पैसे और होशियारी के बल पर पटवारी से अपना नाम चढ़वा लिया। हर ओर अर्थ-युद्ध छिड़ा हुआ था। अधिकारी, ठेकेदार और होशियार सभी उस भूमि पर अपनी-अपनी सेनाओं के साथ अर्थ-युद्ध में डटे थे। निर्बलों की लाशों से भूमि पाटी जा रही थी जिसको कुचलते हुए विभिन्न वेशधारी अर्थ युद्ध महारथी आगे बढ़ रहे थे।

चौथी राम के लेबर सप्लाई का कार्य इतना अधिक बढ़ गया है कि अकेले यह वह उसे नहीं देख पाते हैं। उनका साला, जिसे अपने दर्जा दस फेल होने का बहुत गर्व है, जीप से सारे कार्यों का संचालन करता है। वह खादी का लकदक वस्त्र पहने मुंशियों के द्वारा कार्य सम्पादित करवाता है। 'बहनोई को चुनाव में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

टिकट मिलेगा तब वह आदिवासियों की समस्याओं के लिए लड़ेंगे' बचपन में कुपोषण से टेढ़े पड़ गए अपने बदन को ऐंठकर वह कहता और पिच्च से सुर्ती की पीक थूक कर मुंशी को फिर सुर्ती बनाने का आदेश देता।

अपनी पीठ पर दुधमुँहें बच्चे को बाँधे सिर पर पत्थरों से भरी टोकरी लिए महिलाएं, अधनंगे मर्द, बच्चे सभी मुंशी से अधिक से अधिक कौड़ी लेने के लिए दौड़-दौड़ कर निर्धारित स्थान पर पत्थरों को फेंक रहे थे। विस्थापन के पश्चात् पेट भरने के लिए कोई अन्य रास्ता नहीं बचा था। मगरू, बुधनी, एक हाथ का अपंग फन्नू अपनी लड़की के साथ काम में जी-जान से लगे थे। छोटई महराज की दुकान उजड़ गई थी जिससे हरिमोहन भी अपने छोटे भाई के साथ टोकरियाँ ढो रहा था।

बुधनी जहाँ पर काम कर रही होती चौथी राम का साला वहाँ खड़े हो कर घंटों डींगें हाँकता रहता 'बहनोई से मैंने बात किया। बात क्या किया समझाया है कि वह सरकार से लड़ के भलुआ वालों का पक्का मकान हुआँ बनवा दें' कह कर वह ऊँची पहाड़ी की ओर उंगली से संकेत करता।

'लेकिन उतने उप्पर तो बरहो मास पानी नीचे उतर कर चुआँड़ से लेना होगा' मुंशी उसकी तरफ बनी सुर्ती बढ़ाते हुए कहता।

'तुम मूरख हो, अरे ई बन्हा काहे बन रहा है? बस इसी में से पाइप लगा कर मशीन से हुआँ तक पानी सपलाई होगा। सपलाई माने समझे? ई अंगरेजी है अंगरेजी।... सप्लाई माने पानी हुआँ चढ़ाया जायेगा' कहकर वह बुधनी की ओर कनखियों से देखता मुंशी के कन्धे पर एक धौल हँसता हुआ जमा देता।

मुंशी की इतनी उम्र यही कार्य करते बीती थी। वह ऐसे लौण्डों के सप्लाई का मतलब खूब समझता था। वह जानता था कि यह क्यों बुधनी के पास खड़े होकर घंटों बक-बक किया करता है। बुधनी भी सारी बातें समझती थी। कभी-कभी तिलमिला कर वह उसकी ओर तिरछी नजरों से देखती तो वह सहम जाता और अपने कपड़ों पर पड़ी धूल को जेब से रूमाल निकाल कर झाड़ने लगता। कभी-कभी उसकी इच्छा होती कि सबकी आँख बचा कर धीरे से दस पाँच रुपए बुधनी को पकड़ा दूँ। किन्तु जब उसकी दृष्टि बुधनी की टोकरी भर रहे लम्बे चौड़े बदन वाले मगरू पर पड़ती तो उसका साहस छूट जाता। वह घूम कर मुंशी से कहता 'चलो दूसरे साइट पर चला जाय।' फिर भी उसका मन नहीं मानता तो वह जाते-जाते कहता जाता 'अगर किसी को रुपया-पैसा का जरूरत हो तो हम से कहेगा।'

पिपरी बाँध में काम लगे दो वर्ष हो गए। इतने दिनों में चौथी राम आकाश की ऊँचाई छूने लगे। एक बड़ी कम्पनी ने उनके लेबरों की विशाल सेना देखकर उन्हें अपनी कम्पनी में चार आने का हिस्सेदार बना लिया। अब चौथी राम का पिपरी में एक कार्यालय खुल गया है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सन् उन्नीस सौ बावन आया और स्वतन्त्र भारत के प्रथम लोकतान्त्रिक चुनाव की घोषणा हुई। भारत की सारी जनता अपने प्रथम मतदान के अवसर को पाकर खुशी से झूम उठी। यहाँ के आदिवासी सुरक्षित सीट से अंजनी के प्रयासों से चौथी राम को काँग्रेस से एम० पी० का टिकट मिला। अंजनी को वाराणसी से टिकट मिला।

क्योंकि महात्मा गाँधी के नेतृत्व में भारत की सारी राजनैतिक पार्टियों ने काँग्रेस के झण्डे के नीचे एकजुट होकर आजादी की लड़ाई लड़ी थी इसलिए जनता गाँधी बाबा और काँग्रेस को ही जानती थी। अन्य सारी पार्टियों से मुँह मोड़ कर जनता ने आँखें मूद कर गाँधी बाबा की काँग्रेस पार्टी के प्रत्याशियों को यह जानकर वोट दिया कि वह गाँधी बाबा को वोट दे रही है। अधिकांश स्थानों पर महिलाओं ने गाँधी बाबा के गीत गाते हुए मत पेटिकाओं पर माला फूल चढ़ाकर पूजन किया। उस समय लोगों को ऐसा लग रहा था कि जैसे गाँधी बाबा के राम-राज्य के लिए उनका पूजन आवश्यक है। इस पूजन-क्रम में कितने ही मतपत्र महिलाओं तथा अशिक्षित पुरुषों द्वारा मत पेटिकाओं के बाहर ही फूल मालाओं के साथ चढ़ाए हुए मिले, जिन्हें बाद में कर्मचारियों ने बटोर कर मत पेटिकाओं में डाला।

काँग्रेस की इस आँधी में चौथी राम और अंजनी को जीतना ही था। इसलिए वे दोनों जीत गए। इस जीत के बाद चौथी राम ने अपने क्षेत्र का दौरा बड़े भव्य ढंग से किया। उन्होंने अपने भाषणों में अपने क्षेत्र के निवासियों की उन्नति के लिए हर सम्भव लड़ाई लड़ने का आश्वासन दिया। रेणुसागर निर्माण से आदिवासियों को भविष्य में मिलने वाले लाभों का ब्यौरेवार वर्णन किया। श्रोताओं को ऐसा लगा जैसे इसके निर्माण के विरोध में लड़ने वाले उन्हें इस मिलने वाले सुख से वंचित करना चाह रहे थे, वे हमारे दुश्मन थे। जब चौथीराम ने ऊँची आवाज में रेणुसागर में गई किसानों की भूमि का सरकार से अधिक से अधिक मुआवजा दिलाने का एलान किया तब सभी श्रोताओं ने एक स्वर से चौथी राम की जै जै कार से आकाश को भर दिया। चौथी राम ने और सारी बातें भले ही अनर्गल की हों किन्तु जमीन के मुआवजे की बात एकदम सत्य थी, क्योंकि पटवारी के खाते में बन्धे में गई सब से अधिक जमीन उन्हीं की थी।

जैसे दाल और चावल का हड़िए के बाहर अपना अलग-अलग अस्तित्व और स्वरूप होता है किन्तु एक साथ उबलते पानी में जब पकते हैं तो करीब-करीब एक जैसे हो कर एक ही स्वाद पैदा करने में दोनों एक दूसरे के सहयोगी हो जाते हैं, वैसे ही असुविधा की धरती से उठ कर संसद में पहुँचे चौथीराम और सुविधा की धरती से पहुँचे अंजनी के चरित्र में एकरूपता आ गई। उन दोनों का

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अपना चरित्र विलीन हो कर दिल्ली चरित्र हो गया। ऐसे चरित्र के लोग अपने सुन्दर वर्तमान को भविष्य के हाथों ज्यों का त्यों सुरक्षित रखने के लिए लाखों लोगों के वर्तमान और भविष्य को शताब्दियों के अन्धकार में झोकने से भी नहीं चूक़ते। इसलिए चौथीराम के लिए यह आवश्यक था कि उनके लिए फायदेमन्द कार्य में लगे विस्थापितों को जल्दी आश्रय न मिले ताकि वे उनके कार्य में लगे रहें।

विस्थापित सोच रहे थे कि चौथीराम उनके बीच के आदमी हैं, उनके दुःख-दर्द से परिचित हैं, इसलिए वे जल्दी फैसला कराने के लिए अपना जी-जान लगा देंगे। सरकार से चौथीराम उन लोगों को जल्दी मुआवजा दिवलाएंगे या कहीं न कहीं उन लोगों को जमीन दिलवाएँगे, इसी आशा में सभी विस्थापित बन्धे के निर्माण कार्य में लगे थे।

मगरू का शरीर अब पहले जैसा नहीं रह गया था। उसके गालों की हड्डियाँ उभर आई थी। अब वह चौड़ी हड्डियों वाला एक जीवित नौजवान रह गया था। बुधनी बहुत उदास आँखों से झउआ ढोते-ढोते पिपरी के रास्ते की ओर देख कर एक उसाँस भरती और फिर काम में लग जाती। छोटई महराज की हालत पहले से भी बदतर हो गई थी। पागलपन की हालत में वे बहक कर कहीं दूर न चले जायँ इसलिए उनके पैरों में बेड़ियाँ डाल दी गई थीं। रात्रि के अन्धकार में जब सारे श्रमिक थक कर अपनी-अपनी चलायमान झोपड़ियों में सो रहे होते तो छोटई महराज अपनी बेड़ियों को झनकारते कभी हँसते कभी गाते हुए टहलते रहते। एक हाथ से अपंग फन्नू जब अपनी बच्ची के साथ काम करके सारे दिन की मजदूरी से अपना और अपनी बच्ची का पेट भर न पाया तो वह रापटगंज की ओर भीख माँगने चला गया।

दरोगा के० डी० राम द्वारा पैदा की गई इनरिया की बच्ची अब एक वर्ष की हो गई थी, जिसे पीठ पर बाँधे इनरिया अपने भविष्य की कठोरता से आँखें मूँदे झउआ ढोती रहती। उसकी पीठ पर बँधी उसकी लड़की इनरिया के चरित्र की चुगली करती-सी टुकुर-टुकुर ताका करती। मनचले मुंशी, मेठ, बेलदार सभी उससे बेझिझक मजाक करते रहते। उसे रुपए पैसे का लालच देते किन्तु अपनी एक भूल को पीठ पर लादे इनरिया उन लोगों को उदास आँखों से देखती आगे बढ़ जाती।

आज सुबह से ही बंशी की पत्नी दुलारी बैठी रो रही थी। उसकी सास और दोनों ननदों ने उसे बहुत समझाया परन्तु जब वह रोती ही रही तो वे तीनों भी रोने लगीं। भोला महराज को पता लगा तो वह आकर समझाने लगे।

'देखो, तुम्हारा सुहाग बचा है, वह आज नहीं तो कल छूटेंगे। इस तरह रोकर असगुन नहीं करना चाहिए' कहते-कहते उनका गला भर आया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'आज उनको सपना में देखे हैं। ऊ बहुत दुबरा गए हैं, हमसे खयका माँग रहे थे' दुलारी ने घूँघट की ओट से हिचकियाँ लेते हुए कहा, फिर रोने लगी।

'अरे नहीं, दुबराएँगे काहे? सम्पादक जी ने जेहल में उनका सब इन्तजाम करा दिया है। हम आँख से देख के आए हैं। उन्हीं के कहने से तो हम जमानत नहीं कराए।'

'मुँह फूँको सम्पादक फम्पादक का। जाके बेटवा का जमानत कराओ। मुँह झउँसा पता नहीं काहे जमानत नहीं कराने दिया' बंशी की माँ ने बिफर कर कहा।

'मेहरारू जात तुम को का मालूम? बाहर बंशी के जान का खतरा है। जइसे चौबे जी गये ओइसै...।'

'तो क्या जिनगी भर उ जेहलै में रहेंगे? सम्पादक जी का साल भर से पता नहीं है कि कहाँ हैं?'

'ऊ जहाँ भी होंगे बंशी पर ख्याल किये होंगे। आदमी नहीं देवता हैं देवता' भोला महराज ने आत्मविश्वास और श्रद्धा से कहा।

इन लोगों की वार्ता कुछ और आगे बढ़ती लेकिन उसी समय दूर पर काम करते मजदूरों में एक कोलाहल उठा। कोई बड़ी जोर से चीख कर कह रहा था 'इस हरामजादी छिनार की इतनी हिम्मत कि हमारे ऊपर थप्पड़ छोड़ दिया।'

भोला महराज अप्रिय प्रसंग से छुटकारा पाने के लिए मजदूरों की एकत्रित भीड़ में लपकते हुए पहुँचे तो देखा कि चौथीराम का साला अपने मुंशी की बाँह पकड़ उसे एक ओर खींच रहा है लेकिन वह चीख कर इनरिया को गाली देता उसकी ओर मारने को लपक रहा है। मगरू इनरिया और मुंशी के बीच में खड़ा दोनों में बीच बचाव कर रहा है। इनरिया अपनी पीठ पर बच्ची को बाँधे दोनों हाथों में पत्थर के टुकड़े लिए तमतमाई एक टक मुंशी को देख रही है।

'बात का है? काऽ बात हौ मगरू?' भोला महराज ने पूछा।

'हम्मै कुछ पता नहीं कक्का। इहै इनरिया और मुंशी में झगड़ा हो गया है।'

'का बात है इनरिया? काहे मुंशी जी से झगड़ा कर रही है?' भोला महराज के इतना पूछते ही इनरिया फफक-फफक कर रोने लगी। रोत-रोते उसने कहा– 'जी हलकान हो गया है कक्का, जी हलकान हो गया। जब से ई मुंशी आया है तब से हमरे पीछे परा है, जब देखो तब खराब-खराब बात, जइसे हम बेसवा (वेश्या) हैं। अपने महतारी-बहिन के लग्गे नहीं जाता मुँह फुकौना' इनरिया की हिचकियाँ बँध गईं।

वैशाख की लहकती दोपहरी, सूरज आकाश से आग उगल रहा था। आर्थिक मार से टूटे मनोबल वाले मजदूर न्याय-अन्याय की चिन्ता किये बिना मुंशी और इनरिया के झगड़े में आनन्द ले रहे थे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'तुम बेसवा नाही तो का सती सावित्री हो? तुम्हारे पीठ पर जो टुकुर-टुकुर ताक रही है, वही बता रही है कि तुम का हो' मुंशी ने हाथ नचा कर कहा।

'हमार मन, एक नाही दस टुकुर-टुकुर तकिहैं। तोर करेजा काहे फाटै रे कुकुरा?' इनरिया के जिस बीभत्स सत्य को मुंशी अचूक हथियार समझ कर उसके ऊपर वार कर रहा था, उसे इनरिया ने स्पष्ट स्वीकार कर मुंशी को निःशस्त्र कर दिया।

'बुरा न मानना, कैसा झगड़ा हो रहा है मगरू?' भीड़ के पीछे से आवाज आई।

मगरू के साथ ही सारी भीड़ ने मुड़कर देखा तो सम्पादक जी कन्धे पर झोला लटकाए, भीड़ में जगह बनाते आगे आते दिखाई पड़े। उनके पीछे तथास्तु त्रिपाठी और बंशी भी थे। मगरू सम्पादक जी और बंशी को देखकर हर्ष से व्याकुल हो, सारे झगड़े को भूलकर उन लोगों की ओर दौड़ पड़ा।

'बंशी कक्का आ गए, बंशी कक्का आ गए' कहती बुधनी भोला महराज की झोपड़ी की ओर भागी। बंशी के आगमन का समाचार सुनकर बंशी की पत्नी दुलारी को छोड़कर पूरा परिवार बंशी के आगमन स्थल की ओर दौड़ पड़ा। मगरू ने आगे बढ़कर बारी-बारी से सम्पादक जी तथा बंशी के पाँव छुए तथा पास में खड़े भोला महराज की ओर इशारा करके कहा 'बंशी कक्का, दद्दा खड़े हैं।'

बंशी ने पलट कर देखा तो उसके पिता किंकर्तव्यविमूढ से अपने स्थान पर खड़े एकटक उसकी ओर देख रहे थे। जब बंशी ने उनका चरणस्पर्श किया तो उनके मन में चेतना आई। वे उसे बाँहों में बाँधकर रोने लगे।

भीड़ की झगड़े से जुड़ी मानसिकता के बंशी के आगमन की खुशी से जुड़ जाने के कारण इनरिया से थप्पड़ खाया मुंशी अकेला पड़ गया। उसे अपने झगड़े को खड़ा करने के लिए वहाँ एक इंच भूमि नहीं मिली तो तावपेंच खाता वहाँ से चला गया।

सम्पादक जी मगरू के कन्धे पर हाथ धरे भोला महराज की झोपड़ी की ओर चल पड़े। रास्ते में मगरू ने झगड़े का कारण बताया तो सम्पादक जी खड़े हो गए और मगरू से पूछा 'इनरिया कहाँ है?'

'वह तो उधरैं रुक गई।'

'बुधनी को भेजकर उसे बुलवा लो' कहकर सम्पादक जी फिर चल पड़े। थोड़ी देर में वे लोग भोला महराज की झोपड़ी पर पहुँचे।

'अरे दुलारी बहू, लो तुम्हारा सपना सही हो गया। बंशी आ गए।' भोला महराज ने हुलस कर कहा।

दुलारी खुले मुँह दौड़कर बाहर आ गई। बंशी की माँ अपने बच्चे का सिर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सहलाते रोने लगी। बंशी की दोनो बहनें उसके पास खुशी से हक्की बक्की हुई कुछ देर खड़ी रहीं फिर दोनों दौड़कर आगन्तुकों के लिए चारपाई बिछाने लगीं। दुलारी को कुछ देर बाद होश आया तो उसने अपना घूँघट खींच लिया।

'रोती ही रहोगी कि कुछ मीठा, पानी लाओगी? देख नहीं रही हो? सब लोग दुपहरिया में एकदम तप गए हैं' भोला महराज ने अपनी रोती पत्नी से कहा।

'बाबू जी, बुरा न मानिएगा, माँ हैं नऽ उसे आँसू निकाल लेने दीजिए।'

उसी समय बड़े करुण स्वर में 'सब ठगवा नगरिया लूटलै हो रामा' गाते अपने पैरों की बेड़ियों को झनकाते छोटई महराज कुछ दूर से आते दिखाई पड़े। साथ में उनके एक हाथ को पकड़े उनका बड़ा बेटा हरिमोहन चला आ रहा था। शायद वह भटक कर कहीं दूर चले गए थे, जिन्हें काम पर से लौटते समय हरिमोहन ढूँढ़कर ला रहा था। उसने अपने कक्का की झोपड़ी के पास जुटी भीड़ की ओर देखा तो बंशी को पहचान गया। उसके पिता फिर न बहक जायँ इसलिए वह छोटई महराज का हाथ पकड़े भीड़ के पास पहुँचा और दौड़कर बंशी के पाँव छुए। बंशी की दृष्टि छोटई महराज पर पड़ी। उसके दिमाग में अपने बचपन में देखे गए छोटई महराज का हृष्टपुष्ट शरीर, हँसमुख चेहरा तथा अपने प्रति उनका प्यार कौंध गया। वह उनके पास पहुँचा तो छोटई महराज ने उसे अपने हाथ से दूर ठेलते हुए कहा 'दूर रहो, दूर। अरे बापरेऽ ई ठगवा फिर भेष बदल कर आया है।'

'नहीं कक्का, हम ठगवा नहीं, हम तुम्हारे बंशी बचवा हैं।'

'हा हा हा बंशी बचवा, बंशी बचवाऽऽ...।' शब्द को छोटई महराज ने कई बार दोहराया। आरोह से प्रारम्भ होकर उनका स्वर क्रमशः अवरोह पर आता गया। अन्तिम बं...शी...ब...च...वा...ऽ...ऽ...ऽ' शब्द करुण स्वर में उभरा और वह रोने लगे।

बंशी की माँ प्रकृतिस्थ होकर अपनी झोपड़ी में चली गई। तीन-चार टूटी फूटी चारपाइयाँ आगन्तुकों के बैठने के लिए झोपड़ी के सामने महुए के पेड़ के नीचे बिछा दी गई थीं। बंशी छोटई महराज को लेकर चारपाई पर बैठा।

भोला महराज के पास अतिथियों को पानी पिलाने के लिए गुड़ नहीं था। बुधनी दौड़कर अपनी झोपड़ी से गुड़ तथा बाल्टी में पानी ले आई। वह जल्दी से जल्दी सम्पादक जी के सामने पहुँचने को उतावली हो रही थी।

सबसे पहले वह गुड़ पानी लेकर बंशी के पास पहुँची, तब बंशी ने पहले तथास्तु जी को पानी पिलाने का इशारा किया।

'बुरा न मानिएगा, यहाँ पर भी तरफदारी हो रही है। पहले हम मेहमानों को पानी पिलाना चाहिए लेकिन जमाने की हवा सबको लग गई है। वह पहले अपने कक्का को पानी पिलायेगी।'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सम्पादक जी की बात सुनकर सब हँसने लगे। बुधनी ने सिर नीचे किए तथास्तु जी को पानी पिलाकर सम्पादक जी की ओर गुड़ पानी बढ़ाया। सम्पादक जी ने हाथ बढ़ाकर पानी का गिलास थामा। इस प्रक्रिया में उनकी उँगलियों का स्पर्श बुधनी के हाथ से हो गया। उसने जल्दी से गिलास पर से अपना हाथ हटाया और मुड़कर इनरिया को बुलाने चली गई।

सभी लोग पानी पीकर आराम करने लगे। दुलारी बार-बार सब की नजर बचा कर झोपड़ी के दरवाजे से बंशी को देखती। बंशी की दृष्टि जब कभी दुलारी की दृष्टि से मिलती तो वह लजा कर अपनी आँखें घुमा लेती। बंशी के साथ बैठे छोटई महराज निर्विकार दृष्टि से सबको देख रहे थे।

थोड़ी देर में इनरिया अपने पिता कल्लू के साथ आकर सम्पादक जी के सामने खड़ी हो गई।

'आओ कल्लू कक्का'–सम्पादक जी ने कल्लू को देखकर कहा।

'लड़की से कसूर हो गया सरकार। हम पंचन से माफी माँग रहे हैं' कल्लू ने हाथ जोड़कर कहा।

'कल्लू कक्का बुरा न मानना, कसूर अब आप से हो रहा है। इनरिया ने कोई कसूर नहीं किया है।'

'तब काहे पंच बुलाए हैं सरकार?' कल्लू ने हक्का-बक्का हो कर कहा।

'इनरिया ने बहादुरी की है। बुरा न मानना, आज उसको पंचायत की ओर से इनाम दिया जाएगा।' कहकर सम्पादक जी ने अपनी जेब से पचास रुपए निकाल कर इनरिया की ओर बढ़ाया। इनरिया असमंजस की स्थिति में खड़ी कभी रुपए की ओर देखती कभी सम्पादक जी के चेहरे की ओर। इनरिया के बगल में खड़ी बुधनी ने अपनी कोहनी से इनरिया को धक्का दिया और फुसफुसाई 'ले लो।'

'बुरा न मानना यह रुपया मैं पंचों की तरफ से अपनी बहन को उसकी बहादुरी पर इनाम दे रहा हूँ।'

इनरिया ने आगे बढ़कर रुपया ले लिया। वहाँ पर खड़े सभी लोग इनरिया द्वारा किए गए साहसिक कार्य की प्रशंसा करने लगे।

'अइसै दू चार मार खा जायँ तब तो मनवै टूट जाय'–हरिमोहन ने कहा।

'पीछे कोई सम्हारने वाला रहे तब तो हमी पटक के मारें' कल्लू ने सीना फुला कर कहा। भय से उपजी सहनशक्ति निर्भयता का सूर्योदय देख उल्लू की भाँति अपने कोटर में दुबकने लगी।

□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

२३. नवसृष्टि

सम्पादक जी ने दूसरे दिन मगरू, बंशी आदि के सहयोग से मजदूरों की एक सभा का आयोजन किया। सम्पादक जी की सदाशयता तथा व्यक्तित्व से अधिकतर लोग परिचित थे। साथ ही साथ इनरिया को मिले इनाम की बात सर्वत्र फैल चुकी थी। इसलिए 'कुछ और नया होने वाला है' की उत्सुकता में अधिक से अधिक लोग दोपहर में काम से खाली हो कर एकत्रित हो गए। प्रताड़ित व्यक्तियों के मुर्झाये अहम् को आत्मसम्मान के जल से सींचने वाला उनके समूह के आकर्षण का केन्द्रबिन्दु बन जाता है। इसलिए मजदूरों को एकत्रित करने में अधिक प्रयास नहीं करना पड़ा। लोगों के एकत्रित हो जाने पर सम्पादक जी ने तथास्तु जी का पूरा परिचय दिया और कहा–आप इनके वेश को देखकर इन्हें साधु बाबा न समझ लें। मैं यह बात इसलिए कह रहा हूँ कि आप यहीं पर एक साधु का घृणित चरित्र देख चुके हैं। हिन्दुओं की अखण्ड आस्था को मूर्ति-भंजकों ने उतना खण्डित नहीं किया जितना विपरीत आचरणधारी मूर्ति-संस्थापकों ने किया है। तथास्तु जी की यह इच्छा है कि ऐसे लोग जो भारतीय समाज में नया जीवन लाने के लिए जाति और पंथविहीन नए समाज की रचना के लिए तैयार हों, उनकी एक अलग बस्ती बसाई जाय।'

सम्पादक जी की बात सम्पूर्ण रूप से सभी समझ नहीं पाए फिर भी भीड़ में एक सुगबुगाहट शुरू हो गई। सभी जाति और पंथ विहीन का अर्थ जानने के लिए एक दूसरे का मुँह देखने लगे। तभी भीड़ में खड़े भोला महराज ने पूछा– 'जात पाँत नहीं रहेगा तो क्या सब को क्रीस्तान बनाएँगे?'

'बुरा न मानिएगा, क्रिस्तान भी एक पंथ है, हम कोई पंथ नहीं बनाएँगे। हम सिर्फ आदमी बनाएँगे।'

'का हम आदमी नहीं हैं?'

'पंडित जी, आप आदमी नहीं जाति हैं, पंथ हैं। आप ही नहीं सारे विश्व में आदमी नहीं रह गए हैं। बुरा न मानिएगा, सभी नस्ल, रंग, जाति और पंथ हो गए हैं। हम ऐसा समाज बनाना चाहते हैं, जो मानव के महान गुणों, सत्य, प्रेम, करुणा आदि से लैस धार्मिक हो।'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'हम को तो बुझाता है कि ई बबवा क्रिस्तानै वाला है। सम्पादक जी इससे मिल गए हैं' एक मजदूर ने अपने बगल वाले से कहा। फिर रुक कर बोला 'खूब पइसा पाए होंगे।'

'हाँ हो, पइसा कऽऽ माई पहाड़े चढ़ै', एक सम्पादक जी नहीं दस सम्पादक जी मिल जाएँगे।'

इसी प्रकार की बातें करती आधे से अधिक भीड़ वहाँ से चली गई। सम्पादक जी ने बहुत उदास दृष्टि से तथास्तु जी की ओर देखा। तथास्तु ने मुस्करा कर कहा–'संस्कारों से मुक्ति पाना और दिलाना इतना आसान नहीं है सम्पादक जी।'

'चलिए कुछ लोग तो हैं जो अब भी हमारे सामने बैठे हैं।'

'ये बैठे लोग हमारे आदर्शों से प्रभावित नहीं बल्कि आप के व्यक्तित्व पर समर्पित लोग हैं।'

'अब तो समर्पण को ही सही दिशा दिया जाय, क्यों बंशी?' कहकर सम्पादक जी ने बंशी की ओर देखा।

'इस यज्ञ के लिए मैं तैयार हूँ' बंशी ने कहा।

'ठीक है, इस यज्ञ की प्रथम आहुति भी आज ही पड़नी चाहिए' सम्पादक जी ने मगरू की ओर देखते हुए कहा।

मगरू सम्पादक जी की बात नहीं समझ पाया। उसने बंशी और सम्पादक जी के प्रति अपने समर्पण के कारण बिना समझे ही कह दिया 'बंशी कक्का तैयार हैं तो हमहूँ तैयार हैं।'

'देखो मगरू, बुरा न मानना, मर्द की जुबान एक, फिर पीछे पलटना मत।'

'आप हुकुम तो कर के देखैं, असल रामधनक के होंगे तो पीछे नहीं हटेंगे' मगरू ने सीना तान कर कहा।

'क्यों कल्लू कक्का, तुम भी तैयार हो?' सम्पादक जी ने कल्लू से पूछा।

'हाँ सरकार, जब बंशी बचवा, उनके बाप, कक्का, आउर आप तैयार हैं तऽ का हमहीं नामरद हैं?' कल्लू उत्साह से बोला।

'क्यों इनरिया, तुम बोलो तुम भी तैयार हो न?'

इनरिया ने अपनी बगल में खड़ी बुधनी की ओर देखा और बुधनी ने इनरिया की ओर। तब सम्पादक जी ने कहा–'अरे बुधनी की ओर क्या देख रही हो? उसकी तो मगरू की हाँ में हाँ रहती है। क्यों बुधनी? अगर कोई बात हो तो बता देना।'

बुधनी ने सिर हिलाकर सम्पादक जी की बात का समर्थन किया। तब सम्पादक जी ने कहा–'बुधनी की बात तो समझ गई होगी इनरिया? अब बोलो।'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'लड़की अपने बप्पा से अलग कैसे जायेगी? इनरिया ने कहा।

'चलो ठीक है, आज से हम लोग जात-पाँत नहीं मानेंगे। हम लोगों का धर्म होगा मानव धर्म, आर्य धर्म। जन्मना न कोई बड़ा होता है न छोटा। आयु और ज्ञान ही छोटे और बड़े का ज्ञान कराएंगे। बोलो आप सभी लोग तैयार हो? सम्पादक जी ने पूछा।

'हाँ कह दिया तो कह दिया' मगरू ने कहा। सभी ने उसके स्वर में स्वर मिलाया। भोला महराज किंकर्तव्यविमूढ़-से सबका मुँह देखते मौन खड़े रहे। ब्रह्मा के मुँह से निकला ब्राह्मण और पैर से निकला शूद्र सभी को वे बराबर कैसे मान लें? यह तथास्तु त्रिपाठी है, ब्राह्मण होकर इतना अनर्थ कैसे कर रहा है? हे भगवान! घोर कलयुग आ गया है। मैं क्या करूँ? अगर इन सभी की बात नहीं मानता हूँ तो सारा परिवार खाने बिना मर जायेगा और अगर मानता हूँ तो धरम जाता है। हे दीनानाथ! तुम्हीं रास्ता दिखाओ। भोला महराज बेचैन होकर सोच ही रहे थे कि तभी सम्पादक जी ने कहा–"तथास्तु जी, बुरा न मानिएगा, आज आप इस नई सृष्टि के ब्रह्मा बनें। यहाँ उपस्थित लोगों को मानवधर्म में प्रवेश दिलाएँ।"

तत्काल वहीं पर एक वेदी का निर्माण किया गया। हवन का आयोजन किया गया। इस आयोजन को देखने के लिए सभास्थल से गए लोग पुनः उत्सुकतावश एकत्र हो गए। सबने मिल कर एक साथ हवन किया। हवन के पश्चात् तथास्तु जी ने नवसृष्टि में दीक्षित लोगों को अपने हाथ से यज्ञोपवीत पहनाया और फिर मगरू के हाथ में एक यज्ञोपवीत देकर बोले–"यह यज्ञोपवीत तुम मुझे प्रदान करो ताकि मैं भी अपने संस्कारों से मुक्त होकर तुम्हारा ब्रह्मा बन सकूँ।"

मगरू ने तथास्तु जी को यज्ञोपवीत दिया। उसे पहन कर वे सबसे गले मिले और कहा–"आप मेरी रचना हैं, आप इस रचना को और आगे बढ़ाएँ। आज मैं प्राचीन महर्षि का वैदिक उपदेश दे रहा हूँ–कृण्वन्तु विश्वम् आर्यम् । पूरे विश्व को आर्य बनाओ, अन्धकार से प्रकाश की ओर ले चलो। पहले भारतीय समाज को मानवधर्मी बनाओ।" 'ॐ शान्तिः ॐ शान्तिः' कहकर उन्होंने अपने हाथ जोड़कर परम पिता परमेश्वर का नमन किया।

तथास्तु जी भावावेश में इतनी बातें कह गए तब उनकी समझ में आया कि जिनसे ये बातें कही जा रही हैं वे उन बातों को समझने में असमर्थ हैं तो उन्होंने अपनी बात को मोड़ दिया और कहा–"कल सुबह हम सभी लोग पिपरी चलेंगे। आप लोगों की सभी व्यवस्था वहाँ हो जाएगी।"

"कल सुबह न चल कर यदि परसों चलें तो..., बुरा न मानिएगा, कल शाम को एक शुभ कार्य यहीं पर कर लिया जाय तो अच्छा था।"

"कौन-सा कार्य?" तथास्तु जी ने पूछा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"मगरू और इनरिया का विवाह। बुरा न मानिएगा, कल शुभ घड़ी भी है और आप की सृष्टि का यह पहला जोड़ा, हमारे साथ चलेगा तो हम उत्साहित रहेंगे।"

मगरू एकदम चौंक पड़ा। इनरिया चमाइन और मैं धाँगर, उससे बड़ी जाति का, तुरन्त उसके मन में उठा। फिर उसे ध्यान आया कि वह वचन दे चुका है कि वह पीछे नहीं हटेगा। इनरिया भी कम नहीं चौंकी, उसका भी मन जाने कैसा-कैसा होने लगा। विशेष रूप से यह सोच कर कि वह एक नाजायज बच्ची की माँ है। उसने एक बार सिर उठाकर पास में खड़े अपने पिता की ओर देखा और फिर सिर झुका कर संज्ञाशून्य-सी खड़ी रही। भोला महराज का कर्मकाण्डी मन पूरे चूहे को निगल कर चूहेदानी में फँसे साँप सी हो चुकी थी, जो चूहेदानी से निकलने के लिए तड़फड़ा रहा था। पेट में गए अपनी जीवनदायी खुराक को वह चाह कर भी उगल नहीं सकता और बिना उगले या पचाए उसका पेट पिचक नहीं सकता। पेट नहीं पिचकेगा तो वह चूहेदानी से निकलेगा कैसे? सम्पादक जी के अहसान के चूहे को निगल कर उसका पेट फूल गया है। उन्हें विवश होकर इस चूहेदानी में रहना है। सम्पादक जी का प्रस्ताव मान लिया गया।

दूसरे दिन हरिमोहन ने पिपरी जाकर ट्रक लेकर आए शुकदेव दास आर्य को एक पत्र दिया और साथ में एक सामानों की सूची भी दी। सूची देख कर आर्य जी चौंके क्योंकि उसमें विवाह कार्य में इस्तेमाल होने वाले कुछ सामान थे। उनको हरिमोहन से सारी बातों का पता चल गया।

जब आर्य जी हरिमोहन के साथ ट्रक पर सारा सामान लादे निर्दिष्ट स्थान पर पहुँचे तो देखा कि विवाह की सारी तैयारी के साथ, बंशी, सम्पादक जी तथा तथास्तु जी बड़ी व्यग्रता से उनका इन्तजार कर रहे थे। ट्रक से सामानों के साथ बाजे वाले भी उतरे।

शाम होते ही मंडप के चारो ओर चार गैस जला दिये गए। बाजे वालों ने सुरताल में अपने बाजों पर लय छेड़ दी। इनरिया दूल्हन बन कर जब मंडप में पहुँची तो बड़ी भली लग रही थी। औरतें विवाह गीत गाने लगीं। भोला महराज ने बड़े बेमन से विवाह कार्य सम्पन्न कराया। सभी लोगों को खाना खिलाया गया। वे लोग जो इस विजातीय विवाह के खिलाफ थे, खाने के लिए नहीं आए। न आने वालों पर विवाह के आयोजन कर्ताओं ने ध्यान भी नहीं दिया, जिससे वे लोग और भी चिढ़ गए। उन्हीं में से एक ने इनरिया को विवाह के जोड़े में देखकर फब्ती कसी–'वाह वाह, बूढ़ी घोड़ी लाल लगाम!' इसे सुन कर उसके साथी हँस पड़े।

शादी सम्पन्न कराने के बाद तथास्तु जी ने वहाँ पर उपस्थित भीड़ की ओर बड़े ही ध्यान से देखा। भीड़ ट्रक पर लदी छोलदारियाँ, कुछ चारपाइयां और खाने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पीने के सामान देखकर तथास्तु जी तथा उनके साथियों को अपने से अलग साधन सम्पन्न पहुँच वाले आदमी समझने लगी थी। साधारण मानव व्यक्ति के व्यक्तित्व से नहीं उसकी सम्पन्नता से अधिक प्रभावित होता है। इसी कारण कुछ और लोग वहाँ पर खड़े तथास्तु जी की ओर टकटकी लगाकर देखते रहे। तब सम्पादक जी ने कहा–"दोस्तो, अब हम लोग चल रहे हैं, एक नई बस्ती बसाने।" फिर उन्होंने तथास्तु जी की ओर इशारा करते हुए कहा–"यह जो आपके सामने खड़े हैं, इनका घुटा सिर, साधारण धोती-मिर्जई और नंगा पाँव देखकर आप इन्हें साधु समझने की भूल न करें। आप साधु का घृणित चरित्र देख चुके हैं, जिसने अपने परम लोभी चरित्र से एक घृणित गृहस्थ को भी लजा दिया है। इन सज्जन महापुरुष ने अपने नाम के आगे से जातिसूचक 'त्रिपाठी' शब्द हटा दिया है। क्योंकि आप का मानना है कि जातिप्रथा किसी जमाने की आवश्यकता थी, आज उसकी आवश्यकता नहीं है। बचपन में किसी बच्चे के गले में माता द्वारा प्यार में पहनाया गया सोने का आभूषण बच्चे के बड़े होने पर छोटा होकर उसके गले में फाँसी का फन्दा बन जाता है। वही स्थिति आज के समय में जातिप्रथा की हो गई है। इसे काटना होगा नहीं तो हिन्दू समाज इसकी कसावट से घुट कर मर जाएगा, आधा मर चुका है। तथास्तु जी की यह इच्छा है कि ऐसे लोग जो भारतीय समाज में नवजीवन लाने के लिए नए समाज की रचना में सहयोग के लिए तैयार हों, उनकी एक बस्ती बसाई जाय। इस कार्य के लिए यहाँ से दस कोस दूर जंगल में तथास्तु जी की कृपा तथा शुकदेव जी की मेहनत से तीन सौ एकड़ जमीन उपलब्ध हो चुकी है। वहाँ पर रहने के लिए वे सभी लोग आमन्त्रित हैं जो वहाँ के नियमों का पालन करेंगे। वहाँ पर रहने की पहली शर्त है, किसी प्रकार का नशा नहीं करना होगा। जाति, धर्म की कट्टरता को त्यागना होगा। सुबह-शाम प्रत्येक नर-नारी को योगाभ्यास करना होगा। इन चारों शर्तों को जो माने वह हमारे साथ चलने को तैयार हो जाय।' कहकर सम्पादक जी ने भीड़ की ओर देखा।

सम्पादक जी की बातों को सुनकर लोगों को लगा कि कुछ अच्छी चीज है किन्तु क्या अच्छी है वे स्पष्ट समझ नहीं पा रहे थे।

विस्थापितों के नौ परिवार जिसमें धाँगर, खरवार, महार, चमार तथा ब्राह्मण थे, सुबह ट्रक से चल कर शाम होते-होते निर्दिष्ट स्थान पर पहुँच गए। तीन ओर से पहाड़ियों से घिरा यह समतल भूभाग था। कुछ दूर पहाड़ से एक पानी का झरना मन्द गति से नीचे गिरता उस भूभाग के मध्य से नाले के रूप में बहता दूर जाकर कनहर नदी में मिल रहा था। ट्रक नाले के किनारे रोक दी गई क्योंकि आगे जाने का कोई रास्ता नहीं था। सभी परिवार वहीं पर उतर गए। ट्रक पर लाई गई तीन छोलदारियों को शुकदेव दास आर्य के निर्देशन में वहीं नाले के किनारे लगा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दिया गया। एक छोलदारी में सामूहिक भोजनालय, दूसरी में महिलाओं के रहने का प्रबन्ध तथा तीसरे में आवश्यक सामान रखने का प्रबन्ध हुआ।

"आर्य जी, मैं आप को कितना साधुवाद दूँ? सचमुच आपने बहुत ही उपयोगी और मनोरम स्थान का चयन किया है।" तथास्तु जी ने चारों तरफ देख कर कहा।

"तथास्तु जी, हम तो प्राचीन गुफाचित्रों के उद्धार में जंगल-जंगल भटकते इधर से गुजरे थे। उन प्राचीन गुफाचित्रों का उद्धार कर के मैंने सोचा था कि बहुत महत्वपूर्ण कार्य कर दिया है। परन्तु आज उन गुफा चित्र बनाने वालों के वंशजों के उद्धार में अपने को निमित्त मात्र पाकर मैं अपने उस भटकाव को सार्थक पा रहा हूँ।"

"बुरा न मानिएगा आर्य जी, सार्थकता हर मनुष्य चाहता है किन्तु दृष्टि और साधन के अभाव में भटकाव झेलना पड़ता है। यदि दृष्टि सही है तो साधन नहीं है यदि साधन है तो दृष्टि सही नहीं है। जब कभी तथास्तु होता है तो इन दोनों का समन्वय हो जाता है।"

"ऐसी बात नहीं है कि हम और आप ही इस दिशा में सोच रहे हैं। करोड़ों प्रबुद्ध लोग इस प्रकार के समाज की रचना के विषय में सोच रहे हैं। उन लोगों की विचार-तरंगों का यह घनीभूत परिणाम है। निराकार सोच घनीभूत होकर साकार हो गई है। यह मात्र तथास्तु जी की देन नहीं है।" तथास्तु जी ने विनम्रता से कहा।

"नहीं तथास्तु जी, सम्पादक जी ठीक कह रहे हैं। यदि आप निरन्तर दो तीन वर्षों तक देश-विदेश दौड़कर अपनी सारी सम्पत्ति बेचकर पैसे का प्रबन्ध नहीं करते तो क्या यह समभव था?" आर्य जी ने कहा।

"विश्व की वैज्ञानिक गोष्ठियों में भाग लेने के कारण विश्व के वैज्ञानिकों से जो मेरा परिचय हो गया था वह बहुत काम आया और यहाँ पर सम्पादक जी ने धार्मिक महन्तों से कुछ पैसा लिया। अरे हाँ, एक बात याद आ गई, आज ही मुझे जर्मनी, जापान अमेरिका आदि देशों के उन वैज्ञानिक मित्रों को पत्र लिखना है जो इस नई बस्ती में रहने के लिए आना चाहते हैं।"

"आप अन्तर्राष्ट्रीय ग्राम बसाएँगे क्या?" सम्पादक जी ने पूछा।

"हाँ, आज के महान विचारक डॉ० लोहिया जी के महान स्वप्न को मैं कुछ परिवर्तन के साथ पूरा करना चाहता हूँ।"

"चलिए एक प्रयोग ही सही, बुरा न मानिएगा, इस बस्ती का नाम क्या होगा?"

"इस बस्ती का नाम होगा आर्यग्राम, क्योंकि विभिन्न स्थानों के घुमक्कड़

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मानव धर्मी आर्य, कर्म पर ही विश्वास करते थे। वे प्रवृत्ति मार्गी थे। वे किसी भी शुभ सन्देश को 'श्रुण्वन्तु विश्वे अमृत पुत्राः–ऐ विश्व के अमृतपुत्रो, सुनो' कहते थे। 'ऐ मेरे मित्रो सुनो मेरे अनुयाइयो सुनो, नहीं कहते थे। 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' कहते थे। हम सुखी हों, मेरा कबीला सुखी हो, मेरी जमात, सुखी हो, ऐसा नहीं कहते थे। मानव की एकजुटता पर उन्हें विश्वास था। एकजुटता के लिए उन्होंने संघर्ष किया। विभिन्न प्रकार की पूजा पद्धतियों को एक सूत्र में समाहित कर समस्त मानव के लिए सामासिक धर्म का निर्माण किया। मानव मात्र को अपने में समाहित कर लेने वाला वही सामासिक धर्म आज विकृत होकर सड़ रहा है। मैं चाहता हूँ कि इस सड़न को रोकने के लिए सारे विश्व की आर्य सन्तानें यहाँ आएँ और विश्व में फैले संकीर्ण धर्मवाद, नस्लवाद, जातिवाद से झुलसते मानव समूह को बचाने का प्रयास करें।'

तथास्तु जी अभी कुछ और बोलते लेकिन मगरू ने उसी समय आकर पूछा–'सुरुज नरायन ललाई मार रहे हैं, अब का किया जाय? रात के आग जरावै बदे जंगल से हम सभे लकड़ी ले आए हैं।'

तथास्तु जी ने प्रसन्न मुद्रा में मगरू की ओर निहारा और कहा–'दिन भर की धूप और गर्मी से सभी लोग परेशान हो गए होंगे। सबसे कहिए कि सभी लोग स्नान कर यहीं चले आएँ।'

मगरू को निर्देश देकर तथास्तु जी बंशी और शुकदेव दास आर्य को लेकर मैदान में बहने वाले सोते के उद्‌गम तक गए। बहुत ऊँची पहाड़ी से झरने की पतली धार नीचे गिर रही थी। पानी और हवा के निरन्तर घर्षण से चिकने हो गए विशाल पथरीले भूभाग के मध्य पहाड़ी से गिरते झरने ने एक विस्तृत जलकुण्ड बना दिया था। कुण्ड के उस निर्मल तलदर्शी जल में मछलियाँ निर्द्वन्द्व किलोल कर रही थीं। कुण्ड की ढलान से पानी निकल कर नाले के रूप में कलकल-छलछल करता आगे भागा जा रहा था। चारों ओर सागौन के बड़े-बड़े वृक्ष जंगली झाड़-झंखाड़ों से घिरे खड़े थे। उस दृश्य को सभी लोग कुछ देर तक मन्त्रमुग्ध से देखते रहे।

"प्रकृति ने अपने आंगन में सौन्दर्य की कितनी अच्छी-अच्छी अल्पनाएँ सजा रखी हैं? हिमालय की हिमाच्छादित चोटियों की तलहटी में, सघन देवदारु वृक्षों की छाया में शायद ऐसे ही किसी उदात्त उद्दीपन देने वाले दृश्य को देखकर हमारे महर्षि के कण्ठ से अनायास फूट पड़ा होगा–"गायन्तु देवाः किल गीतकानि, धन्यास्तु ते भारत भूमि भागे" तथास्तु जी विभोर होकर बोले।

"प्रकृति की इस मनोरम अल्पना की गोद में बसने वाली इस बस्ती का नाम वस्तुतः आर्य ग्राम ही होना चाहिए।" शुकदेव दास आर्य ने कहा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"बुरा न मानिएगा, आर्य शब्द हिन्दू का प्रतीकार्थ बन चुका है, इसलिए अन्य धर्मावलम्बियों को एतराज हो सकता है।"

"क्या सत्य को इसलिए छोड़ दिया जाय कि उससे लोगों को एतराज हो सकता है? हम सारे विश्व को इस बात को समझाएँगे कि विश्व के सभी मानव आर्य सन्तान हैं। आर्य का अर्थ होता है, वह मानव जो विश्व बन्धुत्व में विश्वास करता हो, जो व्यष्टि नहीं समष्टि की मंगल कामना करता हो, उसके उत्थान का आकांक्षी हो" तथास्तु जी ने कहा।

"तथास्तु जी, आप अपने आर्य शब्द के इस अर्थ को किस आधार पर समझाएँगे?" शुकदेव दास आर्य ने स्नान के लिए अपने कपड़ों को उतारते हुए पूछा।

"आज सारा विश्व यह मान चुका है कि वेद विश्व की प्रथम वाणी-रचना हैं। यह ऐसे समय की रचना है जब मानव में मानवता के संस्कारों का बीजारोपण किया जा रहा था। उस समय इस धरा पर न कोई धर्म रहा होगा न जाति रही होगी, यह तो साधारण बुद्धिवाला भी समझ सकता है। उस समय के वेद में आर्य और अनार्य दो शब्दों का प्रयोग किया गया है। जो सम्पूर्ण मानव समाज की खुशी के लिए कार्यरत थे उन्हें आर्य और जो अपने परिवार और अपनी खुशी को ही प्राथमिकता देते थे उन्हें अनार्य कहा गया। इन दो विचारधाराओं में देव-दनुज, सुर-असुर, मनुष्य-राक्षस आदि विभिन्न नामों से युद्ध हुए और आज भी छिट-पुट रूप में हो रहे हैं। इस प्रकार आर्य शब्द का प्रयोग महत्तम विचार वाले व्यक्ति के लिए ही हुआ। क्योंकि वेद और वैदिक भाषा संस्कृत विश्व की सारी भाषाओं की जननी है और यह बात विश्व के तमाम भाषाविदों द्वारा सिद्ध की जा चुकी है। इसी भाषा को अपने का आर्य कहने वालों ने प्रयोग किया था। इस प्रकार यह सिद्ध होता है कि वही आर्य आज के विश्वमानव के आदिम पुरखे थे।"

"लेकिन तथास्तु जी, यदि वैदिक संस्कृत ही आज के मानव की आदिम भाषा थी तो आज विश्व के तमाम देशों की भाषाओं और लिपियों में इतना अन्तर क्यों है?" सम्पादक जी ने नया प्रश्न उठाया।

"भाषा और लिपि के प्राकृतिक नियमों को समझना होगा। तभी आप के प्रश्न का उत्तर मिल पाएगा। होता यह है कि पहले भाषा का या कहिए बोली का विकास होता है। फिर उस बोली के भाव को संकेत चिह्नों से व्यक्त करने का प्रयास होता है। वही संकेत चिह्न कालान्तर में अक्षर बन जाते हैं। भावों के संकेत चिह्न की लिपि का सबसे अच्छा उदाहरण चीन की भाषा है।"

"लेकिन सम्पादक जी का मूल प्रश्न यह था कि भाषा और लिपि में विभिन्न देशों में इतनी विभिन्नता क्यों है?" शुकदेव जी ने पूछा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"वही बताने जा रहा था कि बोली का विकास सौ-पचास सालों में ही तो नहीं हो गया होगा। इसे विकसित होने में हजारों वर्ष लगे होंगे। इस बोली के विकसित होने के वर्षों में आर्य एक ही स्थान पर बस कर तो रहे नहीं होंगे। उनके समूह विभिन्न दिशाओं में अपनी सुविधा के अनुसार गए होंगे। फिर सृष्टि का वह प्रारम्भिक काल धरती के उथल-पुथल का काल था। बड़े-बड़े गगनचुम्बी पर्वत प्रकृति के प्रकोप से धराशायी हो जाते और जहाँ अगाध समुद्र था उसमें विशाल नभभेदी पर्वत उभड़ आते। इसका प्रमाण हमारे यहाँ अगस्त ऋषि के चरणों में विन्ध्य पर्वत के झुकने की कथा में मिलता है। ऐसे उथल-पुथल में एक ही धरती पर रहते आर्य धरती कट जाने से अलग-अलग द्वीपों में बँट गए होंगे। फिर उन द्वीपों की अलग-अलग जलवायु ने उनकी बोली के उच्चारण पर अलग-अलग असर डाला। आज भी यदि आप विश्व के नक्शे को ध्यान से देखें तो ऐसा लगता है कि कभी ये भूभाग एक रहे होंगे।"

"बोली के उच्चारण से जलवायु का क्या सम्बन्ध है?" सम्पादक जी ने पूछा।

"है, बहुत बड़ा सम्बन्ध है। हमारे यहाँ एक कहावत कही जाती है–कोस-कोस पर बदले पानी पाँच कोस पर बानी। आप हिन्दी भाषा को ही ले लें। जो हिन्दी बनारस में बोली जाती है, वही गाजीपुर, बलिया, बिहार, मिर्जापुर, मेरठ, राजस्थान में भी बोली जाती है। हिन्दी के एक ही शब्द को सभी विभिन्न ढंग से उच्चरित करते हैं। क्योंकि इन सभी जगहों की जलवायु में कुछ न कुछ सूक्ष्म अन्तर है। जल-बाहुल्य क्षेत्र के मनुष्यों के स्वर में कोमलता होती है और शुष्क धरती के लोगों के स्वर कठोर होते हैं। यह प्रकृति का नियम है। इसी प्राकृतिक नियम के अनुसार संस्कृत ने विभिन्न द्वीपों में वहाँ की जलवायु के अनुसार अपने स्वर के रूपों को बदला होगा। जहाँ तक लिपि की बात है, उसमें तो भिन्नता होगी ही। क्योंकि बोली के समृद्ध हो जाने के बाद ही बहुत बाद में लिपि का आविष्कार हुआ होगा। विभिन्न द्वीपों के महर्षियों ने अपनी अपनी ऐसी लिपियों का आविष्कार किया होगा जो उनकी बोली के उच्चारण को ठीक से पकड़ कर व्यक्त कर सके। बोलचाल की भाषा के स्वर और उच्चारणों के पकड़ने के प्रयास ने ही भाषा में अन्तर कर दिया।'

"बात तो आपकी समझ में आ रही है किन्तु यदि सभी लोग भारतीय आर्यो की ही सन्तानें हैं तो जनविज्ञान ने मनुष्य की तीन अलग-अलग नस्लों की पहचान कैसे की?"

"सम्पादक जी, जन विज्ञान से अनभिज्ञ हूँ। आप कृपया बताएँ कि मनुष्य की वे तीन नस्लें कौन-कौन सी है?" शुकदेव जी ने पूछा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"बुरा न मानिएगा, पूरा ज्ञान तो मुझे भी नहीं है। लेकिन मैंने पढ़ा है कि पहली नस्ल काकेशियन है जिसका रंग गोरा होता है। इस नस्ल के मनुष्य रूस से दक्षिणप्राय एशिया योरोप के बीच के भूभाग में पाए जाते हैं। दूसरी नस्ल है मंगोलियन जिसे वंशज पीले रंग के होते हैं तथा चीन और तिब्बत में पाये जाते हैं। हमारी पौराणिक किरात जाति इसी श्रेणी में आती है। तीसरी नस्ल है इथियोपियन। इस नस्ल के लोग काले होते हैं और अफ्रीका में पाए जाते हैं। क्या इनके पुरखे अलग-अलग थे?"

"नहीं, जिस प्रकार जलवायु बोली के उच्चारण में अन्तर लाती है, उसी प्रकार इसने मनुष्यों को भी तीन नस्लों में बाँटा है।" तथास्तु जी ने कहा।

"बुरा न मानिएगा, आप के हिसाब से तो आर्यों का इतिहास कम से कम पचीसों हजार वर्ष पुराना होना चाहिए, जब कि इतिहासकार सिन्धु घाटी की सभ्यता, जिसे वे तीन हजार से पाँच हजार वर्ष पुराना कहते हैं, से ही आर्यों का इतिहास जोड़ते हैं।"

तथास्तु जी ने हँस कर कहा–"यही तो विडम्बना है कि सारे इतिहासकार योरोपवासी इतिहासकारों की लाचारी को समझ नहीं पाए। उन लोगों की अपनी ऐतिहासिक चादर मात्र पाँच हजार वर्ष लम्बी है। इसलिए वे विश्व की सारी सभ्यताओं को अपनी इसी छोटी सी चादर में बाँधने का प्रयास करते हैं। यही भूल कार्ल मार्क्स से भी हुई। उसने अपने पाँच हजार वर्ष पुराने इतिहास को देखकर इतिहास को सीधी लाइन में चलने वाला कह दिया। आज अगर वह होता तो देखता कि इतिहास में शीर्ष पर रहने वाला इंगलैंड आज पराभव की ओर, नीचे की ओर, अपने पूर्व स्थान की ओर जा रहा है। इसलिए भारतीय महर्षियों के इतिहास का चक्रीय सिद्धान्त ही सही है। जहाँ तक आर्य सभ्यता को मात्र पाँच हजार वर्ष पुराना मानने की बात है वह तो एकदम गलत है। क्योंकि त्रेता में जब राम-रावण युद्ध हुआ उस समय पूर्ण सूर्य ग्रहण लगा था। उस पूर्ण सूर्य ग्रहण के समय कौन-कौन से नक्षत्र आकाश में एक साथ थे उसका वर्णन हमारे शास्त्रों में है। नक्षत्र विज्ञान की उल्टी गिनती से वह ईसा से ७३०० वर्ष पूर्व आता है। इस से यह सिद्ध होता है कि ईसा से ७३०० वर्ष पूर्व आर्यों को नक्षत्र विज्ञान का ज्ञान था। तभी तो पूर्ण सूर्य ग्रहण के समय आकाश में और कौन-कौन से नक्षत्र हैं, इसका वर्णन वे कर सके थे। इस विज्ञान की उन्नति चार छः वर्षों में तो हुई नहीं होगी। अवश्य ही उसकी उन्नति में चार पाँच हजार वर्ष लगे होंगे। इस प्रकार आर्य ज्ञान का इतिहास ही कम से कम ईसा से दस हजार वर्ष पुराना है। आर्यों के इतिहास की तो बात ही छोड़िए।"

"आर्यों का कोई सुव्यवस्थित इतिहास तो मिलता नहीं जिससे हम सीना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तान कर प्रामाणित कर सकें कि आप जो कह रहे हैं वही सत्य है।'' शुकदेव जी ने कहा।

''हाँ यह बात आपकी ठीक है। हो सकता है कि उस काल में आज की तरह इतिहास न लिखे जाते रहे हों या यह भी हो सकता है कि व्यवस्थित इतिहास लेखन रहा हो और वे नालन्दा और तक्षशिला जैसे विशाल पुस्तकालयों के जलाए जाने से नष्ट हो गए हों। बर्बर आक्रमणकारियों ने यहाँ के ज्ञानकोशों को कितनी बार जलाया है? इसका कोई विस्तृत इतिहास नहीं है। आज आवश्यकता है कि सारे विश्व के लोग पूर्वग्रह से मुक्त हो कर स्वस्थ मन से आर्यों के उस प्राचीन इतिहास को आज के भारतीय वाङ्मय में पुन: तलाशें जिसमें उनके पुरखों की भी पहचान मिलेगी।'' तथास्तु जी स्वच्छ शिला पर पद्मासन में बैठे आँखें मूँदे जैसे अतीत में झाँकते हुए कह रहे थे।

''बात तो आपकी समझ में आ रही है लेकिन बुरा न मानिएगा, पूर्वग्रह युक्त संकुचित सोच वाले, धर्म खतरे में, जाति खतरे में, वाद खतरे में कहकर दुराग्रह-पूर्वक इसके खिलाफ तर्क देनें में नहीं चूकेंगे।''

''ऐसे लोगों को ही हम अपने महर्षियों की भाँति अनार्य घोषित करेंगे। इस तरह के लोग सर्वदा अल्पमत में रहे हैं और आज भी रहेंगे, किन्तु ये जनभावनाओं को भड़का कर बहुमत में हो जाते हैं। इसलिए हमें जन भावनाओं को प्रशिक्षित करने की आवश्यकता है न कि उन से बहस करने की'' कहकर तथास्तु जी उठकर स्नान के लिए अपना वस्त्र उतारने लगे।

शुकदेव दास आर्य कुण्ड में कमर भर पानी में खड़े वार्ता का रस लेने में व्यस्त थे। जब तथास्तु तथा सम्पादक जी पानी में छपाक से कूदे तो उन्हें अपने स्नान का ध्यान आया और वह भी उछलकर पानी में तैरने लगे। उसी समय मगरू और हरिमोहन अपने हाथों में कुल्हाड़ी लिए हाँफते हुए कुण्ड के किनारे आकर खड़े हो गए। स्नान कर रहे लोगों ने उन दोनो की ओर आश्चर्य से देखा।

''क्या बात है मगरू, इतना हाँफ क्यों रहे हो?'' सम्पादक जी ने पूछा।

''सँझलवका हो गया है, जंगली जानवरों के पानी पीने का इहै समय है। भालू का एक झुण्ड इधर आते देख दउड़े चले आ रहे हैं'' मगरू ने अपनी साँस को संयत करते हुए कहा।

''अपने क्रिया कलापों में हम यहाँ के जंगली जानवरों के नित्य कार्यक्रम में बाधक न बनें, इसका हमें ध्यान रखना होगा।'' कहते हुए तथास्तु जी जल्दी स्नान करके सब के साथ मैदान में लगी छोलदारियों की ओर चल पड़े। भालुओं का झुण्ड जो शायद इन लोगों के जाने की ही प्रतिक्षा में पास की झाड़ियों में छिपा खड़ा था, झाड़ियों के झुरमुट से निकल कर पानी पीने लगा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्नान करके जब सभी लोग निर्दिष्ट स्थान पर पहुँचे तो देखा कि मेहनतकश हाथों ने छोलदारियों के सामने की भूमि की झाड़ियों को काट कर साफ-सुथरा कर दिया है। सारी महिलाएँ हँसती खिलखिलाती झाड़ू लगा रही थीं, मर्द इकट्ठे हो गए खर-पतवारों का एक जगह ढेर लगा रहे थे। बुधनी विशेष प्रमुदित दिखाई दे रही थी। वह कभी इनरिया के हाथ से झाड़ू छीनकर कहती–"अरे रहे दो भौजी, हमरे भैया कऽ गोड़ एतना नरम नाही है कि कंकड़ गड़ जाई" कभी दुलारी के कान में कहती–"काकी, तोहरे सपना में बड़ी सचाई है, अइसै एक सपना आउर देखो।"

"अरे हट, अब तूँ सपना देख, उहै सम्पादक जी आ रहे हैं" आते हुए सम्पादक जी की ओर अपनी आँखों से इशारा किया। बुधनी ने चौंककर सम्पादक जी की ओर देखा और लजा कर ऐसी गम्भीर हो गई, जैसे अभी क्या वह कभी भी न तो हँसती है न तो बोलती है।

स्वच्छ की गई भूमि के एक किनारे पर अस्ताचलगामी सूर्य की ओर मुँह करके तथास्तु जी खड़े हो गए और पूछा–"क्या आप सभी लोग स्नान कर चुके हैं?" सभी के हाँ कहने पर उन्होंने कहा–"ठीक है, सभी महिलाएँ बाईं ओर और पुरुष दाहिनी ओर जैसे मैं पालथी मार कर बैठ रहा हूँ, वैसे ही बैठ जायँ," कहकर वह पालथी लगा कर बैठ गए।

सभी लोग उन्हीं के जैसा पद्मासन लगाने का प्रयास करने लगे, सम्पादक जी ने आसानी से लगा लिया, अन्य लोगों को परेशानी होने लगी तब तथास्तु जी ने कहा–"सुखपूर्वक जैसे आप बैठ सकें, वैसे ही बैठें, एक बात का ध्यान रहे कि रीढ़ की हड्डी सीधी हो, गर्दन और रीढ़ एक सरल रेखा में सीधी हों।" लोगों ने वैसा ही किया। तब तथास्तु जी ने कहा–"यह आपके बैठने का आसन हुआ, अब मैं सर्वप्रथम शरीर में व्याप्त सभी बहत्तर हजार नाड़ियों को शुद्ध करने वाला नाड़ी शोधन प्राणायाम बता रहा हूँ।" कह कर उन्होंने उसकी क्रिया बताई। लोगों से कई बार उसे कराया और कहा–"अभी कुछ दिनों तक यही करना है। इससे आप के मन में विकार क्रमशः शुद्ध होते जाएँगे। अशक्त, वृद्ध को छोड़कर सभी को चार बजे सुबह उठ जाना है, सभी को नियमित इस प्राणायाम को करना है। इसके पश्चात्, कल से नियमित शिक्षा, जो अक्षरज्ञान से प्रारम्भ होगी, सुबह छः बजे से सात बजे तक सभी को लेनी होगी। मैं आज ही यहाँ के सारे कार्यों का बँटवारा कर दे रहा हूँ। श्री आर्य जी पुरुष वर्ग को और सम्पादक जी, जब तक कोई पढ़ी लिखी महिला आ नहीं जाती अथवा इन्हीं महिलाओं में से कोई तैयार नहीं हो जाती, तब तक महिला वर्ग को पढ़ाएँगे। योगाभ्यास की कक्षा मैं लूँगा। इस पूरी जमीन को उपयोगिता के हिसाब से सब की राय से चार भागों में बाँट

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दिया जाय। जिसमें क्रमशः खेती, फल के बगीचे, सब्जी और गौशाला होगी। बस्ती के लिए मैं समझता हूँ कि यह नाले के समीप का ऊँचा भूभाग उपयुक्त होगा। खेती के लिए मगरू और हरिमोहन, बगीचा भोला कक्का और पत्तू, सब्जी की व्यवस्था बंशी के जिम्मे होगी और गोशाला...'' कहकर तथास्तु जी इधर-उधर सही आदमी की तलाश में देखने लगे। तभी छोटई महराज-''हम अउर कल्लू देखेंगे, बड़ा मजा आएगा'' कहकर ताली पीटकर हँसने लगे।

''हाँ हो, छोटई महराज देखेंगे। एक बात और सुन लीजिए, कार्यों का बँटवारा केवल जिम्मेदारी के लिए किया गया है। अन्यथा हम सभी इस आर्य ग्राम के सारे कार्यों के लिए सामूहिक रूप से जिम्मेदार होंगे। हम सभी को मिलकर सॉरा काम करना है। धीरे-धीरे हमें अपनी जरूरत की सारी चीजें स्वयं पैदा करनी हैं। आत्मनिर्भर ग्राम के स्वप्न को पूरा करना है।'' तथास्तु जी ने कहा और संध्या कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

शाम को एक ही भण्डारे में सभी का भोजन बना। सभी ने एक साथ बैठकर भोजन किया।

एक सप्ताह के अन्दर एक ट्रैक्टर, दस दुधारी गउएँ तथा खेती में प्रयुक्त होने वाले सारे औजार खरीद कर आ गए। मगरू और हरिमोहन ने ट्रैक्टर चलाना सीख लिया। गायों को देखकर छोटई महराज बहुत प्रसन्न हुए। वह कल्लू के साथ दिन भर अपनी गायों को चराते। धीरे-धीरे उनका पागलपन दूर हो रहा था।

❐

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

२४. बोधमयी

वैशाख बीत गया, जेठ लग गया है। इतने दिनों में सौ एकड़ के करीब जमीन कृषि योग्य बनाई जा चुकी है। जेठ की तपन से पहाड़ियों पर के झाड़ झुलसकर हल्के पीले भूरे हो गए हैं। पहाड़ियाँ, घास, झाड़-झंखाड़ों के झुलस जाने के कारण नंगी होकर जेठ की प्रचण्ड धूप में सारे दिन तपती रहती हैं। जिसके कारण सूर्यास्त होने तक उन पहाड़ी पत्थरों पर धूप की बिल्ली नाचती रहती है। पहाड़ियों से घिरे होने के कारण आर्य ग्राम में सारे दिन प्रचण्ड गरमी पड़ती है किन्तु आधी रात के पश्चात् जब पहाड़ के पत्थर ठण्ढे हो जाते हैं तब सिहरनभरी शीतलता आ जाती है। पहाड़ से गिरने वाले झरने की धारा इतनी पतली हो गई है कि दूर से देखने से लगता है जैसे किसी बनवासिनी वृद्धा की श्वेत लट लटक रही हो।

पलाश वन अपने लाल फूलों से ढँक कर ऐसे लग रहे हैं जैसे जंगल में आग लगी हो। ऐसी भीषण गर्मी में भी तथास्तु जी, सम्पादक जी तथा शुकदेव जी सारे ग्रामवासियों के साथ वहाँ पर बहने वाले नाले की भूमि की ऊँचाई-निचाई देखकर जगह-जगह स्थानीय पत्थरों के ढोकों को बड़ी-बड़ी लोहे की जालियों पर रखकर इस प्रकार बाँध रहे हैं कि बरसात का अनावश्यक पानी सुगमता से निकल जाय और नाले का जलस्तर ऊँचा होकर अगल-बगल की भूमि को सींचने के काम आए। नाले पर चार जगहों पर पवन चक्की भी सिंचाई के लिए लगा दी गयी है।

अभी आषाढ़ आने में एक महीने की देरी है। ग्रामवासियों ने आज नाले की अन्तिम बन्धी को भी बना दिया है। सभी लोगों ने कुछ देर आराम के बाद बड़ी तृप्ति के साथ नाले में स्नान किया। उसी समय बुधनी, समरथी और इनरिया सबके लिए दोपहर का खाना अपने सिर पर रखे आ गईं। खाने से निवृत्त होकर तथास्तु जी ने शुकदेव जी तथा सम्पादक जी से पूछा–"आप लोगों का कौन-सा छात्र या छात्रा कुशाग्रबुद्धि है?"

"हमारे यहाँ तो छोटई महराज का लड़का बृजमोहन प्रथम है, दूसरा नम्बर मगरू का आता है।" शुकदेव जी ने कहा।

"और आप के यहाँ?" तथास्तु जी ने सम्पादक जी से पूछा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"बुरा न मानिएगा, मैं नहीं बता पाऊँगा कि कौन तेज है। छात्राएं यहीं बैठी हैं वही बताएँ" हँसते हुए सम्पादक जी ने कहा।

"बुधनी सबसे तेज है" समरथी ने उचककर कहा।

"यह तो योग में भी अन्य कई लोगों से बहुत आगे चल रही है। कुछ दिनों के बाद महिलाओं को योग का प्रशिक्षण देने के लिए बुधनी को ही नियुक्त कर दूँगा।"

अपनी प्रशंसा से बुधनी मन ही मन बहुत प्रसन्न हो रही थी। सम्पादक जी भी कम प्रमुदित नहीं थे।

"कुशाग्र बुद्धि वालों के नाम जब उल्टे-सीधे होते हैं तो मुझे अच्छा नहीं लगता। मैं इस ग्राम के कुछ लोगों के नाम बदल देना चाहता हूँ" कहकर तथास्तु जी ने शुकदेव जी की ओर देखा।

"बुरा न मानिएगा, जब आप ने सभी कुछ बदलना शुरू कर ही दिया है तो नाम भी बदल दीजिए। लेकिन एक बात का ध्यान रखिएगा, कहीं गोबर का नाम हलुआ मत रख दीजिएगा।" कहकर सम्पादक जी ने बुधनी की ओर देखा। वहाँ पर बैठे सभी लोग ठहाका मार कर हँस पड़े। बुधनी मुड़कर जाने लगी। तब इनरिया ने उसका हाथ पकड़ कर अपनी ओर खींचते हुए धीरे से कहा–"अरे रुको रानी जी, मैं सब समझ रही हूँ।" बुधनी झूठा मान किये रुक गई।

"आज से इनरिया का नाम इन्द्राणी और बुधनी का नाम बोधमयी तथा मगरू का नाम मंगल होगा। सभी लोग इनको इन नए नामों से ही पुकारें। मैं समझता हूँ कि इतने दिनों में आप लोगों का हिन्दी ज्ञान इतना बढ़ चुका है कि इन नए नामों को पुकारने में कोई परेशानी नहीं होनी चाहिए।"

इनरिया ने अपनी बगल में खड़ी बुधनी को धीरे से चिकोटी काट कर फुस-फुसाकर कहा–"बोधमयी!" बुधनी वैसे ही गम्भीर बनी हुई बुदबुदाई–"मंगल ही मंगल है इन्द्राणी भौजी।"

तथास्तु जी की दृष्टि आपस में चुहल करती इन्द्राणी और बोधमयी पर पड़ी। वे सम्पादक जी की ओर देखकर मुस्कुराए और कहा–"एक बात और, आप लोगों ने मुझे इस आर्य ग्राम का ब्रह्मा बनाया है तो मैं आज अपनी सृष्टि को बढ़ाने के लिए एक और जोड़े का सृजन करना चाहता हूँ, बहुत सुन्दर जोड़े का सृजन।"

इन्द्राणी ने धीरे से बोधमयी का हाथ दबाया। बोधमयी का साँवला सलोना चेहरा खरे ईंट-सा लाल हो गया। उसकी पोर-पोर में खून का संचार बढ़ गया। उसकी चिर प्रतीक्षित घड़ी आ गई थी। हृदय अब मुख बनने जा रहा था।

"कल सम्पादक सिद्धनाथ जी का विवाह बोधमयी से होगा। सिद्धि को बोध मिले और बोध सिद्धि को प्राप्त करे" तथास्तु जी ने मुस्कुरा कर कहा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मगरू इस बात को सुनकर एकदम विह्वल हो गया। वह उठकर सम्पादक जी के पास चला गया और उनके हाथ को पकड़ कर बोला–"लावा परछाई में पूरी पोशाक लूँगा बहनोई साहब।"

"बुरा न मानिएगा, ब्रह्मा जी ने अपनी सृष्टि के लिए जो जोड़ी बनाई है वह अटूट है, उसे चाहकर भी कोई तोड़ नहीं सकता" फिर सम्पादक जी ने लाज से सकुची सिमटी बोधमयी की ओर देखकर कहा–"लेकिन जोड़ी बनने के मुहूर्त में कुछ शीघ्रता हो गई है।"

"आपके कहने का मतलब?" शुकदेव दास ने पूछा।

"बहुत दिनों से मैं अपने एक संगठनात्मक उद्देश्य की पूर्ति में लगा हूँ। बुरा न मानिएगा, अब वह अपनी पूर्णता की कगार पर है। आशा है कि चार-पाँच महीने में वह पूरा हो जाएगा। उसके बाद...।" कहकर उन्होंने बोधमयी की ओर देखा। बोधमयी की हिरणी जैसी आँखों में सन्देह के आँसू भर आए थे। सम्पादक जी से आँख मिलते ही वह मुँह मोड़कर दूसरी ओर देखने लगी। सभी लोग स्तब्ध से तथास्तु जी का मुँह देखने लगे।

तथास्तु जी सम्पादक जी के उत्तर को सुनकर थोड़ी देर मौन रहे। फिर उनके उल्लसित मुँह पर गम्भीरता छा गई। मंगल ने अपनी बहन की ओर देखा। वह अपनी बहन के मनोभावों को अपनी पत्नी के इंगित से इधर कुछ दिनों से समझ रहा था। अपनी बहन की स्थिति से उसके मन में एक क्षोभ उठा। वह उठकर वहाँ से जाने लगा। तभी तथास्तु जी ने गम्भीर स्वर में कहा–"आज से बोधमयी सिद्धनाथ की मंगेतर हो चुकी है। छः महीने बाद दोनों की शादी होगी। क्यों सिद्धनाथ जी, ठीक होगा?" तथास्तु जी ने पूछा।

"बुरा न मानिएगा, मैं आपकी सृष्टि का जीव आप की आज्ञा कैसे टाल सकता हूँ?"

तथास्तु जी सबके साथ आवासीय स्थल पर पहुँचे और सब के सामने उन्होंने बोधमयी को सिद्धनाथ के मंगेतर के रूप में प्रस्तुत कर दोनों को आशीर्वाद दिया और बोले–"आज सभी लोग पूर्ण विश्राम करेंगे। कल से सभी लोग आवास बनाने के कार्य में जुट जाएँगे, ताकि बरसात के पहले सब के आवास तैयार हो जाँय।"

"बुरा न मानिएगा, आवास का जो नक्शा मैं लाया हूँ, उसी के अनुसार आवास बनना चाहिए।"

"जब आप संगठन के लिए बाहर जाएँगे, तब आप कैसे देखेंगे कि आवास आप के नक्शे के अनुसार बन रहा है या नहीं?" बंशी ने कहा।

"अभी कहाँ जा रहा हूँ, आवास बनवा कर तब जाऊँगा।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वार्ता का क्रम और आगे चलता लेकिन तथास्तु जी सब को आराम करने का निर्देश दे अपनी छोलदारी में चले गए।

प्रात: प्राणायाम के पश्चात् जब सम्पादक जी महिलाओं को पढ़ाने पहुँचे तो बोधमयी को बहुत उदास पाया। अन्य दिनों वह सबसे आगे बैठती थी लेकिन आज वह सबसे पीछे अपनी पुस्तक में सिर गड़ाए बैठी थी। सम्पादक जी समझ गए कि वह उनसे रूठी है। कक्षा की अन्य छात्राएँ उन्हें पहले जैसी श्रद्धा से नहीं देख रही हैं, ऐसा उन्हें आभास हुआ। वह समझ गए कि तत्काल शादी न करने के कारण वह महिला वर्ग में सन्देहास्पद व्यक्ति बन गए हैं। उनका मन बोधमयी से एकान्त वार्ता के लिए छटपटाने लगा। एक साथ मिलकर सभी के कार्य करने की यहाँ की व्यवस्था से वह बोधमयी से अकेले मिलने में अपने को असमर्थ पा रहे थे। अब तक वह जान चुके थे कि बोधमयी का स्वभाव अन्य वन-कन्याओं से एकदम अलग है। वह सबको पढ़ाने लगे और मन ही मन बोधमयी से एकान्त में मिलने की समस्या का निदान ढूँढ़ने लगे। एकाएक उन्हें एक तरकीब सूझीं। पढ़ा रहे पाठ को समाप्त करके उन्होंने कहा–"अब मैं आलेख बोल रहा हूँ। उसे लिखकर आप लोग मेरे पास जमा कर दें जिससे मैं देख सकूँ कि सही हिन्दी सुन्दर अक्षरों में लिखने की क्षमता का कितना विकास हुआ।" कहकर सम्पादक जी ने आलेख बोला और उसे जाँचने के बहाने बोधमयी की कॉपी पर–"बोध, झरने पर मिलने वाली गयडहरी के पास मिलो, आवश्यक बात करनी है।" लिखकर अन्य छात्राओं की कॉपी के साथ उसकी कॉपी भी लौटा दी।

बोधमयी ने अपनी कॉपी पर सम्पादक जी द्वारा लिखे वाक्य को पढ़ा किन्तु वह निर्दिष्ट स्थान पर नहीं गई। वह सबके साथ हँसती-खेलती आवास निर्माण में इस प्रकार लगी रहती जैसे उसे किसी प्रकार का दुःख नहीं है। सम्पादक जी भी फावड़ा चलाते, मिट्टी में पानी उलीचते, अपनी बगल से गीली मिट्टी से भरे झउआ को अपने सिर पर लिए बोधमयी को आते-जाते देखते रहते। वह उनकी ओर ध्यान दिये बिना निकल जाती। इस प्रकार कई दिन बीत गए। एक दिन सम्पादक जी से अकस्मात् बहुत थोड़े समय के लिए एकान्त में मिली तो उन्होंने कहा–"बोध, अगर आज तुम नहीं मिली तो कल मैं दिल्ली चला जाऊँगा, फिर कभी नहीं आऊँगा।"

बोधमयी ने उनकी ओर आँख उठाकर देखा और धीरे से 'आऊँगी' कहती आगे बढ़ गई।

सम्पादक जी की प्रसन्नता आकाश छूने लगी। वह सारे दिन "तुम हो मेरे सरस छन्द, तुम जीवन की जलधारा, साथ न मिलता अगर तुम्हारा, रहता प्यार कुँआरा।" गीत गुनगुनाते रहे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आज आर्य ग्राम के लोग अपने-अपने कार्यों में व्यस्त हो गए तब सम्पादक जी निर्दिष्ट स्थान पर सबकी नज़र बचाकर पहुँच गए और एक झाड़ी की ओट से बोधमयी के आने वाले मार्ग पर दृष्टि लगाए बैठ गए। इधर बोधमयी पेट दर्द का बहाना बनाकर छोलदारी में ही पड़ी रही। वह अभी तक किसी पराए पुरुष से इस प्रकार एकान्त में नहीं मिली थी। इसलिए जब भी वह निर्दिष्ट स्थान पर चलने को तैयार होती उसका दिल धक्-धक् करने लगता। वह दो-चार कदम चलकर रुक जाती, फिर सोचती अगर नहीं जाऊँगी तो वह कल दिल्ली चले जाएँगे। बहुत जिद्दी हैं, शायद फिर न लौटें। इस सोच के साथ उसके कदम फिर आगे को उठते। कौन जाने इन्द्राणी भौजी के साथ दारोगा ने जो धोखा किया वही धोखा मेरे साथ न करें। कहीं समरथी बहन की बात ही सही हो तब, तब क्या होगा? नहीं मैं वह सब नहीं होने दूँगी, कभी नहीं। सोच कर उसने पास पड़ी बेंट वाली कुल्हाड़ी को उठाकर पीठ पर लटका लिया और छोलदारी से बाहर आई। अगर किसी ने देख लिया तो? ऊँह देखकर क्या करेगा? किसी पराए से मिलने नहीं जा रही हूँ, फिर बात साफ कर लेनी है कि वह पराए हैं या अपने। उसने छोलदारी के चारों ओर अपनी दृष्टि दौड़ाई। सभी अपने-अपने काम में व्यस्त थे। वह तेजी से निर्दिष्ट स्थान की ओर चल पड़ी।

सम्पादक जी को झाड़ी की ओट में बैठे बहुत देर हो गई थी। वह बार-बार बोधमयी के आने के मार्ग की ओर देख रहे थे। उनका भी मन किसी के द्वारा देख लिए जाने की कल्पना से बहुत व्याकुल हो रहा था, तभी उनकी दृष्टि इधर ही आती बोधमयी पर पड़ी। वह झाड़ी से निकल कर थोड़ी देर के लिए इस प्रकार खड़े हो गए कि बोधमयी उन्हें देख ले। बोधमयी ने उन्हें देखा और उसकी गति तेज हो गई।

वह बहुत तेज चलकर सम्पादक जी के साथ झाड़ियों की ओट में हो गई। उसकी साँस तेज चलने से कम, घबराहट के कारण अधिक धौकनी की तरह चल रही थी। सम्पादक जी एकदम उससे सटे खड़े थे। पुरुष की आँच कितनी तेज होती है, उसने प्रथम बार अनुभव किया। उसके श्यामल कपोलों से पसीने की बूँदें उभर कर फिसलने लगीं। सम्पादक जी ने जेब से रूमाल निकाल कर उसके पसीने को इस कोमलता से पोंछा जैसे फूल की पंखुड़ी पर से मकरन्द पोंछ रहे हों और पूछा–"बुलाने पर पहले क्यों नहीं आई?"

सम्पादक जी के स्पर्श से वह सिर से पाँव तक काँप उठी। उसने लरजती आवाज में कहा–"डर लगता था।"

"किस चीज से?"

"पता नहीं।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"अब भी डर लग रहा है?"

'हाँ', उसने सिर नीचे किये कहा और उसकी आँख में आँसू आ गए।

सम्पादक जी ने उसकी सुडौल बाँहों पर अपना हाथ रखते हुए कहा–"नहीं बोध, डरो मत" और अपने दूसरे हाथ की ऊँगलियों से उसकी बड़ी-बड़ी बरौनियों पर लटके आँसू की बूँदों को पोंछ दिया। आँसू की बूँदों के भार से लटकी बरौनियाँ भारमुक्त होकर पुनः अपनी पूर्व स्थिति में आ गईं। उसी समय "ई ससुरी पगलाय गई है, अइसे नहीं मानेगी" नाले के पार से सुनाई दिया।

बोधमयी डर से चौंककर सम्पादक जी के सीने से अपनी पीठ लगाए दुबक गई। उसने आवाज की दिशा में देखा छोटई महाराज बार-बार लेहड़ से बाहर निकल जा रही एक कलोल बछिया को घेरकर पुनः लेहड़ में ले जाने का प्रयास कर रहे थे। उसे वास्तविकता का ज्ञान हुआ तो वह धीरे से हँस पड़ी, फिर अपने खड़े होने की स्थिति का ज्ञान होते ही वह शरमा कर सम्पादक जी से दूर जा खड़ी हो गई।

"बुरा न मानिएगा, उस झरने के पास चलकर बैठें, वहीं पर बातें करेंगे।"

"नहीं उतनी दूर नहीं"

"नहीं चलो" कहकर सम्पादक जी ने बोधमयी का हाथ खींचा।

"अरे रुकिए भी, अपनी कुल्हाड़ी तो ले लूँ" कहकर बोधमयी ने पास में पड़ी अपनी कुल्हाड़ी उठा ली।

"इसे तो मैंने देखा ही नहीं, इसे क्यों साथ लाई हो?"

"मेरे बचपन की साथी है। आदत पड़ गयी है" कहकर बोधमयी ने कुल्हाड़ी को अपनी पीठ पर लटकाया और सम्पादक जी के साथ झरने की ओर चल पड़ी।

"देखो भाई, बुरा न मानिएगा, मुझे कुल्हाड़ी से बड़ी जलन होने लगी है। दिन भर तुम्हारी पीठ पर लदी-लदी घूमती रहती है। एक मैं हूँ बात तक करने को तरस रहा हूँ।"

"आप किस काम से दिल्ली जा रहे हैं? मुझे नहीं बताइयेगा?"

"यही सब तो तुम्हें बताने को बुला रहा था। तुम थी कि मुँह फुलाए बैठी थी।"

"एक तो मुझे डर लग रहा था, दूसरे समरथी बुआ ने एक दिन मुझसे कहा कि ये शहराती बड़े चालाक होते हैं। काम का तो बहाना है, वह तुमसे शादी-वादी नहीं करेंगे।"

दोनों बात करते-करते झरने के पास पहुँच गए। एकदम झायँ-झायँ करता निर्जन स्थान। मद्धिम ध्वनि कर गिरता झरना। झरने के जलकुण्ड में अपने को गिरने से बचाता सन्ध्या का लाल सूरज। उससे कुछ दूर एक स्वच्छ विशाल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शिलाखण्ड जिस पर गिरते झरने का जल, फुहार के रूप में पड़ रहा था। सम्पादक जी बोधमयी का हाथ पकड़े उसी पर बैठ गए। समय का ध्यान दोनों में से किसी को भी नहीं रह गया।

"और तुमने समरथी की बातों पर विश्वास कर लिया?" सम्पादक जी ने बहुत गम्भीर लगभग रुआँसे स्वर में पूछा।

"ऊँहूँ" बोधमयी ने बच्चों की तरह ठुनक कर कहा।

सम्पादक जी के हृदय में बोधमयी का 'ऊँ' ॐ जैसा पवित्र शब्द ध्वनि करता हुआ उतर गया। वे बोधमयी की बगल में हाथ डाले उससे एकदम सट गए और एक-एक शब्द को अलग करते बोले "आज.......से.......तुम..... कभी....... भी......... मेरे........ऊपर.......अविश्वास नहीं....करो....गी" कहते समय उनका मुख हर शब्द के साथ क्रमश: बोधमयी के मुख की ओर झुकता चला गया और अन्तिम 'गी' शब्द को उन्होंने अपने होठों से बोधमयी के होंठ पर उच्चारित कर दिया। होंठ मिलते ही दोनों की चिर तृषा की लहरें हाहाकर कर बहुत दिनों से बँधे संयम के तटबन्ध पर क्रूर टक्करें देने लगीं। मन और आत्मा पर मूर्छना छा गई। उसी मूर्छना की स्थिति में शरीर के अंग अपनी चाहत की तलाश में आगे बढ़ने वाले थे कि "अरे वन देवता देख रहे हैं" कहती बोधमयी ने सम्पादक जी को अपने से परे ढकेल दिया। तभी बगल की झाड़ी से तेज घुरघराहट की आवाज आई। सम्पादक जी ने चौंक कर उधर देखा। बोधमयी उछल कर कुल्हाड़ी तान कर खड़ी हो गई। भालू का एक जोड़ा घुरघराता हुआ भागा। बोधमयी की आँखें उद्दीपन से अब भी लाल थीं, उसकी सांस अब भी तेज चल रही थी किन्तु अपने संयम पर उसका विश्वास बढ़ गया था जिसके कारण उसके चेहरे पर एक अपूर्व तेज झलकने लगा था।

अब सम्पादक जी को अपनी स्थिति का ज्ञान हुआ। उन्हें अपने इस असंयम पर बड़ी आत्मग्लानि होने लगी। वह सिर नीचे किए अपने स्थान पर संज्ञाशून्य-से बैठे रहे। बोधमयी को सम्पादक जी की लज्जा का भान हुआ। उसने उनके पास बैठते हुए पूछा—"आपने दिल्ली जाने का कारण नहीं बताया।"

"क्षमा कर दो बोध, मैं अपने असंयम पर बहुत लज्जित हूँ।"

"बताइए" बोधमयी ने अपनी हँसती आँखों से उनकी आँखों में झाँकते हुए कहा।

"आज मुझे बोध हुआ कि तुम्हारा डर अकारण नहीं था, बुरा न मानना, तुम मेरी बोध हो।"

"बता नहीं रहे हैं, बस एक ही बात को लेकर उसी के पीछे पड़ गए। जाइए" कहकर बोध ने मुँह फेर कर रूठने का अभिनय किया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"मेरी लज्जा मुझे कुछ बोलने नहीं दे रही है।"

"यह निगोड़ी लज्जा आपकी है कि मैं आपकी हूँ? मैं आपसे बोलने के लिए कह रही हूँ और आप लज्जा की बात मान रहे हैं। कोई भी औरत सौत को बर्दाश्त नहीं कर सकती" कहकर बोधमयी ने शरारती निग़ाहों से सम्पादक जी की ओर देखा।

"मात्र तुम मेरी हो बोध–बस तुम्हीं। अपने इस तीस वर्ष की उम्र का अधिकांश भाग मैंने हिंसा, प्रतिहिंसा को समर्पित कर दिया, तब मुझे शान्ति नहीं मिली। उसके पश्चात् पर सेवा को समर्पित किया तो आंशिक शान्ति मिली। आज अकस्मात् महासिन्धु में मेरा समर्पण हो गया। मेरा सारा अस्तित्व इस प्रकार विलीन हो गया कि मैं स्वयं को नहीं ढूँढ़ पा रहा हूँ। कहाँ गया क्रान्तिकारी सिद्धनाथ? कहाँ गयी अत्याचारों के खिलाफ़ लड़ने वाली उसकी तेजस्विता? एक वनवासी कन्या ने मुझे बता दिया कि तुम अपने को जो समझ रहे थे, वह नहीं थे। तुम वही हो जो आज अभी थे, एक कमजोर मनोबल के मानव" कहकर सम्पादक जी भोले बच्चे की तरह एक टक बोधमयी का मुख देखने लगे।

"पढ़े-लिखे होने के कारण आपके पास अपने भावों को बताने के लिए शब्द हैं। मैं आप के ज्ञान-समुद्र से मात्र आचमन भर के लिए जल ले पाई हूँ। उतने कम जल के छींटों का महासमुद्र पर कुछ असर नहीं पड़ सकता। इसलिए शब्दों के कम ज्ञान के कारण मैं अपने मन की बात सीधे कह सकती हूँ कि आप परम पवित्र हैं।"

"सच बोध!"

"हाँ।"

"हाँ नहीं, कहो हाँ सिद्धनाथ।"

"पति का नाम नहीं लेना चाहिए" कहकर बोधमयी लजा गई।

"यह सब गलत परम्पराएँ हैं"

"आप दिल्ली जाने वाली बात न बताकर फिर दूसरी बात बढ़ा रहे हैं।"

"अच्छा हाँ...दिल्ली की बात। दिल्ली में मेरे द्वारा बनाए गए एक संगठन का मुख्य कार्यालय है। मैं इस संगठन द्वारा देश में बढ़ते भ्रष्टाचार को रोकना चाहता हूँ। अगले महीने पूरे भारत में एक नोटिस चिपकानी है जिसमें यह सूचना होगी कि, किसी भी प्रकार का भ्रष्टाचार चाहे वह राजनैतिक हो, आर्थिक हो, धार्मिक हो अथवा सांस्कृतिक, उसे करने वाले चाहे जो हों, अपने को विरत कर लें अन्यथा एक लिखित चेतावनी के बाद यदि उसने भ्रष्टाचार बंद नहीं किया तो संगठन उस व्यक्ति को गोली मार देगा।"

"आदमियों की जान मारेंगे? यह तो बहुत बड़ा पाप होगा!" बोधमयी की आँखें दुःख और क्षोभ से सिकुड़ गईं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"आदमियों को नहीं, भ्रष्टाचारियों को मारा जाएगा बोध। भ्रष्टाचारी आदमियों की श्रेणी में रखा जाने लायक जीव नहीं है। समाज के ये मच्छर हैं, खटमल हैं, जो विभिन्न रोगों के जनक हैं। ये भ्रष्टाचारी अहिंसात्मक उपचार के अभ्यस्त हो चुके हैं। उसका असर इन पर नहीं होता। लाचार होकर हिंसात्मक उपचार करना ही पड़ेगा। बुद्ध ने, महात्मा गाँधी ने अहिंसात्मक उपचार कम नहीं किया। लेकिन उसका परिणाम क्या हुआ? बुद्ध ने जब अधिकांश लोगों को अहिंसक बना दिया तो हिंसा के बल पर सारे अरब राष्ट्र को मुस्लिम धर्म स्वीकार कराया गया। हलाकू और चंगेज खां को लोग मुसलमान समझते हैं, लेकिन इतिहास बताता है कि ये भ्रष्ट बौद्ध थे। आज गाँधी जी के बाद उनके नाम पर शासन करने वाले हिंसा से अहिंसा को समझा रहे हैं।"

"परन्तु हमारे ब्रह्मा तथास्तु जी तो हृदय-परिवर्तन की बात करते हैं।"

"बुरा न मानना, हृदय वालों के लिए करते हैं, परन्तु जिनके पास हृदय ही नहीं है, उनके लिए क्या होगा? अगर समझाने से हृदय-परिवर्तन हो जाता तो तुम क्या समझती हो कि मैं छोटई महाराज को पागल हो जाने देता या इन्द्राणी को इतने कष्ट भोगने देता?"

सम्पादक जी की बात सुनकर बोधमयी सोचने लगी। कुछ देर मौन रहने के बाद उसने कहा–"लेकिन मेरा मन कहता है कि हिंसा इस समस्या की दवा नहीं है।"

"मैं कहाँ कह रहा हूँ कि यह दवा है बल्कि यह जानवरों की तरह हिंसक रूप धारण कर चुके मानव का प्राथमिक उपचार है। जैसे आदमखोर हो चुके शेर, बाघ और भेड़ियों को मार देना न्याय है, उसी प्रकार आदमखोर हो चुके आदमी को भी...।"

"अगर आप के इस संगठन की आड़ में डाकू और हत्यारे नोटिस देकर लूटपाट करने लगें तो?" बोधमयी ने पूछा।

"सच बताना बोध, इतनी कम शिक्षा में तुममें इतनी सोच कहाँ से आ गई?"

"बंशी कक्का ने मंगल भैया को कुछ पढ़ाया था। भैया ने मुझे अक्षर ज्ञान करा दिया। इससे अधिक जानने की मेरी कोई इच्छा नहीं थी। एक दिन आपको अस्पताल में देखा। अनायास मेरा मन आप की ओर कुछ खिंचने-सा लगा। पता लगा आप अख़बार निकालते हैं। आप अख़बार में क्या लिखते हैं? अख़बार क्या होता है? जानने की इच्छा हुई। फिर अस्पताल से घर आई। यहाँ पर समरथी बुआ के हाथ में रामायण के सुन्दर काण्ड को देखा। उन्हीं के साथ उसे पढ़ने लगी। धीरे-धीरे मुझे पढ़ना आ गया। फिर एक दिन आप भलुआ आए। आपकी निग़ाहों

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

में मुझे अपनापन दिखाई दिया। मैंने पढ़ने पर और मन लगाया। जब भी आप की याद आती मेरा मन और अधिक पढ़ने के लिए छटपटाने लगा। एक दिन रात में मैं चोरी से ढेबरी जलाकर पढ़ रही थी कि मंगल भैया ने मेरी चोरी पकड़ ली'' कहकर बोधमयी हँसने लगी।

"बड़ी छुपी रुस्तम हो'' कहकर सिद्धनाथ ने उसकी ओर प्रशंसात्मक दृष्टि से देखा और फिर बोले–"डाकुओं के लूट-पाट के विषय में तुम पूछ रही थी, तो चोर-डाकुओं की ओर से हमें उतना ख़तरा नहीं है जितना कि सरकार में बैठे भ्रष्ट नेताओं से है। वे हमारे संगठन को बदनाम करने के लिए अपने आदमियों से हमारे नाम पर जनता में लूट-पाट कराएंगे। इन सभी बातों पर सोचा जा चुका है। प्रत्येक जनपद से, निष्ठावान, ईमानदार और सच्चरित्र नौजवान ही कार्यकर्ता के रूप में चुने जा रहे हैं। कार्य कठिन है इसमें सन्देह नहीं लेकिन जितना कठिन है उतना ही आवश्यक भी है। इसलिये इसे करना है।''

"अरे बड़ी देर हो गई, जल्दी चलिए नहीं तो लोग क्या सोचेंगे? कहती बोधमयी आर्यग्राम की ओर लगभग दौड़ती हुई चल पड़ी। सम्पादक जी ने दौड़कर उसका हाथ पकड़ लिया और साथ दौड़ते हुए आर्यग्राम के पास आकर खड़े हो गए।

आर्यग्राम के लोग सन्ध्या प्राणायाम के पश्चात् कतारबद्ध आँखें बन्द कर हाथ जोड़े "गायन्ति देवा: किल गीतकानि, धन्यास्तु ते भारत भूमि भागे'' गा रहे थे। बोधमयी धीरे से इन्द्राणी की बगल में हाथ जोड़कर गाने लगी। प्रार्थना ख़त्म होने के बाद इन्द्राणी ने बोधमयी की ओर मुस्करा कर देखा और कहा–"सम्पादक जी को आर्य जी खोज रहे थे।''

"हमको क्या पता?'' कहती हुई बोधमयी आगे बढ़ गई।

बरसात की पहली फुहार समय से कुछ पहले पड़ गई। आर्यग्राम भी बन कर तैयार हो गया। भोला महाराज ने लोगों के सहयोग से दस एकड़ में पपीते की रोपनी कर ली। वे वहीं पर एक छोटी-सी कुटिया बनाकर उसकी रखवाली करने लगे। गाँव में प्रकाश के लिए तथास्तु जी ने अपनी वैज्ञानिक विधा से ऊर्जा की व्यवस्था कर दी।

सम्पादक जी के नक्शे के अनुसार सारे आवास चतुर्भुज के आकर में दुछत्ती, कच्ची दीवालों के इस प्रकार बनाए गए हैं कि बस्ती में प्रवेश करने का एक ही बड़ा रास्ता है। बस्ती के मध्य में एक बड़ा मैदान, कालान्तर में वाटिका के रूप में विकसित करने के लिए छोड़ दिया गया है। उसमें कुछ पेड़-पौधे लगा दिए गए हैं। बस्ती के प्रवेश द्वार के सामने कुछ दूरी पर बच्चों की पाठशाला और

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एक छोटा दवाखाना बनाकर छोटी सड़क द्वारा बस्ती के मुख्य मार्ग से जोड़ दिया गया है। समय और साधन के अभाव में गोशाला, बस्ती के पीछे बहने वाले नाले के पास घास-फूस से छाकर बना दी गई है।

एक ही आकार-प्रकार के निर्मित हवादार दुछत्ती आवास एक-एक परिवार को अलग-अलग दे दिए गए। सभी लोग अपने-अपने आवासों को गोबर माटी से लिपाई करने में लग गए। इन्द्राणी को जब एक कमरे की लिपाई और करनी रह गई तो उसने बोधमयी से कहा–"अब तुम जाओ, सम्पादक जी अकेले आवास की लिपाई-पोताई कर रहे होंगे। आखिर तुम्हें भी तो उसमें रहना है। जाकर उनका हाथ बँटाओ।"

बोधमयी की इच्छा तो थी किन्तु प्रगट रूप में उसने वहाँ न जाने की इच्छा जताई। इन्द्राणी ने ठेल कर उसे वहाँ भेज दिया। जब बोधमयी वहाँ पहुँची तो उसने देखा सम्पादक जी तथा तथास्तु जी हाथ-मुँह में गोबर माटी पोते दीवालों की बेतुकी लिपाई करने में लगे थे। उसे हँसी आ गई। तथास्तु जी ने मुड़कर उसकी ओर देखा और कहा–"अच्छा यह बताओ कि हमारे लीपने में क्या कमी है कि तुम लोगों जैसी चिकनी लिपाई नहीं कर पा रहे हैं?"

"आप लोग रहने दीजिए मैं कर लूँगी, अभी भौजी भी आ रही हैं।"

"नहीं जरा बताओ समझ तो लूँ।"

बोधमयी ने सने हुए माटी को उठाया और बहुत साफ लिपाई करने लगी। तथास्तु जी ने भी उसकी नकल की। पहले से अच्छा तो बना किन्तु बोधमयी जैसा नहीं बन पाया।

"बुरा न मानिएगा, इसमें भी अभ्यास की ज़रूरत है।"

"हाँ भाई, अब तो तुम लोग इसे पूरा कर लो" कहकर तथास्तु जी नाले की तरफ स्नान करने चले गए।

तथास्तु जी के वहां से जाते ही सम्पादक जी ने पूछा–"बोध, काम तो पूरा हो गया। अब मैं दिल्ली जाऊँ?"

दीवाल लीपते बोधमयी के हाथ रुक गए। वह कुछ देर दीवाल की ओर मुँह किए खड़ी रही। सम्पादक जी की ओर मुड़ी तो सप्रयास रोके गए आँसुओं के कारण उसकी आँखें लाल हो गई थीं। उसने पूछा–"कब जाएंगे?"

"सोच रहा हूँ कल चला जाऊँ।"

"आर्य जी के साथ मंगल भैया को गए एक सप्ताह हो गया वे अभी तक नहीं आए। उनके आने के बाद चले जाइएगा।" बोधमयी का स्वर भारी था।

"बुरा न मानना, एक ओर कर्त्तव्यबोध मुझे खींच रहा है, दूसरी ओर आर्य-ग्राम की बोध मुझे बाँधे हुए है।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"भैया के आने के बाद जाइए, लेकिन जल्दी लौटिएगा। मेरा जी नहीं लगेगा।"

"कवने तरफ हो, केतनी लिपाई हुई" सम्पादक जी के कुछ उत्तर देने के पहले ही इन्द्राणी ने घर में प्रवेश किया तो देखा कि सम्पादक जी बोधमयी को पकड़ाने के लिए हाथ में गोबर-माटी की लोई लिए खड़े हैं और बोधमयी दीवाल लीप रही है।

"अच्छा भाई, अब तुम दो हो गई, मुझे छुट्टी दो। आज जरा दुद्धी होता आऊँ," कहते सम्पादक जी बाहर आए और नाले में स्नान कर दुद्धी चले गए।

शाम को जब वह लौटे तो उनके हाथ में एक अख़बार था जिसमें समाचार छपा था "औड़ी मठ के बाबा की कुल्हाड़ी से हत्या। हत्यारे का पता लगाने में पुलिस असफल। हत्या के ढंग को पढ़कर स्पष्ट लग रहा था कि किसी आदिवासी ने ही उसकी हत्या की है।"

इस समाचार को जब आर्यग्राम के लोगों ने सुना तो सभी बहुत प्रसन्न हुए। "उसके लिए इहै दवा थी। 'हनले पर हनै, दोष पाप न गनै' उसने बहुत से लोगों को हना था। जिसने भी उसे मारा उसे पुन्न मिलेगा।" इस प्रकार की कितनी बातें करते-कराते लोग रात्रि भोजन करके सो गए।

मंगल आर्य जी को चोपन तक छोड़कर लौटने की बात कहकर गया था। इन्द्राणी और बोधमयी अभी तक उसके न आने से बहुत ही चिन्तित थीं। उन्हें नींद नहीं आ रही थी।

बोधमयी अपने भाई के जल्दी ही सकुशल लौटने की प्रार्थना कर रही थी। परन्तु जैसे ही उसे याद आता कि भैया के आने के बाद वह चले जाएंगे तो उसका जी धक् से कर उठता। अपनी सोच से ऊबकर वह करवट लेकर सोने का प्रयास करने लगी। तभी उसे लगा कि सहन दरवाजे की कुण्डी कोई खटखटा रहा है। उसने पास में सोई इन्द्राणी को हाथ बढ़ाकर कर हिलाया–"किसी ने दरवाजा खटखटाया है" वह धीरे से बोली।

"हाँ मुझे भी सुनाई पड़ा है" कहकर इन्द्राणी उठकर बैठ गई।

"सुन नहीं रही हो, दरवाजा खोलो" पुरुष स्वर सुनाई पड़ा।

"भैया आ गए" कहती बोधमयी ने दौड़कर दरवाजा खोल दिया।

मंगल ने घर में घुसते ही–"मैं खाना खा चुका हूँ, बहुत थका हूँ, बिस्तर लगा दो सोऊँगा।" कहता कमरे के सामने वाले ओसारे में जाकर खड़ा हो गया।

इन्द्राणी ने वहीं पर उसका बिस्तर लगा दिया और धीमें स्वर में पूछा–"पैर दबा दूँ?"

"नहीं" कहता मंगल चारपाई पर लेट गया और थोड़ी देर में ही खर्राटे भरने लगा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोर का मौसम बड़ा सुहाना था। आकाश में काले बादल गर्जन करते घिर रहे थे। हवा चौवइया चल रही थी जिससे बादल चारों दिशाओं में रह-रह कर भाग रहे थे। "यह हवा रुकेगी तो बरसात होगी" सोचते हुए सम्पादक जी हाल ही में लिपे-पुते अपने आवास से बाहर निकले तो देखा कि मंगल नाले की ओर जा रहा था। उन्होंने दरवाजे पर से ही उसे पुकारा और स्वयं आगे बढ़कर उसके साथ नाले की ओर चल पड़े। रास्ते में उन्होंने मंगल से कहा–"प्रार्थना सभा के बाद मुझसे मिलना"।

प्रार्थना सभा के बाद मंगल उनसे मिला तो वे उसे लेकर झरने की ओर चल पड़े। एकान्त में एक पेड़ की छाया में बैठकर मंगल को भी अपनी बगल में बैठाया और कहा–"मठ के बाबा की हत्या हो गई, सुना?"

"नहीं, मैंने तो नहीं सुना, मंगल ने चौंके बिना साधारण ढंग से कहा।

"इतने दिनों तक कहाँ थे?"

"मिर्जापुर"

"आर्य साहब के यहाँ?"

"नहीं, एक साथी के यहाँ।"

"मिर्जापुर में कहाँ है साथी का घर?"

मंगल कुछ हिचकिचाया फिर बोला-'विन्ध्याचल'।

बिजली कड़की जिसकी गूँज पहाड़ियों में देर तक होती रही। लगा अब जल्द ही बरसात शुरू हो जाएगी। मंगल ने आकाश की ओर देखा और उठने लगा। सम्पादक जी ने उसका हाथ पकड़ कर बैठा लिया और हाथ पकड़े ही बोले–"देखो मंगल, मैं तुम्हारा बहनोई हूँ। सम्बन्ध के नाम पर एक तुम्हीं मेरे हो। इसलिए तुमसे अधिक स्नेह होना स्वाभाविक है। मुझसे झूठ मत बोलना। बाबा की हत्या तुमने ही की है न? बोलो......सच बोलो।"

मंगल कुछ देर तक सिर झुकाए बैठा रहा। उसने सिर उठाकर सम्पादक जी की ओर देखा और मन्द स्वर में कहा–"हाँ।"

"जब तुम इतने दिनों तक घर नहीं आए तभी मुझे तुम्हारे ऊपर शक हो गया था। खैर जो हुआ सो हुआ परन्तु यह हुआ कैसे?"

"मैं उसकी हत्या करने नहीं गया था।"

"फिर कैसे हो गई?"

"आर्य जी को चोपन छोड़कर मैं सीधे यहीं लौटना चाहता था। लेकिन जब बाजार से गुजरने लगा तो एक आदमी अपने साथियों से कह रहा था कि आज कल पिपरी में बड़ा तावदार दरोगा आया है। उसने किसी के सुराग देने पर बाबा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सूरज राम की आती गाड़ी को रोककर उसकी तलाशी ली और जीप में बैठे उनके आदमियों के पास से बिना लाइसेंस के दो अंगरेजी रिवाल्वरों को पकड़ लिया। बाबा ने तड़क-भड़क से लेकर काफी रुपए पैसे तक की बात की। लेकिन दरोगा ने उनके दो आदमियों को जेल भेज दिया और जीप थाने में बन्द कर दी। बाबा ने तैश में आकर देख लेने की धमकी दी। इस पर उसने बाबा को 'हरामखोर, मैं तुम्हारी सारी करतूत सुन चुका हूँ। तुम बाद में देखोगे, मैं अभी देख लेता हूँ' कहकर सरे आम हंटर से इतनी पिटाई की कि बाबा गिड़गिड़ाने लगा। सभी पुलिस वालों को तुमने बेईमान ही समझ लिया है? क्या कहूँ, यह विभाग ही इतना मादरचोद है नहीं तो तुम्हारे जैसे लोग.....अपने घर हल जोतते। अब जाओ हरेन्द्र राय की वर्दी उतरवा लेना, मैं भी राय हूँ' कहकर उसने बाबा को छोड़ दिया। कोई चूँ तक नहीं बोला। यह सुनकर मैंने सोचा जब गुरु ही लात खा गया तो छोटई दद्दा की जमीन पर कब्जा करने वाला उनका चेला भी भाग गया होगा। यही देखने मैं मठ पर पहुँचा। मठ पर पहुँचने में मुझे बहुत देर हो गई। सोचा आज यहीं रात बिता कर सुबह घर चलूँगा। यही सोचकर मठ में घुसा तो बगल के कमरे से किसी लड़की की आवाज आई–"नाहीं, बाबा तोहार गोड़ परत हई, हमार धरम मत खराब करऽ।" फिर ऐसी आवाज आने लगी जैसे दो आदमी आपस में हाथापाई कर रहे हों। साथ-साथ लड़की के रोने की आवाज आ रही थी। मैंने खिड़की की झिरी से भीतर देखा। बाबा जबरदस्ती उस लड़की को नंगी करने का प्रयास कर रहा था। नशे में धुत्त होने के कारण लड़की के हल्के-धक्के से कभी-कभी गिर भी पड़ता था। लड़की रह-रह कर घिघिया रही थी। लड़की की आवाज मुझे बोधमयी-सी लगी। हालांकि मैं जानता था कि बोधमयी नहीं है फिर भी मेरे ऊपर खून चढ़ गया। मैंने अंगोछे से अपना मुँह बाँधा और दौड़ कर कमरे के पास पहुँचा जिसका दरवाजा भेंड़ा हुआ था। पास में ही लकड़ी के गट्ठर के पास एक कुल्हाड़ी जो शायद उसी लड़की की थी, पड़ी मिल गई। उसे उठाकर बाबा के सिर पर एक हाथ मारा, वह रूई के तोशक की तरह बिना कोई शब्द मुँह से निकाले ढेर हो गया। मैं इतने गुस्से में था कि गिरे हुए बाबा का सिर कब मैंने काट कर उसके धड़ से अलग कर दिया मुझे पता नहीं। जब लड़की बदहवास-सी अपने कपड़ों को समेटती बाहर भागने लगी तब मुझे होश आया। मैं भी कुल्हाड़ी वहीं फेंककर घने जंगल की तरफ भागता चला गया। मारे डर के इधर नहीं आ रही था कि कहीं पुलिस वाले न पकड़ लें। कल डरते-डरते घर आया हूँ।"

"बुरा न मानना, तुमने वही किया है, जिसे ऐसे अवसर पर हर वह मनुष्य कर सकता है जिसमें थोड़ी-सी मनुष्यता शेष है।"

"मैंने तो समझा था कि आप बुरा मानेंगे।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"किसी निरीह की सुरक्षा के लिए यदि किसी दुष्ट की हत्या कर दी जाय तो इसमें कोई बुराई नहीं है। परन्तु महत् उद्देश्य की पूर्ति के लिए की गई हत्या की पवित्रता को यदि जनता नहीं जान पाती तो इससे सीमित लाभ ही होता है।"

"अब क्या करूँ?"

"मस्ती से काम करो और भूल जाओ कि तुमने कुछ किया है। हाँ मैं अपने दिल्ली कार्यालय का पता तुम्हें दे रहा हूँ। इसे अपने पहने हुए इन तीन चार ताँबे के जन्तरों में से एक में भर कर पहन लो। जब पुलिस का ख़तरा देखना तब दिल्ली चले आना। मैं मिलूँ या नहीं मिलूँ, कार्यालय पर जो भी मिले उसे मेरा लिखा देना। सारी व्यवस्था हो जाएगी। और हाँ, अगर पुलिस तुम्हें पकड़ ले तो अवसर देखकर इस पता भरे जन्तर को कहीं तोड़कर फेंक देना। वैसे मुझे आशा है पुलिस तुम्हारा सुराग नहीं पाएगी। अगर पा जाती है तो घबराना मत, हम सब देख लेंगे।"

"आप दिल्ली कब जा रहे हैं?"

"बोधमयी से मेरा वादा था कि तुम्हारे आने के बाद ही मैं दिल्ली चला जाऊँगा। अब तुम आ गए हो, कल मैं चला जाऊँगा।"

"लेकिन जल्दी लौटिएगा।"

"मैं आधुनिक विचारों का होते हुए भी अपने अनुभव से ईश्वर पर विश्वास करने वाला हो गया हूँ। वह मुझे जल्दी नहीं तो ठीक समय पर अवश्य यहाँ पहुँचा देगा।" कहकर सम्पादक जी उठे और मंगल के साथ आर्यग्राम की ओर चल पड़े। रास्ते में उन्होंने मंगल की ओर मुस्कराते हुए देखकर पूछा–"मैं देख रहा हूँ कि यहाँ की शिक्षा से तुम लोगों की हिन्दी भाषा बहुत अच्छी हो गई है। अब पहले जैसी भाषा का प्रयोग नहीं करते।"

"नहीं, पढ़े-लिखों के साथ नहीं करता।"

बात करते-करते दोनों जैसे ही आर्यग्राम पहुँचे घिरे बादल घनघोर गर्जना के साथ बरस पड़े। एक बार बरखा का संयम क्या टूटा कि वह सारी रात बिजली के नयन कटाक्ष मारती अपनी बूँदों की पायल आर्यग्राम के आँगन में बजाती-झूमती रही। उसी के साथ बोधमयी का मन भी नाचता रहा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

२५. विदेशियों का आगमन

सम्पादक जी को गए एक महीना हो गया। पाँच दिनों से भादो बरस रहा है। आर्यग्राम के खेतों में धान की फसल हवा के झोंके से लचक-लचक उठती है। नाले पर बनाई गई बन्धियों में पानी लबालब भरा है जिससे खेतों में पानी देने की पूरी व्यवस्था हो गई। भोला महाराज द्वारा रक्षित पपीते के पेड़ अच्छी खाद और पानी पाने के कारण हृष्ट-पुष्ट और हरे-भरे हो गए हैं। दो एकड़ में आम के पौधे भी लग गए हैं।

आर्यग्राम के मध्य में पड़ने वाले मैदान में क्यारियाँ बनाकर लगाए गए बरसाती फूलों के पौधे अब फूल रहे हैं। शाम को जूही और रात को रातरानी की गन्ध सारे आर्यग्राम को महक से भर देती है। यह बागवानी बोधमयी और समरथी की देखरेख में है।

तथास्तु जी के पास अब पैसा नहीं रह गया है। कातिक की बुवाई के लिए डींजल और बीज की व्यवस्था किसी प्रकार की जा चुकी है। सभी के लिए भण्डारे में पर्याप्त अन्न भी नहीं रह गया है। तथास्तु जी सभी ग्रामवासियों के साथ एक ही समय का भोजन करने लगे हैं। एक समय के भोजन की कटौती से कोई दुःखी नहीं है। इसके विपरीत सभी के चेहरे पर बड़े उद्देश्य की प्राप्ति के लिए किये जा रहे संघर्ष के बोध का एक अपूर्व तेज उभर आया है।

पन्द्रह एकड़ तैयार मक्के की फसल से आशा है कि कुछ पैसा मिल जाएगा। फसल तो बहुत अच्छी है किन्तु बनैले सूअर यदा-कदा काफी नुकसान कर दे रहे हैं। फसल की सुरक्षा के लिए फसल के चारों कोनों पर तथा मध्य में मचान बाँध दिये गये हैं। बंशी, फन्नू, मंगल तथा कल्लू कोने के मचानों पर और भोला महाराज मध्य के मचान पर बैठ सारी रात तीर-धनुष लिए खेत की रखवाली करने में जुटे हैं। पुरुष वर्ग रात की रखवाली करके गाँव चला आता है तब दिन में बोधमयी, इन्द्राणी, बंशी की पत्नी दुलारी और समरथी खेतों की रखवाली करने आ जाती हैं। मक्के की बालियों की सुआपाखी साड़ियाँ अब हल्की पीली-धानी हो चली हैं। जंगली कउओं से सुरक्षा के लिए महिलाएँ मचानों पर बैठी खाली कनस्तर रुक-रुक कर बजाती हा हू करती रहती हैं।

बोधमयी फसल के मध्य में बंधे मचान पर बैठी मक्के की बालियों को एक टक देखती अपने अतीत में ऐसी खोई कि आँखे खुली रहने पर भी उसके सामने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

से मक्के की बालियाँ लुप्त हो गईं। क्रेशर पर सेठ की लोलुप आँखें, अस्पताल में उसके अनछुए अंग पर अनजाने हाथों का स्पर्श और उसके बप्पा की आकृति सब एक-एक कर उसके मानस-पटल पर आने लगे। बप्पा की आकृति थोड़ी देर के लिए ठहर गई। बड़ा दुःख झेला बप्पा ने। उसकी आँखों से दो बूँद आँसू टपक गए। 'बुरा न मानना,' कहते सम्पादक जी कन्धे पर झोला लटकाए खड़े हो गए। बोधमयी के चेहरे पर एक स्मित रेखा उभरी जो विषाद में बदल गई। पता नहीं क्यों मैं पहली दृष्टि में ही उन्हें चाहने लगी थी। वह जब भी मेरी ओर देखते तो मुझे ऐसा लगता जैसे कह रहे हों "बुधनी, पढ़-लिख कर मेरे लायक बन जाओ।" उनकी आँखों में मुझे ऐसी प्रेरणा मिली कि बंशी कक्का के यहाँ से मार्क्स, लोहिया, गांधी जी आदि सभी के विषय में जो पुस्तक मिली उन सबको पढ़ गई। तब मैं पढ़ती तो ज़रूर थी पर कुछ ठीक समझ में नहीं आता था। एक दिन मंगल भैया ने रात में पढ़ते समय मुझे देख लिया तो कहा-"वाह रे मेरी बहिनियाँ, मस्टराइन बनेगी क्या?" अपनी चोरी पकड़ी जाने से मैं एकदम सकपका गई थी। तुरन्त बहाना कर दिया था कि नींद नहीं आ रही थी इसलिए बंशी कक्का की दी हुई किताब से फोटू देख रही हूँ। फोटू का नाम सुनते ही मंगल भैया भी उसे देखने लगे। सब क्रान्तिकारियों के फोटो थे।

"रानी जी, जब तैयार बाल में कउए चोंच मार देंगे तब तुम्हारे अगोरने से क्या फायदा?" हँसती हुई इन्द्राणी ने बोधमयी के मचान को नीचे से हिलाया।

"आँ" कहकर बोधमयी ने नीचे की ओर झाँका और कहा-"झपकी आ गई थी।"

"मैं भी दिन गिन रही हूँ, अब समय नजदीक आ गया है, फिर झपकी नहीं आएगी।" उसका इशारा सम्पादक जी की ओर था।

"हटो, तुम्हारी यही चाल मुझे अच्छी नहीं लगती" बोधमयी ने आँखें तरेरीं।

"मन में भावै, मुड़ी हिलावै, यह लो माठा आ गया है, पी लो।" हँसती इन्द्राणी ने मचान पर लोटे का माठा उचकाया। बोधमयी ने लोटा पकड़ा और मचान पर एक ओर रख दिया।

"कल से बाजार भेजने के लिए मक्का तोड़ा जाएगा। उसे लेकर तुम्हारे भैया जाएंगे। हो सकता है सम्पादक जी का कोई पत्र आया हो।" इन्द्राणी ने कहा।

बोधमयी तुनक कर बोली-"पत्र आए चाहे न आए" मन में कहा-"लेकिन वह आ जाएं।"

"बाप रे, अच्छी बात कहने पर भी डाँट सुनने को मिल रही है। राम दोहाई जो आज से कुछ कहूँ" कहकर इन्द्राणी ने अपने दोनों कान पकड़े और हँसती हुई चली गई।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दूसरे दिन मक्का बेचकर जब मंगल शाम को आर्यग्राम लौटा तो उसके ट्रैक्टर से शुकदेव दास आर्य के साथ दो विदेशी दम्पत्ति भी उतरे। विदेशियों में एक बीस-पच्चीस वर्ष की लड़की, जो सम्भवतः अपने पति के साथ आई थी, जल्दी से जल्दी सब कुछ जान लेने के लिए उतावली दिखाई पड़ रही थी। उसने वहाँ पर बने आवासों की ओर हाथ उठाकर आर्य जी से अंग्रेजी में पूछा–"क्या आप लोग इसी में रहते हैं?"

आर्य जी के हाँ कहने पर वह इस घर, उस घर में घुस कर आवासों को देखने लगी। उसी समय तथास्तु जी वहाँ टहलते हुए आ गए। उन्हें देखकर दोनों विदेशी पुरुषों ने पहचान लिया और गर्मजोशी से हाथ मिलाया और अपने साथ आई महिलाओं का अपनी पत्नी के रूप में परिचय कराया। वह अति उत्सुक महिला यह जानने पर कि यह तथास्तु जी हैं एकदम से उनसे लिपट गई और अपनी भाषा में "आप ही हैं वैज्ञानिक तथास्तु योगी, तथास्तु समाज सुधारक तथास्तु" कहती हुई उनका चुम्बन लेने लगी। इसे देखकर बंशी की माँ "हट बहिनी, ई तो बेसवो से बढ़ गई है" कहती हुई वहाँ से चली गई। वहाँ पर खड़ी महिलाएँ शर्म से लाल हो गईं।

तथास्तु जी ने इस स्थिति को समझा और उस महिला को उन्होंने उसकी भाषा में भारतीय परम्परा और सभ्यता के विषय में हँसते हुए समझाया। उनकी बात को सुनकर महिला को अपनी गलती का एहसास हुआ, तब उसने झुककर तथास्तु जी के पैर छुए।

सन्ध्या-प्रार्थना के बाद एक जोड़े के रहने की व्यवस्था मंगल के यहाँ और दूसरे की भोला महाराज के यहाँ कर दी गई ताकि वे यहाँ के रहन-सहन, रस्मो-रिवाज और भाषा को जल्दी सीख सकें। ये लोग आर्यग्राम के स्थाई निवासी बनने के लिए आए हैं, यह जानकर आर्य जी ने तथास्तु जी को खबर दी कि "आप के इस प्रयोग को सुनकर मेरे दो मुस्लिम मित्र भी यहाँ आने वाले हैं।"

इस समाचार को सुनकर तथास्तु जी को बड़ा आत्म-सन्तोष हुआ। उन्होंने लम्बी साँस खींच कर कहा–"जगत्-नियन्ता शायद मेरे सपने को साकार करना चाहता है। मुझे सम्पादक जी की कमी बहुत खल रही है। अगर वह आ जाते तो बड़ा बल मिलता।"

"दिल्ली में मेरी मुलाकात सम्पादक जी से हुई थी" आर्य जी ने कहा।

"उनका पता क्या है?"

"यह तो मुझे नहीं मालूम। वह 'विश्व लोकगीत' कार्यक्रम की मीटिंग में मुझसे मिले थे। इतने व्यस्त थे कि मुझसे बात तक नहीं कर पाए। जाते-जाते उन्होंने मुझसे कहा–"मिनर्वा होटल में मिलूँगा।" वहाँ गया तो मैनेजर ने उनका

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एक पत्र दिया जिसमें लिखा था 'क्षमा, अति आवश्यक कार्य से जा रहा हूँ। यहीं रुकता हूँ। आर्य ग्राम के लोगों को यथोचित मेरा प्रणाम-प्यार निवेदन करें।''

"बोधमयी को बता दें, आजकल बहुत उदास रहती है'' तथास्तु जी ने ऐसे कहा जैसे कोई बूढ़ा बाप अपनी दुलारी बेटी की उदासी से दुःखी हो।

"कल मंगल और बोधमयी को समाचार दूँगा और छब्बीस जनवरी को दिल्ली में करमा गाने के विषय में उनसे बात करूँगा।''

"क्या आप विश्व लोकगीत कार्यक्रम में हिस्सेदारी कर रहे हैं?''

"मैं इस क्षेत्र की लोक-भाषा और लोक साहित्य का भारतीय स्तर पर स्थापित साहित्यकार हूँ। सरकार ने इधर के लोकगीतों को प्रस्तुत करने की जिम्मेदारी मुझे सौंपी है।''

"अभी तो छब्बीस जनवरी चार-पाँच महीने बाद आएगी। इतने दिनों में आप करमा लोकगीत की अच्छी तैयारी भी करा लेंगे और हो सकता है इसी बीच सम्पादक जी भी आ जायँ।''

"यहाँ पर अधिक तैयारी नहीं करानी है। छब्बीस जनवरी के पन्द्रह दिन पहले मंगल और बोधमयी को लेकर दिल्ली पहुँच जाना है। वहाँ पर मंगल और बोधमयी स्टेज कलाकार लड़के-लड़कियों को करमा गाना सिखा देंगे। वही स्टेज कलाकार लड़के-लड़कियाँ जंगली वेश-भूषा में छब्बीस जनवरी को मंगल और बोधमयी के साथ करमा गाएँगे।''

"देश की राजधानी दिल्ली में छब्बीस जनवरी को भी मिलावट?'' तथास्तु जी ने मुस्करा कर कहा।

आर्य जी तथास्तु जी की बात से कुछ झेंप गए। फिर सम्भल कर बोले– "इस कार्यक्रम के लिए पैसा तो बहुत मिलता है लेकिन इसके प्रायोजक बड़ी-बड़ी राजनैतिक पहुँच वाले ही बनाए जाते हैं जिन्हें लोकभाषा, लोक संस्कृति आदि का कोई ज्ञान नहीं होता और न उन्हें इससे कुछ लेना-देना ही है। वे हम जैसे लोगों को कोई अहमियत नहीं देते। उनका उद्देश्य इस कार्यक्रम से अधिक से अधिक पैसा कमाना रहता है। इसलिए हम जैसों को थोड़ा-बहुत पैसा देकर कार्यक्रम को कम पैसे में सफल बनाने की रूपरेखा बना हमें सौंप देते हैं। उसी रूपरेखा के अनुसार हमें ऐसा करना पड़ रहा है। क्या करूँ? इन्हीं के माध्यम से हम लोगों को अपनी किताबें भी बिकवानी रहती हैं।''

"क्या करेंगे, जब तक यह व्यवस्था है आप को व्यवस्था के एक छोटे पुर्जे की भाँति बड़े पुर्जे के साथ घूमना ही पड़ेगा। काफी रात हो गई, हमारे विदेशी मित्र सो गए होंगे। चलिए सोया जाय।'' कहकर तथास्तु जी सोने चले गए। आर्य जी भी अपने आवास में जाकर सो गए।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दूसरे दिन सुबह की प्रार्थना के बाद जब शुकदेव जी बोधमयी और मंगल को सम्पादक जी का समाचार देने पहुँचे तो देखा कि मंगल खेत पर जाने को तैयार है। शुकदेव जी को देखकर मंगल ने उनके ऊपर प्रश्नात्मक दृष्टि डाली।

"मंगल, मैं एक शुभ समाचार लेकर आया हूँ। बोधमयी कहाँ है?" शुकदेव जी ने ऊँची आवाज में कहा।

घर के भीतर से ही बोधमयी ने शुकदेव जी की पूरी बात सुन ली थी। मारे ख़ुशी के रुक-रुक कर उसका हृदय इस प्रकार उछल-उछल धड़का कि उसे लगा जैसे उसका हृदय सीना तोड़कर बाहर आ जाएगा। फिर सामान्य हो कर वह 'मंगल भैया, खेत पर हम लोगों का कोई काम हो तो बताते जाइए" कहती दरवाजे पर आकर खड़ी हो गई।

"कौन-सा समाचार लाए हैं?" कहता मंगल रुक गया और बोधमयी की ओर देखकर बोला "कोई समाचार लाए हैं, तू भी सुन ले।"

बोधमयी के तो रोम-रोम समाचार सुनने के लिए कान बन कर खड़े हो गए थे। उसने पूछा–"कौन-सा समाचार?"

शुकदेव जी ने सम्पादक जी का समाचार आद्योपांत सुना दिया।

"इतनी कौन-सी जल्दी थी कि दो मिनट हाल-चाल भी नहीं कर पाए?" कहता मंगल खेत की ओर चला गया। मंगल के जाने के बाद बोधमयी ने आँख नीचे किए धीरे से पूछा–"यहाँ से दुबले तो नहीं हो गए हैं?"

शुकदेव जी के यह बताने पर कि वह काफी स्वस्थ और प्रसन्न दिखाई पड़ते थे, बोधमयी काफी प्रसन्न हुई। शुकदेव जी ने छब्बीस जनवरी के कार्यक्रम के विषय में बात की और पूछा–"क्या तुम वहाँ चलना चाहोगी?"

शुकदेव जी के प्रश्न को सुनकर बोधमयी कुछ देर तक मौन रही–'शुकदेव जी कोई बाहरी आदमी तो हैं नहीं, फिर भैया भी साथ रहेंगे, वहीं पर वह भी हैं। चौदह-पन्द्रह दिन वहाँ रहूँगी तो हो सकता है किसी दिन मुलाकात हो जाय' सोचकर उसने कहा–"भैया से बात कर लीजिए।"

"ठीक है, मंगल को मैं मना लूँगा, तुम तैयार रहना" कहकर शुकदेव जी तथास्तु जी के पास लौट गए।

यहाँ पर आकर उन्होंने देखा, दोनों विदेशी दम्पति तथास्तु जी के पास बैठे हैं और "आज के वैज्ञानिकों के अनुसंधान का विषय जड़ पदार्थ है लेकिन हमारे महर्षि चेतन जगत् के अनुसंधानकर्ता थे। आज पश्चिमी देश पदार्थवादी अनुसंधान कर्ता होने के कारण भौतिक सुविधाओं की दृष्टि से जितने आगे हैं, उनकी आत्मा, उनकी मानवीय चेतना उतनी ही पीछे है।" तथास्तु जी कह रहे थे।

"मनुष्य ईश्वर की सबसे उत्कृष्ट रचना है। आज का वैज्ञानिक यदि उसे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सृष्टि के सारे सुख-भोगों को उपलब्ध करा रहा है तो मैं समझता हूँ कि वह कोई अपराध नहीं कर रहा है।'' समीप बैठे थामस ने कहा।

''मेरे कहने का तात्पर्य यह नहीं था कि आज के वैज्ञानिक आविष्कार निरर्थक हैं। निरर्थक नहीं, हाँ एकांगी अवश्य हैं। क्योंकि यह दिखाई पड़ने वाला शरीर जिसे हम अन्नमय कोश कहते हैं, मात्र उसी के सुख के लिए सारे शोध हो रहे हैं। परन्तु इसके भीतर जो चार सूक्ष्म शरीर और हैं उन पर ध्यान नहीं दिया गया। इससे समाज में विकृतियाँ आईं। समाज मात्र मनुष्य के अन्नमय कोश से ही नहीं बना है। इसके निर्माण में मनुष्य के मन का सबसे बड़ा योगदान है। यदि मन ही संतुलित और परिष्कृत नहीं होगा तो सन्तुलित समाज की कल्पना व्यर्थ है। जहाँ असन्तुलन होगा वहाँ दुःख भी रहेगा। इसलिए इस दिशा में भी वैज्ञानिकों का ध्यान जाना चाहिए। हमारे महर्षियों ने ऐसी क्रियाओं का अनुसन्धान किया है जिन्हें करने से मनुष्य का मन इस स्तर तक सन्तुलित हो जाता है कि वह 'तेन त्यक्तेन भूंजीथा:' (त्यागपूर्वकर भोग करने) की स्थिति में आ जाता है। भोगों के प्रति उसकी आसक्ति नहीं रह जाती।''

''तब तो जानवर मनुष्य से अच्छे हैं क्योंकि ये भोग या सम्भोग के लिए किसी एक पर आसक्त नहीं होते।'' थामस की पत्नी ने कहा।

''आप यहाँ भूल रही हैं, क्योंकि भोग किसी स्थूल का नहीं किया जाता बल्कि स्थूल के माध्यम से प्राप्त होने वाले आनन्द का किया जाता है। जो स्थूल नहीं है, उसे प्राप्त होने वाले आनन्द के प्रति कोई आसक्ति न हो, महर्षि इसकी बात करते हैं। आपने सम्भोग की बात कही तो मैं बताना चाहता हूँ कि हमारे यहाँ यदि योग के चौरासी आसन हैं तो सम्भोग के भी चौरासी आसन हैं। इस योग, भोग के आसनों का समन्वय तभी होगा जब आदमी त्यागपूर्वक भोग करे।''

''लेकिन आपके यहाँ तो ब्रह्मचर्य को अधिक महत्व दिया गया है?'' जेम्स की पत्नी ने पूछा।

''महत्व नहीं दिया गया है बल्कि महत्व है। क्योंकि आध्यात्मिक प्रयोगशाला में शोधकर्ताओं के लिए ब्रह्मचर्य एक आवश्यक औजार है। इसके बिना वह अपनी प्रयोगशाला में कुछ नहीं कर सकता, उच्चतम शोध नहीं कर सकता।''

''आपके यहाँ योगाभ्यास करने वाले क्या सभी लोग ब्रह्मचारी होते हैं?'' जेम्स ने पूछा।

''विश्वविद्यालय के सारे छात्र तो शोधछात्र होते नहीं, तो क्या जो शोध की क्षमता नहीं रखते उन्हें विश्वविद्यालय में प्रवेश की सुविधा न दी जाय? जो छात्र जितनी क्षमता रखता है, उसको उतना पढ़ने का अधिकार तो दिया ही जाना चाहिए। क्यों थामस?'' तथास्तु जी ने थामस की ओर देखकर पूछा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"अगर ऐसा होता तो शोध छात्रथामस से मेरी शादी ही नहीं हो पाती। जिस विश्वविद्यालय में थामस शोध कर रहे थे अगर मैं उसमें पढ़ती न होती तो...।" कहकर थामस की चुलबुली पत्नी ने थामस की ओर मुस्करा कर देखा।

"जी मैं यही कह रहा था कि बहुत बड़ा मानव समुदाय ईश्वर के 'एकोऽहं बहुस्याम'–एक मैं अनेक हो जाऊँ" के कार्य में लगकर सृष्टि को गतिशील बनाए हुए है। इतने बड़े महत्वपूर्ण मानव समाज को आध्यात्मिक विश्वविद्यालय में प्रवेश दिलाने के लिए ही योग और सम्भोग के आसानों में समन्वय किया गया ताकि जो मानव ब्रह्मचर्य का पालन नहीं कर सकता वह भी आध्यात्मिक विश्वविद्यालय में प्रवेश लेकर किसी शोधछात्र थामस से अपनी शादी का संयोग बिठा सके।"

"हमारे शादी करने से थामस का कोई शोध औजार नष्ट नहीं हुआ, लेकिन आपके आध्यात्मिक विश्वविद्यालय में अगर किसी शोधछात्र से शादी कर ली जाए तो उसका सबसे बहुमूल्य औजार ब्रह्मचर्य ही टूट जाएगा, फिर शादी की सम्भावना कहाँ?"

"आध्यात्मिक विश्वविद्यालय में शादी स्त्री-पुरुष की नहीं गुरु-शिष्य की होती है। जिस प्रकार पति अपनी पत्नी की सुख-सुविधाओं का ख़्याल रखता है, उसे प्यार करता है, ठीक उसी प्रकार गुरु भी अपने शिष्य के साथ प्यार करता है। प्यार और प्रताड़ना दोनों गुरु द्वारा शिष्य को दिया जाता है।"

"आपकी बातें प्रेरणादायक और दिलचस्प हैं परन्तु क्या आपके द्वारा प्रशिक्षित होकर आर्यग्राम के ये थोड़े से लोग विश्व को उच्च आदर्शों की ओर उन्मुख कर पाएंगे?"

"आर्यग्राम तो मेरी नन्हीं कार्यशाला है जहाँ भविष्य के आध्यात्मिक शिशु को पैदा करने के लिए नर-नारियों के कुछ साँचों को संस्कारित किया जा रहा है। इन साँचों से पैदा हुए शिशु निश्चित ही अपने जीवन में अपने माँ-बाप से संस्कार और आध्यात्मिकता में आगे जाएँगे। जब उनसे बच्चे होंगे तो वे विश्व की ज्योति बनेंगे।"

"आपके देश में इतने सम्प्रदाय, धर्म और जातियाँ हैं। इनमें आपसी प्रेम और एकात्मकता लाने के लिए आपके पास क्या कार्यक्रम है?" जेम्स की पत्नी ने पूछा।

"बहुत सीधा कार्यक्रम है। सबसे पहले हम विभिन्न जनपदों में इसी आर्य-ग्राम जैसे ग्राम बसाएंगे जिनमें यहाँ की तरह ही संस्कारित शिशु पैदा होंगे जिन्हें धर्म के असली स्वरूप से परिचय कराया जाएगा। तब वे जान जाएंगे कि मंदिर, मस्जिद और गिरजाघर विभिन्न उपासना पद्धतियों के अनुरूप उपासना स्थल हैं। जो किसी एक ही उपासना पद्धति के लिए दुराग्रह करता है, उसे लोगों से बलात् अपनवाता है, वही काफ़िर है, ईश्वर का दुश्मन है, शैतान है। ऐसे संस्कारित

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विचारवान नौजवानों के हाथ में जब देश और विश्व समाज के परिचालन का कार्य जाएगा तो स्वयं ही सामाजिक समरसता उत्पन्न हो जाएगी। एक बात और, आप- आपके देश में क्यों कह रहे हैं? आपके विश्व में कहिए। मैं पूरे विश्व की बात कर रहा हूँ।''

''क्या आपके सभी छात्र देश के परिचालन कार्य में ही लगेंगे? मेरे कहने का मतलब प्रशासनिक कार्य में?''

''नहीं, हमारे यहाँ कुछ ऐसी विद्याएँ हैं जिनके द्वारा प्रत्येक बालक को परख कर बताया जा सकता है कि भविष्य में यह किस क्षेत्र में विशेष उन्नति करेगा? बालक की रुचियाँ क्या होंगी? स्वभाव कैसा होगा? उन्हीं शास्त्रों के द्वारा हम बालक के कार्यक्षेत्र का निर्धारण करेंगे। भविष्य के निर्धारित कार्यक्षेत्र के अनुरूप ही हम उसकी शिक्षा उसी दिशा में प्रारंभ से ही देंगे। जब व्यक्ति को स्वभावानुकूल कार्य मिलेंगे तो वह अपने कार्य को ठीक ढंग से करेगा। अन्यथा, जब डाकू स्वभाव के लोग राजनीति करेंगे, क्रूर व्यक्ति चिकित्सक होगा, कामी धार्मिक मठ का महन्त होगा, लोभी अभियन्ता होगा तो समाज की वही दशा होगी जो आज हो रही है।''

''बालक भविष्य में किस स्वभाव का होगा? क्या आपके शास्त्र इसे शत-प्रतिशत सही बता पाएँगे? उन शास्त्रों की विश्वसनीयता की क्या गारण्टी है?'' जेम्स ने पूछा।

''पहली बात तो यह कि विश्व के सारे शास्त्रों के सृजन का मानव समाज के लिए कोई न कोई उद्देश्य होता है। फिर ऐसे शास्त्र जो युग के तमाम क्रूरतम झंझावतों को झेलकर आज तक जीवित हैं, उनका जीवित रहना ही यह दर्शाता है कि उनमें सत्य के अंश अधिक हैं। उनका जीवित रहना ही उनकी विश्वसनीयता है। जहाँ तक शत-प्रतिशत सही बताने का प्रश्न है, इसे तो प्रयोग करके ही देखा जाना चाहिए।''

''आप एक दिन कह रहे थे कि योरोपवासियों की अपनी ऐतिहासिक चादर मात्र पाँच हजार वर्ष पुरानी है। इसलिए उनकी यह लाचारी है कि वे अपनी इस छोटी-सी चादर में विश्व की सारी सभ्यताओं को बाँधने के लिए उसे पाँच हजार वर्ष से आगे न जाने दें।'' आर्य जी ने कहा।

''मैंने ही नहीं, बल्कि विश्व-प्रसिद्ध पाश्चात्य हस्तरेखाविद् कीरो ने हमारे यहाँ प्रचलित मानव स्वभाव बताने वाले तमाम शास्त्रों में से एक छोटे-से शास्त्र हस्तरेखा की खोज में जब भारतीय हस्तरेखा शास्त्र की एक पुस्तक को देखा तो उसमें उल्लिखित अंशों को देखकर आश्चर्यचकित रह गया और उसने लिखा–'मैं पूर्व की उस सन्तति हिन्दुओं की ओर संकेत कर रहा हूँ जिनके दर्शन और विवेक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

को प्रतिदिन फिर से मान्यता प्राप्त होती जा रही है।' वह आगे जो मैंने कहा है उसी बात को लिखता है–'इस प्रकार की बातों का परीक्षण करते हुए हमें अपना महानतम ज्ञान भी बौना जान पड़ता है, हमारी बुद्धि एक बचकाने शून्य में खो जाती है। हमारी आयु और हमारा युग नवजात शिशु को लपेटने वाले वस्त्र से अधिक कुछ नहीं है। समय की नित्यताओं की भुजाओं में हमारा मानवत्व एक शिशु की भाँति है...।''

"यदि उसने मानव स्वभाव को बदल देने हमारे शास्त्र-'पातन्जल योग दर्शन' को देखा होता, उसे करके समझा होता या स्वामी विशुद्धानन्द जी जिन्होंने सन् १९३७ में अपना शरीर छोड़ा, को आकाश में उड़ते देखा होता, सूर्य विज्ञान द्वारा सूर्य किरणों से ठोस पदार्थ, फूल, सुगन्ध पैदा करते देखा होता तो उसकी क्या दशा होती, यह कल्पना की बात है।'' तथास्तु जी ने अपने योरोपियन मित्रों की ओर देख कर कहा।

"आर्य सभ्यता या भारतीय सभ्यता का इतिहास तो सिन्धु घाटी और मोहनजोदड़ो से ही जुड़ा है जिसे इतिहासकार ईसा से तीन हजार वर्ष पूर्व का बताते हैं।' जेम्स की पत्नी ने कहा।

"क्या इतिहासकार इस बात को दृढ़ता से कह सकते हैं कि उनके द्वारा ढूँढे गए साक्ष्य से प्राचीन साक्ष्य और कहीं नहीं हैं और न मिलेंगे? हो सकता है कि धरती पर उनके द्वारा ढूँढे गए से अधिक प्राचीन साक्ष्य न हों परन्तु क्या इस देश को तीन ओर से घेरे सिन्धु के जल में उससे प्राचीन साक्ष्य नहीं हो सकते?'' कहकर तथास्तु जी कुछ देर मौन रहे फिर बोले–"सिन्धु जल में इस देश की कितनी प्राचीनतम सभ्यताएँ डूबी पड़ी होंगी, इसकी भी खोज होनी चाहिए। यदि द्वापर में द्वारिका नगरी सिन्धु जल में समा गई तो सत्ययुग से त्रेता तक कितने नगर महानगर इसके जल में समाए होंगे इसकी तो बस कल्पना ही की जा सकती है। क्या मेरी बातें विचारणीय नहीं हैं?'' तथास्तु जी ने थामस से पूछा।

"विचारणीय भी हैं और विचारोत्तेजक भी। परन्तु मैं सोच रहा हूँ कि जिस सिन्धु नदी के नाम पर ईरानियों द्वारा यहाँ के निवासी हिन्दू कहे गए...।''

"नहीं, मैं हिन्दू शब्द की उत्पत्ति के इस इतिहास को नहीं मानता'' थामस की बातों को तथास्तु जी ने बीच में ही काट दिया।

"क्यों?'' थामस ने पूछा।

"न मानने का पहला कारण यह है कि इतिहासकारों ने अपने उपलब्ध साक्ष्य को अधिक पुष्ट करने के लिए सिन्धु शब्द को सिन्धु नदी से जोड़ दिया, जबकि इस देश के तीन तरफ समुद्र है। समुद्र से सिन्धु शब्द को क्यों नहीं जोड़ा गया? सिन्धु का अर्थ सिन्धु नदी ही क्यों? सिन्धु का अर्थ समुद्र भी तो है...।''

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"मेरा मानना है कि प्राचीनकाल का भारत द्वीपों व खण्डों आदि के रूप में तीन ओर से समुद्र और एक ओर से हिमालय पर्वत से घिरा था। जैसा कि हमारा प्राचीन इतिहास बताता है, यह समस्त भूभाग भरतखण्ड, आर्यावर्त, जम्बूद्वीप व शाकल द्वीप आदि नामों से कई खण्डों में था। उसी समय गणराज्यों का प्रचलन भी प्रारंभ हुआ जिसके प्रतीक गण + ईश = गणेश आज भी पूज्य हैं और सभी देवताओं से पहले पूजे जाते हैं। सभी देवताओं में सर्वप्रथम गणेश के पूजे जाने की परम्परा ही यह दर्शाती है कि आर्यों में गणराज्यों को परिचालित करने वाले अग्रणी पुरुष के प्रति कितनी अगाध श्रद्धा थी। मुझे ऐसा लगता है कि गणराज्यों का प्रारंभ पर्वतीय राज्यों से ही हुआ। हमारे शास्त्रों में रूपक में इसका संकेत हैं। कहा जाता है कि पर्वतराज हिमालय की पुत्री पार्वती के शरीर में लगाए गए उबटन को छुड़ाने से जो मैल गिरा उससे गणेश की उत्पत्ति हुई। पिता शंकर जो बैल की सवारी करते हैं, उनके द्वारा युद्ध में गणेश का सिर काटा गया, फिर जंगल का भव्य प्रतीक हाथी का सिर उनके सिर के स्थान पर लगाया गया। उस कथा को आप लोग पढ़ेंगे तो पाएँगे कि गणेश का परिवार ऐसा परिवार है जिसमें जंगल के सारे प्रतीक विद्यमान हैं। पिता का वाहन बैल, सिर से बहती गंगा नदी, शरीर में लिपटे साँप-बिच्छू, उनके चारों तरफ निर्जनों में रहने वाले भूत-प्रेत बैताल, माँ का वाहन सिंह, भाई कार्तिकेय का वाहन मयूर, खुद गणेश का वाहन चूहा और निवास पर्वत पर। इस प्रतीक से स्पष्ट लगता है कि गणराज्य पर्वतीय राज्यों से प्रारंभ हुआ जो अत्यधिक शक्तिशाली थे। कथा को पढ़ने से लगता है कि हिमालय से सिन्धु पर्यन्त इस गणराज्य की धाक थी। परशुराम और रावण जैसे महाप्रतापी गणपति पिता शिव का शिष्यत्व ग्रहण करके अपने को धन्य समझते थे। ऐसी स्थिति में यहाँ के समस्त भूभाग को एक ही शब्द में गुम्फित करने के लिए, दर्शाने के लिए हिमालय से 'हिं' और तीन दिशाओं में लहराते सिन्धु से 'न्धु' को लेकर 'हिन्धुस्थान' बना होगा जो कालान्तर में हिन्दुस्तान हो गया। याद रखिए उस काल में गणराज्य के रूप में भौगोलिक एकता का प्रारम्भ हो चुका था। इसलिए इस भौगोलिक एकता को शाब्दिक एकता देना आवश्यक था। यह कब हुआ? किसने किया? यह इतिहासकारों तथा पुरातत्वविदों की खोज का विषय है।"

"आपके इस तर्क का आधार क्या है?" जेम्स ने पूछा।

"इस देश की भौगोलिक स्थिति एवं रूपक में कही गई पौराणिक कथाएँ भी प्रमाण और आधार हैं।"

"क्या सिन्धु घाटी के आर्य समुद्र से परिचित थे?" थामस की पत्नी ने पूछा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"सिन्धु घाटी के आर्य न कहें, आर्य कहें। आर्य मात्र समुद्र से ही परिचित नहीं थे बल्कि वे पृथ्वी और सूर्य की कक्षाओं, उनकी गतिशीलता आदि से भी परिचित थे।"

"परन्तु पृथ्वी चलती है, इसका तो सर्वप्रथम पता गैलेलियों ने ही लगाया था और ईसाई धर्माचार्यों द्वारा दण्डित भी हुआ था," थामस ने कहा।

तथास्तु जी कुछ देर शून्य में एकटक ताकते रहे, फिर उन्होंने एक उच्छ्वास छोड़कर कहा–"मेरे योरोपीय मित्रो, मेरा मन्तव्य आपके मन में हजारों सालों से भरे उच्चता-बोध के अहम् को ठेस पहुँचाना नहीं है। आप विद्वान् और साधन-सम्पन्न लोग हैं। मेरे कहे पर शोध करें, सत्य को उद्घाटित करें, मुझे ख़ुशी होगी। यदि ठेस पहुँचे तो क्षमा कर देंगे। सत्य तो यह है कि हमारे महर्षियों ने वेद में उन बहुत-सी खोजों, जिन्हें योरोपवासी अपनी खोज कहते हैं, को बहुत पहले ही खोज कर लिख दिया था। उदाहरण के लिए यजुर्वेद के अ. ३/१०६ में अंकित इस ऋचा को देखें–"आयं गौः पृश्निरक्रमोदसदन् मातरं पुरः। पितरंच प्रयन्त्सवः।" इसका अर्थ यह होता है कि यह भूगोल जल के सहित सूर्य के चारों और घूमता जाता है। इस ऋचा से यह स्पष्ट है कि हमारे महर्षि बहुत पहले से यह जानते थे कि पृथ्वी घूमती है। बेचारे गैलेलियो तो जिस प्रकार व्यर्थ में इस खोज का श्रेय पा गए उसी प्रकार व्यर्थ में दंडित भी हुए। इसके अतिरिक्त और भी बहुत-सी खोजें हैं जिन्हें हमारे महर्षि योरोपवासियों से पहले खोज कर चुके थे। इस विषय पर बहुत लम्बी वार्ता से अच्छा है कि आप लोग 'वैदिक सम्पत्ति' नामक पुस्तक पढ़ें। आपके बहुत से अनुत्तरित प्रश्नों के उत्तर मिल जाएंगे।"

"जब आपके महर्षि ने सर्वप्रथम पृथ्वी को घूमने वाला भूगोल बताया होगा तो अपने धर्माचार्यों द्वारा क्या वह प्रताड़ित नहीं किया गया होगा?" जेम्स की पत्नी को वार्ता में रस आने लगा था।

"कदापि नहीं, वैदिक धर्मावलम्बी यह कभी नहीं कहता कि विश्व के सारे ज्ञान हमारे वेद में ही हैं या इसके अलावा जो कुछ भी कहा या लिखा जाय वे व्यर्थ और धर्मविरुद्ध है, उसे लिखने कहने वाले ईश्वर के दुश्मन हैं, शैतान हैं। जेम्स जी, आप जरा विचार करें कि अनन्त ज्ञान का इससे बड़ा अपमान और क्या होगा कि कोई कह दे कि अमुक पुस्तक में संसार के सारे ज्ञान हैं? अनन्त ज्ञान को सीमित पृष्ठों में बाँधने का दम्भ ज्ञानी पुरुष कभी नहीं कर सकता। हमारे वैदिक ऋषि तो कहते हैं कि मेरे कहे पर आँख मूँद कर विश्वास मत करो। सर्वप्रथम उसे परखो, परख कर सत्यासत्य की जाँच करके तभी विश्वास करो। ब्रह्मसूत्र भाष्य १-१-१ में लिखा है कि "तत्राविचार्य यत्किंचित्प्रतिपद्यमानो निःश्रेयसात् प्रतिहन्येत, अनर्थं च इयात्।" इसका अर्थ है–यहाँ जो बिना विचारे कुछ भी मान

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लेता है, वह परम कल्याण से वंचित हो जाता है, उसका अनर्थ ही होता है। अर्थात् बिना तर्क की कसौटी पर कसे किसी बात को मत मानो। हमारे ऋषि कहते हैं–'श्रुत्यैव च सहायत्वेन तर्क-साप्यम्भुयेत त्वात।' अर्थात् श्रुति अथवा शास्त्र के सहायक के रूप में तर्क का स्थान है ही। आपको आश्चर्य होगा कि वेद में कोई भी ऋषि किसी भी मन्त्र का स्वयं को आविष्कारक नहीं, द्रष्टा कहता है। द्रष्टा का अर्थ है वस्तु पहले से थी जिसे देखा गया। द्रष्टा ऋषि अन्य धर्म के धर्मदूतों की तरह यह नहीं कहता कि 'जो भी मैंने देखा उसे दूसरे नहीं देख सकते, मैं ही एकमात्र ईश्वर का दूत या पुत्र हूँ।' वह तो कहता है कि जो मैंने देखा उसको मनुष्य मात्र देखने का अधिकारी है। यह कहकर ऋषि एक विशेष क्रिया बताते हैं और कहते हैं 'इस क्रिया को करके तुम भी विशेष शक्ति और विशेष दृष्टि को प्राप्त कर सकते हो और वही देख सकते हो जो मैंने देखा है। उनके यहाँ अन्य धर्मोपदेशकों की भाँति कोई दुराग्रह नहीं है। वे कहते हैं–वेद के अनुसार सत्य एक है। जो उसे जानते हैं वे विभिन्न प्रकार से उनका प्रकाश करते हैं।''

''अन्य धर्मों में दुराग्रह क्यों है कि अमुक पद्धति से ही उपासना करें, अमुक धर्मग्रन्थ के अलावा अन्य किसी ग्रन्थ को न मानें?'' जेम्स ने पूछा।

''इसलिए कि ऐसे लोग धर्म के सम्पूर्ण स्वरूप के द्रष्टा नहीं थे, किसी एक अंश के द्रष्टा थे। उन्होंने अंश को ही सम्पूर्ण मान लिया। मैं वैदिक धर्म और अन्य धर्मों में अन्तर बताने के लिए कपड़े की दुकान का उदाहरण देता हूँ। जिस प्रकार मनुष्य के नंगेपन को ढंकना ही कपड़े का मुख्य उद्देश्य होता है, उसी प्रकार मनुष्य की परम तेजोमय शाश्वत आत्मा पर छा गए पशुत्व के आवरण का शमन धर्म का मुख्य उद्देश्य है। यदि कोई दुकानदार अपनी दुकान पर मात्र पैण्ट रखकर या किसी एक विशिष्ट शैली के कपड़े को रख कर ग्राहक को वही पहनने के लिए बाध्य करता है तो क्या आप उसकी इस क्रिया को, दुकान को या दुकानदार को उत्तम कहेंगे? इसके विपरीत यदि किसी दुकान पर विभिन्न शैलियों के कपड़े हों तो, लोग अपनी अभिरुचि के अनुसार उन कपड़ों में से किसी एक को लेकर अपने नंगेपन को ढंक लें तो आप किस दुकान को विशाल मानेंगे? निश्चय ही दूसरी दुकान को। वैदिक धर्म तथा अन्य धर्मों में यही अन्तर है। क्षमा करें, धर्म के परिप्रेक्ष्य में दुकान और दुकानदार जैसे उदाहरण समीचीन नहीं हैं। बात को स्पष्ट करने के लिए इस समय मुझे इससे अच्छा अन्य कोई उदाहरण नहीं सूझा। इसलिए इसका प्रयोग मैंने किया अन्यथा जिस धर्म के लिए मैंने यह उदाहरण दिया है, उसकी परिभाषा–'जो मनुष्यमात्र को धारण करे वही धर्म है।...

विभिन्न रुचियों, स्वभावों और कर्मों वाले मानव समुदाय को एकांगी सोच वाले धर्म धारण नहीं कर सकते। सभी मनुष्य जन्म से ही विभिन्न स्वभाव के होते

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हैं। कोई सात्विकी है, कोई राजसी, कोई तामसी और कोई इन तीनों का मिश्रण-धर्म का यह धर्म है कि वह इन जन्मना भिन्न स्वभाव के लोगों को धारण करे और इनके जन्मना स्वभाव के अनुरूप क्रिया मार्ग देकर अन्धकार से प्रकाश की ओर जाने का मार्ग प्रशस्त करे। यह स्वाभाविक है कि जन्मना भिन्न स्वभाव वाले इन चारों वर्णों की धारणाएँ चार प्रकार की होंगी। यदि इन्हें बाध्य करके किसी एक ही प्रकार की धारणा को ग्रहण करा दिया जाएगा तो जिनके स्वाभाविक स्वभाव के अनुरूप वह धारणा होगी वह तो स्वभावानुरूप ग्रहण की गई धारणा के माध्यम से धर्म के वास्तविक रूप को समझ लेंगे लेकिन जिनके अनुरूप नहीं होगा, वे जीवन भर भटकते रहेंगे।''

''अभी अभी आपने वर्ण शब्द का प्रयोग किया है। वर्ण का अर्थ जाति होती है न...?'' जेम्स ने पूछा।

''नहीं, सत, रज, तम, और चौथा है इनका मिश्रण। मनुष्य मात्र के यही चार वर्ण हैं। वर्ण का शाब्दिक अर्थ होता है रंग। वह रंग जो प्रत्येक मनुष्य के शरीर के चारों तरफ आभा के रूप में गुणों के अनुसार झलकता रहता है जिसे सिद्ध योगी देख पाता है। सत का श्वेत, तम का काला, रज का लाल और मिश्रण वाले का मिश्रित आभा मंडल होता है। आज के वैज्ञानिकों ने भी मनुष्य के इस आभा मंडल को अपने वैज्ञानिक यन्त्रों से कुछ-कुछ देखने में सफलता पाई है। इसीलिए गीता में श्रीकृष्ण ने कहा है–''चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं, गुणकर्म-विभागशः।''

''लेकिन अन्य लोग तो जाति की सनातनता इसी श्लोक से सिद्ध करते हैं।'' आर्य जी ने कहा।

''जाति-प्रथा सनातन है ही नहीं तो वे इसे सिद्ध कहाँ तक करेंगे? ऐतिहासिक सत्य तो यह सिद्ध करता है कि जाति-पाँति की ठीक जाति-पाँति के रूप में स्थापना ईसा की दसवीं शताब्दी में आकार हुई। इसके बाद भी मिश्रण पूरी तरह बन्द नहीं हुआ। सन् ग्यारह सौ अठहत्तर ईसवी में गुजरात के नाबालिग राजा मूलराज द्वितीय की माता से हारकर मोहम्मद गोरी की सेना बहुत बड़ी संख्या में बन्दी हो गई। उनके दाढ़ी-मूँछ मुड़वाकर सरदारों को राजपूत, साधारण सेना को कालियों, खाँटों, मेड़ों में शामिल कर लिया गया। यह बात इतिहासकार जयचन्द विद्यालंकार ने अपनी पुस्तक 'इतिहास प्रवेश' में लिखी है।''

''रात बहुत हो गई है, यदि आपकी आज्ञा हो तो आपसे एक अनुनय करूँ।'' थामस की पत्नी ने तथास्तु जी की ओर श्रद्धा से देखते हुए कहा।

''अनुनय नहीं आज्ञा करिए'' तथास्तु जी ने विनम्रता से कहा।

''मैंने सुना है कि यहाँ के योगी अपने योगबल से ऐसे कार्य कर सकते हैं

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जिसे वैज्ञानिक असम्भव बताते हैं। क्या आप कुछ वैसा ही करके दिखा सकते हैं?''

प्रश्न को सुनकर तथास्तु जी मुस्कराए, फिर उन्होंने कहा–''क्या आप लोग मेरे मुख की ओर देख रहे हैं?''

सभी उनके मुख की ओर तो देख ही रहे थे और ध्यान से देखने लगे। सभी आश्चर्यचकित हो गए क्योंकि उनका मुख बन्द था, होंठ भी नहीं हिले लेकिन शब्द-ध्वनि मुँह से निकलती प्रतीत हुई। सब अपने अगल-बगल देखने लगे कि कोई दूसरा तो नहीं बोल रहा है?'

'कोई दूसरा नहीं मैं ही बोल रहा हूँ। यह परावाक की साधारण-सी सिद्धि है। मुझे दुःख है कि जैसे आज का विज्ञान पदार्थ और प्रत्यक्ष में उलझ कर रह गया है, वैसे ही हमारी योग विद्या सिद्धियों और चमत्कारों में उलझ कर पथभ्रष्ट हो गई है। इसीलिए हमारे यहाँ इसके प्रदर्शन पर प्रतिबन्ध है। हमारे प्रथम आध्यात्मिक गुरु पंडित हौसिला प्रसाद द्विवेदी जो वाराणसी के सोनिया मुहल्ले में रहते थे, जिन्हें लोग दाढ़ी बाबा भी कहते थे, उनका कहना था कि सिद्धियों का प्रदर्शन, ईश्वर-दर्शन में व्यवधान डालता है। भविष्य में ऐसा अनुरोध न करें'' कहकर तथास्तु जी ने अपना मुँह खोला और कहा–''और कुछ?''

''अब तक मैं जिस विशाल महल में रहता था, जिसकी परिधि ही मेरी सीमा थी, लग रहा है उसकी कोई खिड़की खुली रही है जिसके बाहर अभी अनन्त आकाश है, उसका भान-सा हो रहा है। इसलिए मेरा एक प्रश्न है कि क्या आप उस भासित हो रहे अनन्त आकाश का ज्ञान देने के लिए मुझे हिन्दू बनाएंगे?'' जेम्स ने पूछा।

''अभी तक मैंने जो कुछ कहा है उसी में यह प्रश्न तिरोहित हो जाना चाहिए था। नहीं हो पाया। इसलिए थोड़े विस्तार से उन महर्षियों के धर्म की मूल स्थापना के विषय में बताना चाहूँगा जो न हिन्दू थे, न ईसाई, न मुसलमान, वे केवल धर्म थे। ऐसे महर्षियों ने ब्रह्माण्ड पुरुष और भूमि पुरुष के रूप में सारी सृष्टि को एक ही देखा था। उन्होंने ब्रह्माण्ड पुरुष के भीतर भारत को भूमि पुरुष के रूप में श्री चक्र के बिन्दु त्रिकोण के रूप में देखा। इसके तीनों कोने, कश्मीर (हिमालय) कन्याकुमारी, नेपाल हैं। इस त्रिकोण का केन्द्र बिन्दु काशी है। भूमि पुरुष के हिसाब से, जैसे प्रत्येक मनुष्य में रीढ़ की हड्डी के ऊपर उर्ध्व त्रिकोण एवं नीचे निम्न त्रिकोण स्थूल रूप में होता है, वैसे ही इस भारत भूमि का उर्ध्व त्रिकोण हिमालय एवं निम्न त्रिकोण कन्याकुमारी है। ये ब्रह्माण्ड पुरुष और भूमि पुरुष सभी अपने में पूर्ण हैं। इसके अन्दर रहने वाला मनुष्य इस कड़ी की सबसे छोटी इकाई है। वह भी पूर्ण है। वह मनुष्य चाहे जिस देश का, चाहे जिस जाति धर्म का हो।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इस प्रकार ब्रह्माण्ड से लेकर मनुष्य तक को जिस शक्ति ने समरस होकर धारण कर रखा है उसी को जानना धर्म है। उन महर्षियों ने कहा है, 'समःप्रसवा जाति' जो आपस में मिल कर प्रसव कार्य समान रूप से कर सकें, वे सभी एक जाति हैं। कहाँ है मनुष्य अलग?'' तथास्तु ने कहा।

'अद्भुत' जेम्स की पत्नी ने कहा, फिर पूछा-''तब विश्व में यह धर्मान्तरण क्यों कराया जाता है? इस कार्य में लिप्त लोग क्यों धर्मान्तरण कराना अपने धर्म कीं सेवा मानते हैं?''

''इस विषय पर सम्पादक जी के विचार, मैं आप लोगों के सामने रखना चाहता हूँ,'' आर्य जी ने कहा।

सम्पादक जी के मस्त और फक्कड़ स्वभाव के कारण बहुत कम लोग उनके चिन्तक रूप से परिचित थे। इसलिए उनका नाम आते ही वहाँ बैठे लोगों का मन आनन्दित तो हुआ किन्तु सबका वैचारिक स्तर जो गम्भीर वार्ता से बहुत ऊँचा उठा हुआ था, वह नीचे आ गया।

''आज अगर वह यहाँ होते तो बड़ा मज़ा आता।'' थामस की पत्नी ने कहा।

''वह नहीं हैं तो उनकी बात ही सुनी जाय कि वह धर्मान्तरण पर क्या विचार रखते हैं?'' जेम्स की पत्नी ने हंसते हुए कहा।''

उनका कहना है कि ''यह धर्मान्तरण की प्रक्रिया साम्राज्यवाद की विस्तारवादी नीति का बदला रूप है और जो धर्मान्तरण कर्ता अपनी सेवा को मानव सेवा बताकर उसे धर्म के करुणा शब्द से जोड़ता है वह करुण नहीं साम्प्रदायिकता है। क्योंकि करुणा में कामना ही साम्प्रदायिकता है। करुणा तो हृदय का प्रवाह है। यह अहैतुकी होती है। करुणा व्यापारिक क्रिया-कलाप नहीं है कि, यह तुम्हें दे रहा हूँ और वह तुम मुझे दो। उसकी करुणा तो गंगा की तरह प्रवाहित है। आओ नहाओ, पवित्र हो जाओ, तुम चाहे जो हो, इससे उस नदी को कुछ लेना-देना नहीं है।'' आर्य जी बोले।

''क्या? क्या? क्या यह सम्पादक जी कहते हैं?'' थामस ने आश्चर्य से पूछा।

''हाँ सम्पादक जी ने अवश्य ही इसे कहा होगा। क्योंकि मुझसे भी वह कभी-कभी बहुत गम्भीर होकर जब वार्ता करते हैं तो लगता है कि व्यक्ति भीतर से कुछ और है। एक दिन उन्होंने शस्त्र और शास्त्र के समन्वय पर बहुत अच्छा सूत्र वाक्य कहा था कि ''शास्त्र शस्त्र को मर्यादित करता है और शस्त्र शास्त्र की सुरक्षा। दोनों को एक दूसरे की आवश्यकता है क्योंकि अमर्यादित शस्त्र विश्व विप्लव के कारण बनेंगे और अरक्षित शास्त्र सुरक्षित नहीं रह सकते। वार्ता जेम्स के प्रश्न से कुछ हटकर होने लगी-क्यों जेम्स?'' तथास्तु जी ने हँसकर कहा।

''जी नहीं, वार्ता हमारे प्रश्न के परिप्रेक्ष्य में ही हो रही है।''

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तथास्तु जी–"अच्छा ठीक है, तुम्हारे प्रश्न के उत्तर में मेरा एक प्रश्न तुमसे है कि हवाई जहाज का आविष्कार किसने किया? वह किस धर्म से सम्बन्धित थे?"

"राईट बन्धुओं ने किया और वे ईसाई धर्म से संबंधित थे।"

"तो यह आविष्कार ईसाई है अथवा इस आविष्कार को करने वाला ईसाई था?" तथास्तु जी ने पूछा।

"नहीं, आविष्कार आविष्कार है, वह न तो ईसाई है, न हिन्दू।" थामस की पत्नी ने कहा।

"आप सभी लोग जानते हैं कि इस आविष्कार का उपयोग बिना किसी भेदभाव के सभी लोग कर रहे हैं। यह आविष्कार गैर इसाईयों से यह नहीं कह रहा है कि मेरे आनन्दमय उपयोग की करुणा के तुम तभी अधिकारी होगे, जब तुम ईसाई बन जाओगे तभी मेरा उपयोग करो। जैसे यह आविष्कार सबके लिए है वैसे ही ईश्वर को जानने का जो सूक्ष्म वैज्ञानिक आविष्कार महर्षियों ने किया है, उसे पाने का सबको अधिकार है। कहीं किसी भी मनुष्य को किसी भी अन्तरण की आवश्यकता नहीं है। आवश्यकता है सिर्फ़ इसे जानने और इसकी पद्धति को अपनाने की। एक धर्म-बन्धन से छूटकर दूसरे धर्म-बन्धन में बंधने से क्या लाभ? हमारी पद्धति कहती है कि सारे बन्धनों से मुक्त हो जाओ क्योंकि तुम स्वभावतः मुक्त हो। तुम पूर्ण ब्रह्माण्ड पुरुष की अंतिम इकाई पूर्ण मनुष्य हो। बस इसे जान जाओ।" तथास्तु जी बोले।

"अब मैं समझ गया, यह धर्मान्तरण आदि सभी बन्धनकारी हैं।"

"किन्तु आप क्या हैं? हिन्दू ही हैं न?"

"मैं... मैं स्थूल में भारतीय भूमि पुरुष के अन्दर, हिन्दू धर्म में, तथास्तु त्रिपाठी नामधारी शरीर हूँ। यह स्थूल ही मेरे बन्धन और मुक्ति दोनों का कारण है। यदि हम इसे स्वीकार किये रहेंगे तो यह बन्धन का कारण है। अगर महर्षियों की पद्धति द्वारा अपने स्वरूप को पहचान लेंगे तो यह शरीर-मुक्ति का कारण बनेगा। क्योंकि इसी के द्वारा हम पद्धति का प्रयोग करेंगे। इस प्रकार मैं न तो हिन्दू हूँ न वर्तमान शरीर... मैं मुक्त आत्मा हूँ। इसी प्रकार हर मनुष्य है। और कुछ पूछना है?" तथास्तु जी ने पूछा।

"आज अद्‌भुत सुना और अद्‌भुत देखा। बस आज इतना ही।" थामस ने श्रद्धावनत हो कहा।

तथास्तु जी अपने आसन पर से उठे। उन्हीं के साथ सभी उठकर उनके पाँव छू अपने अपने शयन कक्ष की ओर चले गए।

☐

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

२६. दिल्ली

माघ की ठिठुरन भरी लम्बी रात आ गई। आदिवासी ओढ़ने-बिछौने के अभाव में शाम होते ही खाना-पीना करके सपरिवार अपनी-अपनी झोपड़ी में जंगल की लकड़ी जला, उसी के आस-पास सोकर रात बिताने लगे हैं। यह ऐसा समय होता है जब न तो उनके पास तन ढँकने को वस्त्र और न पेट भरने को अन्न ही होता है। ऐसी ज़िन्दगी जीने के अभ्यस्त होने के कारण वे कष्ट तो उठाते हैं लेकिन दुःखी नहीं होते। उन्हें अपने समाज की ज़िन्दगी से लगाव है। अपने जीवन में अपने समाज से इतर लोगों की दख़लन्दाज़ी उन्हें पसन्द नहीं है। इसलिए रिहन्द से विस्थापित होकर वे अपने समाज के साथ और घने जंगलों में जाकर अपने बाहुबल से बंजर पहाड़ी जमीन को उपजाऊ खेत बनाने में जुट गए। हाल ही में खेत के रूप में तैयार की गई, ऊँची-नीची पहाड़ी जमीन में इस वर्ष कोदो, सावाँ नहीं हो पाने के कारण भुखमरी अन्य सालों की अपेक्षा कुछ अधिक है। किन्तु उन्हें आशा है कि चैती अच्छी होगी। पेट भरेगा– इस आशा में खाली पेट ठण्ढ से ठिठुरती आदिवासी सेना निर्जन जंगल के बीच मौन रहकर पहाड़ी जमीन से लड़ रही है। इस लड़ाई को जीतने में जितने लोग भूख से, ठण्ढ से मरेंगे उन्हें मरणोपरान्त परमवीर या वीर चक्र नहीं मिलेगा।

प्रकृति के प्रकोप को सहते-सहते आदिवासियों में सहनशीलता स्वाभाविक रूप में विकसित हो गई है। इसी स्वाभाविक सहनशीलता के कारण विस्थापित आदिवासियों ने राजप्रकोप को भी अत्यधिक सहजता से स्वीकार कर लिया। उन्हें अभी तक सरकार की ओर से न कोई राहत मिली न उनकी जमीन का मुआवजा। गैर पैमाइशी इलाक़ा होने के कारण चतुर लोगों ने उनकी जमीनों पर अपने नाम चढ़वा लिये। चौथी राम सैकड़ों एकड़ जमीन के मालिक बन गए। जमीन के लुटेरों ने चौथी राम से मिलकर, दिल्ली में छब्बीस जनवरी को जमीन के मुआवजे के लिए उन आदिवासियों को भड़का कर प्रदर्शन की योजना बनाई, जिन्हें यह भी पता नहीं कि उनकी जमीन पर उनके नाम हैं भी या नहीं।

सरकार को इस प्रदर्शन की भनक लग गई। वह इसे रोकने के लिए जुगत बैठाने लगी। उस क्षेत्र के सांसद चौथी राम पर सबकी दृष्टि गई। उन्हें प्रदर्शन को

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रोकने या अप्रभावी बनाने का कार्य सौंपा गया। चौथी राम तो यही चाहते थे क्योंकि सशक्त प्रदर्शन होने पर यदि सरकार ने तुरन्त मुआवजे का आदेश दे दिया तो हाल ही में उनके द्वारा आदिवासियों की हड़पी गई जमीन की पोल खुल जाती। उन्होंने प्रदर्शन की तैयारी में जुटे अपने सभी आदमियों को प्रदर्शन को हतोत्साहित करने का निर्देश दिया और प्रदर्शन के लिए जुटाए गए अर्थकोष को हड़पकर बैठ गए। इसका परिणाम यह हुआ कि प्रदर्शन निर्जीव हो गया। चौथी राम अपनी पार्टी में एक मात्र सशक्त आदिवासी वनवासी नेता के रूप में स्थापित हो गए। भेड़ों के आगे चलने वाली भेंड़ भेड़ियों के झुण्ड में जाकर भेड़िया बन चुकी है, इससे अनभिज्ञ भेंड़ों का झुण्ड अब भी उसके पीछे लगा अपने को सुरक्षित महसूस करता चला जा रहा था।

सांसद अंजनी सहगल ने चौथीराम की इस सफलता को अपनी सफलता मानते हुए दिल्ली के अपने बंगले पर एक शानदार पार्टी का आयोजन किया। शाम का कार्यक्रम चल रहा था कि शुकदेव दास आर्य ने आकर अंजनी को नमस्कार किया।

"आइए-आइए आर्य साहब" चहककर कहते हुए अंजनी ने अपनी बगल में बैठे आदमी को संकेत किया। उसने उठकर कुर्सी खाली कर दी। कुछ दूरी पर खड़े होकर कुछ लोगों से बात कर रहे चौथी राम की दृष्टि उनपर पड़ी। वह भी 'नमस्कार आर्य जी' कहते उन्हीं की बगल में जाकर बैठ गए और कहा–"भैया आर्य जी, आपका कारकरम तो छब्बीस जनवरी को है, आज दस जनवरी को ही कइसे आ गए?"

"क्या करूँ? यहाँ के व्यवस्थापकों ने निर्देश दिया कि दस जनवरी को ही लोक कलाकारों को लेकर आ जायँ जिससे यहाँ ठेके पर लोक कला प्रदर्शित करने वाली कम्पनी वालों से लोक कलाकारों का परिचय हो जाय और वे अपने निर्देशन में लोक कलाकारों को तैयार कर सकें।"

"अच्छा-अच्छा, यह ठेका तो मैंने मिस रोजी को दिलवा दिया है। बहुत अच्छी थियेटर कम्पनी है उसकी।"

"देखिए अंजनी बाबू, आपका यही गुन तो जान मार देता है। अपने आदमियों को आप कभी नहीं भूलते। हमको भी एम.पी. का टिकट आप ही ने दिलवाया, नहीं तो...।"

"छोड़िए चौथी बाबू, अब तो आप स्थापित नेता हो गए। सबका टिकट कट सकता है लेकिन आपका नहीं कट सकता।"

"क्यों, इनका टिकट क्यों नहीं कट सकता?" आर्य जी ने पूछा।

"जैसे आप साहित्यिक क्षेत्र में मिर्जापुर के आदिवासियों के सर्वमान्य

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

साहित्यकार हैं, आपको नहीं काटा जा सकता, वैसे ही चौथी राम जी अब उनके सर्वमान्य नेता स्थापित...।''

''जब हम एम.पी. नहीं थे तब भी वहाँ के आदिवासी बनवासी के सरबमान्य नेता थे'' चौथीराम ने गर्दन अकड़ाकर कहा।

''मैंने सुना है कि आप विस्थापित आदिवासियों के हित में मुआवजे के लिए होने वाले प्रदर्शन के ख़िलाफ़ हैं'' शुकदेव दास आर्य ने दो टूक शब्दों में पूछा।

''हाँ हाँ ख़िलाफ़ तो हई हैं। जब मैंने सुना कि बिरोधी पाल्टी वाले हमारे द्वारा कराए जाने वाले परदरसन में मिलकर हिंसा कराना चाहते हैं तो लाचार होकर हमको यह कारकरम बदलना पड़ा। इनको का है, इ तो हमारे भाइयों को उकसा के परदरशन में मारपीट करवा देंगे, फिर गोली चलेगी तो कउन मरेगा? हमारे भाइये न? बताइए।'' कहकर चौथीराम ने आर्य जी पर प्रश्नात्मक दृष्टि डाली। फिर हँसकर कहा–''बिरोधी पाल्टी वालों में दम हो तो अब परदरशन कराके दिखावें। दूसरे के पैदा किए लड़िका को सब खेलाके लड़िकावाला बनै चाहते हैं। एक अपने पैदा करें तब हम जानें। आप साहित्यकार हैं, ई सब राजनीति कऽ बात है। आप नाहीं समझ पाएंगे।'' कहकर चौथीराम जी ने गर्व से अपनी गर्दन ऊँची की फिर पूछा–''आपके साथ कउन-कउन लोग आए हैं?''

''एक महिला और एक पुरुष कलाकार को लाना था, मंगल और बोधमयी को लाए हैं।''

''ई कवने गाँव के हैं?''

''मूल बाशिन्दे भलुआ के हैं। वर्तमान में तथास्तु जी द्वारा बसाए गए आर्यग्राम के हैं। आप और अंजनी बाबू दोनों मगरू और बुधनी को जानते होंगे। वहीं हैं।''

''फिर आप मंगल और बोधमयी क्यों कह रहे थे?'' अंजनी ने पूछा।

शुकदेव जी ने आदि से अन्त तक आर्यग्राम के बसने तथा नवीन नामकरण एवं आर्यग्राम के उद्देश्य आदि के बारे में सारी कथा सुना दी। उसे सुनकर अंजनी ने एक आत्म-सन्तोष का अनुभव किया किन्तु चौथीराम जात-पाँत विहीन समाज की स्थापना की बात सुनकर एकदम विचलित हो गए। उन्हें अपनी जाति के आधार पर चलने वाली राजनीति पर स्पष्ट ख़तरा महसूस हुआ।

उन्होंने हँसकर कहा–''बाप का पइसा है ख़ूब लुटा लें। खुद कमा के लगाना होता तब पता चलता। ई पागलपन कै दिन चलेगा?''

दूसरे के धन को लूटने वाले या धन को ही सर्वस्व समझने वाले जब किसी के धन को महत्वहीन समझते देखते हैं तो वे उसे पागल ही समझते हैं। उनके लिए अपने धन की सार्थकता अपनी ही सुख-सुविधा में दिखाई पड़ती है। उनसे सम्बन्धित उनके अगल-बगल के लोग यदि धनहीन व दुःखी हों तो वे अपने धन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

की सार्थकता पर और अधिक विमुग्ध होते हैं। इसीलिए विमुग्ध चौथीराम को तथास्तु जी पागल ही दिखाई पड़े।

"नहीं भाई, तथास्तु जी बहुत बड़े उद्देश्य की पूर्ति के लिए यह प्रयोग कर रहे हैं। यदि उनका प्रयोग सफल रहा तो भारतीय समाज में फैले जातिवादी कोढ़ की समस्या ही समाप्त हो ज़ाएगी।" अंजनी ने कहा।

"अंजनी बाबू, आपका बात कर रहे हैं? आखिर ई कोढ़ बाभने न फैलाए हैं। खुद सबसे बड़े बन गए अउर हम लोगों को नीच बना दिया। अब इहै देखैं, तथास्तु जी बाभन हैं, जात-पाँत विरोधी हैं तऽ इनरिया चमाइन से खुद शादी काहे नाहीं किए? फंसा दिया हमारे बिरादर भोले-भाले मगरूआ को। ऊ बेचारे का दीन धरम दूनो गया। ऊ तो समाज सुधारक गाँधी बाबा के बाप बन गए।"

चौथीराम की तथास्तु जी के बारे में इतनी निम्न टिप्पणी शुकदेव दास आर्य से सही नहीं गई। उन्होंने कहा–"चौथी राम जी, यदि राजनीतिज्ञ होना सर्वज्ञ होना नहीं है तो जैसे आपने मेरे लिए कहा कि आप साहित्यकार हैं राजनीति की बात नहीं जानेंगे, वैसे ही मैं यह कह सकता हूँ कि आप राजनीतिज्ञ हैं गाँधी और तथास्तु जी को नहीं जानेंगे। पहली बात। दूसरी बात यह कि ब्राह्मणों ने अपने को स्वयं ऊँचा कर लिया और लोगों को निम्न बना दिया, यह सोच भी आपकी गलत है।"

"तब किसने किया? हमने किया, आपने किया?" चौथीराम ने आवेश में पूछा।

"न मैंने किया न आपने किया, यह सब किया सत्तासीनों ने। आज भी सत्तासीन वही खेल खेल रहे हैं जो दो हजार वर्ष पहले सत्तासीनों ने खेला था। बस थोड़ा-सा रूप और नाम बदल गया है।"

"आपके कहने का अर्थ यह हुआ कि ब्राह्मणवाद को ब्राह्मणों ने नहीं सत्तासीनों ने बढ़ावा दिया?" अंजनी ने उत्सुकता से पूछा।

"जी, आप इतिहास उठाकर देख लें, जातिवाद के ठीक जातिवाद के रूप में स्थापित होने के पश्चात् भारत में अधिकतर ब्राह्मण और क्षत्रिय से इतर जातियों के शासक रहे हैं। वह भी दुर्बल नहीं, महान् शक्तिशाली-नन्द, चन्द्रगुप्त, समुद्रगुप्त आदि। उन लोगों ने ब्राह्मणवाद का खण्डन नहीं मण्डन ही किया है। दरअसल हर सत्ताधारी यह चाहता है कि उसके राज्य की बहुसंख्यक आबादी उसके प्रति वफ़ादार रहे। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए वे समयानुकूल नीति को अपनाते रहे हैं।... ...

प्राचीनकाल में जन-साधारण सत्ता की होड़ से दूर–साँई उतना दीजिए जामे कुटुम समाय की मनःस्थिति में जीने वाला धर्मभीरु प्राणी था। ऐसे लोगों पर,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इनके प्राचीन धर्मग्रन्थों को समझाने वाले ब्राह्मणों की पकड़ स्वाभाविक रूप से थी। इसलिए सभी सत्तासीन ब्राह्मणों को दान देकर अपने पक्ष में बनाए रखने को लांचार थे। समाज में ब्राह्मण की सर्वश्रेष्ठता स्थापित करने के लिए उन्होंने राज्य की ओर से उन्हें ऐसी-ऐसी सुविधाएँ दीं जो जन-साधारण को स्वप्न में भी उपलब्ध नहीं थीं। इस प्रकार समाज में ब्राह्मण के वर्चस्व की धाक जमाकर वे ब्राह्मणों द्वारा जन-साधारण को अपने प्रति वफ़ादार बनवाते रहे। राजा ईश्वर होता है–का प्रचार करवाते थे।

आज भी सत्तासीनों के सामने बहुसंख्यकों को अपने प्रति वफ़दार बनाने की समस्या है। वे वही कर रहे हैं जो पहले के सत्तासीनों ने किया था। अन्तर यह है कि पहले के सत्तासीनों ने बहुसंख्यकों को अपने प्रति वफ़ादार बनाने के लिए किसी एक वर्ग को उत्कृष्ट बता कर दान दिया। आज का सत्तासीन बदली परिस्थिति में बहुसंख्यकों को अपने प्रति वफ़ादार बनाने के लिए उन्हें निकृष्ट बताकर अनुदान दे रहा है। समय के अन्तर से उत्कृष्ट निकृष्ट में और दान अनुदान में बदल गया है।''

''इसका मतलब बाभनवाद में बाभन का दोष नहीं है?''

''आप लोगों को आरक्षण और अनुदान मिल रहा है तो इसमें आपका दोष है?'' आर्य जी ने पलट कर पूछा।

अंजनी ने देखा कि यह बहस अप्रिय मोड़ लेने जा रही है जो आज की पार्टी के आनन्द को कम कर सकती है। इसलिए वार्ता को समाप्त करने के लिए उन्होंने पूछा–''मगरू और बुधनी को कहाँ छोड़ आए?''

शुकदेव जी उत्तर देने ही जा रहे थे कि एक लम्बी इम्पाला गाड़ी ने बंगले में प्रवेश किया, गाड़ी रुकी, फाटक खुला और गाड़ी में से चहकती एक ख़ूबसूरत आधुनिका युवती उतरी। उसे देखते ही अंजनी ने कहा–''लो मिस रोजी आ गई।''

रोजी ने बढ़कर अंजनी से हाथ मिलाया। अंजनी ने उसका हाथ पकड़े हुए कहा ''आइए, आपका परिचय शुकदेव दास आर्य से कराऊँ।'' फिर शुकदेव जी की ओर इशारा करते हुए कहा–''आप हैं डॉ. शुकदेव दास आर्य। आपको मिर्जापुर दक्षिणांचल के गुहाचित्रों, शिलालेखों और आदिवासी लोकगीतों पर शोध के कारण डाक्टरेट की उपाधि मिली है। उधर के लोकगीत प्रस्तुत करने के लिए आप अपने दो कलाकारों के साथ पधारे हैं।''

''बड़ी ख़ुशी हुई आपसे मिलकर'' कहती हुई रोजी ने शुकदेव जी की ओर अपना हाथ बढ़ाया। शुकदेव ने हाथ न मिलाकर शालीनता से हाथ जोड़ दिए।

''और आप हैं मिस रोजी, भारत की नामी-गिरामी कलाकार, बहुत बड़ी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

थियेटर कम्पनी की मालकिन। आपने अपनी लड़कियों को भेजकर मेरे इलेक्शन में मेरी बड़ी मदद की है। छब्बीस जनवरी को लोकनृत्य, लोकगीत आदि प्रस्तुत करने की जिम्मेदारी आप ही को मिली है।'' अंजनी ने रोजी का परिचय कराया।

''आपने अपने कलाकारों को कहाँ ठहराया है?'' रोजी ने शुकदेव जी से पूछा।

शुकदेव जी के बताने पर उसने कहा–''वहाँ क्यों? जब आप अंजनी के ख़ास हैं तो मेरे भी हो गए। वहाँ पर आपको पन्द्रह-सोलह दिन का किराया, खर्च सब देना होगा।''

''यह तो सरकार की ओर से अग्रिम मिल चुका है।''

''डाक्टर साहब, अगर मिल गया है तो उसे जेब में रखिए। आप और आपके कलाकारों की सारी जिम्मेदारी मेरे जिम्मे। जिस पंचतारा होटल में मेरे थियेटर वाले रुके हैं वहीं आप के लोग भी रुकेंगे। देखिये, इस विषय में और कुछ नहीं सुनना चाहती, अभी चलिए'' कहती रोजी शुकदेव जी को लगभग खींचते हुए अपनी गाड़ी की ओर चल पड़ी।

''अरे रुको भई हम भी चलेंगे, पार्टी में आई हो तो कुछ नाश्ता-वाश्ता कर लो। क्यों चौथीराम जी सब तैयार है न?'' अंजनी ने पूछा।

''हाँ हाँ, अभी चपरासी आकर कह गया है चलिए, चलिए शुकदेव जी'' कहते चौथीराम जी नाश्ता कक्ष की ओर चल पड़े।

नाश्ता कक्ष में आकर शुकदेव जी ने कुर्सी पर बैठते हुए कहा–''रात दस बजे के बाद धर्मशाला वाले फाटक बन्द कर देते हैं, फिर नहीं खोलते।''

''आप निश्चिन्त रहें, अब सारी जिम्मेदारी मेरी है'' कहती रोजी बगल वाले कमरे में चली गई जिसके अन्दर से रह-रह कर कहकहे की आवाज आ रही थी। आर्य जी अपरिचितों के साथ नाश्ता करते रहे। आते समय अंजनी और चौथी राम कहीं इधर-उधर हो गए थे। नाश्ता करके उन्होंने घड़ी देखी, दस बज चुके थे। वह व्यग्रता से इधर-उधर देखने लगे। उन्हें बड़ी झुंझलाहट हो रही थी, लेकिन जब उन्हें याद आया कि रोजी की व्यवस्था से पन्द्रह-सोलह दिन का खर्च बच जाएगा तो झुँझलाहट कुछ कम हो जाती। उनके मन में आता कि बगल वाले कमरे में जाकर रोजी को बुला लें लेकिन कमरे के दरवाजे पर खड़े लम्बे-चौड़े दरबान की बेरुखी देख उनकी हिम्मत जवाब दे देती। व्यग्रता में वे छटपटा रहे थे कि हाल के कोने में बड़ी मेज पर बिखरे पत्र-पत्रिकाओं के ढेर पर उनकी नज़र पड़ी। वह उठकर समय बिताने के लिए उसे देखने लगे। अधिकांश दिल्ली से प्रकाशित होने वाले छोटे-छोटे समाचार पत्र थे। उन पर छपी कुछ मुख्य पंक्तियों पर लाल स्याही से निशान लगाए गए थे। उन्होंने उसे पढ़ा। अंजनी सहगल की प्रशंसा थी। एक समाचार पत्र में मुख्य पंक्ति थी–'युवा हृदय सम्राट अंजनी सहगल'। दूसरे में था–

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'आदर्श युवा नेता अंजनी सहगल' आदि। वह इन्हें पढ़ ही रहे थे कि अंजनी और रोजी आठ दस आदमियों के साथ कमरे के बाहर आए। उनकी बातचीत से आर्य जी को लगा कि ये सभी या तो पत्रकार हैं या छोटे समाचार-पत्रों के मालिक। अभी-अभी पढ़े गए अंजनी विरुदावली के मर्म को वे समझ गए।

कमरे से बाहर आकर रोजी ने शुकदेव जी की खोज में अपनी दृष्टि इधर-उधर दौड़ाई। शुकदेव जी तो उसी की प्रतीक्षा कर रहे थे, वे जल्दी से उसके पास पहुँच गए।

"आइए" कहती रोजी अपने कपड़ों की भीनी सुगन्ध बिखेरती अपनी गाड़ी की ओर चल पड़ी।

"चौथीराम कहाँ हैं?" शुकदेव जी ने उसके पीछे चलते हुए पूछा।

"होंगे कहीं" लापरवाही से कहती रोजी अपनी गाड़ी के पास पहुँच गई। ड्राइवर ने गाड़ी का पिछला दरवाजा खोल दिया।

"अंजनी तुम्हें नहीं चलना है?" कहती रोजी गाड़ी में बैठ गई। हड़बड़ाए शुकदेव जी भी उसकी बगल में बैठ गए।

"चलना है भाई चलना है। इस समय तो तुम एकदम हवाई जहाज हो गई हो" कहता अंजनी अपने पत्रकार मित्रों से विदा लेकर गाड़ी में बैठ गया। गाड़ी चल पड़ी। अंजनी और रोजी बातें करने लगे।

शुकदेव जी उन दोनों के बीच बैठे थे। बातचीत में उन दोनों के मुँह से निकलने वाली शराब की दुर्गन्ध से परेशान होने लगे। आधे घंटे बाद जब उनसे नहीं रहा गया तो उन्होंने कहा–"मैं ड्राइवर की बगल में बैठ जाऊँ?"

"अब तो पहुँच ही गए हैं, वह देखिए सामने आपकी धर्मशाला है" रोजी ने सामने की ओर संकेत करते हुए कहा।

कुछ ही देर में गाड़ी धर्मशाला के गेट पर पहुँच कर रुक गई। ड्राइवर ने हार्न बजाया। धर्मशाला के फाटक की छोटी खिड़की से किसी ने झाँकते हुए रोबदार आवाज में कहा–"कौन है? इतनी रात को धर्मशाला का गेट नहीं खुलता।"

"गेट खोलो हम हैं, इधर देखो" गाड़ी के अन्दर की बत्ती जल गई। दरबान ने देखा और बड़ी विनम्रता से–'नमस्ते मेम साहब' कहा और जल्दी से गेट पर लगे ताले को खोलने लगा तब रोजी ने कहा–"फाटक बन्द मत करो हमें अभी लौटना है। आर्य जी कमरा नम्बर बता दें दरबान बुला देगा।"

"मैं स्वयं जा रहा हूँ" कहते हुए शुकदेव जी गाड़ी से उतर कर जब अपने निर्धारित कमरे में पहुँचे तो मंगल और बोधमयी को बेचैनी से अपना इन्तज़ार करते पाया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"एक घंटे में लौटने की बात थी, इतनी देर कहाँ लगा दी?" मंगल ने पूछा।

"चलो, नीचे गाड़ी खड़ी है, अब दूसरी जगह चलना है" शुकदेव जी ने मंगल के प्रश्न को टालते हुए कहा।

"डर के मारे मेरी तो जान ही निकल रही थी। हम दोनों बिना रुपए-पैसे के इस अनजाने शहर में कहाँ जाते?" बोधमयी ने लगभग रुआँसे स्वर में कहा। मंगल ने अपने गले में लटकते सम्पादक जी द्वारा दिए गए पते की ताबीज को टटोला और कहा–"न आते तो फिर देखा जाता।"

"नहीं भाई, डरने की कोई बात नहीं है। यहीं पर तुम्हारे यहाँ के चौथीराम जी हैं। पिपरी में तैनात इंजीनियर सहगल साहब के लड़के अंजनी जी हैं। सभी अपने ही लोग तो हैं।"

चौथीराम का नाम सुना तो मंगल और बोधमयी का साहस बढ़ा। किन्तु अंजनी का नाम सुनकर दोनों को पिपरी में घटी दुर्भाग्यपूर्ण घटनाओं की याद आ गई।

बोधमयी के सामने उसके बप्पा की, लाठी ताने तमतमाई मूर्ति साकार हो गई। उसी समय नीचे से बार-बार हार्न बजने की आवाज आने लगी।

"तुम लोग गाड़ी की ओर चलो, मैं हिसाब देकर आ रहा हूँ।" कहते शुकदेव जी मैनेजर के कमरे की ओर चले गए।

बिजली के दूधिया प्रकाश में छह फुट एक इंच लम्बे बलिष्ठ भुजाओं और चौड़ी छाती वाले मंगल तथा उसकी बगल में उसके कन्धे तक ऊँची, आर्यग्राम के नियमित योगासनों से अति सुघड़ हो गए बदन वाली बोधमयी दोनों को सीढ़ी से उतरते हुए अंजनी और रोजी ने देखा।

"वन्डरफुल, यह तो बहुत्त खूबसूरत हो गई है" अंजनी के मुख से अनायास निकल पड़ा।

"जरा मगरू को तो देखो, यूनान के बहादुर हरकुलिस की मूर्ति याद दिला रहा है" रोजी ने आश्चर्य से आँखें फाड़कर मंगल की ओर देखते हुए कहा।

मंगल के बदन पर एक हल्की सूती चादर थी। उसने ठंड से बचने के लिए अपने दोनों कान लाल अँगोछे से बाँध रखे थे। उसके हाथ में एक बड़ा-सा टीन का सन्दूक था, जिसे वह मोटी रस्सी से चारों ओर से बाँधकर एक खिलौने की तरह अपने हाथ में लटकाए चला आ रहा था। बोधमयी एक छोटी-सी ऊनी शाल ओढ़े थी।

दोनों आकर गाड़ी के पास खड़े हो गए। मंगल ने अपना सन्दूक जमीन पर रख हाथ जोड़कर अंजनी को–'सलाम साहब' कहा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"आओ-आओ बैठो" कहती अंजनी की बगल में बैठी रोजी गाड़ी के बाहर निकल आई। "ड्राइवर बक्स डिग्गी में रख दो" उसने ड्राइवर को आदेश दिया।

मंगल बहुत संकोच के साथ अंजनी के बगल में बैठ गया। रोजी भी मंगल की बगल में बैठ गई और बोधमयी से कहा–"आओ तुम भी बैठ जाओ।"

तीन ही आदमियों से गाड़ी की सीट पूरी भर चुकी थी ऐसी हालत में-मैं कहाँ बैठूँ, सोचती बोधमयी असमंजस की स्थिति में खड़ी रही। उसी समय ड्राइवर बक्से को डिग्गी में रखने के लिए आ गया। उसने बक्स को एक हाथ से उठाना चाहा, बक्से हिला तक नहीं तो उसने दोनों हाथों से बक्से को किसी प्रकार उठा तो लिया किन्तु डिग्गी तक नहीं ले जा पाया।

"आप डिग्गी के पास चलिए, मैं रख देती हूँ" कहती बोधमयी ने बक्से को उठाकर आसानी से डिग्गी में रख दिया। ड्राइवर ने आश्चर्य भरी दृष्टि से बोधमयी की ओर देखा।

"तुम क्यों परेशान हो रही हो, आओ, इसी में बैठो" कहती रोजी ने मंगल के पूरे बदन से अपने बदन को सटा कर उसे अंजनी की ओर जोर से ठेला। उसे ऐसा लगा जैसे उसने किसी लौह स्तम्भ को ठेलने का प्रयास किया हो। मंगल अंजनी की ओर थोड़ा दबाव देकर खिसक गया। दबाव से अंजनी की सांस रुकने लगी। खिसकने से बने थोड़े से स्थान में जब बोधमयी ने घुसकर जगह बनाना शुरू किया तो "मैं अगली सीट पर बैठ जाता हूँ" कहते हुए अंजनी ने गाड़ी का दरवाजा खोल बाहर आकर राहत की सांस ली।

उसी समय शुकदेव जी आ गए। दोनों अगली सीट पर बैठ गए। गाड़ी गेट से बाहर निकल कर सड़क पर दौड़ने लगी।

"बक्से में क्या रख कर लाए हो जो इतना भारी है?" रोजी ने बड़े स्नेह से मंगल से पूछा।

"कुछ नहीं, हम दोनों के कुछ कपड़े-लत्ते हैं और पन्द्रह-सोलह दिन के खाने के लिए सत्तू-गुड़-घी यही सब है।

"तुम दोनों होटल में नहीं खाते?"

"दस पाँच दिन के लिए अपना धर्म क्यों बिगाड़ें?"

"क्या होटल में खाने से धर्म चला जाता है?" रोजी ने सहसा पूछा।

"गन्दे विचार के व्यक्ति द्वारा बनाए गए या दिये गए अन्न को खाने से उनके विचारों का असर खाने वाले की बुद्धि पर पड़ता है, यह हमारे गुरु जी ने बताया है।"

"अब यह अनपढ़ मगरू नहीं, आर्यग्राम के दीक्षित पढ़े-लिखे मंगल हैं" शुकदेव जी ने हँसकर कहा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"मंगल की भाषा सुनकर तो आर्य जी आप की बात पर अविश्वास करने का कोई प्रश्न ही नहीं उठता लेकिन इनकी बहन ने कितनी प्रगति की है, कुछ बोले तो पता चले" अंजनी ने हँसती आँखों से बोधमयी की ओर देखते हुए कहा।

"बोधमयी की परीक्षा मत लीजिए, यह आर्यग्राम की सबसे कुशाग्रबुद्धि छात्रा और तथास्तु जी की प्राणप्रिय बेटी है" शुकदेव जी ने कहा।

"किसलिए यह तथास्तु जी को प्राणों से प्रिय है?" अंजनी ने पूछा।

"इसलिए कि योगासनों एवं यौगिक क्रियाओं पर इनकी असाधारण पकड़ है। आर्यग्राम से चलते समय तथास्तु जी ने अपने हाथों से इनके खाने की चीजें गाय का घी, सूखे फल आदि को अलग से बक्स में सजा कर रखा है।"

"एक दिन यह अपने योगासनों को हम लोगों को भी दिखाएँ तो...। अंजनी के वाक्य पूरा करने से पहले ही–"यह प्रदर्शन की चीज नहीं है, विशेषकर मेरे लिए"–विनम्रता से कहकर बोधमयी गाड़ी की खिड़की के बाहर झाँकने लगी।

"अच्छा यह बताओ किस भाग्यशाली से शादी की? सिन्दूर तो दिखाई नहीं पड़ रहा है," कहती रोजी ने उसकी ओर देखा। बोधमयी मौन खिड़की से बाहर झांकती रही।

"पिपरी वाले सम्पादक जी को तो आप जानती ही होंगी, उन्हीं से इनकी मंगनी हो चुकी है।" शुकदेव जी ने बताया।

"हाँ, हाँ याद है, वहीं सम्पादक जी न, बुरा न मानिएगा वाले, पिपरी में मिले थे। क्या पर्सनाल्टी है, एकदम लाल गोराई लिए लम्बा छरहरा बदन, सदा कउये की तरह सतर्क, चीते की भाँति स्फूर्ति से भरे। पिपरी बाजार के हर नुक्कड़ पर दस-पाँच मिनट में खड़े दिखाई पड़ जाने वाले, अलमस्त।"

"हाँ, हाँ आपने ठीक पहचाना उन्हीं के साथ इनकी शादी यहाँ से लौटने के बाद होगी।"

"अपनी मंगेतर को छोड़कर वह कहाँ हैं?" अंजनी ने पूछा।

"इसी दिल्ली में ही हैं, कहाँ है, पता नहीं" शुकदेव जी ने कहा।

"अगर बोधमयी कहें तो मैं उन्हें ढूँढ लाऊँ, सच्च दिल्ली के सभी थानों पर हुलिया भेज दूँगा कि लम्बे गोरे कुर्ता पायजामा पहने दाहिने कन्धे पर गाँधी छाप झोला लटकाए, हमेशा जल्दबाजी, बुरा न मानिएगा की शकुनतकिया वाले व्यक्ति को अविलम्ब पकड़ कर पेश करें। दो दिन के अन्दर न बुलवा लिया तो मेरा नाम अंजनी नहीं।" बोधमयी के मन ने हुलास भरा कि वह कह दे हाँ ढुंढवा दीजिए लेकिन अपनी भावना को वह दबा गई। ऊपर से वह वैसे ही मौन और निर्विकार बनी खिड़की से बाहर झाँकती रही।

"अरे यह तो कुछ बोल ही नहीं रही है" अंजनी ने कहा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"आपको क्या पता है अंजनी बाबू-बड़ी ऊँची नज़र रखते हैं ये नीची नज़र वाले"- कह कर रोजी खिलखिला कर हँसती हुई बोधमयी से लिपट गई।

"अच्छा भई, छोड़ो वह बोलेगी नहीं, हाँ मंगल और आर्य जी, आप लोग इनकी शादी में हम लोगों को अवश्य बुलाइएगा" अंजनी ने कहा।

"अवश्य, अवश्य" मंगल और आर्य जी के मुँह से एक साथ निकला। बोधमयी पूर्ववत् खिड़की से बाहर झाँकती रही।

गाड़ी एक भव्य होटल के भीतर जाकर रुक गई। रोजी अपने नवागन्तुक मेहमानों के रहने की व्यवस्था करके अंजनी को उनके बंगले पर छोड़ने चली गई।

दूसरे दिन रोजी ने अपने थियेटर में काम करने वाले सभी कलाकारों से मंगल और बोधमयी का परिचय कराया। सलोनी नाम की अत्यधिक हँसमुख लड़की से बोधमयी की मित्रता हो गई। दोनों की मित्रता से रोजी बहुत प्रसन्न हुई। होटल के हॉल में लोकनृत्य और लोकगीतों के रिहर्सल होने लगे। करमा के लिए लोक वेशभूषा में लड़के-लड़कियों को तैयार किया गया। छह-छह लड़कियों के दो समूह एक दूसरे का हाथ थामे अर्धवृत्ताकार में आमने-सामने खड़े हो गये। गले में मानर वाद्य और पैरों में घुँघरू बाँधे दो-दो पुरुष दोनों अर्धवृत्त के मध्य में आमने-सामने खड़े हो गए। रोजी और उसके सहायकों ने पात्रों के खड़े होने के ढंग को बड़े ध्यान से देखा।

लड़कियों के खड़े होने के क्रम में फेर-बदल किया गया। बोधमयी सबसे लम्बी और स्वस्थ थी, उसे एक अर्धवृत्त के मध्य में खड़ा किया गया। उसकी लम्बाई की अन्य दूसरी लड़की न होने के कारण उसके सामने के अर्धवृत्त में उसके सामने मंगल को खड़ा किया गया ताकि लगे कि एक अर्धवृत्त की नायिका लड़की और दूसरे का नायक लड़का है। इस प्रकार कौन कहाँ किस तरह खड़ा हो, इसके निर्णय में तीन घंटे लग गए। अब मानर बजवाया गया। मानर बजाते समय वाद्यकारों के चेहरे पर उतार-चढ़ाव, उनकी शारीरिक हरकतों पर विशेष हिदायतें दी गईं। नए मानर वाद्यकारों को मंगल से मिलाकर मानर बजाने में विशेष श्रम करना पड़ा। एक घंटे श्रम के बाद थियेटर के वाद्यकार सिद्धहस्त मानर वाद्यकारों की तरह मानर बजाने लगे। इसके बाद बोधमयी से करमा गवाया गया। जीवन भर गाने वाली लड़कियों को करमा धुन पकड़ते देर नहीं लगी। ये सभी समवेत स्वरों में गाने लगीं। सारे दिन एक ही गीत को रुक-रुक कर गवाया ग़या। बोधमयी ने ख़ूब तन्मय होकर गाया और मंगल ने ख़ूब मगन होकर मानर बजाया। गीत जब स्वर और वाद्य पर मज गया तो रोजी ने रिहर्सल बन्द कर दिया।

रिहर्सल बन्द होते ही सलोनी ने बोधमयी की गर्दन झुका उसके कपोलों को चूम लिया और कहा-"बोध, तूने कहाँ से यह कोकिल कंठ पाया? आज से तुम

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मेरे साथ मेरे कमरे में रहोगी। मैं तुमसे योगासन सीख लूँगी और तुम्हारे साथ आर्यग्राम चलूँगी।"

महिलाओं में अतिशीघ्र मित्रता स्थापित कर लेने का स्वभावजन्य गुण होता है। उनके इस सहज गुण में संस्कार बस होने वाली मित्रता और त्वरिता ला देती है। संस्कारों के मेल से बनने वाले मित्र अनायास एक दूसरे की ओर आकर्षित होकर मिल जाते हैं। वे अपने आकर्षण का कारण नहीं समझ पाते। अकारण एक दूसरे को प्यार करते हैं, एक दूसरे की नींद सोते हैं, जागते हैं। यही बात सलोनी और बोधमयी में भी हुई।

सम्पादक जी द्वारा अपने लिए सम्बोधित किए जाने वाले–बोध-सम्बोधन को सलोनी के मुख से सुनकर बोधमयी का हृदय विभोर हो गया। उसे सलोनी में सम्पादक जी का प्यार दिखाई पड़ा। उसे रोमांच हो आया। उसने धीरे से कहा–"भैया नहीं मानेंगे।"

"धत् पगली, क्या तेरे भैया लड़की हैं जो अकेले सोने में डरेंगे? मैं उनसे बात कर लूँगी।"

सलोनी ने उसी दिन मंगल से बात की। मंगल की इच्छा तो एकदम नहीं थी, किन्तु वह संकोचवश कुछ बोल नहीं पाया। उसकी बगल में बैठी बोधमयी सिर नीचे किए कनखियों से कभी सलोनी और कभी मंगल की ओर देख रही थी। मंगल ने एक बार बोधमयी की ओर देखा फिर कुछ सोचने लगा।

"क्या सोच रहे हैं? आप के दाहिने वाले कमरे में मालकिन रोजी साहब रहती हैं और बाएँ वाले कमरे में मैं। बोधमयी बस एक दीवाल के अन्तर में ही तो रहेगी। फिर मेरे दाएँ आपके अपने शुकदेव जी रहते हैं।"

मंगल को सलोनी की बात ठीक लगी। साथ ही साथ उसे आभास हुआ कि बोधमयी भी सलोनी के साथ रहना चाहती है। उसने बात मान ली। बोधमयी सलोनी के साथ रहने लगी।

सुबह चार बजे जब मंगल नित्य क्रिया से निवृत्त हो, स्नान कर योगासन-प्राणायाम के लिए होटल की खुली छत पर पहुँचता तो बोधमयी और सलोनी को योगासन करते देख बहुत प्रसन्न होता। योगासन-प्राणायाम के बाद तीनों एक साथ नीचे आते। बोधमयी और मंगल घर से लाए खाद्य पदार्थ का नाश्ता करते। कभी-कभी बहुत आग्रह के बाद सलोनी भी दोनों का साथ दे देती। सलोनी और बोधमयी की घनिष्ठता इतनी बढ़ गई कि दोनों ने अपने व्यक्तिगत जीवन के खुले-छिपे सारे पहलुओं को भी एक दूसरे के सामने उजागर कर दिया। सलोनी ने बताया कि वह प्रेम में धोखा खाई एक बच्चे की माँ है। बच्चा बोर्डिंग में पढ़ता है। उसी के लिए वह इस पेशे में है। जब उसने सुना कि बोधमयी के 'वो' इसी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दिल्ली में हैं, तो उसने उन्हें ढूँढ निकालने का आश्वासन दिया और पूछा– "तुम्हारे पास उनकी कोई फोटो हैं?"

'नहीं' बोधमयी ने सिर झुकाकर धीरे से कहा।

"धत् पगली, हृदय में प्यार इतना बड़ा और हाथ में एक नन्हीं-सी फोटो भी नहीं? अच्छा चल खाली समय में हम तुम्हें दिल्ली घुमाएँगे। हो सकता है रास्ते में कहीं दिखाई ही पड़ जायँ। इस प्रकार की बातें करती दोनों रात में कब नींद की गोद में चली जातीं, उन्हें पता ही नहीं चलता। सुबह तीन बजे बोधमयी हड़बड़ा कर उठती और "अरे उठ, जल्दी से तैयार हो जा, समय हो गया है"– कहती बाथरूम में घुस जाती, तब सलोनी भी उठ उसका साथ देती। रात-दिन के साथ और विचारों की समानता ने दोनों को एकाकार कर दिया था।

दिन होते ही, होटल के बड़े हॉल में विभिन्न प्रान्तों के लोकगीत और लोकनृत्य के अभ्यास प्रारम्भ हो जाते। कलाकार सारे दिन के श्रम से थक कर चूर हो जाते। नृत्य करने वालों और वाद्यकारों के बदन से जाड़े के मौसम में भी पसीना निकलने लगता।

आज अभ्यास का आठवाँ दिन है, जनवरी की अट्ठारह तारीख़। छब्बीस जनवरी आने में आठ दिन शेष।

सारे दिन के अभ्यास के बाद शाम को मंगल अपने कमरे में थकान से चूर, बिना खाए-पीए लिहाफ़ ओढ़ कर सो गया। बोधमयी ने उसे अत्यधिक थका जान जगाया नहीं। उसने चुपचाप उसके कमरे में आकर भोजन किया और दरवाजा उढ़काकर सलोनी के कमरे में जाकर सो गई। रात दस बजे के करीब मंगल को अपने बदन पर किसी कोमल हाथ का स्पर्श हुआ। उसने आँखें खोलीं तो देखा रोजी उसके सिरहाने बैठी है। वह हड़बड़ाकर उठ बैठा।

"खाना खाया?" रोजी ने स्नेहसिक्त स्वर में पूछा।

"थक कर सो गया था, पता नहीं बोधमयी ने खाया या नहीं।"

"वह खाना खाकर चली गई वह देखो उसके जूठे बर्तन पड़े हैं।" रोजी ने टेबल पर पड़े जूठे बर्तनों की ओर इशारा किया।

थकान से चूर मंगल ने अंगड़ाई ली।

"सुबह एकदम तरोताजा हो जाओगे।" कहती रोजी ने उठकर टेबल पर रखे गिलास में अंग्रेजी शराब उड़ेली और मंगल के सामने कुर्सी खींच कर बैठ गई।

"नहीं नहीं, मैं शराब नहीं पीता।" मंगल ने कहा।

"रोजी ने मंगल की आँखों में आँखें डाल कर मुस्कराते हुए कहा–"अच्छा बताओ तुमने कभी शराब नहीं पी है?"

"बहुत पी है लेकिन आर्यग्राम में आने के बाद छोड़ दी।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"ठीक है, आर्यग्राम जाना तो मत पीना, फिर छोड़ देना," अर्धनग्न वस्त्र पहने रोजी ने मुस्कराकर कहा।

दीर्घकाल तक किए गए नशे को न करने का हाल ही का उसका व्रत डगमगाने लगा। अंग्रेजी शराब की भीनी सुगन्ध से उसके मुँह में पानी आने लगा। उसने शराब के गिलास की ओर देखा। रोजी से बचाकर उसने मुँह में आए पानी को गुटक लिया। चतुर रोजी ने गिलास उसके सामने बढ़ाकर कहा–"थोड़ी-सी ले लो, थकान मिट जाएगी।"

मंगल के हाथ गिलास की ओर बढ़े फिर "बोधमयी जानेगी तो बहुत बुरा मानेगी"–कहकर अपना हाथ खींच लिया।

"नहीं, वह नहीं जान पाएगी, कोई रोज-रोज पीना है?" कहती रोजी ने गिलास उसके मुँह से लगा दिया।

मंगल ने सहमते हुए गिलास को थामा और एक ही सांस में पूरा पी गया। कुछ ही देर में उस पर सुरूर छाने लगा। रोजी ने दूसरा गिलास बनाया और अपने हाथों से मंगल के मुँह से गिलास लगाया। मंगल ने एक ही घूँट लिया कि रोजी उसके मुँह से गिलास हटाकर-"माफ़ करना, एक ही गिलास है, मैं भी इसी से पीऊँगी"–कहते हुए उसी गिलास से एक घूंट लिया और शेष बची शराब को मंगल के हाथ में देकर, "रुको, मैं अभी आ रही हूँ" कहकर वह अपने कमरे में गई। वहाँ से डेग में गोश्त और रोटी लाकर मंगल के सामने रख दिया।

"क्या है? गोश्त है? मैं इसे नहीं खाऊँगा।"

"अरे खाओ यार, आर्यग्राम जाकर मत खाना।" कहती रोजी ने शराब का गिलास उठाकर मंगल के मुँह से लगा दिया।

मंगल ने एक लम्बा घूँट लिया। गिलास में बची शराब को रोजी पी गई। मंगल नशे में हो गया था। रोजी की भाव-भंगिमाएँ लगातार उसे उत्तेजित करती जा रही थीं।

शराब या तो राजाओं के लिए है या ऋषियों के लिए। कामनापूर्त साधन सम्पन्न या कामना रहित व्यक्ति को यह विचलित नहीं कर पाती। उसके विपरीत साधन के अभाव में प्रतिदिन दमित होती मध्यम वर्ग की इच्छाएँ नशे में विस्फोटक स्थिति धारण कर लेती हैं। मस्तिष्क भविष्य के परिणामों के प्रति संवेदनशून्य होकर विस्फोटक रूप में उमड़ी दमित इच्छाओं की पूर्ति के लिए वर्तमान पर केन्द्रित हो जाता है।

उत्तेजक वस्त्रों में उत्तेजक हाव-भाव दर्शाती रोजी पर नशे में चूर मंगल का मन-मस्तिष्क एकदम केन्द्रित हो गया। उसने हाथ बढ़ाकर कुर्सी पर बैठी रोजी को एक गुड़िया की तरह उठा लिया और .....।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कुछ देर बाद परम तृप्ति का श्वांस लेती रोजी उठी और टेबल पर खाना सजाने लगी। खाना सजाकर वह मंगल से सटकर बैठ गई और गिलास में शराब उड़ेलने लगी।

"अभी....और....पी...योगी?" मंगल ने पूछा।

"हाँ...थोड़ा तुम भी लो। खाकर आधी रात रहूँगी भोर में चली जाऊँगी।"

दोनों ने खाना खाया। रोजी अपने वादानुसार भोर में उठकर चली गई।

अन्य दिनों की अपेक्षा आज मंगल की नींद देर से खुली। शराब की खुमारी से उसका बदन टूट रहा था। उसकी दृष्टि टेबल पर गयी। टेबल पर बिखरी हड्डियों कों देख वह घबरा गया। उसने जल्दी-जल्दी उसे साफ किया। आज जीवन में पहली बार वह बोधमयी से चोरी कर रहा था। वह जल्दी-जल्दी तैयार होकर होटल की छत पर पहुँचा तो देखा कि सलोनी और बोधमयी आसन-प्राणायाम कर चुकी हैं। उसे बड़ी आत्मग्लानि हुई। उसने मन ही मन अपने को बहुत धिक्कारा और दोबारा फिर ऐसा न करने का संकल्प लिया।

"कल बहुत थक गए थे क्या? आज बड़ी देर कर दी।" बोधमयी ने पूछा।

"हाँ" मंगल ने संक्षिप्त-सा उत्तर दिया और अपनी क्रिया में लग गया।

मंगल ने लाख प्रतिज्ञा कर ली थी लेकिन उसकी बहुत दिनों की नशे की आदत रोजी द्वारा पुनर्जीवित होकर शाम ढलते ही उसके आत्मबल को पराजित कर देती थी। वह उन सभी कामों को करता जिसे न करने के लिए वह दिन भर कसम खाता रहता। अब उसे बोधमयी के सामने जाने में एक झिझक-सी लगने लगी थी। शाम के भोजन के समय वह इधर-उधर खिसक जाता। बोधमयी के खाने के बाद वह अपने कमरे में पहुँचता और रोजी का इन्तजार करता। बोधमयी अपनी नयी मित्रता के नशे में मंगल के आने का न इन्तजार करती न तो साथ न खाने की शिकायत ही करती।

आर्यग्राम से अभिभावक बनकर आए शुकदेव दास आर्य को मंगल और रोजी के सम्बन्धों की थोड़ी-थोड़ी जानकारी होने लगी थी। उन्हें छब्बीस जनवरी के कार्यक्रम के बाद सकुशल लौट जाने की चिन्ता सताने लगी। कुछ पैसों को बचाने के लालच में रोजी के साथ रहने के अपने फैसले पर उन्हें आत्मग्लानि होने लगी।

अब मंगल आत्मचेतना खोकर पूरी तरह रोजी की गिरफ्त में आ चुका था। उसने रोजी के साथ शारीरिक तृप्ति के ऐसे-ऐसे आयाम देखे जिसकी उसने कल्पना स्वप्न में भी नहीं की थी। एकान्त क्षणों में वह कभी-कभी रोजी और इन्द्राणी क़ी तुलना करता। कहाँ रोजी कहाँ इन्द्राणी, ऊँह, इन्द्राणी नहीं इनरिया चमाइन। नाम बदलने से गोबर गुड़ थोड़े ही बन जाएगा। चमाइन चमाइनै रहेगी। धत्तेरे की, मैं भी कितना मूर्ख था, सम्पादक की बातों में आ गया। सम्पादक जी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पर उसे क्रोध आता। उसने अलानाहक मुझे फँसा दिया। रोजी ठीक कहती है कि सम्पादक जी जब ऐसे ही समाज सुधारक थे तो इनरिया से खुद शादी क्यों नहीं कर ली? शादी की बात आते ही उसे बोधमयी याद आ गई। हो सकता है जैसे रोजी के मेरे सम्बन्ध हो गए हैं, वैसे ही बोधमयी के सम्पादक जी के...। हुआ होगा अब कोई बच्चा तो है नहीं, अपना भला-बुरा समझने की उमर हो गई है। उसने गिलास में शराब उड़ेली, पानी मिलाया और पी गया। कल शाम से रोजी के कमरे में ताला बन्द है। वह कहाँ है? क्यों नहीं आई? वह बेचैन होकर सुबह से ही शराब पीं रहा था। उसी समय आर्य जी ने उसके कमरे में प्रवेश किया और उसकी बगल वाली कुर्सी पर बैठ कर साधिकार कहा–"बहुत शराब पीने लगे हो।"

"हाँ पहले भी मिल जाने पर पीता था, आज भी मिल गई है तो पी रहा हूँ।"

"लेकिन आर्यग्राम के बाशिन्दों को पीना मना है।" शुकदेव जी ने उसे याद दिलाया।

"अब मैं आर्यग्राम में नहीं रहूँगा।"

"तुम्हारे बाल-बच्चों का क्या होगा?" शुकदेव जी ने सकते में आकर पूछा।

"कौन बाल-बच्चा? वही इनरिया चमाइन?" कहकर मंगल ने घृणा से मुँह सिकोड़ा।

"मंगल, दिल्ली की चकाचौंध स्थाई नहीं है। अपने को संभालो। तुम्हारे इस कुकृत्य को बोधमयी और आर्यग्राम के लोग जानेंगे तो क्या कहेंगे? इस पर भी विचार करो।"

पहले दौर में किए गए कुकृत्य या दुर्व्यसन को आदमी भूलने या छोड़ने का प्रयास करता है। आदती होकर जब छोड़ नहीं पाता तब छिपाने का प्रयास करता है। जब छिपाने की स्थिति नहीं रह जाती तब कुकृत्य की आदर्शपूर्ण व्याख्या प्रस्तुत करते-करते अन्त में बेहया हो जाता है। वही हालत इस समय मंगल की हो चुकी है।

"बोधमयी या आर्यग्राम के लोग जानकर क्या कर लेंगे? क्या ये लोग मेरी ज़िन्दगी पार करेंगे? मैं कौन-सा पाप कर रहा हूँ? किसकी हत्या कर रहा हूँ? किसके घर डाका डाल रहा हूँ? जिसके साथ मन पटेगा उसके साथ रहूँगा, नहीं पटेगा, नहीं रहूँगा।"

मंगल शराब के नशे में बहुत जोर से बोल रहा था जिसे सुनकर तमाशबीनों के साथ सलोनी और बोधमयी भी आ गईं। बोधमयी को अपने भाई के चारित्रिक पतन की भनक लग चुकी थी, आज वह प्रत्यक्ष देख रही थी। जिस आर्य जी को

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सभी श्रद्धा की दृष्टि से देखते थे उन्हीं से मंगल इस तरह से बात कर रहा था; जैसे उनकी कोई अहमियत ही नहीं हो। अपने भाई को तमाशा बनता देख बोधमयी को शर्म और मंगल पर क्रोध आया। वह "चलिए छोड़िए इन्हें" कहती शुकदेव जी का हाथ पकड़ कर उन्हें कमरे से बाहर ले आई।

मंगल को बोधमयी के 'छोड़िए इन्हें' वाक्य में अपने प्रति उपेक्षा का भाव झलका। उसे लगा जैसे बोधमयी ने उसे पतित समझ बात करने योग्य भी नहीं समझा।

"अरे तुम क्या छोड़ने की बात कर रही हो? मैंने ही तुम लोगों को छोड़ दिया है। जाओ अब मेरे पास मत आना," मंगल ने बोधमयी की ओर हाथ फटकार कर क्रोधमरी आवाज में कहा।

शुकदेव जी ने देखा कि मंगल नियन्त्रण के बाहर चला गया है। वह उठकर चले गए। बोधमयी सिर नीचे किए सलोनी के कमरे में घुसी तो देखा कि सलोनी बहुत मायूस बैठी है। उसने सलोनी की ओर बहुत उदास नज़रों से देखा और कमरे के दरवाजे को भीतर से बन्द कर पलंग पर औंधे मुँह गिरकर हपस-हपस कर रोने लगी। सलोनी उसके सिरहाने बैठ कर उसका सिर सहलाती समझाने लगी। बोधमयी ने रोते हुए कहा–"सलोनी आज मुझे रो लेने दो। आज मेरे बप्पा दुबारा मरे हैं।" कहती वह घिघिया कर रोने लगी।

"बोधमयी औंधे मुँह पड़ी सारे दिन रोती रही। सलोनी उसके सिरहाने बैठी उसे सान्त्वना देती, उसका सिर सहलाती रही। जब रोने से उसका मन कुछ हल्का हुआ तो सलोनी की गोद में अपना सिर रखते हुए उसने पूछा–"तुमने सुबह से कुछ खाया नहीं। पगली मैं तो जनमजली हूँ। तू क्यों अपने को जला रही है? चल उठ कुछ खा-पी लें' कहती बोधमयी उठकर ब्रैठ गई।

तू मुझसे अधिक जनमजली नहीं है बोध। तेरे पास चाहे जैसा हो, एक भाई है, तेरा होने वाला पति है और सबसे बड़ी चीज तुम्हारे सिर पर पिता समान तुम्हारे गुरु का वरदहस्त है। इधर मेरी ओर देख, मेरा अपना कुछ नहीं है। यहाँ तक कि मेरा अपना नाम भी नहीं है। यशोधरा नाम था मेरा, अब सलोनी बन गई हूँ। मेरा प्रेमी पति किसी और के साथ शादी रचा चुका है। एक बच्चे की माँ यशोधरा को गौतम बुद्ध बोधित्व प्राप्त करने के लिए राजमहल में छोड़ गए थे लेकिन यह यशोधरा अपने एक बच्चे के साथ राजमहल में नहीं राजमार्ग पर भटक रही है। मेरे गौतम को बोधित्व प्राप्त होगा या मुझे, कुछ बता नहीं सकती"–कहते-कहते सलोनी की आँखों में आँसू आ गए।

"मेरे रोने के बाद तू अपने रोने की बारी का इन्तज़ार कर रही थी क्या?" कहती बोधमयी ने हाथ बढ़ाकर उसके आँसू पोंछ दिए।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"बोध, मैं तो इतना रो चुकी हूँ कि अब कभी-कभी जी हलका करने के लिए रोने की इच्छा होती है तो रुलाई ही नहीं आती।"

"न आए तो अच्छा है, चल हाथ-मुँह धो ले," कहती बोधमयी सलोनी का हाथ पकड़े बाथरूम में घुस गई। थोड़ी देर बाद तरोताजा हो बाथरूम से निकलीं तो मंगल के कमरे से झगड़े की आवाज सुनकर दोनों के कान खड़े हो गए।

"कल से अभी तक तुम कहाँ थी?" मंगल की नशे में डूबी आवाज आई।

"धीरे बोलो, बता रही हूँ, काम से गई थी" रोजी की बेचैन आवाज थी।

"ओह, नागिन आ गई है" सलोनी ने फुसफुसा कर कहा। बोधमयी ने उसके कन्धे को ठोक कर चुप रहने का इशारा किया।

"क्यों धीरे बोलूँ? बताओ अब क्यों धीरे बोलूँ? जब सभी लोग जान गए, सबकी निग़ाह में मैं नीच पापी हो गया तो अब छिपाने के लिए क्या बचा है? छोड़िए इन्हें, हुँह...छोड़िए इन्हें, जैसे मैं खउरहा कुत्ता हो गया हूँ। कहती हो धीरे बोलो।"

अभी तक रोजी के शारीरिक सम्बन्ध भौतिकवाद में पले-बढ़े लोगों से होते रहे। ऐसे लोग शारीरिक सम्बन्धों से भावनात्मक रूप से नहीं जुड़ते। उनके लिए शारीरिक सम्बन्ध शारीरिक आवश्यकता से अधिक कुछ नहीं है। रोजी को अभी तक ऐसा कोई पुरुष नहीं मिला था जो उस पर अपना एकाधिकार समझता हो। मंगल की डाँट ने उसे अपने पिता के डाँट की याद दिला दी जिसकी वह दुलारी बेटी थी। प्रेमी युगल प्यार के सहदौड़ में स्वयं को पीछे देख प्रसन्न होते हैं। रोजी इस दौड़ में स्वयं को मंगल से बहुत पीछे पा अति प्रसन्न हुई। यद्यपि कि उस जैसी नारी के हृदय में प्रेमिका होने के तत्व झुलस गए थे, लेकिन मंगल के एकाधिकार पूर्ण भाषा से वे झुलसे तत्व अकस्मात लहलहा उठे। उसने झुककर मंगल का एक जोरदार चुम्बन ले लिया और उसकी बगल में बैठ कर कहा–"क्या छोड़िए इन्हें, छोड़िए इन्हें कह रहे हो? किसने क्या कहा बताओ?"

"किसने कहा बताऊँ? आज उसने मुझे दुतकारा है जिसकी नींद मैं सोता-जागता था, जो मेरे लिए संसार की सबसे प्रिय चीज थी, जिसकी दृष्टि में मैं देवता था। उसका सबसे प्यारा..." कहते-कहते वह हिचकियाँ लेकर रोने लगा।

मंगल का रोना सुनकर बोधमयी की आँखों से आँसू झरने लगे। मंगल से बात किए उसे सात दिन हो गए थे। उसके मन में आया कि अभी चलकर भैया के चरण पकड़ कर माफ़ी माँग लूँ। उसने मन को कड़ा किया–"मैंने कौन-सी गलती की है? खुद गलती करके रो रहे हैं। होश में आएँगे तो अपनी गलती समझेंगे।"

बोधमयी की आँख से आँसू झरता देख सलोनी ने कहा–"तू फिर रोने लगी।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"नहीं...नहीं मैं रो नहीं रही हूँ, सिर्फ़ आँसू गिर रहे हैं।" कहती बोधमयी ने आँसू पोंछ लिए।

"कल छब्बीस जनवरी है न। कार्यक्रम का स्थान देखने गई थी। उसी की तैयारी कराने में रात भर सोयी नहीं हूँ। सारी रात तुम्हारी याद आती रही। लेकिन क्या करूँ? काम ही ऐसा था।"

"नागिन कहीं की, अंजनी के यहाँ रही होगी। सीधे-सादे आदमी को कैसा फँसा रही है?" सलोनी ने फुसफुसा कर कहा।

"तुमने मुझे रोजी के विषय में सारी बातें बताई हैं इसलिए मैं जानती हूँ। भैया बेचारे क्या जानें? वह तो उसकी बातों को सही मानेंगे" बोधमयी ने क़हा।

अपने जीवन में मंगल को रोजी जैसा वाचाल प्यार नहीं मिला था। माँ के प्यार का रूप भले ही दूसरा हो लेकिन वाचाल होता है। बचपन में माँ की मृत्यु से मंगल को वह नहीं मिला। यौवन काल में अपराधबोध से ग्रसित पत्नी मिली जो उसके हृदय में अपने अर्धांगिनी होने का एहसास ही पैदा नहीं करा पाई। अर्धांगिनी होने क़ा मतलब है कि कम से कम पुरुष का आधा पुरुषत्व उसके व्यक्तित्व को सर्वदा स्वीकार करने को बाध्य रहे। इस समय मंगल का सारा पुरुषत्व रोजी के व्यक्तित्व को स्वीकार कर रहा था। फिर अपने स्वभाव, अनुभव और ज्ञान के आधार पर हर आदमी किसी बात पर विश्वास अथवा अविश्वास करता है। यदि उसने किसी को धोखा नहीं दिया है तो उसे यह विश्वास नहीं हो सकता कि लोग धोखा भी देते हैं। इसलिए मंगल रोजी की बातों पर विश्वास कर शान्त हो गया।

"शान्त हो गए न, फँस गए उसकी बातों में। यह शुरू से ही बप्पा की तरह बहुत सीधे हैं।"

"देखो बोध, जब मैं बी.ए. पास, अपने को बहुत तेज-तर्रार समझने वाली इसकी बातों में फँस गई तो वह तो तुम्हारे भैया ही हैं। एक बात और, तुम भी होशियार रहना, यह बहुत....हरामज़ादी औरत है" सलोनी के चेहरे पर भय उभर आया।

"अरे अंजनी, उसे एक घूँसा मारूँगी तो गर्दन धड़ से अलग हो जाएगी। यह शरीर फूलों की सेज पर नहीं, पत्थरों पर पला है। इन हाथों ने फूल नहीं चुना है, पत्थरों को तोड़ा है" बोधमयी ने लापरवाही से कहा किन्तु उसके हृदय में भी हल्का-सा भय उत्पन्न हुआ।

"बोध, अब मैं तुम्हारा साथ नहीं छोड़ूँगी, तुम्हारे साथ मैं आर्यग्राम में रहूँगी। अपने बच्चे को तथास्तु जी को सौंप दूँगी। वह जैसा चाहें उसे बनावें। वहाँ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पर चलकर मैं फिर यशोधरा बन जाऊँगी। इस शहरी जीवन में चमक-दमक के सिवा कुछ नहीं है।''

''हमारे यहाँ तो सब कुछ है, पहाड़ है, झरना है, कल-कल बहता नाला है, जंगल है। जंगलों में भागते-दौड़ते हिरन, जंगली जानवर, पेड़ों पर चहचहाती चिड़ियाँ, गायों के झुण्ड, हँसते-खिलखिलाते बच्चे और सबसे बड़ी चीज हमारे गुरु जी का प्यार जो जंगल से लेकर गाँव तक बरसता है। बड़े ही मनोरम हैं हमारे गुरु जी। देखोगी तो कहोगी'' कहती बोधमयी अपने गाँव की स्मृतियों में खो गई।

''देख बोध, अब कल तक ही की तो बात है, किसी तरह कार्यक्रम हो जाय, उसके बाद तेरे साथ चल दूँगी।''

''कल के कार्यक्रम में मैं सिर्फ़ करमा ही गाऊँगी और कोई दूसरा गाना नहीं गाऊँगी।''

''दूसरा गाना? तुम्हारा मतलब मैंने समझा नहीं।''

वही जिसका खूब अभ्यास कराया गया है–''.बलम नशे बाज मोर जियरा डेराला। पी के नशे में जब होला बलमुआँ।''

सलोनी ने हँसकर जोड़ा–''भाला गड़ासा के नाही डेराला?'' और दोनों साथ हँसने लगीं।

''धत् यह कोई करमा है जो मैं उसे गाऊँगी? लोग क्या कहेंगे कि करमा के नाम पर यह क्या गाया जा रहा है?''

''तू भी क्या बात करती है? लोकगीत के विषय में न आयोजकों को कुछ ज्ञान है न बहुसंख्यक श्रोताओं को। जइसै लाल लाल भात, ओइसै दंतनिपोर खवइया'' कहकर सलोनी हँसने लगी। फिर बोली–''अगर सभी तुमसे गाने का आग्रह करने लगे तब क्या करोगी?''

''साफ कह दूँगी कि मैं करमा गाने आई हूँ करमा ही गाऊँगी। क्या तुम वह गाना गाओगी?'' बोधमयी ने पूछा।

''मालिक जो कहे उसे करना नौकरी की लाचारी है। नौकर हूँ लेकिन कल तक। कल के बाद सिद्ध बोध के साथ आर्यग्राम की धरा पर यशोधरा भी रहेगी।''

आर्यग्राम चलने की बात से उत्साहित बोधमयी ने–''अच्छा-अच्छा गुड़िया रानी, मैं तुम्हें गोद में लेकर चलूँगी...इस तरह'' कहकर बोधमयी ने सलोनी को गोद में उठा लिया और कमरे में दो चार कदम टहल कर उसे जमीन पर उतार हँसते हुए कहा–''अब चलकर खाना-पीना करके अच्छे बच्चे की तरह सो जाओ। आज कोई कहानी नहीं सुनाऊँगी, समझी।'' कहकर बोधमयी ने सलोनी की नाक पकड़ कर हिला दी। दोनों ने खाना खाया और सो गईं। □

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

२७. छब्बीस जनवरी

आज छब्बीस जनवरी है। नई दिल्ली में गणतन्त्र दिवस की गहमागहमी का माहौल। राजमार्गों पर भागती-चमचमाती कारें, कारों में हँसते-खिलखिलाते लोग। सभी विजय चौक की ओर चले जा रहे हैं। विजय चौक के चारों ओर जनसमूह उमड़ पड़ा है। साधारण दर्शक अपने-अपने स्थान की उपयुक्तता का अन्दाज़ लगा रहे हैं। विशिष्ट जनों को स्थान के चयन की आवश्यकता नहीं है। उनके बैठने का स्थान पहले से सुरक्षित है।

जैसे अस्पताल में ढेर सारे मरीज़ों को एक साथ देखकर सारा देश बीमार जान पड़ता है, वैसे ही यहाँ पर एकत्रित समृद्धिवानों के समूह को देखकर सारा देश समृद्ध लग रहा है। समारोह स्थल के आसपास किसी निर्धन का ढह रहा मकान नहीं, जाड़े से ठिठुरता कोई अलाव तापता आदमी नहीं। हर तरफ आलीशान कोठियाँ और आलीशान आदमी। लकदक कपड़ों में सुगन्ध बिखेरते स्वर्गदूतों-से राजनेता।

हर वर्ष की भाँति सधे-सधाए ढर्रे पर सारे दिन कार्यक्रम होते रहे। लोक कला कार्यक्रम शाम को था। इसलिए सभी लोक कलाकार हो रहे सारे कार्यक्रमों को देखने में व्यस्त रहे। सलोनी ने शुकदेव जी को बोधमयी पर आने वाले ख़तरे का संकेत दे दिया था। इसलिए वे बेचारे सीधे-सादे साहित्यकार एकदम से बेचैन थे। इस स्थिति में क्या किया जाय, वे निर्णय नहीं ले पा रहे थे। मंगल की आशा थी, परन्तु वह तो रोजी के रूप के जादू से भेंड़ बन चुका था। वह उसके आगे-पीछे पालतू कुत्ते की भाँति दौड़ता उसकी हर आज्ञा का पालन कर रहा था। यदि बोधमयी पर आने वाले ख़तरे के विषय में मंगल से कुछ बताया जाय तो वह रोजी को अवश्य बता देगा। ऐसी परिस्थिति में यदि आशंका निर्मूल हुई तो बेकार की बदनामी होगी। यदि सही हुई तो रोजी हमारे ऊपर आक्रमण करवा सकती है। यह सोचकर उन्होंने मंगल से कुछ भी बताना व्यर्थ समझा। उन्होंने प्रतिपल बोधमयी के पास बने रहने का निश्चय किया। तभी मंगल सामने से आता दिखाई पड़ा। शुकदेव जी के बुलाने पर वह उनके पास आया और 'क्या है?' इस लहज़े में पूछा जैसे वह बहुत व्यस्त हो।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"देखो, भीड़ में कहीं सम्पादक जी दिखाई पड़ें तो उन्हें बुलाना" शुकदेव जी ने उसकी बेरुखी पर बिना ध्यान दिये कहा।

"अच्छा" कहता वह आगे निकल गया। शुकदेव जी आकर बोधमयी के पास बैठ गए। सलोनी और बोधमयी हँस-हँस कर बातें कर रही थीं। उसी समय रोजी ने आकर कहा–"शाम के सात बजने में पैंतालिस मिनट की देरी है। अब तुम लोग तैयारी करो। करमा पहले होगा।" कहकर उसने बोधमयी के हाथों को बड़े प्यार से सहलाया और आर्य जी की ओर मुड़कर हँसते हुए कहा–"आप यहाँ लड़कियों में क्या कर रहे हैं? जरा निकल कर हो रहे कार्यक्रमों का आनन्द लें। कुछ चाय-नाश्ता...।"

"चाय-नाश्ता सब हो चुका है। कुछ तबीयत भारी है इसीलिए बैठा हूँ।"

"लगता है दिल्ली का पानी आपको सूट नहीं कर रहा है। अभी मंगल के हाथ दवा भिजवाती हूँ, खा लीजिएगा," कहती वह चली गई।

कुछ देर बाद मंगल ने आकर आर्य जी को दवा की दो टिकियां दीं और कहा–"भीड़ में एक जगह सम्पादक जी के शक्ल-सूरत का एक आदमी दिखाई दिया था। उसने मुझे देखकर हाथ भी हिलाया, लेकिन वह कोट-पैण्ट पहने था इसलिए मैंने उस पर विशेष ध्यान नहीं दिया। अभी रोजी ने आपको दवा देने के लिए कहा तो मैंने सोचा कि आपको बता दूँ।"

बोधमयी ने सुना तो उसका दिल धक्-धक् करने लगा। "हे भगवान्! वही हों, हे गुरु जी आप कृपा करें।" वह मन ही मन मनाने लगी।

शुकदेव जी मंगल के साथ स्थान देखने चले गए जहां मंगल ने सम्पादक जी को देखा था। सम्पादक जी वहाँ नहीं दिखाई पड़े। तभी माइक पर करमा गाए जाने की उद्घोषणा हुई। मंगल शुकदेव जी को वहीं छोड़कर उल्टे पाँव भागा। शुकदेव जी भारी मन लिए बोधमयी के पास लौट आए। बोधमयी ने उनकी ओर प्रश्नात्मक दृष्टि से देखा।

"दिखाई तो नहीं पड़े। तुम भी देखना।" शुकदेव जी ने भारी मन से कहा।

उधर उद्घोषक माइक पर करमा लोकगीत के विषय में बता रहा था–"उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर जनपद के दक्षिणांचल में आदिवासियों द्वारा गाया जाने वाला करमा लोकगीत है जिसे लोक नृत्य के साथ गाते हैं। भादो की शुक्लपक्ष एकादशी को आदिवासी महिलाएँ कर्मदेव का व्रत रखती हैं। आप विचार करें कि जिस कठोर कर्म के सहारे वे अपने परिवार का पेट पालती हैं उन आदिवासी महिलाओं के लिए कर्म ही उनका देवता है। वे उस दिन रात्रि के आठ-नौ बजे जंगल में जाकर कर्म देव के प्रतीक के रूप में करमा नामक वृक्ष की डाल लाकर गाँव के सम्मानित व्यक्ति, जिसे वे अपनी भाषा में 'गँवँहाँ' कहते हैं, के आँगन में गाड़ती

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हैं और पूजा करती हैं। पुरुष अपने पारम्परिक कर्मदेव की पारम्परिक कथा सुनाते हैं और अपने मानर वाद्य की पूजा करके सारी रात स्त्री-पुरुष टोलियों में बंट कर करमा लोकगीत गाते हैं जो द्वादशी तक चलता है। शाम को पुरुष वर्ग पूजी गई डाल का विसर्जन करता है। वही लोकगीत किस वेश-भूषा में, किस वाद्य पर, किस धुन पर कैसे गाया जाता है, उसे आदिवासी कलाकारों द्वारा प्रस्तुत किया जा रहा है।''

उपरोक्त घोषणा के साथ ही त्रिजली के फोकस में कलाकार पूरी साज-सज्जा के साथ दिखाई पड़े। दर्शकों की ओर मुँह कर खड़े कलाकारों के मध्य में खड़ी बोधमयी पर प्रकाश का रंगीन फोकस कुछ इस प्रकार से डाला गया कि वह पूरे मंच पर अकेली वनदेवी की भाँति दिखाई पड़ी। दर्शकों ने तालियों की गड़गड़ाहट से स्वागत किया। फोकस बारी-बारी से कलाकारों पर घूमने लगा। बोधमयी की आँखें भीड़ में सम्पादक जी को ढूँढ़ने लगीं। अकस्मात उसकी दृष्टि सम्पादक जी पर पड़ी। लेकिन नहीं, यह आदमी तो सूट-टाई में है, लेकिन चेहरा? चेहरा तो वही है। उसने देखा कि उस आदमी ने मुस्करा कर हाथ हिलाया। अरे! यह मुस्कराहट तो उन्हीं की है। बस, बस वही हैं। बोधमयी का मन झूम उठा। तभी गाने का संकेत हुआ। बोधमयी के हर्ष से झूमते मन ने कोकिल कंठ से ''बिजुल बन में एँ एँ एँ एँ...'' की लम्बी तान छेड़ी। मानर गमक करके बज उठे। दूसरे अर्धवृत्त के पुरुष कलाकारों ने इसी पंक्ति को दुहाराया। फिर करमा गीत अपने सहज बहाव में बह चला-''बन में रहतै सुगना, बन फल खातै,'' गाकर बोधमयी फिर सम्पादक जी की ओर देखने लगी। तब तक दूसरे कलाकार इस पंक्ति को दुहरा चुके थे। उसने आगे गाया-''गइलै शहर दूध भातै''।

आदिवासी वेश-भूषा में आमने-सामने दो अलग-अलग अर्धवृत्त में खड़े एक दूसरे का हाथ थामे लड़के-लड़कियाँ झुक-झुक कर गमक कर बजते मानर के ताल पर गीत गाती रहीं। गीत की समाप्ति पर दर्शकों ने जोरदार तालियाँ बजाईं। कलाकार लौट पड़े।

''वही थे?'' सलोनी ने बोधमयी से पूछा।

''हाँ वही हैं, आर्य जी से बता दे।''

''मैं क्यों बताऊँ?'' सलोनी ने शरारती लहजे में कहा।

''बताने में क्या तुम्हारे होंठ घिस जाएंगे?'' बोधमयी ने चुटकी से सलोनी के होठों को पकड़ कर कहा। तभी शुकदेव जी वहाँ पर आ गए।

''क्यों वही हैं न?'' शुकदेव जी ने पूछा।

''जी'' बोधमयी ने संक्षिप्त-सा उत्तर दिया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"मैंने भी देखा है, सम्पादक जी ही हैं। बड़ी भीड़ है, मैं उन्हें लिवाकर यहीं आ रहा हूँ" कहकर आर्य जी चले गए। तभी उद्‌घोषक ने माइक पर घोषणा की– "अब वही कलाकार पुनः आपके सामने दूसरे ढंग का करमा प्रस्तुत करने जा रहे हैं जिसमें आदिवासी नायिका अपने प्रियतम के शराब, जिसे धाँगर आदिवासी अपनी भाषा में अर्की कहते हैं, पीने के विषय में बता रही है।"

"अरे तुम अभी तैयार नहीं हुई? तैयार हो जाओ" रोजी ने मंचीय वस्त्र उतार चुकी बोधमयी की ओर देख कर कहा।

"मैं नहीं गाऊँगी" बोधमयी ने नम्र स्वर में कहा।

"अरे तबीयत ख़राब हो गई क्या?" रोजी ने बैठी बोधमयी के सिर को बड़े प्यार से सहलाते हुए पूछा।

"तबीयत ठीक है"

"फिर क्यों नहीं गाओगी?" आश्चर्य से रोजी ने पूछा।

"मैं करमा गाने आई हूँ। जिस गाने को आप गाने के लिए कह रही हैं, वह करमा नहीं है।"

"गाने में क्या हुआ है? चाहे करमा हो या कुछ और। श्रोता जिससे प्रसन्न हों उसे गाने में क्या हर्ज है?" रोजी बड़ी देर तक समझाती रही। बोधमयी चुपचाप सिर नीचे किए उसकी बातों को सुनती रही। रोजी ने बोधमयी के मौन को उसकी स्वीकारोक्ति समझ कर उसका हाथ पकड़ कर कहा–"चलो उठो"

बोधमयी ने अपना हाथ छुड़ा लिया और वैसे ही चुपचाप बैठी रही।

"तो तुम नहीं गाओगी?" रोजी ने क्रोध में पूछा।

"नहीं" बोधमयी ने शान्त स्वर में कहा।

"ठीक है, मत गाओ, नहीं गाना है तो यहाँ क्यों बैठी हो?" तमतमा कर रोजी पैर पटकती चली गई।

थोड़ी देर में मंगल क्रोध से भरा आया और बोधमयी को डाँटने लगा–"तुम अपने को समझती क्या हो? एकदम से दिमाग खराब हो गया है। उठो, चलो नहीं तो हमसे बुरा कोई नहीं होगा।" बोधमयी अपनी जगह से टस-से-मस नहीं हुई।

"लात के देवता बात से नहीं मानते" कहता मंगल बोधमयी की ओर लपका। उपस्थित कलाकारों ने बीच-बचाव किया। मंगल क्रोध से काँपता बोधमयी को घूर-घूर कर देखने लगा। तभी रोजी ने आकर मंगल का हाथ पकड़ा और कहा– "छोड़िए, बड़ी जिद्दी है। जल्दी से मानर सम्भालिए, कार्यक्रम का समय हो गया।"

"सारा जिदपन उतार दूँगा। नहीं गाना है तो जा यहाँ से चली जा। रोजी जी इसे हमारी आँख के सामने से हटाइए। भेजिए इसे, अपने कमरे पर जाकर आराम करे।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रोजी के चेहरे पर प्रसन्नता झलक आई। उसने तुरन्त अपने ड्राइवर को बुलाकर कहा–"जाओ जल्दी से इन्हें वहीं छोड़कर चले आओ।"

क्रोध और अपमान के कठिन आघात से आदमी विवेकशून्य हो जाता है। जिस प्रकार शराब का नशा व्यक्ति की बुद्धि को मन में उठने वाले तात्कालिक प्रबल उद्वेगों पर केन्द्रित कर देता है, वही कार्य कठिन अपमान से उपजा क्रोध भी करता है। बोधमयी यह भूल गई कि शुकदेव जी सम्पादक जी को बुलाने गए हैं। वह धीरे से उठी और गाड़ी की पिछली सीट पर बैठ गई। गाड़ी आगे बढ़ गई।

गाड़ी के जाते ही सलोनी बेचैन हो गई। उसे गाड़ी का हार्न बार-बार सुनाई पड़ रहा था। वह समझ गई कि भीड़ अधिक होने के कारण ड्राइवर गाड़ी को अपेक्षित चाल में न चला पाने के कारण बार-बार हार्न बजा रहा है।

सभी लोग इस हादसे से सकते की हालत में एक दूसरे का मुँह ताकते खड़े रहे। सलोनी ने दौड़कर अपने पर्स से कागज निकाल कर उस पर लिखा–"अनर्थ, गाड़ी का पीछा करें।" कागज को मुट्ठी में दबाए फिर कलाकारों के बीच आ खड़ी हो शुकदेव जी का इन्तज़ार करने लगी। उसे शुकदेव जी झपटते हुए अपनी ओर आते दिखाई पड़े।

"वही हैं, यहीं आ रहे हैं। बोधमयी कहाँ है? शुकदेव जी ने प्रसन्न मुद्रा में सूचित किया और बोधमयी की खोज में इधर-उधर दृष्टि दौड़ाई।

वहीं पर खड़े मंगल ने भी समाचार को सुना। वह समाचार पर कोई ध्यान न देते हुए मालिकाना अंदाज़ में "आप लोग चलिए" कहता रोजी के साथ चला गया़। सभी कलाकार कार्यक्रम प्रस्तुत करने चल पड़े। सलोनी अपना लिखा कागज शुकदेव जी को देते हुए कलाकारों के साथ चली गई।

शुकदेव जी ने दिए संदेश को पढ़ा और बेचैन हो पीछे की ओर भागे। सामने से सम्पादक जी आते दिखाई पड़े। शुकदेव जी ने–"जल्दी क़रिये, जो मैंने कहा था हो गया" कहकर सलोनी का लिखा सन्देश उन्हें पकड़ा दिया।

"घबराइए मत, गाड़ी का नम्बर क्या है?" सम्पादक जी ने सन्देश पढ़कर शान्त भाव से कहा।

शुकदेव जी ने गाड़ी का नम्बर बताया।

"आइए मेरे साथ" कहकर सम्पादक जी जिधर से आए थे उधर ही चल पड़े। भीड़ में कुछ दूर जाकर उन्होंने एक नौजवान के कान में कुछ कहा। नौजवान ने कुछ दूर पर खड़े तीन और नौजवानों को इशारा किया। वे सभी लोग एक साथ भीड़ के बाहर आ गए।

सम्पादक जी ने सबको गाड़ी का नम्बर बताया और कहा–"इस गाड़ी में बैठी एक लड़की की सुरक्षा का सवाल है। तुम चारों एक-एक मोटर साइकिल पर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दो-दो बैठकर अलग-अलग सड़कों पर जाओ। दो घंटे बाद होटल पर मिलो।'' नौजवानों ने चीते जैसी फुर्ती से आज्ञा का पालन किया।

''आइए आर्य जी, आप मेरी गाड़ी पर बैठिए'' कहकर सम्पादक जी ने मोटर साइकिल स्टार्ट की और आर्य जी लपक कर उनके पीछे बैठ गए। मोटर साइकिल सड़क पर भागने लगी।

''पहले अंजनी के घर की ओर चला जाय'' आर्य जी ने कहा।

''नहीं, पहले होटल की ओर चला जाय क्योंकि अंजनी के विषय में उठी शंका निर्मूल हो सकती है। दूसरी बात यदि आपकी आशंका सही हुई तो यह निश्चित है कि ड्राइवर बोध को चकमा देने के लिए कुछ दूर होटल की ओर जाने वाले रास्ते पर ही ले जाएगा, फिर जिधर जाना है उधर जाएगा।''

''आपका निर्णय ठीक लगता है क्योंकि होटल वाले रास्ते पर मैं समझता हूँ कि डेढ़ मील के बाद जो तीसरी सड़क पूरब की ओर मुड़ती है, वही अंजनी के बंगले का रास्ता है।''

''यही सोचकर मैं चल रहा हूँ'' कहकर सम्पादक जी ने अपनी गाड़ी की रफ्तार और तेज कर दी।

गाड़ी अपने पूरे वेग से सड़क पर भाग रही थी। थोड़ी देर में वे तीसरी सड़क के मोड़ पर पहुँचने ही वाले थे कि उनकी गाड़ी की रोशनी आगे उसी मोड़ पर लड़खड़ा कर मुड़ती इम्पाला पर पड़ी। गाड़ी मुड़कर लड़खड़ाती हुई कुछ दूर जाकर पलटने की स्थिति में खड़ी हो गई। वे लोग थोड़ी ही देर में गाड़ी के पास पहुँच गए।

''वही गाड़ी है'' शुकदेव जी ने हर्षित होकर कहा। सम्पादक जी अपनी मोटर साइकिल से उतर गाड़ी की ड्राइविंग सीट की ओर लपके। उन्होंने देखा कि ड्राइवर अपनी सीट पर बेहोश पड़ा है। उन्होंने गाड़ी के भीतर अपनी दृष्टि दौड़ाई तो कोई नहीं था।

''अरे इसमें तो कोई नहीं है'' सम्पादक जी ने आश्चर्य से कहा।

''आँय?'' कहकर शुकदेव जी ने भी गाड़ी के भीतर झाँका। सम्पादक जी ने दौड़कर अपनी मोटरसाइकिल की डिग्गी से टार्च निकाला और उसकी रोशनी में गाड़ी की तलाशी ली। जब कोई नहीं मिला तो गाड़ी के आस-पास टार्च की रोशनी फेंकने लगे। टॉर्च की रोशनी कुछ दूर पर सड़क की पटरी छोड़ सहमी खड़ी एक नारी पर पड़ी जो अपने आँचल को अपनी कमर के दोनों ओर खोसे, धोती की काछनी मारे, आक्रमक मुद्रा में खड़ी थी। ऐसा लग रहा था जैसे वह किसी आसन्न विपत्ति से जूझने को तैयार खड़ी हो।

''बोध'' कहते हुए सम्पादक जी उसके पास पहुँच गए। शुकदेव जी भी दौड़कर वहीं पहुँच गए।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"अरे, यह तो तुम्हारे मस्तक से खून बह रहा है और कहीं तो चोट नहीं लगी है?" कहते हुए सम्पादक जी ने अपनी जेब से रूमाल निकाल कर उसकी चोट पर बाँध दिया।

"नहीं, और कहीं चोट नहीं है" कहकर बोधमयी रोने लगी।

"बोध, यह रोने का समय नहीं है। जल्दी से बताओ ड्राइवर को क्या हुआ है?" सम्पादक जी ने बोधमयी के आँसुओं को पोंछते हुए पूछा।

"ड्राइवर जब होटल का रास्ता छोड़कर दूसरी ओर गाड़ी मोड़ने लगा तो मुझे सलोनी की बात याद आ गई।"

"कौन सलोनी?" सम्पादक जी ने पूछा।

"रोजी के थियेटर में काम करने वाली लड़की जो मेरी सहेली बन चुकी है। उसने बताया था कि रोजी गन्दी औरत है। वह बड़े अधिकारियों तथा भ्रष्ट मंत्रियों, नेताओं के लिए लड़कियों को फँसाती है।"

सम्पादक जी ने दाँत पीसकर 'हूँऽ' कहा और पूछा–"ड्राइवर दूसरी ओर गाड़ी मोड़ने लगा तब क्या हुआ?

"मैंने मना किया, जब वह नहीं माना तो उसकी गर्दन पर एक घूँसा मार दिया" बोधमयी ने बड़े भोलेपन से कहा।

उसी समय उस स्थान पर दो मोटरसाइकिलें आकर रुकीं। मोटरसाइकिल सवारों ने पूछा–"क्या यही गाड़ी थी?"

सम्पादक जी ने "हाँ" कहा और बोधमयी द्वारा बताई गई सारी बातों को बता दिया।

"अब क्या किया जाय?" एक नौजवान ने पूछा।

"ऐसा करो, बेहोश ड्राइवर को उसकी सीट के नीचे खाली जगह में डाल दो। एक आदमी इसी गाड़ी से लड़की को होटल पर छोड़ यहीं आ जाओ" सम्पादक जी ने निर्देश दिया।

"पुलिस में रिपोर्ट..." शुकदेव जी के वाक्य पूरा करने के पहले ही सम्पादक जी ने "नहीं, इसकी आवश्यकता नहीं है" कहकर उनकी बात को काट दिया।

"लड़की के सिर पर जो चोट है?" नौजवान ने पूछा।

"हल्की चोट है, चोट क्या खरोंच है। क्यों बोध? कोई तकलीफ़ तो नहीं है?"

"नहीं, मैं अकेली गाड़ी में नहीं जाऊँगी" बोधमयी ने नौजवान की ओर सहमी दृष्टि से देखकर कहा।

"डरो मत, क्योंकि हमारे साथ के लोग न तो जनता द्वारा चुने गए जनसेवक हैं और न तो सरकारी वेतनभोगी जनरक्षक। जल्दी से गाड़ी में बैठो, देर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मत करो, और हाँ कल यदि पुलिस तुमसे कुछ पूछे तो कहना कि ड्राइवर मुझे छोड़कर चला गया। आगे क्या हुआ मैं नहीं जानती।''

बोधमयी सम्पादक जी की ओर देखती गाड़ी में बैठ गई। एक नौजवान ने जल्दी से ड्राइवर को सीट के नीचे डालकर गाड़ी स्टार्ट की और होटल पर बोधमयी को छोड़कर थोड़ी देर में पुनः आ गया।

''किसी को कोई शक तो नहीं हुआ?'' सम्पादक जी ने पूछा।

''नहीं'' नौजवान ने कहा।

''ठीक है, गाड़ी और ड्राइवर को पहली वाली स्थिति में करके अपनी तैयारी पूरी कर कार्यालय पहुँचो'' सम्पादक जी ने कहा और स्वयं भी आर्य जी को लेकर कार्यालय की ओर चले गए।

आर्य जी ने 'कार्यालय' सम्बोधित किए गए स्थान को बड़े ध्यान से देखा। उन्हें कार्यालय जैसी कोई चीज वहां नज़र नहीं आई। धुएँ से भरी एक छोटी-सी कोठरीनुमा दुकान, जिस पर एक लड़का अभी-अभी सुलगे कोयले की भट्ठी पर चाय का पानी गरम कर रहा था। शायद यह दिल्ली का बाहरी इलाक़ा·था।

लड़के ने मुस्करा कर सम्पादक जी को नमस्कार किया। सम्पादक जी ने लड़के की पीठ पर स्नेह से हाथ फेरकर कहा-''क्यों कल्लू, सब ठीक है नऽ, जल्दी से चाय बनाकर भेजो'' कहते हुए सम्पादक जी चाय की दुकान के पीछे वाली कोठरी में आर्य जी के साथ चले गए। कोठरी में घुसकर आर्य जी ने देखा कि पूरी कोठरी की फर्श पर एक दरी बिछी है, उस पर चार-छह तकिये, कुछ कम्बल मुड़ी-तुड़ी हालत में इधर-उधर बिखरे पड़े थे। कमरे के एक कोने में बासी समाचार-पत्र, पत्रिकाओं का अम्बार लगा था। लड़का चाय लेकर आ गया। दोनों आदमी चाय लेकर दरी पर आमने-सामने बैठ चाय पीने लगे।

''अंजनी जब छात्रनेता था तभी से उसे जानता हूँ। माफ़िया डॉनों और तस्करों से सम्बन्धित अंजनी को जब तपे-तपाए नेता अपनी छात्र राजनीति को सफल करने के लिए प्रश्रय देने लगे थे तभी मैंने गाँधी के शान्ति भवन में हिंसकों की टोली को जाने के लिए बनती पगडण्डी को देख लिया था। अगर अभी से इस पगडंडी को मिटाने का प्रयास नहीं किया गया तो कालान्तर में यह विस्तृत राजमार्ग का रूप ले लेगी'' सम्पादक जी ने चाय सुड़क कर चिन्तन की मुद्रा में कहा।

''बड़ी पार्टी और बड़े नेताओं के वरदहस्त-प्राप्त ऐसे लोगों को राजनीति में आने से कैसे रोका जा सकता है? कोई सख्त कानून बनाकर ही इन्हें रोका जा सकता है'' आर्य जी ने कहा।

''कानून बनाकर, हूँ ऊँ...। कानून तो नैतिकता की बैट्री से चलने वाला यन्त्र मात्र है। जिस चीज के सहारे कानून चलता है, जब उसी का दूर-दूर तक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कहीं अता-पता नहीं है तो इसकी सार्थकता तो अपने आप समाप्त हो चुकी है। आज भी आदिवासी किसी की हत्या करने के बाद स्वयं थाने पर जाकर अपने को पुलिस के हवाले कर देता है क्योंकि उसमें नैतिकता है।"

"भौतिकवादी समाज में, सारी सुख-सुविधाएँ पैसे पर आधारित हो चुकी हैं। यहाँ तक कि सामाजिक मर्यादा भी। गैरकानूनी ढंग से जब अंजनी जैसे लोग अकूत सम्पत्ति कमा कर समाज के मर्यादित व्यक्ति बन जाते हैं और आधुनिक असलहों से लैस एक दुर्दान्त दल जब इनकी सुरक्षा करने लगता है, तब शायद शौक के लिए ऐसे लोग राजनीति में..."।

"आर्य जी, शौक नहीं सुरक्षा के लिए ये लोग राजनीति में आते हैं। राजनैतिक संरक्षण के बाहर रहकर जब ऐसे लोग गैरकानूनी कार्य करते हैं तो इन्हें पुलिस और प्रतिद्वन्द्वी, दोनों का डर रहता है। राजनीति में आने के बाद जिस पुलिस को ये हफ्ता देकर मिलाते थे, वही पुलिस अपने को सुरक्षित करने के लिए इन्हें हफ्ता देने लगती है। इनके इशारे पर इनके प्रतिद्वन्द्वियों पर क़हर बन कर टूटती है। इनके सारे गैरकानूनी धन्धे निर्भय-निर्बाध गति से चलते रहते हैं। दूसरी तरफ राजनैतिक सुरक्षा-कवच पहन कर किए गए वार से त्रस्त प्रतिद्वन्द्वी गुट भी राजनैतिक सुरक्षा-कवच पाने के लिए इस क्षेत्र में कूद पड़ता है। इस प्रकार अपराधी दुनियाँ की भाँति राजनैतिक दुनियाँ में भी गैंगवार शुरू हो जाता है जिसे वोट देने वाला जन-साधारण समझ भी नहीं पाता। इस गैंगवार की लड़ाई में अपराध रोकने के लिए बनी पुलिस व्यवस्था भी पैसे के लालच में विभिन्न खेमों में बंट कर गुपचुप ढंग से इनके धन्धे में सहायक बन जाती है। पद और वरदहस्त से सुरक्षित शासन-तन्त्र जब निर्भय होकर आपराधिक कार्यों में लिप्त हो जाता है तो सारा समाज, कानून की धज्जियों को उड़ते अपनी आँखों से देखता है। जन-साधारण का विश्वास कानून पर से उठ जाता है। ऐसी हालत में आदर्शहीन नौजवान इन नेताओं के पदचिह्नों पर चल पड़ते हैं परन्तु आदर्श नौजवान इनके सफाए के लिए हथियार उठा लेते हैं। आप जरा कल्पना कीजिए कि जब कानून बनाने वाले भ्रष्ट और कानून का पालन कराने वाले भी भ्रष्ट हों तो न्यायिक व्यवस्था अपना काम कैसे कर सकती है? कानून कहाँ रह जाएगा?"

सम्पादक जी की बात सुनकर आर्य जी स्थिति की भयावहता को सोच अत्यधिक चिन्तित हो गए। उन्होंने एक लम्बी सांस लेकर कहा–"आज की स्थिति को देखकर मैं सोचता हूँ कि स्वतन्त्रता आन्दोलन के समय के नेताओं द्वारा चलाई गई राजनैतिक मथनी ने समाज को ऐसा मथा कि सम्पूर्ण भारतीय समाज का मक्खन ऊपर आ गया था। गाँधी, सुभाष, लोहिया, राजेन्द्र प्रसाद आदि देश के लाखों उत्कृष्ट मस्तिष्क वाले नेता और मैथिलीशरण, माखनलाल, सुभद्रा कुमारी,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दिनकर जैसे सैकड़ों साहित्यकार सामाजिक जल पर उतरा गए। परन्तु आज का स्वार्थी राजनीतिज्ञ समाज को इस प्रकार मथ रहा है कि समाज के तलछट में पड़े निकृष्ट कूड़े सामाजिक जल पर उतरा कर अपनी सड़ांध से समाज के वातावरण को दूषित कर रहे हैं। इन लोगों ने छल-कपट और धन को राजनीति का मुख्य कारक स्थापित कर दिया है। सत्य, अहिंसा और त्याग के स्थान को छल-बल और धनसंग्रह ने ले लिया है। इस दूषित राजनीति ने शासनतन्त्र को ही नहीं समाज के मस्तिष्क माने जाने वाले साहित्यकारों को भी अपनी लपेट में ले लिया है। आज साहित्यकार विभिन्न खेमों में बंटकर साहित्य नहीं बल्कि अपनी कहानियों-कविताओं में दलों के एजेण्डे लिख रहा है।''

''आर्य जी, इस विषय पर फिर कभी बात होगी। अभी हमें बहुत-से कार्य निपटाने हैं। आप होटल चलिए। जहाँ तक मेरा विश्वास है कि पुलिस तफ़्तीश होगी नहीं, होगी भी तो अंजनी के प्रभाव से कामचलाऊ तफ़्तीश होगी। दूसरी बात, अंजनी जैसे अपराधी अपनी असफलता आसानी से कुबूल नहीं करते, इसलिए वह बोधमयी को फिर पाने का प्रयास कर सकता है। अगर रोजी आपसे रुकने को कहे तो कुछ ना-नुकुर के बाद शाम तक रुकने को कह दीजिएगा। इसी बीच मैं भी होटल पर आ रहा हूँ।''

सम्पादक जी के यहाँ से जब आर्य जी अपने होटल पर पहुँचे तो देखा कि रोजी की गाड़ी होटल के लॉन में खड़ी है और रोजी गाड़ी के अगल-बगल टहल रही है। उसके थियेटर के सभी कलाकार गाड़ी के आसपास स्तब्ध से खड़े हैं। आर्य जी के पहुँचते ही रोजी ने पूछा—''आप कहाँ रह गए थे?''

''क्या कोई बात हो गई क्या? आप लोग यहाँ क्यों खड़े हैं?'' आर्य जी ने जवाबी सवाल पूछ दिया।

''नहीं, कोई ख़ास बात नहीं है, मेरी गाड़ी का ऐक्सीडेन्ट हो गया है'' रोजी ने लापरवाही से कहा।

''कहाँ? कैसे?'' आर्य ने आश्चर्य प्रकट किया।

''अब गाड़ी मोटर है, ऐक्सीडेन्ट होना कोई आश्चर्य की बात नहीं है। हाँ, मेरे ड्राइवर को चोट कैसे लगी, यही सोच रही हूँ।''

''आपने ड्राइवर से नहीं पूछा?''

''उससे क्या पूछूँ? वह तो बेहोश है। डाक्टर कहते हैं कि किसी वजनी चीज से गर्दन पर चोट पहुँची है।''

''घबराने की बात नहीं, होश में आते ही वह बता देगा'' आर्य जी ने दिलासा दिया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"नहीं, शायद होश में आने पर भी वह बता नहीं पाएगा। डाक्टर कहते हैं कि चोट इतनी तेज है कि वह सदा के लिए अपनी पूर्व स्मृतियों को भूल सकता है। बड़ा वफ़ादार ड्राइवर था।"

"पुलिस नहीं आई थी?" आर्य जी ने पूछा।

"हम लोगों के मामले में उलिस-पुलिस क्या करेगी? अंजनी बाबू ने थाने पर फोन कर दिया, थाने वालों ने गाड़ी पहुँचा दी। एम. पी. कोटे में ड्राइवर का इलाज़ हो रहा है। केस रफ़ा-दफ़ा हो गया" रोजी ने लापरवाही से कहा।

"चलिए, ऊपर वाले की कृपा है, नहीं तो अफ्तीश-तफ़्तीश में बेकार फंसना पड़ता।"

"वाह रे आर्य जी, रह गए कोरे साहित्यकार ही। अभी आप नेताओं की ताक़त को नहीं जानते। एक-दो हत्या भी हो जाय तो आपको घबराने की ज़रूरत नहीं है" कहकर रोजी हँसने लगी।

रोजी की बात को सुनकर आर्य जी का हृदय बोधमयी के साथ घटने वाली घटनाओं को सोचकर व्याकुल हो उठा। इसका मतलब यह कि बोधमयी अगर अंजनी के चंगुल में फंस कर विरोध करती तो उसकी हत्या भी की जा सकती थी और हत्या का केस भी रफ़ा-दफ़ा करवा दिया जाता। भय और घृणा से उनका मन सिहर उठा। कितने जघन्य हैं ये लोग! अपनी वासना-तृप्ति के लिए क्या कुछ नहीं कर सकते? क्या ऐसे ही लोगों के हाथ में देश का भविष्य सुरक्षित रह पाएगा? सामन्त परिवार में जन्म लेकर आजीवन सामन्त रहने की निश्चित धारणा वाले सामन्त जो नारी शरीर का शोषण करते थे, क्या इन पँचसल्ले सामन्तों से बुरे थे? कम से कम जनता के सामने उनका चरित्र तो स्पष्ट था। परन्तु ये लोग जनता के सामने महिला मुक्ति आन्दोलन की अगुवाई करेंगे और छिपकर उनकी हत्या कर देंगे। क्या कोई कानून बनाकर इन्हें राजनीति से आने से रोका जा सकता है? कदापि नहीं। जिस प्रकार अधार्मिक व्यक्ति धर्म की अच्छी से अच्छी सूक्तियों का अर्थ अपने पक्ष में निकाल लेता है, उसी प्रकार ऐसे नेता कानून की हर दफ़ा का अर्थ अपने पक्ष में करा लेते हैं। सम्पादक जी ठीक कह रहे थे कि इस माहौल में कानून का कोई अर्थ नहीं रह गया है।" निराशा से भरे आर्य जी ने एक लम्बी उँसाँस छोड़ी।

"आर्य जी, आप बड़ी लम्बी उसाँस छोड़ रहे हैं। क्या बात है?" रोजी ने सहसा पूछा।

आर्य जी ने चौंक कर सिर उठाया तो देखा कि गाड़ी के आसपास खड़े कलाकार अपने कमरों में जा चुके थे और अपनी गाड़ी की ड्राइविंग सीट पर बैठी रोजी उनको मुस्कराती देख रही है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"कुछ नहीं, अपने इतने दिनों के दिल्ली प्रवास को छोड़ते हुए कुछ कष्ट हो रहा है।"

"कब जा रहे हैं?"

"आज ही।"

"इतनी जल्दी भी क्या है? एक-दो दिन और रुकिए। अभी तो चौथी बाबू अपने क्षेत्र के कलाकारों के सफल प्रदर्शन पर एक भव्य आयोजन करने जा रहे हैं। उन्हीं को बुलाने मैं जा रही हूँ।"

"नहीं, मैं रुक नहीं सकता। मेरी ओर से उनसे क्षमा माँग लीजिएगा।"

"अंजनी बाबू भी इस आयोजन में आएंगे। समझ लीजिए, अंजनी बाबू मतलब दिल्ली सरकार। अगर वह ख़ुश हो गए तो आपको राष्ट्रपति पुरस्कार भी दिलवा सकते हैं।"

"अगर ऐसी बात है तो आज रुक जाता हूँ। मुझे राष्ट्रपति पुरस्कार नहीं अपने क्षेत्र के एम.पी. चौथी बाबू की इज्जत तो करनी ही चाहिए।"

"यह हुई न बात! मैं उन्हीं लोगों को सूचित करने जा रही हूँ।"

"ठीक है, मैं अपने कमरे में चल रहा हूँ" कहकर आर्य जी अपने कमरे में आए। उनको कमरे में आया देख बोधमयी ने आकर कहा-"चलिए, घर चलिए" वह बहुत व्यग्र दिखाई दे रही थी।

"अपना सामान तैयार कर लो, सुबह चलेंगे।"

"सुबह क्यों अभी चलिए" ठुनकते हुए बोधमयी ने कहा।

"सम्पादक जी भी साथ चलेंगे। वह यहीं आ रहे हैं।"

बोधमयी के पीछे खड़ी सलोनी ने उसकी कमर में चुटकी काटी और कहा- "चलिए कल ही सही, यह बहुत अच्छा हुआ कि वह यहीं आ रहे हैं। मैं अपने चलने के लिए भी उनसे पूछ लूँगी।"

"ठीक है पूछ लेना" कहने के बाद आर्य जी ने फिर कहा-"चलो बरामदे में बैठा जाय।"

तीनों आदमी अपने कमरे के सामने वाले बरामदे में समय बिताने के लिए आकर बैठ गए। बरामदे में बैठते ही तीनों की दृष्टि नीचे लॉन में खड़ी रोजी की गाड़ी पर पड़ी जिसमें मंगल बैठने जा रहा था। रोजी अपनी गाड़ी से बाहर निकल बड़ी ऊँची आवाज में मंगल को डाँटने लगी-"तुम कुत्ते के पिल्ले की तरह पीछे-पीछे क्या लगे हो? चलो हटो यहाँ से।"

उसकी डाँट से हतप्रभ मंगल उसके बदले तेवर को कुछ समझ पाता कि वह अपनी गाड़ी में फनफनाती हुई बैठकर गाड़ी चलाती होटल के बाहर निकल गई। अपनी गाड़ी को उसने इस ख़तरनाक ढंग से मोड़कर चलाया था कि मंगल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अगर उछलकर दूर न हो गया होता तो शायद घायल हो जाता। वह अवाक् खड़ा गाड़ी को जाते देखता रहा।

आज की घटना से आदिवासी मंगल भले ही मर्माहत हो गया हो किन्तु रोजी ने तो मात्र एक गमले के बेमौसमी फूल को अपनी गाड़ी से उतार कर जमीन पर रख दिया था। अक्सर अभिजात्य वर्ग मौसम के अनुकूल फूलों के गमले बदलता रहता है। बेमौसम हो चुके परित्यक्त मंगल की आँखों के सामने अन्धेरा छा गया। उसी समय सम्पादक जी खादी का कुर्ता-पायजमा पहने कन्धे पर सर्वोदयी झोला लटकाए होटल के फाटक से भीतर घुसते दिखाई दिए। उन्हें देखते ही बोधमयी मगन हो गई। सलोनी ने उसकी बगल में चिकोटी काट कर कहा–"वह देखो कोई नेता जी आ रहे हैं।"

बोधमयी उठकर अपने कमरे की ओर चल पड़ी। उसके पीछे सलोनी भी- "अरे, अरे कहाँ जा रही हो" कहती बोधमयी के साथ कमरे के अन्दर चली गयी। बोधमयी कमरे के अन्दर अपने पलंग पर गिरकर रोने लगी।

बोधमयी को रोते देख सलोनी ने पूछा–"अरे रो क्यों रही हो? अब तो ये आँसू उन्हीं को दिखाना।"

बोधमयी और हपस-हपस कर रोने लगी। अभी तक सलोनी ने समझा था कि बोधमयी के ये आँसू प्रिय के मिलन की ख़ुशी के आँसू हैं। जब उसने इस प्रकार उसे रोते देखा तो वह हतप्रभ हो गई।

"भैया, हमारे भैया का क्या होगा? वह कैसे चलेंगे? बोधमयी की आँखों से आँसुओं की नदी बह चली।

यह बात सलोनी की समझ में नहीं आई कि जब बोधमयी आर्य जी से तुरन्त चलने का हठ कर रही थी, तब यह क्यों नहीं रोई थी?

मनुष्य अपने प्रिय पर अपना एकाधिकार समझता है, यही एकाधिकार की भावना ही प्यार है। मनुष्य अपने प्रिय के बुरे व्यवहार से दुःखी होकर क्रोध के आवेग में उससे दूर हो जाना चाहता है। इस दूर होने की क्रिया को वह अपने प्रिय के गलत व्यवहार का प्रतीकात्मक विरोध समझता है। वह ऐसा व्यवहार करना चाहता है कि उसका प्रिय उसके लिए तड़पे, झुंझलाए। किन्तु जब सचमुच अलग होने का अवसर आता है तो वह तड़प उठता है। अपने प्रिय का वह स्वयं अपमान कर सकता है परन्तु किसी दूसरे द्वारा किया गया अपमान वह सहन नहीं कर सकता।

बरामदे में बैठी बोधमयी ने रोजी द्वारा मंगल का अपमान होते देखा था। उसी समय से उसका मन रोना चाह रहा था जिसे वह दबा कर बैठी थी। सम्पादक जी को देखते ही उसका मन अति तीव्र वेग से अतीत से जुड़ गया, जिसमें

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अस्पताल में घायल उसका भैया, उसके सम्मान पर आई आँच को समझ कर अपने टूटे हाथ की पट्टियों को नोंचकर फेंक रहा था, उसके बप्पा लाठी चला रहे थे। भैया उसका सर सहला कर बंशी कक्का के यहाँ से आए दाल-भात को खाने के लिए समझा रहा था। सम्पादक जी फोटो खींच रहे थे आदि आदि अतीत के दृश्यों ने उसे अपने भाई के प्यार में डूबो दिया। मेरी नींद सोने-जागने वाले इस भाई को छोड़कर मैं कैसे जाऊँ? अकेली जाने की बात सोचकर वह जोर से 'भैया' कहकर रोने लगी। सलोनी उसे चुप कराने लगी। उसी समय सम्पादक जी आर्य जी के साथ कमरे के अन्दर आए।

"बुरा न मानिएगा, आप लोग कुछ एकान्त वार्ता कर रही हों तो..." अरे आप रो क्यों रही हैं? बोधमयी को रोता देख सम्पादक जी ने पूछा।

सलोनी ने कारण बताया जिसे सुनकर सम्पादक जी गम्भीर हो गए। कुछ देर बाद कहा–"मिले तो थे मंगल, मैंने तुम लोगों के विषय में पूछा तो उनकी आँखों से आँसू गिरने लगे। मैंने रोने के कारण को जानने का बहुत प्रयास किया परन्तु उन्होंने नहीं बताया, सिर्फ़ आँसू टपकाते रहे। मैंने अपने साथ लाना चाहा तो–"आप चलिए मैं आ रहा हूँ, कहकर होटल के बाहर चले गए।"

आर्य जी ने मंगल के साथ घटी आज की घटना को आद्योपान्त सुना दिया। रोजी की गाड़ी से मंगल के कुचल जाने से बचने की हृदयविदारक घटना को सुनकर सम्पादक जी के चेहरे पर घनविद्युत की तरह क्रोध की रेखा कौंध कर तत्क्षण विलीन हो गईं। उन्होंने हँसकर कहा–'बुरा न मानिएगा, सब ठीक हो जाएगा। वैसे एक खुशखबरी है कि मंगल को लड़का हुआ है।"

"आपको कैसे मालूम?" बोधमयी ने आन्तरिक प्रसन्नता के साथ पूछा।

"आजकल थामस जी यहीं आए हैं। वही बता रहे थे कि लड़का एकदम मंगल को पड़ा है। तथास्तु जी ने आर्यग्राम में जन्मे प्रथम नागरिक का भव्य अभिनन्दन करने का आयोजन किया है। थामस जी भी हमीं लोगों के साथ चलेंगे।"

बोधमयी सारे दुःखों को भूलकर मगन हो गई। तत्क्षण उसे अपने भाई की याद आ गई। उसका चेहरा पुनः मलीन हो गया। सम्पादक जी ने बोधमयी के मनोभाव को समझ लिया। उसके मन को बहलाने के लिए उन्होंने हँसकर कहा– 'बुरा न मानिएगा, मंगल का मन एक-दो घंटे के बाद यहाँ से उचट जाएगा, फिर वह भी हम लोगों के साथ ही चलेंगे। वैसे मैं मंगल से इस मामले में पिछड़ गया।"

"किस मामले में?" आर्य जी ने पूछा।

"आर्यग्राम को प्रथम सन्तान देने में" कहकर सम्पादक जी ने बोधमयी की ओर शरारत भरी दृष्टि से देखा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"गलती तो आपकी है।" आर्य जी ने हँसकर कहा।

"बुरा न मानिएगा, अपनी गलती के लिए माफ़ी माँग रहा हूँ। अगर आदेश हो तो अख़बार में अपना माफ़ीनामा छपवा दूँ। क्यों सलोनी जी, आपका क्या विचार है?" सलोनी को मौन देखकर सम्पादक जी ने उसे भी वार्ता में शामिल करने के उद्देश्य से कहा।

"रोजी के थियेटर के साथ सलोनी चली गई। अब मैं सलोनी नहीं यशोधरा हूँ। वैसे अपने भाई के पुत्र प्राप्ति के अभिनन्दन समारोह में मैं सोहर गाऊँगी," सलोनी ने ठुनक कर कहा।

"बुरा न मानिएगा, आप लोगों का गाया करमा गज़ब का था। उसका टेप दिल्ली की कई दुकानों पर बजते मैंने सुना है। कुछ अख़बारों में आप लोगों की फोटो भी छपी है।"

"सम्पादक जी, आप अखबार वाले भी अजीब होते हैं। आप लोगों का सारा ध्यान सनसनीखेज समाचारों पर ही रहता है। वह समाचार चाहे समाज का मंगल करे अथवा अमंगल, इससे आपको कोई मतलब नहीं रहता।" आर्य जी ने कहा।

"बात मंगल की पुत्र-प्राप्ति से प्रारंभ होकर, मेरे माफ़ीनामे से मिठाई, सोहर को लाँघती अख़बार वालों पर आ गई। बुरा न मानिएगा, सच पूछा जाये तो अख़बार ही नहीं पूरा प्रचार तन्त्र (मीडिया) ही व्यापारी बन गया है। मानव समाज के कल्याण के लिए एक सीधा सूत्र है कि सामाजिक विकृतियों को जहाँ हैं वहीं दबा दिया जाय। उसका प्रचार न किया जाय। सामाजिक विकृति पैदा करने वाले को दिए गए दण्ड का अधिक प्रचार हो, परन्तु यहाँ होता इसके विपरीत है, दण्ड पतले हेडिंग में, किन्तु की गई बुराई मोटे हेडिंग में छपती है। हरिजन युवती के साथ दुष्कर्म, आदिवासी महिला के साथ बलात्कार। जरा सोचिए, ये हेडिंग क्या सन्देश देते हैं? इन्हें पढ़ने के बाद ऐसा लगता है जैसे बलात्कार या दुष्कर्म का होना उनके महिला होने से सम्बद्ध नहीं है, बल्कि उनके हरिजन या आदिवासी होने से है। 'महिला के साथ बलात्कार' हेडिंग क्या महिलाओं पर हो रहे अत्याचार को स्पष्ट नहीं कर देता? जाति, धर्म से महिलाओं पर होते अत्याचार को जोड़कर ये समाचार तन्त्र समाज का कौन-सा भला कर रहे हैं? हत्यारों, गुण्डों और डाकुओं के किये कुकृत्यों के समाचार इस प्रकार दिए जाते हैं, जैसे ये सभी लोग कुकृत्य करके अपने घर पर आराम से ऐश की ज़िन्दगी जी रहे हैं। ऐसे लोग अवश्य दंडित होंगे-इस प्रकार के भाव ऐसे समाचारों में नहीं होते। किसी ने पंडित जवाहर लाल नेहरू अथवा राष्ट्रपिता को गाली दे दी बस हो गया मीडिया वालों के लिए चटपटा समाचार। मैं तो कहता हूँ कि जो अपने बेहूदे प्रदर्शन और भाषण से समाचार बनना चाहते हैं उन्हें न छापें। उनकी बेहूदगी सीमित हो जाएगी।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सम्पादक जी ने अपनी बात पूरी की ही थी कि होटल के लॉन में गाड़ियों के आने की हलचल सुनाई पड़ी।

आर्य जी यह देखने के लिए कि कहीं रोजी, अंजनी आदि की गाड़ी तो नहीं आ गई, उठकर बाहर की ओर लपके। सम्पादक जी ने उनका हाथ पकड़ कर कहा–"बैठिए, जिसे आना होगा, यहीं आ जाएगा।" आर्य जी बैठ गए। तभी गोलियों की तड़तड़ाहट सुनाई पड़ी। गोलियों की आवाज के मध्य मानव चीखें भी सुनाई पड़ीं। तीन-चार मिनट में सब शान्त हो गया। सम्पादक जी को छोड़कर कमरे में बैठे सभी लोग भयाक्रान्त हो गए। बोधमयी एकदम से बेचैन हो गई।

होटल के कमरों में दुबके लोग अपनी-अपनी खिड़कियों से झाँकने लगे। होटल कर्मचारियों में हड़कम्प मच गया। तत्काल पुलिस स्टेशन पर फोन किया गया। सायरन बजाती एम्बुलेंस के साथ पुलिस ने आकर पूरे होटल को घेर लिया। देखा गया कि गोलियों से छलनी हो चुके अगली गाड़ी में दो व्यक्ति औंधे मुँह मरे पड़े थे और पिछली गाड़ी में एक महिला और भी बदतर स्थिति में मरी पड़ी थी। चौथा शव गाड़ी से कुछ दूरी पर पड़ा था। तीन शवों की पहचान अंजनी सहगल और उसके गनर एवं रोजी के रूप में की गई, चौथे शव की पहचान नहीं हो पाई। यह चौथा शव देखने में किसी महत्वपूर्ण आदमी का नहीं लग रहा था। इसलिए पुलिस ने चौथे शव पर अधिक ध्यान न देकर उन तीनों को तुरन्त अस्पताल भिजवाया। घटनास्थल पर चारों ओर पम्पलेट बिखरे पड़े थे। पुलिस वाले उन्हें समेटने लगे। पुलिस वालों ने उसे पढ़ा, लिखा था–"भ्रष्टाचारियो सावधान-भारत का युवजन जाग उठा है। बापू की सत्य-अहिंसा की चादर तले युवजन के रक्त से तैयार किए गए स्वतन्त्रता को, उपवन को हम तुम्हें नष्ट नहीं करने देंगे। हम लोगों ने दो बार इन्हें सावधान किया था। हमें अफ़सोस है कि तीसरी बार हम क्षमा नहीं कर पाए। हम और हमारी गोलियां भ्रष्टाचार देखती हैं, पद एवं प्रतिष्ठा और लिंग नहीं।"

घटनास्थल के चारों ओर तमाशबीनों की भारी भीड़ लग गई। पुलिस वाले भीड़ को घटनास्थल पर जाने से रोके हुए थे। उसी समय सम्पादक जी अपने साथ बैठे सभी लोगों के साथ वहाँ पहुँचे। पुलिस वालों ने उन्हें भी रोका परन्तु जब उन्होंने अपने पत्रकार होने का प्रमाणपत्र दिखाया तो उन्हें घटनास्थल तक जाने दिया गया। घटनास्थल की ओर बढ़ते ही बोधमयी भीड़ में खड़ी उचक-उचक कर लाशों को देखने का प्रयास करने लगी। सम्पादक जी जमीन पर पड़ी लाश की ओर बढ़े। बोधमयी की दृष्टि भी सम्पादक जी का पीछा करती जमीन पर पड़ी लाश तक गई। वह पूरी ताक़त लगा कर उचकी। उसने लाश को देखा और-"भैयाऽऽ.....!" चिल्लाती भीड़ और पुलिस के अवरोध को तोड़ती सीधे लाश

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पर जाकर गिर पड़ी। गोलियों से छलनी हो चुके अंजनी सहगल की गाड़ी का टेप बज रहा था–"बिजुल बन में ऐं ऐं ऐं......

बन में रहतै सुंगना बन फल खातै।
गइलै शहर दूधभाते।।"

टेप से निकलते बोधमयी के सुरीले स्वर से उसका चीखता दर्दीला स्वर एकाकार होकर पूरे वातावरण पर छा गया।

"हल्की-सी चूक हो गई। गलत हाथों में पहुँच गए इस आजादी के अमृत घट को छीनना ही होगा। अब कुछ भी हो हमें यह लड़ाई लड़नी ही होगी।" सम्पादक जी कुछ बुदबुदाए और झुककर बोधमयी की बाँह पकड़ कर उसे उठाने लगे। उनकी आँखों से आँसू की बूँदें निकलकर बोधमयी की बाँह पर टप-टप करके चू पड़ीं।

❐

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'बिजुल वन में', सामाजिक सरोकार से प्रेरित-प्रसूत, 'गोदान' से आगे का उपन्यास है जो विकास की आड़ में संहारक रूप लेते जा रहे भ्रष्टाचार के बीभत्स यथार्थ के विरुद्ध एक व्यावहारिक रचनात्मक मोर्चा खोलता है। समाजनिष्ठ संवेदना की तीव्रता, यथार्थ की प्रामाणिकता, कथा-कला की मर्मस्पर्शिता और मानवीय मूल्यों से प्रतिबद्धता की दृष्टि से प्रेमचन्द को पीछे छोड़ चुके, इस महाकाव्यात्मक उपन्यास के प्रणेता 'वारिद' सन्त कबीर, महात्मा गांधी, तेज-तर्रार समाजवादी चिंतक राममनोहर लोहिया और नक्सली नेता चारु मजुमदार की विचारधाराओं के समन्वय से नये समाज का निर्माण करना चाहते हैं।

वाराणसी जनपद के बढ़ैनी कला गांव में श्री लक्ष्मीनारायण सिंह (अब स्वर्गीय) के इकलौते पुत्र के रूप में १० अक्तूबर १९३८ को जन्मे नागेन्द्रदेव नारायण सिंह 'वारिद' काशी विद्यापीठ के स्नातक हैं और छात्र जीवन से ही समाजवादी रुझान के राष्ट्रभक्त साहित्यकार के रूप में जाने-पहचाने जाते हैं। उत्तर प्रदेश सरकार के स्वास्थ्य विभाग में पर्यवेक्षक के रूप में इन्होंने दीर्घकाल तक वनांचलों का सघन दौरा कर इस उपन्यास के प्रामाणिक तथ्य जुटाये हैं। जनवरी १९९९ में सेवानिवृत्त हुए 'वारिद' का एक प्रबन्ध काव्य 'त्रिदेव', जो भगतसिंह, राजगुरु और सुखदेव जैसे क्रान्तिकारी स्वतंत्रता सेनानियों पर आधारित है, बहुत पहले प्रकाशित हो चुका है। इनकी तीन कृतियां—'शेष कथ्य' (वृहत् उपन्यास), 'रेस का मैदान' (राजनैतिक काव्यसंग्रह) और 'एक तेरे बिन' (प्रेमगीतों का संग्रह) प्रकाशन की प्रतीक्षा में हैं।

PILGRIMS
PILGRIMS PUBLISHING
Varanasi ◆ Delhi
www.pilgrimsbooks.com

उपन्यास
₹ 300

ISBN 978-81-7769-956-2
9788177699562

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.